CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6.?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन यात्रा की

दिव्य स्मृति

सम्पादक

डॉ० उमेशानन्द शास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पदवाक्य-
प्रमाणपारावारीण यतीन्द्रकुलतिलक श्रीकैलासपीठाधीश्वर
आचार्यमहामण्डलेश्वर अनन्तश्री
स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज की
परम अध्यक्षता में संचालित
श्री कैलास आश्रम शताब्दी तीन धाम स्पेशल ट्रेन यात्रा की

दिव्य स्मृति

सम्पादक
डॉ० उमेशानन्द शास्त्री
एम. ए.; एल-एल. बी., पी-एच. डी., व्याकरणाचार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक
श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन समिति
श्री कैलास आश्रम
कैलास गेट, ऋषिकेश (उ० प्र०)

प्रथम संस्करण १००० १९८२

मुद्रक :
श्री कैलास विद्या प्रेस
ब्रह्मानन्द आश्रम
मुनि-की-रेती, ऋषिकेश (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

समर्पण

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन यात्रा की "दिव्य स्मृति" अपने निष्ठावान् तीर्थयात्रियों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। यात्रा के पूर्ण होने पर बहुत से भक्तों के अनुरोध प्राप्त होते रहे कि शताब्दी स्पेशल की दिव्य स्मृति प्रकाशित होनी चाहिए। महाराजश्री ने इसके लेखन एवं सम्पादन के लिए मुझे ही निर्देश दिया। अन्य लोकहित कार्यों में रत रहते हुए इस ग्रन्थ को पूर्ण करने के लिए यथासम्भव समय निकालना पड़ा, इससे आपके हाथों तक प्रस्तुत भेंट पहुँचने में जो देरी हुई उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

'दिव्यस्मृति' को दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में तीन धाम, सप्तपुरी, एकादश ज्योतिर्लिङ्गादि तीर्थों की चिरस्मरणीय यात्रा का रोचक वर्णन है, साथ में कुछ लोमहर्षक स्मृतियों को लेखों के रूप में समाविष्ट किया गया है। द्वितीय भाग में स्तोत्र-संग्रह है। स्तोत्रों के संकलन में प्रायः सभी तीर्थों, देवनदियों एवं भगवान् के श्रीविग्रहों की भावनापूर्ण स्तुतियों को रखा गया है, साथ ही वेदान्त के कुछ प्रसिद्ध स्तोत्रों को भी ले लिया है, जो जीवन को सत्पथ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्रसर करने के लिए प्रेरणा देते रहेंगे। हर एक स्तोत्र का हिन्दी भाषानुवाद भी साथ में है जिससे भावुक भक्तजन स्तोत्र पाठ करते समय अर्थभावना करते हुए उसकी भाव-लहरी में निमग्न हो सकें।

यात्राकाल में मूवी फिल्म से जो भी चित्र लिए गए थे, उनसे ब्लाक बनना संभव नहीं था तो भी प्रस्तुत 'दिव्यस्मृति' में कुछ चित्रों का समावेश किया गया है। प्रशंसा, संस्तुतियों, प्रशस्ति-पत्रों अथवा 'इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं' की परम्परा का अनादर किया है, वास्तविक धरातल पर रहकर विषय वस्तु को प्रतिपादन करने की हर संभव कोशिश की गई है। मधुरतम स्मृतियों के साथ-साथ संघर्षपूर्ण क्षणों को और कहीं-कहीं कटु अनुभवों को भी उपेक्षित नहीं किया है।

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल से की गई तीर्थयात्रा की स्मृति जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन कर रह गई है। उस समय के ४८ दिनों का त्याग, संयम एवं तपोमय जीवन ही जीवन लगता है, दिन-रात क्षण-क्षण पल-पल भगवन्मय वातावरण की दिव्य अनुभूति, विशाल भारतमाता की विशाल उदार संस्कृति का दर्शन, देवदुर्लभ तीर्थों के दर्शन से जीवन की पूर्णता एवं प्रभु की अनन्त महिमा पद-पद पर साक्षात् अनुभव करने को मिलती थी। अधिकांश यात्री अपनी स्थिति एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवन्निष्ठा में रहते थे, सब में सर्वत्र प्रभु की दिव्य झाँकी का दर्शन, और है भी क्या उसके सिवा ! तभी तो सभी को वो आनन्द भूलता नहीं है। हमारे शास्त्र भी परिस्थिति, वातावरण के प्रभाव का महत्त्व समझकर सत्सङ्गति पर बल देते हैं।

"दिव्य स्मृति" को मात्र स्मृतिरूप न मानकर पूर्णता की ओर ले जाने के लिए आलम्बन समझना चाहिए। इस दिशा में अपनी लोक यात्रा को पूर्ण करने वाले तत्त्वनिष्ठ महानुभावों को यह कृति समर्पित है।

भगवदीय

जन्माष्टमी २०३९ डॉ० उमेशानन्द शास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषयानुक्रमणिका

प्रथम भाग

समर्पण

पुण्य संस्मरण — १

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन
एक चिरस्मरणीय यात्रा — २२

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन से
तीर्थयात्रा के रोमाञ्चक अनुभव — १७२

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन
और महाराजश्री — १८२

ऋद्धि-सिद्धि — १८६

दुर्गम ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन — १६०

अन्ततः तीर्थ से तीर्थ जुड़ ही गया — १६६

यात्री सूची — १६८

द्वितीय भाग

हनुमान चालीसा — २

शिवमहिम्नस्तोत्र — ६

प्रातःस्मरणम् — २३

षट्पदीस्तोत्रम् — २४

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् — २६

कालभैरवाष्टकम् — २६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्नपूर्णास्तोत्रम्	३२
मंगलम्	३७
श्रीविष्णोः षोडशनामस्तोत्रम्	३९
सूर्याष्टकम्	४०
नवग्रहस्तोत्रम्	४३
गङ्गाष्टकम्	४६
यमुनाष्टकम्	४९
नर्मदाष्टकम्	५५
प्रयागाष्टकम्	५८
काशीपञ्चकम्	६२
गुर्वष्टकम्	६४
लिङ्गाष्टकम्	६८
शिवमानसपूजा	७१
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	७४
राधाकवचम्	७९
चतुःश्लोकीभागवतम्	८६
सप्तश्लोकी गीता	८८
श्रीकृष्णस्तोत्रम्	९०
श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	९३
श्रीहरिशरणाष्टकम्	१००
जगन्नाथाष्टकम्	१०२
पाण्डुरङ्गाष्टकम्	१०६
श्रीवेङ्कटेश्वरमङ्गलस्तोत्रम्	१०९
रामहृदयम्	११३
रामरक्षास्तोत्रम्	११५
रामाष्टकम्	१२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मारुतिस्तोत्रम्	१२६
मुकुन्दमाला	१३१
भगवच्छरणस्तोत्रम्	१३६
निर्वाणषट्कम्	१४८
द्वादशपञ्जरिकास्तोत्रम्	१५०
साधनपञ्चकम्	१५४
परापूजा	१५७
देव्या आरार्तिक्यम्	१५६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य-महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज
प्रवचन की मुद्रा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुण्य संस्मरण

वैदिक सिद्धान्त में यह बात अत्यन्त प्रसिद्ध है कि सच्चिदानन्दघन परमात्मा अनन्त ब्रह्माण्ड का अधिष्ठान है। उसके आश्रित अचिन्त्य दिव्य शक्ति सम्पन्ना माया है। इसी माया का आश्रय लेकर वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म अनन्त ब्रह्माण्ड की रचना, पालन तथा संहार करता है। इतना ही नहीं, अपितु वेद-विरुद्ध आचरण करने वाले दुष्टों का निग्रह तथा वेदानुकूल आचरण करने वाले सन्तों पर अनुग्रह भी करता है। इन सभी कामों को केवल अन्तर्यामी रूप से ही नहीं करता किन्तु आवश्यकतानुसार राम एवं कृष्णादि रूप में अवतरित होकर भी करता है। उसके एक-एक रोम में अनन्त ब्रह्माण्ड लटक रहे हैं। उनमें प्रत्येक ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत चौदह भुवन माने गये हैं। जहाँ हम बैठे हैं, इसका नाम मर्त्य-लोक या भूलोक है। आधुनिक भौगोलिकों ने पृथिवी का जहाँ तक पता लगाया है, उससे कुछ विलक्षण ही ऋषियों की दृष्टि रही है। दिव्य दृष्टि से ऋषियों ने इस धरती को सात द्वीपों में विभक्त देखा। इसीलिए इसका नाम 'सप्तद्वीपा वसुमती' है। हो सकता है कि हमारी इस आर्ष पद्धति का समर्थन आधुनिक भौगोलिक न करें और भविष्य में उन्हें इसी रास्ते पर आना पड़े, किन्तु आर्ष दृष्टि शाश्वत तथा निर्विवाद है।

सर्ग के प्रारम्भ में तपःपूत ऋषियों के अन्तःकरण में सर्वान्तर्यामी परमात्मा की प्रेरणा से वैदिक ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ जो वैदिक ज्ञान संस्कृत वाङ्मय में परिस्फुटित हो उठा, जिसे हम वेद कहते हैं। सकल पुरुषार्थ के साधक वेद का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रादुर्भाव ही इसी धरती पर हुआ है। सात द्वीपों में जम्बूद्वीप प्रधान माना गया है जिसके मध्यपाती भारतखण्ड (भारतवर्ष। को कर्मभूमि कहा गया है। इस भारतवर्ष में अनेक देवनदियाँ, ऋषियों की तपस्थली, अनेक पर्वत एवं उनके भीतर गुफाएं हैं जिनका वर्णन वेद से लेकर पुराण साहित्यादि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है। यद्यपि कालक्रम से भारत की अनेक देवनदियाँ दूषित कर दी गई हैं, तीर्थस्थान भी आधुनिक झंझावात में धूमिल हो चुका है; फिर भी भारतवर्ष एक महान् तीर्थस्थान है, जहाँ आज भी परमेश्वर की आराधना के लिए अनेक दिव्य स्थल बने हुए हैं। आज के समुन्नत तथा वैज्ञानिक युग में भी प्राचीन देवमन्दिरों को देखकर आश्चर्य ही होता है। कितना अर्थ-व्ययी धैर्य एवं मनोयोग से दीर्घकाल तक इन देवमन्दिरों का निर्माण हुआ होगा, जिनमें भारत की समग्र संस्कृति शिलाओं पर उत्खनित है। इन तीर्थों की महिमा जानने वाले भारतीय जनमानस में ही नहीं, अपितु विश्व के सभी मनुष्यों में इनके दर्शन के लिए उत्कण्ठा उत्पन्न हो जाती है। फलत: इसी उत्कण्ठा से प्रेरित हो अनेकों कठिनाइयों को सहते हुए भी तीर्थयात्रा लोग करते ही हैं। प्राचीन काल की अपेक्षा आधुनिक युग में इन तीर्थयात्राओं के लिए अनेक साधन उपलब्ध हैं, जिनसे स्वल्प काल में ही तीर्थयात्राभिलाषी यात्रीगण भारत के समस्त तीर्थों की यात्रा कर लेते हैं। वैदिक सनातन धर्मानुसार भारतवर्ष विश्वात्मा परमेश्वर का विराट् स्वरूप है, जिसका समुन्नत शिरोभाग हिमालय है एवं जिसका चरण कन्याकुमारी है। इस विराट् स्वरूप भारतवर्ष के समुन्नत ललाट को जहाँ हिमालय धवलित करता है, वहाँ तीन समुद्रों का संगम स्थल कन्याकुमारी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीनों समुद्र भारत माता के पाद-प्रक्षालन में निरन्तर संलग्न हैं। चारधाम, सप्तपुरी, द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग तथा इक्यावन शक्तिपीठ सुप्रसिद्ध हैं। वैदिक साहित्य में यह भी प्रसिद्धि है कि इनके दर्शन एवं इनके जलों में स्नान करने से शाश्वत धाम प्राप्त होता है। जहाँ तीर्थ यात्रा में एक ओर मन का कौतुहल शान्त होता है। यह केवल भारतीय संस्कृति में नहीं। इस कलिकाल में धन, शारीरिक शक्ति तथा समय का अभाव सबके समक्ष दीखता है। ऐसी स्थिति में स्वल्प काल, स्वल्प द्रव्य तथा स्वल्प समय में अधिक से अधिक भारतवर्ष के तीर्थों का दर्शन एवं अवगाहन किया जाए, ऐसी भावना प्रत्येक भारतीय आस्तिक जनता के मानस में उत्पन्न होती है। इस आकाक्षा की पूर्ति के लिए समुचित काल की प्रतीक्षा हम भी कर रहे थे।

सन् १६६६ में कैलास पीठ में आसीन होने के बाद कैलास आश्रम के आराध्यदेव एवं पूर्वाचार्य मनीषियों की प्रेरणा से प्राचीनतम इस आश्रम के पुनरुद्धार के लिए हमारे मन में उत्कण्ठा उत्पन्न हुई। कुछ कार्य प्रारम्भ भी किया किन्तु उससे सभी आश्रमों का सम्यक् पुनरुद्धार एवं संस्कार की संभावना न देखकर इसी विशाल योजना का भाव हमारे मन में उत्पन्न हुआ। इधर कैलास आश्रम की स्थापना हुए १०० वर्ष होने जा रहे थे। बस क्या था, कैलास आश्रम शताब्दी समारोह मनाने का संकल्प बार-बार मन में उत्पन्न होने लगा। इस शताब्दी समारोह प्रसंग को लेकर पंचसूत्री कार्यक्रम की रचना की गई :—

१. दुर्लभ साहित्य, स्मारिका एवं चित्रों का प्रकाशन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. श्री कैलासाश्रम शताब्दी कीर्तिस्तम्भ की स्थापना ।
३. श्री कैलासाश्रम तथा शाखा आश्रमों का जीर्णोद्धार एवं निर्माण कार्य ।
४. शिक्षा, दीक्षा तथा सेवा से सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम पते आदि का रजिस्ट्रेशन ।
५. स्पेशल यात्रा ट्रेन तथा सम्मेलनादि द्वारा सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता को जनमानस में जगाना और श्री कैलासाश्रम के सौ वर्षों की उपलब्धियों से अवगत कराना ।

जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय स्तर पर अधिवेशन वर्ष पर्यन्त विभिन्न नगरों, उपनगरों में मनाने का संकल्प भी उत्पन्न हुआ । इस संकल्प को पूर्ण करने का सर्वोत्तम उपाय भारत के तीर्थों की यात्रा ही हो सकता है, ऐसा विचार कर तीन धाम स्पेशल यात्रा ट्रेन निकालने का निर्णय लिया गया । इसका अभिप्राय यह था कि यदि भारत के उन-उन प्रदेशों के अधिष्ठातृ देव का दर्शन एवं पूजन कर लिया जाय तो उन प्रदेशों के समस्त जनता के साथ हमारा संबन्ध सहज में सम्पन्न हो जाएगा । यह कार्य कोई सरल नहीं था । इसके लिए कुछ अनुभवी कर्मठ व्यक्तियों का संग्रह एवं प्रचुर प्रचार की आवश्यकता थी । सन् १९८० में कैलास आश्रम का वार्षिक उत्सव प्रारम्भ हो जाने पर अधिवेशनों में स्पेशल यात्रा ट्रेन की चर्चा होने लगी । यात्रा ट्रेन के लिए भारत सरकार रेल मन्त्रालय से सम्पर्क साधकर रेल उपलब्ध कराना, यह कोई सहज काम नहीं था । कुछ उत्साहित व्यक्तियों को इस कार्य के लिए हमने प्रेरित भी किया किन्तु वे इस कार्य में सफल नहीं हो पाए । समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रुतगति से भागता चला जा रहा था। भारत सरकार की नई नीति के अनुसार ४८ दिनों के लिए स्पेशल यात्रा ट्रेन मिलने की आशा धूमिल होने लग गई। दिल्ली के हमारे चातुर्मास्य का समय भी समाप्त होने जा रहा था। इस कार्य की कठिनाई को देखते हुए एक बार निराशा सी हो गई। सत्य पूछो तो "यशो भाग्येन लभ्यते" इस नियम के अनुसार जिसको यश प्राप्त होना होता है, उसी के हाथों कार्य होता है। श्री डॉ० उमेशानन्द शास्त्री जी को श्री कैलास विद्या प्रेस एवं पुस्तकों के सम्पादन कार्यों में उलझे हुए देखकर हम इस संबन्ध में उनसे कहना नहीं चाहते थे। किन्तु पूर्वोक्त स्थिति को देखकर हमने यात्रा ट्रेन की उपलब्धि के लिए डॉ श्रीमान् उमेशानन्द शास्त्री को प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने कार्य कौशल द्वारा मात्र एक सप्ताह में भारत सरकार रेल विभाग से ४८ दिनों के लिए रेल की स्वीकृति ले ली। फिर क्या था, अब कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल यात्रा ट्रेन का प्रचार होने लग गया। इसके पूर्व यात्रा ट्रेन संचालन के लिए एक समिति का गठन हो चुका था जिसके पदाधिकारी व सदस्य निम्न-नामांकित महानुभाव थे—

श्री कैलासाश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन समिति

म० मं० स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज	परमाध्यक्ष
डॉ० उमेशानन्द शास्त्री	संयोजक
स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती	संचालक
परमानन्द चड्ढा साहिब	प्रधान
बालकृष्ण गुप्ता	सचिव
मुंशीराम मेंहदीरत्ता	सचिव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मालिक राम	सचिव
स्वर्णलाल तुली	सचिव
मुंशीराम नागपाल	सचिव
मुन्नालाल	कोषाध्यक्ष

स्वामी अशेषानन्द	सदस्य	ब्र. रामानन्द शास्त्री	सदस्य
स्वामी उमानन्द गिरि	,,	स्वामी शम्भू गिरि	,,
स्वामी महेश भारती	,,	स्वा. ओंकारानन्द आदिवदरी	
स्वा. ज्ञानस्वरूपानन्द भारती		श्री राम बत्रा	,,
मोती सागर कोहली	,,	केवल कृष्ण नय्यर	,,
मक्खन लाल भट्ट	,,	भोमराज बोहरा	,,
अन्नराज जी व्यास	,,	भँवरलाल बोहरा	,,
डॉ. परशुराम जोशी	,,	दाऊलाल टरु	,,
कन्हैयालाल बोहरा	,,	सोमनाथ मेहता	,,
देशराज चानना	,,	चिरञ्जी लाल राठी	,,
मोहिनी बाई	,,	शान्ति देवी	,,
राम चमेली	,,	राजमाता	,,
वीराँ वाली	,,	जीवनी बाई बत्रा	,,

सभी यथाशक्ति इस कार्य के सम्पादन में जुट गए। तीर्थ-यात्रियों का आवेदन तथा अग्रिम राशि त्वरित गति से आने लग गई। धनराशि के संग्रह एवं सुरक्षा की व्यवस्था सभी पदाधिकारी करने लग गए।

यात्रा ट्रेन में चलने वाले यात्रियों को पूर्ण सुविधा प्राप्त हो एवं शुद्ध भोजन जलपानादि मिले, इसके लिये पूरा ध्यान रखा गया। इसमें सभी पदाधिकारी पूरी सावधानी से काम करने लग गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनांक २१-१२-८० से दिनांक ६-२-८१ तक कुल ४८ दिनों की यात्रा के लिए दिल्ली से ही आवश्यक साधनों को लेने का प्रवन्ध किया गया। जिसका यात्रा के ऊपर अच्छा प्रभाव रहा। यात्री लोग दिनांक २१-१२-८० की प्रतीक्षा अत्यन्त आतुरता से करने लग गए। डॉ० उमेशानन्द शास्त्री जी भोजन एवं विश्राम को छोड़कर अहोरात्र इस कार्य में संलग्न थे। आखिर वह समय आ ही गया जब हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल यात्रा ट्रेन प्रातः १० बजे छूटने वाली थी। ट्रेन के सभी डिब्बे अच्छे, व्यवस्थित तथा सुखद थे। फर्स्ट क्लास के तीन डिब्बों के अतिरिक्त सैकिण्ड क्लास के सभी कुशन युक्त थ्री टायर के थे। दूसरी यात्रा ट्रेनों के समान इस यात्रा ट्रेन में फट्टे नहीं लगाए गए थे। सभी यात्रियों के लिए पूरी बर्थ दी गई थी। प्रतिदिन दो बार जलपान, चाय तथा दो बार शुद्ध घृत से बने शाकाहारी भोजन का सुप्रबन्ध था। १५ साल के बच्चों तक के लिए इस यात्रा में यात्रा-व्यय अथवा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था की गई। ३२ महात्माओं एवं सभी सुरक्षादि व्यवस्था में संपृक्त ५० कर्मचारियों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया गया था।

प्रार्थना एवं प्रवचन का श्रवण सभी यात्रियों को सुलभ हो, इसके लिए सभी डिब्बों में दो-दो लाउडस्पीकर लगे हुए थे। तीर्थयात्रा प्रारम्भ होने से पहले माइक द्वारा इस यात्रा का विवरण, माहात्म्य, कृत्य एवं पूजापद्धति स्पेशल यात्रा ट्रेन के परमाध्यक्ष अनन्त श्रीविभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज सुना दिया करते थे। प्रतिदिन प्रातःकाल की प्रार्थना में हनुमान चालीसा रखा गया था तथा सायंकाल की प्रार्थना में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शिवनीराजन, ध्यान, पुष्पाञ्जलि तथा शिव महिम्न स्तोत्र का पाठ रखा गया था जो यथासमय नियमित रूप से हुआ करते थे। दिनांक २१-१२-८० को प्रात: १० बजे गन्त्री भगवती की पूजा कर यात्रा ट्रेन आगे बढ़ी। उस समय प्लेटफार्म पर साढ़े छ: सौ यात्रियों के अतिरिक्त विदाई देने वालों की इतनी बड़ी भीड़ थी कि प्लेटफार्म से गुजरना बड़ा ही कठिन था। उधर मूवी फिल्म के डायरेक्टर श्री ब्र० रामानन्द जी शास्त्री एवं श्रीमान् स्वर्णलाल जी तुली अत्यन्त सावधानी के साथ फिल्म लेने में तत्पर थे। श्रीमान् स्वर्णलाल जी तुली दिल्ली से कुरुक्षेत्र तथा हरिद्वार-ऋषिकेश की यात्रा तक साथ रहे किन्तु श्रीमान् ब्रह्मचारी रामानन्द जी शास्त्री पूरी यात्रा में साथ रहे एवं दिन रात पूर्ण सहयोग दिया। उन्हें मूवी फिल्म के अतिरिक्त किसी अन्य विभाग का दायित्व नियमत: नहीं दिया गया था, फिर भी अपने कार्यकौशल एवं आलस्यरहित स्वभाव के कारण प्रत्येक विभाग में अत्यन्त सावधानी के साथ सहयोग दे रहे थे। निम्न नामाङ्कित सन्त इस यात्रा में शामिल थे—

१. पूज्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज
२. पूज्य श्री स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज
३. डॉ० उमेशानन्द जी शास्त्री
४. श्री स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज
५. श्री स्वामी आत्मानन्द पुरी जी महाराज, खम्भात
६. श्री महन्त शिवानन्द जी महाराज, भिलाड़िया घाट
७. श्री स्वामी उमानन्द गिरि जी महाराज,
प्रबन्धक, कैलास आश्रम, उत्तरकाशी।
८. श्री स्वामी शम्भु गिरि जी महाराज,
प्रबन्धक, दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९. श्री स्वामी महेश भारती जी महाराज
१०. श्री स्वामी ज्ञानस्वरूपानन्द भारती जी महाराज
११. श्री स्वामी शुकदेवानन्द गिरि जी महाराज
१२. श्री स्वामी अशेषानन्द सरस्वती जी महाराज
१३. श्री स्वामी ओंकारानन्द गिरि जी महाराज, आदिबदरी
१४. श्री स्वामी सन्तोषानन्द गिरि जी महाराज
१५. श्री स्वामी शंकरानन्द गिरि जी महाराज
१६. श्री स्वामी मेधानन्द पुरी जी महाराज
१७. श्री स्वामी रामानन्द गिरि जी
१८. श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
१९. श्री ब्र० रामानन्द जी शास्त्री
२०. श्री ब्र० विष्णु चैतन्य जी
२१. श्री ब्र० प्रेमानन्द जी
२२. श्री ब्र० अनन्त चैतन्य जी
२३. श्री ब्र० गवेन्द्रानन्द जी
२४. श्री स्वामी राघवेन्द्रानन्द जी
२५. श्री ब्र० रामकृष्णानन्द जी,

प्रबन्धक, अशोक आश्रम, भरूच।

२६. श्री ब्र० श्यामानन्द जी
२७. श्री ब्र० शिवचैतन्य जी
२८. श्री ब्र० रामानन्द जी
२९. श्री ब्र० महेश्वरानन्द जी
३०. श्री ब्र० शङ्कर चैतन्य जी

सभी महात्माओं को यात्रा ट्रेन की व्यवस्था के लिए कुछ न कुछ दायित्व सौंपा गया था, जिसे यथासंभव सभी निभा रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। विशेषतः भण्डार की व्यवस्था श्री स्वामी उमानन्द गिरि जी शास्त्री, श्री स्वामी शम्भु गिरि जी तथा श्री स्वामी महेश भारती पूर्ण सावधानी के साथ कर रहे थे। यात्रा ट्रेन हजरत निजामुद्दीन से नई दिल्ली स्टेशन होती हुई कुरुक्षेत्र निर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ी। जगह-जगह स्टेशनों पर स्वागत के लिए फूलमाला सहित भक्तों की टोलियाँ उपस्थित थीं। निर्दिष्ट समय से कुछ विलम्ब में कुरुक्षेत्र स्टेशन यात्रा ट्रेन पहुँची। वहाँ पर श्री स्वामी शिवानन्द जी शास्त्री के नेतृत्व में रामाश्रम समाना मण्डी के सैकड़ों भक्त समुदाय ने जयघोष किया। कुरुक्षेत्र तीर्थ की यात्रा के लिए स्पेशल बसों का प्रबन्ध किया गया था, उन बसों द्वारा श्रीकृष्ण धाम का दर्शन, सूर्यकुण्ड तथा ब्रह्म सरोवर का स्नान ज्योतिसर का दर्शन एवं स्थाण्वेश्वर महादेव का दर्शन कर स्टेशन पर सभी यात्री पहुँचे। भोजन के पश्चात् सभी ने अपनी-अपनी बर्थ ग्रहण की। गाड़ी अम्बाला होती हुई हरिद्वार की ओर बढ़ी। इस प्रकार इस यात्रा ट्रेन की सौविध्य तथा कठिनाइयों का विस्तृत वर्णन श्री कैलास आश्रम तीन धाम स्पेशल यात्रा ट्रेन संस्मरण लेख में पाठकगण पढ़ेंगे ही; अतः इसका यहाँ विस्तृत वर्णन अनावश्यक प्रतीत होता है।

इस यात्रा ट्रेन में दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी के निर्देश पर दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के संचालकों ने अत्यन्त तत्परता से सहयोग दिया। श्रीमान् श्रीनिवास गुप्ता जी ने हवड़ा में बसों, कारों तथा स्टीमरों का प्रबन्ध पहले से कर रखा था, जिससे कलकत्ता एवं गङ्गासागर की यात्रा में कोई कठिनाई नहीं हुई।

हवडा स्टेशन पर कलकत्ता के भक्तों का स्वागत श्लाघनीय रहा। भुवनेश्वर एवं पुरी में भी दिव्य जीवन संघ शाखा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संचालकों ने अच्छी तत्परता दिखलाई। भुवनेश्वर के राम मन्दिर में उड़ीसा प्रदेश के हाईकोर्ट के प्रधान न्यायाधीश द्वारा यात्रा ट्रेन के परमाध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, स्वामी हरिहर तीर्थ एवं सभी महात्माओं का भव्य स्वागत कराया गया। जगन्नाथपुरी का समुद्र स्नान अत्यन्त आह्लाद-जनक रहा। भगवान् जगन्नाथ तथा अन्य दिव्य विग्रहों का दर्शन भी सुखद रहा किन्तु जगन्नाथपुरी की पीठ गोवर्धन मठ को देखकर अत्यन्त निराशा हुई जहाँ पर केवल दीवार ही खड़ी थी; साधक और महात्मा एक भी नहीं था। वहाँ के पीठाधीश्वर को भेंट करने के लिए कैलास आश्रम से प्रकाशित साहित्य ले गये थे, जिसे उनकी अनुपस्थिति में वहाँ के एक पीताम्बर ब्रह्मचारी को दे दी। आशा है कि पुरी के शङ्कराचार्य जी को उक्त भेंट प्राप्त हो गई होगी किन्तु उसकी सूचना अद्यावधि हमें नहीं मिली।

विजयवाड़ा से भगवान् मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन कराने में श्रीमान् श्रीनिवास गुप्ता जी के सम्बन्धी महानुभाव का सहयोग श्लाघनीय रहा। रेनीगुण्टा स्टेशन से बसों एवं कारों द्वारा तिरुमले-तिरुपति जी का दर्शन अत्यन्त आह्लादजनक रहा। सरोवर में स्नान कर भगवान् बाला जी का दर्शन सरलता से हो गया, भीड़ केवल अपनी यात्रियों की ही थी, अन्य कोई विशेष भीड़ नहीं थी। रायपुरम् (मद्रास) स्टेशन पर गाड़ी रुकने पर मद्रास निवासी फलौदी के भक्तों का स्वागत सर्वोत्कृष्ट अत्यन्त श्लाघनीय रहा, इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी थोड़ी ही है। यात्रा ट्रेन के परमाध्यक्ष के सहित सभी महात्माओं का स्वागत एवं भव्य अभिनन्दन महेश्वरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवास में किया गया। हजारों रुपयों की थैलियाँ भेंट की गईं। जिस समय यात्री लोग महेश्वरी निवास मद्रास में भोजन के लिए बैठे, उस समय सभी को ऐसा महसूस होता था, मानों हम बाराती बन कर आए हों। मद्रास आने से विदा होने तक लगातार ये भक्तगण सेवा के लिए तत्पर रहे। मद्रास के दिव्य मन्दिरों के दर्शन के अतिरिक्त महाबलिपुरम्, पक्षि तीर्थ, विष्णु काञ्ची तथा शिवकाञ्चो के दर्शन बसों द्वारा कराए गए। शिवकाञ्ची के शंकराचार्य मठ के निकट एक विशाल मस्जिद देखी। शंकराचार्य मठ को देखकर निराशा हुई, वहाँ किसी सन्त या साधक का दर्शन नहीं हुआ, कुछ मुनीम वहीखाते लिए बैठे देखे गए। उनकी पीठ के सामने एक अत्यन्त प्रसिद्ध श्लोक "श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयम्" इत्यादि लिखा था; जिसमें चार अशुद्धियाँ थीं। उन अशुद्धियों की ओर ध्यान दिलाने पर उसे समझने वाला व्यक्ति भी वहाँ कोई नहीं मिला।

मद्रास से छोटी लाइन द्वारा दक्षिण की यात्रा करें अथवा छोटी लाइन को छोड़कर बड़ी लाइन से चलें और आवश्यकतानुसार स्पेशल बसों द्वारा सभी यात्राओं को पूर्ण करें; एक बड़ा भारी प्रश्न था। छोटी लाइन की यात्रा से ट्रेन उपलब्ध थी किन्तु बार-बार ट्रेन को बदलना एवं छोटी लाइन की गाड़ी में यात्रियों को पूरी बर्थ न मिलने वाली कठिनाई को ध्यान में रख कर छोटी लाइन को छोड़कर बड़ी लाइन की ट्रेन में यात्रा करना उपयुक्त है, इस बात का अन्तिम निर्णय लेना एक बड़ी भारी समस्या थी, हमारी यात्रा ट्रेन के सभी पदाधिकारी इसका निर्णय लेना हमारे ऊपर छोड़ा। हम छोटी लाइन से यात्रा के लिए भारत सरकार रेल विभाग को किराया दे चुके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे, फिर भी यात्रियों की सुविधा के लिए हमने निर्णय लिया कि अब दक्षिण की शेष यात्रा बड़ी लाइन से करेंगे और आवश्यकतानुसार शेष यात्रा बसों से सम्पन्न करेंगे। फलतः वैसे ही किया गया। इससे कठिनाइयों से बचने के साथ-साथ केरल प्रान्त के सुरम्य दर्शन के बाद बड़ा ही आनन्द तथा साथ ही त्रिवेन्द्रम् एवं भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य की जन्मभूमि कालडी का दर्शन सुलभ हो गया, जो छोटी लाइन से होना संभव नहीं था। इस निर्णय से एक हानि यह हुई कि दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के संचालकों ने अपने अध्यक्ष के निर्देश पर हमारी यात्रा ट्रेन के स्वागत के लिए जो तैयारियाँ कर रखी थी, उन्हें स्वागत का अवसर नहीं मिल सका।

त्रिचनापल्ली से श्रीरङ्गम्, अरुणाचलम्, रामेश्वरम् तथा लौटते समय मदुरै मीनाक्षी के दर्शनों में एकबार अत्यन्त कठिनाई का अनुभव करना पड़ा। उन दिनों मदुरै में अन्तर्राष्ट्रीय तमिल संगम का कार्यक्रम चल रहा था, जिसमें सभी वाहन एवं सरकारी उपकरण लगे हुए थे। त्रिची से रामेश्वरम् के लिए छोटी लाइन के कुछ स्पेशल डिब्बे डॉ० उमेशानन्द शास्त्री जी ने उपलब्ध कराए, जिनमें सभी यात्रियों को बैठाना संभव नहीं था। उस समय डॉ० उमेशानन्द शास्त्री जी को कटु अनुभव हुआ, जिसे धैर्य एवं अत्यन्त उत्साह के साथ उन्होंने सहन किया, एतदर्थ हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। कुछ यात्रियों ने उस ट्रेन में बैठना अस्वीकार कर दिया और वे स्पेशल टैक्सी द्वारा 'मण्डपम्' स्टेशन पहुँचे किन्तु अन्ततः उसी ट्रेन में उन स्पेशल टैक्सी के यात्रियों को भी बेठना पड़ा, जिसमें त्रिची से रामेश्वरम् के लिए हमारे यात्री लोग यात्रा कर रहे थे। रामेश्वरम्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्टेशन पहुँचकर लक्ष्मणकुण्ड, सीताकुण्ड, समुद्रस्नान एवं मन्दिर की परिधि में स्थित समस्त कूपों का स्नान अत्यन्त आनन्दप्रद रहा। उसी समय रामेश्वरम् में श्रीमान् मुरारी बापु का रामायण नवाह्न परायण प्रवचन चल रहा था। हम बापुजी से भी मिले और यात्रा के बाद स्टेशन की ओर लौटते समय मुरारी बापु श्रद्धेय श्री तीर्थजी तथा हमारे साथ अत्यन्त प्रेम-पूर्वक मिले। 'मण्डपम्' स्टेशन से पुनः कार द्वारा कुछ यात्री हमारे साथ मदुरै-मीनाक्षी दर्शन के लिए आए और शेष यात्री ट्रेन से मदुरै पहुँचे। स्नानादि से निवृत्त हो प्रातःकाल ही भगवती मीनाक्षी देवीजी का दर्शन किया। उससे पहले दिन श्रीरङ्गम् और तञ्जावुर के मन्दिरों के दिव्य दर्शन किए थे।

एक बार कन्याकुमारी से पहले नागरकोइल स्टेशन पर हमारे डॉ० उमेशानन्द शास्त्री को पुनः कठिनाई का सामना पड़ा। कन्याकुमारी में समुद्रस्नान कन्याकुमारी दर्शन तथा स्टीमर द्वारा स्वामी विवेकानन्द स्मारक का दर्शन चिरस्मरणीय है। लौटते समय 'शुचीन्द्रम्' का दर्शन हुआ। नागरकोइल आकर नागराज मन्दिर के भी दर्शन किए। कन्याकुमारी के दर्शन से तृप्ति न होने के कारण एक बार सूर्यास्त दर्शन करने पुनः कन्याकुमारी गये किन्तु आकाश मेघाच्छन्न होने के कारण स्पष्ट सूर्यास्त दर्शन न हो सका। वहाँ से त्रिवेन्द्रम् आकर शेषशायी भगवान् पद्मनाभ का दर्शन एवं कालड़ी में आचार्य शंकर की जन्मस्थली एवं उनकी माता की समाधि के दर्शन किए।

इन यात्राओं से बंगलौर लौटते समय मार्ग में तीन दिन लग गए। बंगलौर, मैसूर तथा शृंगेरीमठ का दर्शन यहाँ से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना था, किन्तु प्रयत्न के बावजूद भी दिव्य जीवन संघ शाखा के कार्यकर्ता (.........) बसों की व्यवस्था करने में सफल नहीं हो सके फिर भी उनका प्रयत्न अत्यन्त श्लाघनीय रहा। शृंगेरी की यात्रा न हो सकी किन्तु बंगलौर, मैसूर, चामुण्डा-देवी, विशाल नान्दी, राजभवन तथा वृन्दावन गार्डन का दर्शन अत्यन्त हर्षोत्पादक था। दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के निर्देश पर मैसूर में वृन्दावन गार्डन के समीप कर्नाटक के मुख्य मन्त्री की ओर से हमारी यात्रा ट्रेन के यात्रियों के स्वागतार्थ अच्छी तैयारी थी, जिसे देखकर प्रसन्नता हुई। बंगलौर लौटने तक यात्रा ट्रेन इतनी लेट हो चुकी थी, जिसे देखकर कुछ यात्रियों के मन में पूरी यात्रा की निराशा सी हो गई। इस स्थिति में हमारे यात्रा ट्रेन के पदाधिकारी घबरा गये। फलतः डॉ० उमेशानन्द शास्त्री को पुनः दायित्व अपने कन्धों पर लेना पड़ा। इस बार आशु-तोष भगवान् ने पूर्ण सहायता की। यहाँ से यात्रा सुव्यवस्थित होने लग गई। पण्डरपुर, पूना, मनमाड, घुश्मेश्वर, अजन्ता ऐलोरा गुफाओं के दर्शन अत्यन्त सन्तोष हुआ। यहाँ से बम्बई निवासी फलौदी के भक्तों का संग भी मिलने लगा, जो अत्यन्त आतुरता से हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। पूना से भीमाशङ्कर के लिए बसों की व्यवस्था न होने के कारण नासिक से महा-राष्ट्र रोडवेज की बसों द्वारा भीमाशङ्कर का दर्शन करना पड़ा। २६ जनवरी १९८१ गणतन्त्र दिवस पर हमने नासिक त्र्यम्बकेश्वर का दर्शन किया और अगले दिन भीमाशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग का दर्शन किया। भीमाशङ्कर की यात्रा के समय कुछ यात्रियों ने गैर-जिम्मेदारी बरती। परिणाम यह हुआ कि अनुबन्धित सभी बसों में से दो-तीन बसों को खाली लौटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ा, जिनके लिए पहले से अनुबन्धित राशि दी जा चुकी थी। यदि वे यात्री हमें पहले से ही संकेत किए होते कि हम भीमाशङ्कर की यात्रा नहीं करेंगे तो हमारी यात्रा ट्रेन समिति को इतनी आर्थिक क्षति न होती।

अस्तु हम २८ जनवरी १९८१ को बम्बई पहुँचे; जहाँ हमें २२ को पहुँचना था। अब बम्बई में दो दिन न ठहर कर एक दिन ठहरने का निर्णय लिया गया। भावी यात्रा का स्मरण करते हुए बम्बई यात्रा का एक दिन निरस्त कर दिया गया। उसी दिन रात्रि बारह बजे के बाद यात्रा ट्रेन अहमदाबाद की ओर चली। बम्बई में फलौदी भक्तों का पुनः स्वागत श्लाघनीय रहा। उन्होंने मारवाड़ी धर्मशाला, भूलेश्वर रोड में हमारे यात्रियों के लिए भव्य स्वागत की तैयारी कर रखी थी। इनके अतिरिक्त श्रीमान् प्रवीण भाई नानावटी तथा स्वामी प्रेमपुरी अध्यात्म विद्याभवन के मैनेजिंग ट्रस्टी श्रीमान् हरिलाल जी ड्रेस वाले का स्वागत भी श्लाघनीय रहा। इन सभी यात्राओं में कंधे से कंधा मिलाकर श्रद्धेय श्री छोटे महाराज जी चल रहे थे जैसे मनुष्य की छाया मनुष्य के साथ-साथ चलती हो। डॉ० उमेशानन्द जी शास्त्री ने हमसे परामर्श कर सौराष्ट्र की यात्रा के लिए पुनः एक अभिनव निर्णय लिया और बम्बई में अहमदाबाद से होने वाली छोटी लाइन की यात्रा के स्थान पर बसों द्वारा यात्रा करने की घोषणा कर दी। अहमदाबाद में बसों के प्रवन्ध के लिए कुछ महात्माओं को भेजा किन्तु वे पूना से भीमाशङ्कर की यात्रा की भाँति यहाँ भी बसों की व्यवस्था करने में असफल रहे। अहमदाबाद हम पाँच दिन विलम्ब से पहुँचे थे। स्टेशन पर आते ही बस के प्रबन्धकों ने हमें सूचना दी कि किसी भी मूल्य पर अहमदाबाद में सौराष्ट्र यात्रा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिए बसों का प्रबन्ध नहीं हो सकता। एक ओर छोटी लाइन को हमने निरस्त कर दिया, दूसरी ओर सौराष्ट्र यात्रा के लिए बसों का प्रबन्ध कथमपि संभव नहीं है, इस बात को सुनकर मन में निराशा सी हो गई किन्तु हमारे महारथ डाँ० उमेशानन्द शास्त्री जी ने पुनः साहस से काम लिया। हम तो अहमदाबाद स्टेशन पर ही रहे, केवल २५ मिनट बाद उनका सन्देश हमें मिला कि "यथेष्ट बसें हो गई हैं, आप सभी यात्रियों को तैयार रहने के लिए कहिएगा"। भगवत्कृपा से इस बार बसें इतनी अच्छी मिली, जिनपर बैठने के बाद यात्री लोग हवाई जहाज की यात्रा का सुख अनुभव कर रहे थे। बसों द्वारा सौराष्ट्र की यात्रा करने से एक विशिष्ट लाभ यह हुआ कि पाँच दिनों की यात्रा को डेढ़ दिन में सम्पन्न कर लिया गया। जूनागढ़, पोरबन्दर, बेरावल सोमनाथ, हरसिद्धि देवी, भेट द्वारका, नागेश ज्योतिर्लिङ्ग तथा गोमती द्वारका की यात्रा अत्यन्त सुखद रही।

अहमदाबाद के पश्चात् डाकोर जी, उज्जैन महाकाल, ओङ्कारेश्वर की यात्रा कर हम कोटा पहुँचे। वहाँ से छोटी लाइन को छोड़कर पुनः बसों द्वारा राजस्थान के तीर्थों की यात्रा करने से स्वल्प समय में यह यात्रा भी सम्पन्न हो गई। कोटा से पुष्कर होते हुए नाथ द्वारा एक ही दिन में पहुँचे, रात्रि विश्राम कर प्रातःकाल श्रीनाथ जी की मङ्गला आरती का दर्शन सभी ने किया। इस यात्रा प्रसंग में अयोध्या हनुमान-गढ़ी तथा नाथद्वारा श्रीनाथजी मन्दिर की व्यवस्था देख हमारे मन में अत्यन्त निराशा हुई। थोड़ी भी धार्मिक भावना रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। चढ़ी हुई पुष्पमाला को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाजार में बिकने के लिए भेज देना और पुनः उस माला को यात्री लोग खरीदकर हनुमान जी को चढ़ा रहे थे। न जाने हनुमान गढ़ी में ये पुष्पमालाएँ लौट-लौटकर कितनी बार हनुमान जी को चढ़ाई गई। नाथद्वारा में फूल की टोकरी, पुष्प माला के अतिरिक्त सब्जियाँ और दुग्धादि भी बार-बार श्रीनाथ जी पर चढ़े हुए बाजार में आते थे और खरीदकर पुनः यात्री लोग श्रीनाथ जी को समर्पित कर रहे थे। बेचारे अन्धविश्वासी भोले-भाले उन यात्रियों को इस रहस्य का कोई पता नहीं था, किन्तु हमने जो घटना आँखों देखी, इसी का उल्लेख इस संस्मरण में किया है। यदि इन मन्दिरों से सबन्धित कार्यकर्ता अपनी इस दुष्प्रवृत्ति से दूर हटकर धार्मिक भावना से ओत-प्रोत हो मन्दिर की व्यवस्था करें तो अत्युत्तम होगा।

कोटा से मथुरा की ओर हमारी यात्रा ट्रेन चली और दिनांक ६-२-८१ को प्रातःकाल हम मथुरा जंक्शन पहुँचे। वहाँ पर हमारे स्वागत के लिए दिल्ली के कुछ भक्त पहुँचे हुए थे। साथ ही समादरणीय श्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज के निर्देशानुसार उनके वृन्दावन आश्रम के व्यवस्थापकगण भी स्टेशन पहुँचे हुए थे। उन्होंने सभी यात्रियों सहित हमें वृन्दावनस्थ अपने आश्रम में पधारने के लिए साग्रह आमन्त्रित किया किन्तु समय संकोच के कारण हमने सभी यात्रियों को मथुरा एवं वृन्दावन की यात्रा कर १२ बजे तक लौटने का निर्देश दिया और श्रद्धेय श्री महाराज जी एवं कुछ महात्माओं के सहित हम वृन्दावन यात्रा प्रसग में श्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज के आश्रम में गए। उन्होंने सादर सप्रेम स्वागत किया, जिससे मन में अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उधर वृन्दावन के पण्डों ने गमछे उतारने का भी प्रयत्न किया, जिसे देख मन में ठेस भी लगी। मथुरा जंक्शन पर खीर-मालपुआदि अनेकविध व्यञ्जनों का भंडारा हुआ। यात्रा ट्रेन का यह अन्तिम भण्डारा था। यहाँ से फलौदी-कानपुर के यात्री यात्रा संपन्न देख अपने घर की ओर विदा हुए। मथुरा जंक्शन पर आगरा के श्री सूरजभान एवं ब्रजमोहन सिंघल भी परिवार सहित हमारे स्वागतार्थ आए हुए थे।

आज हमें इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता हो रही थी कि हमारे कुछ विशिष्ट यात्री निराश हो जहाँ ऐसा कह रहे थे कि निर्धारित पूर्ण यात्रा नियत समय पर नहीं हो सकेगी, उसके विपरीत सभी यात्राओं को पूर्णतया सम्पन्न कर केवल डेढ़ घंटा विलम्ब से दिनांक ६-२-८१ को निजामुद्दीन स्टेशन पर हम पहुँचे। स्वागत के लिए दिल्लीस्थ भक्तों की बड़ी भारी भीड़ थी।

इस यात्रा ट्रेन प्रसंग में एक-एक यात्री ने इतना अधिक सामान खरीद रखा था कि यदि उन्हें बड़ी लाइन से छोटी लाइन एवं छोटी लाइन से बड़ी लाइन में तीन बार परिवर्तन करना पड़ता तो उन्हें अपनी नानी याद आने लगती। उनके सामान से निजामुद्दीन स्टेशन का प्लेटफार्म भर गया। इस यात्रा में किसी भी यात्री की कोई चीज नहीं खोई गयी, यहाँ तक कि कन्याकुमारी समुद्र किनारे जिस अँगूठी को एक यात्री छोड़ आए थे, वह अँगूठी भी उन्हें कन्ट्रोल रूम की सूचना पर मिल गई। फलौदी निवासी डॉ० व्यास की सेवा इस यात्रा में श्लाघनीय रही। एतदर्थ उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद है। अन्त में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० उमेशानन्द जी शास्त्री, ब्रह्मचारी रामानन्द जी शास्त्री, भोजन व्यवस्था में संलग्न सभी महात्माओं, श्री कैलास आश्रम शताब्दी तीन धाम स्पेशल यात्रा ट्रेन समिति के सभी पदाधिकारियों को हम धन्यवाद देते हैं, जिनके सत्प्रयास से यह यात्रा पूर्णतया सफल रही। यात्रा के दिनों भोजनादि व्यवस्था एवं बसों के विपुल व्यय को देखते हुए अनेक सहृदय यात्रियों ने हमसे कई बार अनुरोध किया कि महाराज जी! इस यात्रा ट्रेन समिति को यदि कोई आर्थिक नुकसान होता है तो उसे हम सब मिलकर पूरा करेंगे, आप इस बात की चिन्ता न करें। पर यात्रा प्रारम्भ होने से पहले और यात्रा के दिनों में भी हमने बार-बार घोषणा की थी कि किसी भी यात्री को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इस पर विशेष ध्यान रखा जाए। और यदि इस यात्रा ट्रेन समिति को कुछ आर्थिक क्षति होती हो तो इसकी पूर्ति भिक्षावृत्ति से हम करेंगे। भगवत्कृपा से आज हमारी यह भावना पूर्ण हुई। जहाँ आर्थिक नुकसान की बात यात्री लोग कर रहे थे, वहाँ यात्रा सम्पन्न हो जाने के बाद लगभग तीन लाख रुपये इस यात्रा ट्रेन समिति को बच गए; जिन्हें प्रत्येक यात्री के लिए पाँच-पाँच सौ रुपये साक्षात्, चैक तथा ड्राफ्ट द्वारा वापिस कर दिए गए। इस अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए हमारी यात्रा ट्रेन समिति के सभी पदाधिकारी तथा सदस्य धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने अत्यन्त तत्परता, सादगी तथा नेकनियती से अपने दायित्व को निभाया। यात्रा ट्रेन निकालना एक व्यवसाय है, इस लोकापवाद को हमारी यात्रा ट्रेन समिति ने ध्वस्त कर दिया और इस दिशा में अभिनव आदर्श उपस्थित किया जो दूसरी यात्रा ट्रेन निकालने वालों के लिए अनुकरणीय है। हम अन्य स्पेशल यात्रा ट्रेन प्रबन्धकों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भी आशा करते हैं कि इस आदर्श को अपना कर उपर्युक्त लोकापवाद के भय से सर्वदा मुक्त हो जाएं।

स्पेशल यात्रा ट्रेन में प्रायशः मध्यम वर्ग के यात्री होते हैं, जिनमें बहुत सी विधवा माताएँ एवं वृद्ध होते हैं, जो अपने जीवन के आधार जेवर को बेचकर भी पुण्यार्जन के लिए स्पेशल यात्रा ट्रेन अधिकारियों के हाथों में राशि सौंप देते हैं। ऐसी स्थिति में यात्रा कराने के लिए यात्रा के नाम पर उपर्युक्त यात्रियों से धन लेकर यदि अन्य कार्यों में खर्च करते हैं तो इससे जघन्य कृत्य और दूसरा नहीं हो सकता। इसे ध्यान में रखकर ही हमने ऐसा संकल्प लिया था कि यात्रा संपन्न हो जाने के बाद बची हुई राशि को सम्बन्धित यात्रियों को वापिस कर दिया जाएगा और घट जाने पर भिक्षावृत्ति से उस घाटे को पूरा किया जाएगा। सर्वान्तर्यामी परमात्मा ने हमारे इस संकल्प को पूरा किया, इससे हमें परम सन्तोष एवं हर्ष है। अतः उस परमेश्वर के चरणों में भूरिशः नमस्कार करते हुए तथा यात्रा ट्रेन समिति के प्रबन्धकों को पुनः धन्यवाद देते हुए अपनी लेखनी को विराम देते हैं। इत्यों शम्।

भगवत्पादीयः

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन

एक चिरस्मरणीय तीर्थयात्रा

श्री कैलास आश्रम भगवान् शङ्कराचार्य के अद्वैत वेदान्त सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार के प्रति पिछले एक सौ वर्षों से जागरूक रहा है। अपनी एक शताब्दी के इतिहास में इसने बहुत कुछ देखा। भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में बहुत से उतार-चढ़ाव इस बीच में हुए परन्तु इसकी मर्यादा अक्षुण्ण बनी रही। वर्तमान कैलास पीठाधीश्वर वेदान्त-सर्वदर्शनाचार्य अनन्त श्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के पदभार संभालने के अनन्तर आश्रम एवं इसकी शाखाओं का चहुँदिश विकास हुआ है। स्वामी जी अपने पूर्व पीठाधीश्वरों की तरह आदर्श परम्परा अनुपालन कर-करवा रहे हैं। तेजी से बदलते हुए मूल्यों में कैलास आश्रम भौतिक झञ्झावातों से बिल्कुल प्रभावित नहीं हो पाया है। अद्वैत सिद्धान्त का श्रवण-पठन-पाठन यहाँ साधक एवं सन्त-महात्मा नियमानुसार निष्ठापूर्वक करते हैं। संसार एवं परमार्थ अथवा अविद्या एवं विद्या के स्वरूप अन्वेषण में तत्पर यहाँ के आश्रम-वासी अब भी देखे जा सकते हैं। स्वयं करपात्री जी महाराज ने एक बार यहाँ की अद्वैत निष्ठा देखकर कहा था कि यहाँ जिस प्रकार भगवान् शङ्कराचार्य के अद्वैत ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन चलता है, वह सभी संन्यासी समाज एवं शङ्कराचार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्त श्री हरिहर तीर्थ जी महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मठों के लिए आदर्श है। भगवान् शङ्कराचार्य ने अपने विचार-धारा के प्रचार-प्रसार के लिए चार मठों की स्थापना की थी। किन्तु कालक्रम से प्राय: अब उनमें उस परम्परा में अक्षुण्णता नहीं रही। कारण जो भी रहा हो, इस विश्वमान्य दार्शनिक सिद्धान्त की भारत में सतत प्रतिष्ठा होनी चाहिए जिसके लिए कैलास आश्रम को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ी।

आज मे १०० वर्ष पूर्व संस्थापक महाराजश्री स्वामी धनराज गिरि जी ने इन मूल उद्देश्यों की पूर्ति हेतु श्री कैलास आश्रम की प्रतिष्ठा की थी और वर्तमान दशम पीठाधीश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज ने उन्हीं आधारभूत सिद्धान्तों को पूर्ण उत्साह से पुनः प्रतिष्ठापित किया। देश-विदेश में भारतवर्ष की आध्यात्मिक ज्योति की गरिमा को प्रज्वलित करने वाले अधिकांश महापुरुषों को किसी न किसी रूप में कैलास आश्रम का आशीर्वाद मिलता रहा है। एक ऐसा आश्रम जिसमें दो-एक दिन का वास साधक के जीवन में ज्ञानाग्नि को हमेशा-हमेशा के लिए सुलगा देता है, जिससे उसे जीवन भर के लिए खुराक मिलती रहती है। कुछ इन्हीं उदात्त भावनाओं से प्रेरणा लेकर श्री कैलास आश्रम शताब्दी समारोह के आयोजन का निर्णय लिया गया।

श्री कैलास आश्रम की अभूतपूर्व सेवा और कृत्यों तथा इसकी उपलब्धियों का जन-जन में प्रचार हो, इसके लिए उपयुक्त अवसर आ गया था। श्री कैलास आश्रम के भक्तों एवं सन्तों की यह इच्छा थी कि हम तीर्थयात्रा के लिए अपने आश्रम की आदर्श परम्पराओं से जनसाधारण को अवगत कराएँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराजश्री की परम अध्यक्षता में इस पर १९७८ के वार्षिक अधिवेशन में विचार किया गया एवं श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया। यद्यपि सामान्यतया सभी भक्तों में इसका प्रचार हो गया कि कैलास आश्रम शताब्दी समारोह प्रसंग को लेकर तीन धाम, सप्तपुरी, एकादश ज्योतिर्लिङ्गों सहित एक सौ पच्चीस मुख्य तीर्थों का दर्शन कराएगा। तब से सभी भक्त या सन्त ऋषिकेश अथवा अन्य स्थानों परस्पर मिलने पर एक दूसरे से उत्कण्ठा पूर्वक पूछते—महाराजजी कब यात्रा ट्रेन निकाल रहे हैं ? अनौपचारिक रूप से इसका निर्णय ५ मार्च १९८० को लिया गया एवं २१ दिसम्बर १९८० को दत्त जयन्ती के शुभ अवसर का मुहूर्त निकाला गया। यह केवल अभिनवचन्द्रेश्वर भगवान् शंकर और महाराजश्री की आपसी बात थी, इसके लिए किसी को बीच में पुष्टि के लिए मध्यस्थ नियुक्त नहीं किया गया था। हाँ, बाद में दिल्लीस्थ चातुर्मास्य प्रवचन में कार्यकारिणी समिति के गठन के अवसर पर उस आपसी बात को सब सदस्यों के प्रति अभिव्यक्त किया। अभी तक रेल मन्त्रालय अथवा उत्तरी रेल के प्रधान कार्यालय बड़ौदा हाउस में इस संवन्ध में कोई पत्राचार नहीं किया गया था, इस तारीख की पुष्टि पहले अभिनव चन्द्रेश्वर से करा ली थी तो भय अथवा आशंका किस बात की ?

महाराजश्री ने श्री कैलास आश्रम ट्रस्ट कमेटी के उपमन्त्री तथा ट्रस्टी डॉ० उमेशानन्द शास्त्री के जो पिछले कई वर्षों से कैलास आश्रम के प्रकाशन विभाग का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभा रहे थे, ऐकान्तिक साधना एवं तपोमय व्यस्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय को शताब्दी ट्रेन यात्रा के आयोजन के लिए न लेकर अन्य उत्साही कार्यकर्ताओं को इसके लिए आकर्षित किया। चातुर्मास्य प्रवचन में दिल्ली साथ गए मण्डली के महात्माओं में स्वामी अशेषानन्द जी सरस्वती, स्वामी ओङ्कारानन्द गिरि आदि बद्री वाले एवं ज्ञानस्वरूपानन्द भारती प्रभृति ने रेलमन्त्रालय एवं बडौदा हाउस से सम्पर्क का सूत्र आरम्भ करने में अपना प्रभावशाली योगदान किया। लगभग एक डेढ़ मास की दौड़-धूप के बाद इन्होंने यह निर्णय निकाला कि ३० दिन से अधिक के लिए रेल की स्वीकृति नहीं मिल सकती और रेल प्रशासन अपने सुविधानुसार दिन को यात्रारम्भ के लिए अनुमोदन करेगा।

महाराजश्री को अपने डॉ० उमेशानन्द शास्त्री को लिखना पड़ा कि इस काम के लिए आप अन्य कार्यों को स्थगित कर दीजिए। संकोची स्वभाव किन्तु दृढ़ साहस, धैर्य एवं निष्ठा ही उनकी सफलता के लिए काफी था। महाराजश्री की आज्ञा शिरोधार्य कर अपनी सरस्वती की कठोर साधना छोड़कर इस यात्रा ट्रेन का संयोजक पद उन्होंने स्वीकार किया। "वो आए घर हमारे, हम घर को देखते हैं" स्वामी परिपूर्णानन्द जी महाराज उनकी निष्काम एवं महत्त्वपूर्ण सेवाओं को देखते हुए आपस में मिलने पर यह उद्‌गार प्रायः व्यक्त करते हैं। और दिल्ली में कार्यसमिति के सदस्यों को इनके इस काम में दिलचस्पी लेने की खुशी थी। सात दिनों में ही "विशेष परिस्थिति के अधीन" रेल मन्त्री ने ४८ दिन के लिए रेल चलाने की कैलास आश्रम को स्वीकृति दे दी। यह एक प्रामाणिक सूचना थी जिसे पाकर सभी को प्रसन्नता हुई। महाराजश्री के चातुर्मास्य प्रवचन पूर्ण होने में केवल पाँच दिन शेष थे। इसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाद उन्हें बम्बई, फलौदी, अहमदाबाद आदि स्थानों में शताब्दी आयोजनों में जाना था। महाराजश्री के रहते-रहते सभी सूचना, नियम-उपनियम, तीर्थों की सूची, सम्भावित समय आदि मुद्रित करवा लिया गया। भारत के विभिन्न स्थानों में २० कार्यकर्ता यात्री को नामांकित करने के लिए चुने गए। बहुत ही अल्प समय में यात्रियों का कोटा पूरा हो गया। अब इसके बाद सभी व्यवस्था कार्यों में जुट गए।

भंडार से संबन्धित आवश्यक सामग्रियों की सूची के लिए स्वामी उमानन्द गिरि, स्वामी महेश भारती एवं स्वामी शम्भु गिरि की पूर्ण सहायता ली गई। आपको उत्तरकाशी, ऋषिकेश एवं हरिद्वारस्थ कैलास आश्रम का कुठारी होने का गौरव प्राप्त है। भोजन-व्यवस्था से पाचन-कार्य का उत्तरदायित्व २५ कर्मकरों सहित श्री परसराम जी ने लिया, इसके अतिरिक्त आश्रम से पाँच अन्य भंडारी (आपत्कालीन व्यवस्था के लिए) रख लिए गए थे। दो-तीन दिन पूर्व ही सभी सामान की व्यवस्था करनी प्रारम्भ की ताकि स्टोरेज के लिए अनावश्यक असुविधा न हो। २० दिसम्बर को उत्तररेल के मुख्य वाणिज्यिक अधीक्षक के निर्देश पर हजरत निजामुद्दीन के स्टेशन मास्टर को पूरी यात्रा का भाड़ा जमा कर दिया। सायं को सभी सामान स्टेशन पर पहुँचाना प्रारम्भ करवा दिया। सुरक्षा के ११ जवान अपनी निर्धारित यात्रा से एक दिन पूर्व ही सेवा के लिए तैनात कर कर लिए गए थे। फलौदी के सभी भक्तों का प्रबन्ध हजरत निजामुद्दीन स्टेशन के सर्वथा समीप गुरुद्वारे में किया गया। वे एक दिन पूर्व ही आ चुके थे। राजमन्दिर राजेन्द्रनगर एवं पहाड़गंज के मन्दिर में यात्रियों के ठहराने का प्रबन्ध था कुछ अपने-अपने सम्बन्धियों के यहाँ भी रुक गए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतीक्षा करते-करते दत्त पूर्णिमा का शुभ मुहूर्त आ गया। हजरत निजामुद्दीन स्टेशन पर प्रातः ६ बजे से ही कार, स्कूटर मोटर साइकिल, मिनी बसों, स्टेशन वेगन एवं बसों का ताँता लग गया। एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार हजरत निजामुद्दीन को अपने लम्बे इतिहास में इतने अधिक मात्रा में वाहनों को देखने का भाग्य आज ही मिला। सभी के चेहरों पर पूर्णता, दिव्य आनन्द एवं सन्तुष्टि की झलक। विदाई देने वाले सभी सम्बन्धी उतने ही आनन्दित, किसी प्रकार का अश्रु-विमोचन नहीं। यदि कुछ अभाव उन्हें खटक रहा था, तो वह इतना ही कि महाराजश्री हमें भी ले चलते तो अच्छा होता। किन्हीं के माता-पिता अपने लम्बे-चौड़े कारोबार को पुत्रों पर छोड़कर चले थे, किन्हीं की असहाय माताएँ अपनी पुत्रवधुओं पर गृहस्थी की जिम्मेवारी सौंप चली थी. किन्हीं-किन्हीं देवियों ने अपनी ननद या देवरानी-जेठानी पर पति सेवा का कार्यभार सौंपा था क्योंकि उन्हें ४८ दिन की छुट्टी न मिल सकी थी, किन्हीं के पति, पत्नी को सारी गृहस्थी एवं बच्चों का दायित्व सौंप कर साथ हो लिये थे। हर-एक की परिस्थिति एवं कहानी अलग-अलग थी परन्तु विदाई देते समय यात्री अथवा सी-आफ करने वाले किसी भी समस्या में व्यग्र नहीं देखे गये।

यात्रा में शुभ शकुन के प्रतीकस्वरूप दही एवं बर्फी के प्रसाद का वितरण प्रत्येक यात्री एवं विदाई देने वाले सभी महानुभावों को किया गया। "हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे" के सामूहिक कीर्तन के साथ वैदिक मन्त्रों से भगवती गन्त्री की पूजा हुई। एवं ठीक १० बजे श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन ने हजरत निजामुद्दीन स्टेशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोड़ा। कुछ देर नई दिल्ली स्टेशन रुक कर यह आगे को बढ़ चली। विशाल भारतवर्ष का धार्मिक महत्त्व प्रत्येक के हृदय में समाया हुआ था।

भारतवर्ष महिमा

चत्वारि भारते वर्षे युगान्यत्र महामुने।
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिश्चान्यत्र न क्वचित्॥
तपस्तप्यन्ति मुनयो जुह्वते चात्र यज्विनः।
दानानि चात्र दीयन्ते परलोकार्थमादरात्॥
पुरुषैर्यज्ञपुरुषो जम्बूद्वीपे सदेज्यते।
यज्ञैर्यज्ञमयो विष्णुरन्यद्वीपेषु चान्यथा॥
अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।
यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः॥
अत्र जन्मसहस्राणां सहस्रैरपि सत्तम।
कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात्॥
गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥
कर्मण्यसङ्कल्पिततत्फलानि
संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते
तस्मिल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति॥

(वि० पु० २. ३. १९-२५)

श्री पराशर जी बोले—हे मैत्रेय! इस भारतवर्ष में ही सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलि नामक चार युग हैं; अन्यत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं नहीं ।। इस देश में परलोक के लिये मुनिजन तपस्या करते हैं, याज्ञिक लोग यज्ञानुष्ठान करते हैं और दानीजन आदर-पूर्वक दान करते हैं ।। जम्बूद्वीप में यज्ञमय यज्ञपुरुष भगवान् विष्णु का सदा यज्ञों द्वारा यजन किया जाता है, इसके अतिरिक्त अन्य द्वीपों में उनकी और-और प्रकार से उपासना होती है ।। हे महामुने ! इस जम्बूद्वीप में भी भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि यह कर्मभूमि है। इसके अतिरिक्त अन्यान्य देश भोग-भूमियाँ हैं ।। हे सत्तम ! जीव को सहस्रों जन्मों के अनन्तर महान् पुण्यों के उदय होने पर ही कभी इस देश में मनुष्य जन्म प्राप्त होता है ।। देवगण भी निरन्तर यही गान करते हैं कि जिन्होंने स्वर्ग और अपवर्ग के मार्गभूत भारतवर्ष में जन्म लिया है तथा जो इस कर्मभूमि में जन्म लेकर अपने फलाकांक्षा से रहित कर्मों को परमात्मस्वरूप श्रीविष्णु भगवान् को अर्पण करने से निर्मल (पाप-पुण्य से रहित) होकर इस अनन्त में ही लीन हो जाते हैं, वे पुरुष हम देवताओं की अपेक्षा भी अधिक बड़भागी हैं ।।

सोनीपत जं० (४४ कि०) : श्री कैलास आश्रम स्पेशल ट्रेन अचानक सोनीपत स्टेशन पर रुक गई। इस बीच स्पेशल ट्रेन समिति के प्रधान, कोषाध्यक्ष के साथ कुछ सदस्य जो किसी कारणवश दिल्ली रुक गए थे, फ्लाइंग मेल से उतर कर अपनी स्पेशल में मिल गए थे। इस बीच समय का लाभ उठाकर महात्मा कार्यकर्ताओं ने 'कैलास आश्रम शताब्दी १८८०-१९८०' कढ़ाई किए हुए पीले थैले सभी यात्रियों को वितरित किए।

पानीपत जं० (४५ कि०) : पानीपत स्टेशन पर गाड़ी बहुत ही थोड़े क्षणों के लिए रुकी। हालांकि इससे कोई विशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यग्रता यात्रियों के मन में नहीं हुई तो भी शाम के सवा तीन बजते देखकर लग रहा था कि कुरुक्षेत्र पहुँचने में निर्धारित समय से कुछ विलम्ब अवश्य हो सकता है। यात्री प्रत्येक डिब्बे में बजने वाले भजन संकीर्तन को तन्मयता से सुन रहे थे।

करनाल जं० (४४ कि०) : करनाल आते-आते भोजन विभाग के महात्मा कार्यकर्ता स्वामी उमानन्द गिरि, स्वामी शम्भू गिरि ने शाम को वितरित की जाने वाली चाय की तैयारी शुरु कर दी थी। २५ व्यक्तियों के पाचक दल के प्रधान श्री परस राम इसके लिए प्रयत्नशील थे कि कुरुक्षेत्र पहुँचते ही सभी यात्रियों का चाय से स्वागत किया जाए। गाड़ी की गति कुछ सामान्य हो चली थी इस कारण कुरुक्षेत्र पहुँचते-पहुँचते शाम के पाँच बज गए थे।

कुरुक्षेत्र माहात्म्य

कुरुक्षेत्रं गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम्।
य एवं सततं ब्रूयात् सोऽपि पापैः प्रमुच्यते॥
पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः।
अपि दुष्कृतकर्माणं नयन्ति परमां गतिम्॥
दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे॥
मनसाप्यभिकामस्य कुरुक्षेत्रं युधिष्ठिर।
पापानि विप्रणश्यन्ति ब्रह्मलोकं च गच्छति॥
गत्वा हि श्रद्धया युक्तः कुरुक्षेत्रं कुरुद्वह।
फलं प्राप्नोति च तदा राजसूयाश्वमेधयोः॥

(महा० वन० ८३।२-७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मैं कुरुक्षेत्र में जाऊँगा", "मैं कुरुक्षेत्र में बसता हूँ"—जो इस प्रकार सर्वदा कहता रहता है, वह भी सारे पापों से मुक्त हो जाता है। वायु से उड़ायी हुई यहाँ की धूलि भी किसी पापी के शरीर पर पड़ जाय तो वह उसे श्रेष्ठ गति को प्राप्त करा देती है। दृषद्वती के उत्तर तथा सरस्वती नदी के दक्षिण तक कुरुक्षेत्र की सीमा है। इस बीच में जो लोग वास करते हैं, वे मानो स्वर्ग में ही बसते हैं। युधिष्ठिर ! जो आदमी मन से भी कुरुक्षेत्र की ओर जाने की इच्छा करता है, उसके भी पाप नष्ट हो जाते हैं और वह ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है। कुरुकुलश्रेष्ठ ! जो श्रद्धापूर्वक कुरुक्षेत्र तीर्थ की यात्रा करता है, उसे राजसूय तथा अश्वमेध—इन दोनों यज्ञों का एकत्र फल प्राप्त हो जाता है।।

कुरुक्षेत्र जं० (३३ कि०) : कुरुक्षेत्र उतरने से पूर्व महा-मण्डलेश्वर जी महाराज ने स्वयं श्रीमुख से कुरुक्षेत्र के दर्शनीय तीर्थों का माहात्म्य सहित वर्णन कर दिया था। सभी के मन में उत्कण्ठा थी कि कितनी जल्दी इन तीर्थों का दर्शन हो जहाँ महायोगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने जिज्ञासु भक्त अर्जुन के लिए गीता का उपदेश किया था, ब्रह्म सरोवर जहाँ सूर्यग्रहणादि अवसरों में स्नान का विशेष फल है एवं स्थाण्वेश्वर महादेव जहाँ भगवान् कृष्ण एवं अर्जुन ने भी पूजा की थी। हरयाणा रोडवेज की १२ बसें स्टेशन के बाहर खड़ी थीं। सभी यात्रियों के मन में बहुत प्रसन्नता थी, सभी ने बसों में स्थान ग्रहण कर लिया। उधर रामाश्रम समाना मण्डी पटियाला के भक्त भी शताब्दी स्पेशल की अगवानी के लिए दो बसों में पधारे थे, कुरुक्षेत्र के स्थानीय भक्तों की अपार भीड़ से भी लगता था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे ज्ञानी भक्तों की निष्ठा स्वयं मूर्तिमती होकर अवतरित हो गई हो। महाराजश्री के नेतृत्व में सभी ने बड़े प्रेम से कृष्ण सन्निहित तीर्थ के दर्शन कर ब्रह्मसरोवर में स्नान किया। मार्गशीर्ष की पूर्णिमा में उदित चन्द्रमा भी वातावरण को शीतल सुखद बना रहा था, ब्रह्मसरोवर में बने विशाल घाटों में अपार भीड़ को स्नान दर्शन करने में एक घंटा समय लगा; फिर स्थाण्वेश्वर महादेव के दर्शन कराते हुए बसें ८·३० बजे रात्रि कुरुक्षेत्र स्टेशन लौट आई। सभी यात्रियों ने भोजन किया अधिकांश ने स्टेशन पर बिछाये गए आसनों पर एवं कुछ ने गाड़ी में किया। रात्रि ६-१५ पर इस कैलास स्पेशल ने कुरुक्षेत्र में विराजित तीर्थों के जय जयकार करते हुए स्टेशन छोड़ दिया।

अम्बाला कैन्ट जं० (४२ कि०) : कुरुक्षेत्र के तीर्थों के दिव्य एवं चिरस्मरणीय दर्शनों की चर्चा प्रत्येक के मुख में थी। गाड़ी आगे बढ़ी जा रही थी, पूर्णिमा के चाँद को चीरती हुई कैलास स्पेशल बड़ी अच्छी लग रही थी, सभी यात्रियों को सोने की पूर्ण सुविधा थी। डिब्बों में छनती हुई चाँदनी यात्रियों के मन में अजीब उत्सुकता पैदा कर रही थी, किन्हीं को थकान के कारण नींद भी आने लगी थी किन्तु अधिकांश यात्री अम्बाला आने तक नहीं सोये थे, भजन कीर्तन में व्यस्त यात्री सबके लिए आकर्षण एवं अनुकरण का केन्द्र बने थे। ११-३० बजे अम्बाला आने पर एक बार कार्यकर्ताओं ने प्रत्येक डिब्बे के यात्रियों की कुशल क्षेम पूछी एवं जानना चाहा कि कोई यात्री बिना भोजन के न सोया हो।

सहारनपुर जं० (८१) : अम्बाला से रात्रि २ बजे कैलास स्पेशल में दूसरा इञ्जन लगा एवं गाड़ी सहारनपुर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिए रवाना हुई। सहारनपुर पहुँचते-पहुँचते इसे लगभग दो घंटे लगे। यहाँ से सहारनपुर के यात्रियों ने कैलास स्पेशल को पकड़ा, सभी अपनी-अपनी निर्धारित शायिकाओं में विराज गए; सहारनपुर के भक्त समुदाय की अपार भीड़ ने महाराजश्री का स्वागत किया, सभी तीर्थयात्रियों का अभिनन्दन किया। जय जयकार की गगनभेदी ध्वनि में ये स्पेशल लक्सर के लिए रवाना हो गई।

लक्सर जं० (५३ कि०) : प्रातः होते-होते कैलास स्पेशल लक्सर पहुँच गई थी और मुरादाबाद नियन्त्रणकक्ष के निर्देशानुसार अपनी स्पेशल को वरीयता न देकर दून एक्सप्रेस, मसूरी एक्सप्रेस एवं जनता एक्सप्रेस गाड़ियों को पहले देहरादून के लिये भेजकर तत्पश्चात् अपनी स्पेशल के लिये सिगनल देने की अनुमति मिल सकी, इससे यात्रियों के मन में यह इच्छा उत्तरोत्तर व्यग्रता पकड़ती गई कि कब हर की पौड़ी का स्नान हो एवं ऋषिकेश कैलास आश्रम के दर्शन हों।

हरिद्वार जं० (२८ कि०) : उधर भक्त समुदाय एवं साधु समाज के मूर्धन्य महापुरुष अपनी-अपनी मण्डली सहित हरिद्वार स्टेशन में श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल की अगवानी के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। हरिद्वार स्टेशन में गाड़ी १२-३० बजे पहुँची। स्वागत-अभिनन्दन के बाद 'हर-हर-महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे' की सामूहिक ध्वनि के साथ अपनी पीली झोलियों को बगल में लटकाए यात्री स्टेशन के बाहर लगी बसों में शान्तिपूर्वक बैठ गए एवं शीघ्र ही सभी ने "हर की पौड़ी" में स्नान किया। २२ दिसम्बर की उत्तराखण्ड की स्वाभाविक शीत लहर अपना प्रभाव दिखा रही थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रातःकाल से सूर्य भगवान् धुन्ध में छिपे हुये थे एवं दिन भर उनके दर्शन नहीं हो सके थे।

हरिद्वार माहात्म्य

स्वर्गद्वारेण तत्तुल्यं गङ्गाद्वारं न संशयः।
तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटितीर्थे समाहितः॥
लभते पुण्डरीकं च कुलं चैव समुद्धरेत्।
तत्रैकरात्रिवासेन गोसहस्रफलं लभेत्॥
सप्तगङ्गे त्रिगङ्गे च शक्रावर्ते च तर्पयन्।
देवान् पितॄंश्च विधिवत् पुण्ये लोके महीयते॥
ततः कनखले स्नात्वा त्रिरात्रोपोषितो नरः।
अश्वमेधमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥
गङ्गाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते।
स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते॥

(पद्मपुराण आदि० २८।२७-३०)

हरिद्वार स्वर्ग के द्वार के समान है, इसमें संशय नहीं है। वहाँ जो एकाग्र होकर कोटितीर्थ में स्नान करता है, उसे विष्णुयाग का फल मिलता है। वह अपने कुल का उद्धार कर देता है। वहाँ एक रात निवास करने से सहस्र गोदान का फल मिलता है। सप्तगङ्गा, त्रिगङ्गा और शक्रावर्त में विधिपूर्वक देवर्षि-पितृ तर्पण करने वाला पुण्य लोक में प्रतिष्ठित होता है। तदनन्तर कनखल में स्नान करके तीन रात उपवास करे। ऐसा करने वाला अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है और स्वर्गगामी होता है। गङ्गाद्वार (हर की पौड़ी), कुशावर्त, बिल्वकेश्वर, नीलपर्वत तथा कनखल—ये पाँच प्रधान तीर्थ हरिद्वार में हैं। इनमें स्नान तथा दर्शन से पुनर्जन्म नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरिद्वार में कई यात्री प्रथम बार ही पधारे थे उनके मन में अपने इस सौभाग्य के लिए विशेष सन्तोष था, हरिद्वार के चारों ओर की ऊँची ऊँची पहाड़ियों को वे बड़ी उत्कण्ठा से देख रहे थे। युग-युगान्तरों से इस पवित्र तीर्थ का भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु एक विशिष्ट स्थान रहा है। आसेतु हिमाचल विभिन्न प्रान्तों के लोग श्रद्धा के सुमन चढ़ाने यहाँ हजारों की संख्या में प्रतिदिन आते हैं और कुम्भादि पर्वों पर तो लाखों धर्मप्रेमी यहाँ आते हैं। हर की पौढ़ी का दृश्य बड़ा ही मनोरम था। शुद्ध स्फटिक के समान श्वेत एवं शीतल गंगाजल में स्नान, तर्पण, ध्यान पूजन करते हुए यात्रियों को अपूर्व आनन्द की अनुभूति हो रही थी, बहुत से अपने पितरों को पिण्डदानादि करवाते भी देखे गए। अधिकांश पुरुष यज्ञोपवीतधारी थे एवं स्नान के बाद धोती पहने हुए भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। महिलाएँ तो प्रायः साड़ी जम्पर में ही थीं, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा की माताएँ भी अपनी रूढ़िवादी पोशाक में नहीं थीं, हाँ दस-पाँच महिलाएँ मैक्सी या गाऊन में भी थीं। हरिद्वार दर्शन कर सप्तर्षि मार्ग होते हुए सभी बसों को ऋषिकेश बढ़ना है—यह सूचना सुनकर सभी बसों की ओर अग्रसर हो अपनी-अपनी सीटों पर निश्चिन्तता से बैठ गए। दशनाम संन्यास आश्रम भूपतवाला हरिद्वार होते हुए सायं ४ बजे श्री कैलास आश्रम पहुँचे। यहाँ के कार्यकर्ता एवं श्री कैलास आश्रम शताब्दी समारोह उपसमिति ऋषिकेश के सदस्य मध्याह्न १२ बजे से ही प्रतीक्षा कर रहे थे, हरिद्वार से ही उनको फोन से सूचना दे दी गई थी कि "सभी यात्री ४ बजे तक आश्रम में आ जाएँगे आप निराश न हों"। तदनुसार यात्रियों के स्वागत अभिनन्दन का आयोजन वेद मन्त्रों एवं जय जयकार की ध्वनि से हुआ। सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने १०० वर्षों से लगातार संस्कृति एवं वेदान्त का प्रचार करने वाली अद्वितीय संस्था श्री कैलास आश्रम के दर्शन किए। श्री अभिनवचन्द्रशेखर भगवान् की सामूहिक विधिवत् पूजा की गई एवं अन्नपूर्णा भण्डार में सामूहिक भोजन हुआ। अधिकांश धर्मनिष्ठ यात्रियों ने प्रातःकाल से उपवास किया हुआ था, श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय का पाठ कर आश्रम मर्यादा के अनुकूल एक साथ पंक्ति में बैठकर भोजन ग्रहण किया। बीच में महात्माओं ने नीति-धर्म-वैराग्य एवं ज्ञानपरक श्लोक बोले, जिससे वातावरण और भी पवित्र एवं सुरम्य लगने लगा; वैश्वानर की उपासना किस प्रकार करनी चाहिये यह वातातरण उनके लिए प्रेरणा का स्रोत था, जिनके परिवार में भोजन पूर्णतः देहासक्ति से किया जाता है। डाईनिंग टेबलों की अपवित्रता में अश्लील फिल्मी गानों की स्वरलहरो में झूमते हुये करने में कृतकृत्यता मानी जाती है।

श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित है, इसके पूर्व में भगवती भागीरथी कल-कल निनाद करती हुई बहती है। पहाड़ी भूमि में बिछे हुए पत्थरों की सेज पर बहते हुए इसकी प्रसन्नता को दूर से देखा जा सकता है, उछलती-कूदती हुई ये अपनी विभिन्न भाव भङ्गिमाएँ प्रस्तुत करती है। अज्ञातयौवना पतितपावनी को अभी पता नहीं है कि इसे अपनी सखियों को साथ लेकर दो हजार किलोमीटर जाना है, तब कहीं अपने प्रियतम से साक्षात्कार होना है। ऊपर पर्वतराज हिमालय खड़े मानो इसे आशीर्वाद देते हुए विदा कर रहे हैं। गंगा किनारे इस प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखते-देखते समाधि लगती है। गंगा के पार दूसरी ओर लक्ष्मणझूला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से जा सकते हैं। वैसे सावन-भादों को छोड़कर हमेशा नावें भी चलती हैं, शिवानन्द नगर मुनि की रेती से नाव द्वारा जाया जा है। स्वर्गाश्रम, गीता भवन, परमार्थ आश्रम, वेद निकेतन, चौरासी कुटिया आदि दर्शनीय स्थल हैं। सभी ने उत्तराखण्ड के द्वारभूत इन स्थलों का दर्शन किया, धर्मप्राण महानुभावों ने इन सभी धार्मिक प्रवृत्तियों से शिक्षा ली कि इष्टापूर्त कार्यों के करने में हमें भी जागरूक रहना चाहिए।

रात्रि हो चली थी, पर्वतों के शिखर से मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा का चाँद फिर झाँकने लग गया जैसे कल कुरुक्षेत्र में उसे तृप्ति न हुई हो। और यात्री उसे इतनी तन्मयता से नहीं देख रहे थे, उनका मन हरिद्वार पहुँच गया था जहाँ से उन्हें अपनी अग्रिम यात्रा प्रारम्भ करनी था। सभी ने बसों की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया और सब के सुविधापूर्वक बैठ जाने पर बसों में "गंगा मैय्या की जय, हर हर महादेव" के जयघोष होने लगे और २५ मिनट में बसों ने सभी यात्रियों को एक साथ हरिद्वार पहुँचा दिया।

हरिद्वार में बहुत से यात्रियों ने स्मृति के रूप में अपनी अभिलषित वस्तुओं का संग्रह किया और तीर्थयात्री प्लेटफार्म पर लगी अपनी कैलास स्पेशल में आ गये। ऋषिकेश से यात्रा प्रारम्भ करने वाले यात्रियों को स्पेशल कार्यकर्ताओं ने उनके लिये पूर्व से आरक्षित सीटों पर बैठने के लिए मार्ग निर्देश किया, सभी यात्री सुविधा से बैठ गए, इसके लिए यात्रा के संयोजक ने सभी डिब्बे के कार्यकर्ताओं से पूछ कर एवं इसकी पुष्टि कर सहायक स्टेशन मास्टर को लाइन क्लीयर करने एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिगनल देने के लिए कहा। यात्री भगवद्गुणानुवाद गङ्गा मय्या की महिमा, कैलास आश्रम की सुखद स्मृतियों के साथ अग्रिम यात्रा की मनोहारी कल्पनाएँ कर रहे थे कि गाड़ी हरिद्वार स्टेशन से अपने अगले गन्तव्य तीर्थ के लिए ९-१५ पर चल दी।

मुअज्जमपुर नारायण जं० (५६ कि०) : लक्सर में यात्रा स्पेशल को सिगनल न मिलने के कारण कुछ देर रुकना पड़ा, इसी प्रकार यात्री चाहते थे कि अब केवल हमारी गाड़ी को ही प्राथमिकता दी जाती किन्तु इधर वर्षा काफी तेज हो चली थी उधर मुरादाबाद कंट्रोल से सिगनल न मिलने से मुअज्जमपुर नारायण में गाड़ी को फिर रुकना पड़ा।

नजीबाबाद (११ कि०) : नजीबाबाद पहुँचते - पहुँचते गाड़ी का इञ्जन दुर्बल हो गया था और गाड़ी के फोरमैन, ड्राइवरादि बड़े परेशान थे कि किस प्रकार मुरादाबाद तक पहुँचाया जाए, जहाँ से कैलास स्पेशल के लिए दूसरा इञ्जन तैयार खड़ा था।

बुन्दकी (१२ कि०) : बुन्दकी में भी इञ्जन से जूझते रहने के कारण गाड़ी को १ घन्टा रुकना पड़ा और बहुत प्रयत्न के बाद गाड़ी में भाप संपादित करवा कर आगे ले जाया गया।

नगीना (१० कि०) : सर्दी काफी अधिक और ऊपर से वृष्टि; तो भी इञ्जन के बीमार होने पर जैसे-तैसे ड्राइवर गाड़ी को बहुत मन्थर गति से घसीटता चला जा रहा था। हर एक स्टेशन आने पर वह स्वयं तथा गार्ड स्टेशन मास्टर से मिल कर अनुरोध करता है कि मुरादाबाद से दूसरे इञ्जन को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवस्था की जाए परन्तु मुरादाबाद वालों ने कोई सहानुभूति प्रदर्शित नहीं की। उधर धामपुर में कैलास आश्रम के भक्त समुदाय बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

धामपुर (१७ कि०) : धामपुर में गाड़ी को ६ बजे पहुँचना था किन्तु अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण यहाँ गाड़ी प्रातः ३·३० पर पहुँची, महाराजश्री का भावभीना स्वागत किया। सभी यात्रियों की नींद खुली और जय जयकार की ध्वनि से वातावरण दिव्य हो उठा। धामपुर के भक्तों को रात्रि भर जागरण एवं अत्यन्त शीत व वर्षा में असुरक्षित रेलवे स्टेशन धामपुर जो ६ घंटे से अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ी उसके लिए सभी यात्रियों ने उनकी हृदय से सराहना की और कुछ क्षणों के लिये ट्रेन की धीमी गति से चलने का दुःख भूल गए। महाराजश्री ने भी उनकी भावभक्ति की प्रशंसा की और आशीर्वाद देकर विदा किया।

मेवानवादा जं० (२३ कि०) : मेवानवादा में गाड़ी ३ घंटे रुकी रही क्योंकि इञ्जन स्टीम ही नहीं ले पा रहा था। कुछ कार्यकर्ताओं ने स्टेशन मास्टर को समझाया कि किसी तरह मुरादाबाद तक पहुँचवा दिया जाए तब उन्होंने अपने स्टाफ को भेजकर इञ्जन स्टार्ट करवाने में पूर्ण सहयोग दिया। सुबह हो चली थी। प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना हुई। सभी यात्रियों को इसी स्टेशन पर चाय-नाश्ता वितरित किया गया और गाड़ी मुरादाबाद के लिए रवाना हो गई।

मुरादाबाद जं० (३६ कि०) : रेंगती - रेंगती गाड़ी मुरादाबाद के 'आउटर' पर १५-२० मिनट रुकी रही। इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीच कुछ कार्यकर्ताओं ने गाड़ी के १२ घंटे देर से चलने वाले विषय को गंभीरता से लिया एव विचार-परामर्श के बाद निर्णय किया गया कि मुरादाबाद के स्टेशन मास्टर से जल्दी दूसरा इन्जन लगाने के लिये कहा जाए एवं लखनऊ कन्ट्रोल को भी फोन से बात की जाए ताकि आगे की यात्रा में अप्रत्याशित देरी न हो। मुरादाबाद स्टेशन पहुँचने में १०-४५ बज चुके थे और जैसे ही गाड़ी स्टेशन पर रुकी, समिति के कुछ सदस्यों ने स्टेशन मास्टर के कमरे में जाकर उनको स्थिति से अवगत कराया। हालांकि उन्होंने हार्दिक संवेदना व्यक्त की किन्तु कुछ यात्रियों को विशेष असंन्तुष्ट देखकर उन्होंने १५ मिनट के अन्दर ही दूसरे इन्जन की व्यवस्था कर दी और आश्वासन दिलाया कि जहाँ तक सम्भव हो सकेगा आपकी स्पेशल को अब लेट नहीं होने दिया जाएगा। इधर कुछ यात्री वस्त्र प्रक्षालन जल संग्रह में लगे थे कि चारों ओर से लाउडस्पीकर आवाज देने लगे कि "कैलास स्पेशल शीघ्र ही छूटने वाली है, सभी यात्री अपना-अपना स्थान ग्रहण करें" इस प्रकार २० मिनट बाद ही कैलास स्पेशल लखनऊ की ओर चल पड़ी।

बरेली जं० (९१ कि०) : मुरादाबाद से बरेली पहुँचने में केवल दो घंटे लगे, मेल-एक्सप्रेस की गति से गाड़ी चली; एक बज चला था इसलिए यहाँ भोजन वितरण किया गया। इसमें आध घंटा लगा, सभी को सुविधापूर्वक भोजन पहुँच जाने पर गाड़ी को आगे चलने की स्वीकृति दे दी गई।

पीताम्बरपुर जं० (२० कि०) : पीताम्बरपुर में गाड़ी को कुछ क्षणों के लिए रुकना पड़ा क्योंकि यहाँ जम्मू तवी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्यालदह एक्सप्रेस का क्रासिग होना था। सभी यात्रियों को इसकी सूचना दे दी गई। कीर्तन भजन सभी डिब्बों में सुनाई दे रहा था।

शाहजहाँपुर जं० (५० कि०) : महाराजश्री का सत्संग भी एक घंटे तक हुआ, उन्होंने यात्रियों को समझाया कि तीर्थयात्रा एक तप है इसमें शरीर, मन एवं वाणी का स्वाभाविक संयम हो जाता है। शाहजहाँपुर में गाड़ी कुछ क्षणों के लिए रुकी और जल्दी ही रोजा जं० के लिए रवाना हो गई।

रोजा जं० (८ कि०) : रोजा जं० में प्रयास किया गया कि लखनऊ तक डीजल इन्जन की व्यवस्था हो जाए परन्तु उत्तर रेलवे ने अनुगृहीत करना अपना दायित्व न समझा, इतना ही काफी था कि अब कैलास स्पेशल अपनी निर्धारित गति से चल रही थी। रोजा जं० में सभी को चाय वितरित की गई।

हरदोई जं० (५५ कि०) : हरदोई पहुँचते-पहुँचते शाम हो चली थी। मौसम वैसा ही धुँध भरा था। दिन भर सूर्य भगवान् मानो असूर्यम्पश्याओं को घूमने की छुट्टी दे रहे थे। भगवान् शिव की आरती प्रारम्भ हो गई थी और सभी भक्त आरती-महिम्न करने में तल्लीन हो गए थे।

बालामऊ जं० (३३ कि०) : इसके बाद गाड़ी बालामऊ रुकी, यहाँ भोजन वितरण के लिए आध घंटा समय लिया गया और ९ बजे रात्रि को कैलास स्पेशल ने बालामऊ स्टेशन छोड़ दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सण्डीला जं० (२० कि०) : "सण्डीला के लड्डू" 'सण्डीला के लड्डू' चिल्लाते हुए कुछ मिठाई बेचने वाले प्लेटफार्म में घूमते हुए नजर आने लगे, देखा तो गाड़ी सण्डीला स्टेशन पर रुकी थी। थोड़ी देर में ही गाड़ी लखनऊ के लिए बढ़ चली।

लखनऊ जं० (४६ कि०) : लखनऊ पहुँचने में रात्रि के ११-३० बज गए। यात्री निश्चिन्तता से विश्राम कर रहे थे उन्हें विश्वास था कि २३ दिसम्बर सायं की जगह २४ दिसम्बर प्रातः भगवान् राघवेन्द्र सरकार के दर्शन हो ही जाएँगे। किन्तु यहाँ दूसरा इञ्जन बदला जाना था, गार्ड, ड्राइवर, फोरमैनादि सभी स्टाफ बदला जाना था इसमें ३ घण्टे का समय लग गया। २४ को प्रातः २-३० बजे गाड़ी ने लखनऊ स्टेशन छोड़ दिया।

बाराबंकी (२६ कि०) : दरियाबाद (३८ कि०) : लखनऊ के बाद और प्रायः हर रात्रि में संयोजक को चिन्ता हो गई थी रात्रि में चलते समय गाड़ी को हर स्टेशन में रुकने का पर्याप्त और स्पष्टकारण जान लेना चाहिये ऐसा न होने पर स्टेशन मास्टर से हर संभव सहायता देने के लिये विनम्र प्रार्थना करनी चाहिये। स्टीम इञ्जन की एक निर्धारित गति होती है; हर एक दैनिक चलने वाली गाड़ियों को क्रासिंग देने के लिए स्पेशल को ही रोक लिया जाता है। इस प्रकार बाराबंकी एवं दरियाबाद में स्पेशल रुकती हुई

फ़ैजाबाद (६१ कि०) : ८ बजे प्रातः फैजाबाद पहुँची। यहाँ से पुनः इञ्जन बदला गया इससे अयोध्या पहुँचते पहुँचते प्रातः ६-४५ हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री अयोध्या माहात्म्य

अकारो ब्रह्म च प्रोक्तं यकारो विष्णुरुच्यते ।
धकारो रुद्ररूपश्च अयोध्यानाम राजते ॥
सर्वोपपातकैर्युक्तैर्ब्रह्महत्यादिपातकैः ।
न योध्या शक्यते यस्मात्तामयोध्यां ततो विदुः ॥
(स्क० वैष्ण० अयो० १।६०-६१)

अयोध्या में आए अकार, यकार एवं धकार क्रमशः ब्रह्म, विष्णु एवं रुद्ररूप हैं। समस्त पाप एवं यहाँ तक कि ब्रह्महत्यादि महापातक भी जहाँ अपना प्रभाव जमाने में असमर्थ हैं, इसीलिए इसको अयोध्या नाम से विद्वान् लोग जानते हैं।

अयोध्या (६ कि०) : एक विलक्षण सा उत्साह सा सभी यात्रियों के मन में था। इससे पूर्व महाराजश्री ने अयोध्या पुरी के दर्शनीय स्थलों का माहात्म्य सहित प्रतिपादन कर दिया था। अधिकांश यात्रियों ने सरयूस्नान के निमित्त से चाय नाश्ता नहीं किया था। दो रात्रि एवं एक दिन में लगातार गाड़ी में रहने से और वो भी केवल ४५० कि० मी० यात्रा करने से यात्रियों को गाड़ी से निकलने में कुछ भी समय नहीं लगा। महाराजश्री के नेतृत्व में सभी यात्रियों ने पैदल चलकर सरयू नदी में स्नान, तर्पण एवं परमेश्वर का जप ध्यान किया। उधर सुरक्षा दल के जवान एवं सुरक्षा अधिकारी गाड़ी के दोनों ओर हथियारों से लैस होकर तन्मयता से सुरक्षा करने लगे। भोजन-व्यवस्था विभाग के महात्मा कार्यकर्ता सभी यात्रियों के भोजन की व्यवस्था में जुट गए। भोजन बड़ी पवित्रता से बना; चलती गाड़ी में तन्दूरी रोटी से रुचि बदलने के लिये आज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी के लिए साग दाल-चावल फुल्का पापड़-अचार का प्रबन्ध किया गया। यह सभी व्यवस्था ३ घंटे में सम्पादित करनी थी। सभी यात्री सरयूस्नान कर हनुमानगढ़ी में बैठी हुई हनुमानजी की दिव्यमूर्ति के दर्शन करते हुए कनकभवन पहुँचे। अयोध्या के इस मुख्य मन्दिर में श्री सीताराम जी के दिव्य विग्रहों के दर्शन किये। यहाँ से थोड़ी दूर श्रीराम जन्म भूमि के दर्शन हैं जिसके पास सीता रसोई, चौबीस अवतार, कोपभवन, रत्न-सिंहासन, आनन्दभवन, रङ्गमहल, साखीगोपाल आदि मन्दिरों के भी दर्शन किए। दर्शन कर यात्री २ बजे तक वापिस स्टेशन लौट आए। पहले से लम्बी टाट-पट्टियाँ बिछा दी गई थी जिसमें एक साथ सन्त महात्माओं सहित सभी यात्री विराजे। गीता के श्लोकों एवं वेदमन्त्रों की सुमधुर ध्वनि में भोजन हुआ। भोजन के बाद सभी यात्री दो-तीन दिन से एकत्रित हुए वस्त्रों को धोने में लग गए। ३ बजे से ५ बजे तक विशाल सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें भजन कीर्तन सन्त-महापुरुषों व महाराजश्री के प्रवचन हुए। स्टेशन मास्टर एवं उनके अन्य सहयोगियों ने भी इसमें भाग लिया। आरती महिम्न के पश्चात् रात्रि भोजन वितरित किया गया एवं रात्रि १० बजे कैलास स्पेशल ने अयोध्या स्टेशन छोड़ दिया।

फैजाबाद (७ कि०) : श्री कैलास स्पेशल फैजाबाद कुछ क्षणों के लिये रुकी और ११-१० रात्रि को अगले गन्तव्य स्थान की ओर बढ़ चली शीत अधिक थी, मौसम कुछ साफ हो चला था; चन्द्रमा भी धुंध में झाँकने लगा था।

भरतकुण्ड (१६ कि०) खजुरहाट (२८ कि०) : गाड़ी भरतकुण्ड स्टेशन में क्रासिंग के लिए रुकी। लालटेन की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोशनी में स्टेशन मास्टर ऊनींदी आँखों में अलसाया सा बैठा था एवं फैजाबाद जाने के लिये आने वाली गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था. आने पर उसने उसे विदा कर अपनी स्पेशल के लिये सिगनल दिया।

सुल्तानपुर (३१ कि०) फाफामऊ जं० (८६ कि०) : और आज की रात्रि गाड़ी ने अपनी निर्धारित गति से चलना चालू रखा। प्रतापगढ़ जं० में गाड़ी रुकी, इलाहाबाद जं० फोन करवाया गया कि कैलास स्पेशल को मार्ग में अनावश्यक बिल्कुल न रोका जाए ताकि प्रातः समय से यात्री प्रयाग पहुँच कर त्रिवेणी स्नान कर सकें। फाफामऊ स्टेशन पर ब्रह्ममुहूर्त में गाड़ी पहुँची। प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना गाड़ी में हुई।

प्रयाग (६ कि०) : सात बजते-बजते गाड़ी प्रयाग स्टेशन पहुँच गई। इलाहाबाद जंक्शन के लिए गाड़ी जाने की संभावना न होने के कारण यात्रियों को निर्देश दिया गया कि उन्हें यहीं से महाराजश्री के साथ पैदल त्रिवेणी स्नान के लिए चलना है। असमर्थ एवं वृद्ध यात्रियों को अपनी सुविधा के लिए तांगे से जाने की अनुमति दे दी गई। मौसम साफ था, महाराजश्री धीरे-धीरे सभी सन्त-महापुरुषों एवं पतितपावनी गंगा के कीर्तन एवं जय-जयकार से वातावरण गूँज रहा था। प्रयाग स्टेशन में जो महात्मा एवं सद्गृहस्थ अगवानी के लिये पधारे थे, वे भी त्रिवेणीस्नान के पुण्यलाभ के लिये महाराजश्री के साथ हो गये थे। तीर्थराज प्रयाग की वेद-शास्त्रों में अनन्त महिमा गाई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयाग माहात्म्य

ब्राह्मीनपुत्रीत्रिपथास्त्रिवेणी-
समागमेनाक्षतयोगमात्रान् ।
यत्राप्लुतान् ब्रह्मपदं नयन्ति
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ।।
श्यामो वटोऽश्यामगुणं वृणोति
स्वच्छायया श्यामलया जनानाम् ।
श्यामः श्रमं कृन्तति यत्र दृष्टः
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ।।
(पद्म० उ० खं० २३।३४-३५)

"सरस्वती, यमुना और गङ्गा का जहाँ सङ्गम है, जहाँ स्नान करने वाले ब्रह्मपद को प्राप्त होते हैं, तीर्थराज प्रयाग की जय हो। जहाँ श्यामल अक्षयवट अपनी छाया से मनुष्यों को दिव्य सत्त्वगुण प्रदान करता है, जहाँ भगवान् माधव अपने दर्शन करने वालों का पाप-ताप काट डालते हैं, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो!"

"ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी ।
तीर्थानामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम् ।।
यत्र वटस्याक्षयस्य दर्शनं कुरुते नरः ।
तेन दर्शनमात्रेण ब्रह्महत्या विनश्यति ।।
आदिवटः समाख्यातः कल्पान्तेऽपि च दृश्यते ।
शेते विष्णुर्यस्य पत्रे अतोऽयमव्ययः स्मृतः ।।
माधवाख्यस्तत्र देवः सुखं तिष्ठति नित्यशः ।
तस्य वै दर्शनं कार्यं महापापैः प्रमुच्यते ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोघ्नो वापि च चण्डालो दुष्टो वा दुष्टचेतनः ।
बालघाती तथाविद्वान् म्रियते तत्र वै यदा ॥
स वै चतुर्भुजो भूत्वा वैकुण्ठे वसते चिरम् ।
प्रयागे तु नरो यस्तु माघस्नानं करोति च ॥
न तस्य फलसंख्यास्ति शृणु देवर्षिसत्तम ॥"
(पद्म० उ० खं० ३-१०; १२-१४)

"जैसे ग्रहों में सूर्य तथा ताराओं में चन्द्रमा हैं, वैसे ही तीर्थों में प्रयाग सर्वोत्तम है। जो पुरुष यहाँ के अक्षयवट का दर्शन करता है; उसके दर्शन मात्र से ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है। यह अक्षयवट आदिवट कहलाता है और कल्पान्त में भी देखा जाता है। इसके पत्ते पर भगवान् विष्णु शयन करते हैं, अतः यह वट अव्यय समझा जाता है। वहाँ भगवान् माधव नाम से सुखपूर्वक नित्य विराजते हैं, उनका दर्शन करना चाहिये। ऐसा करने से मनुष्य महापापों से मुक्त हो जाता है। गोघाती, चाण्डाल, शठ, दुष्ट-चरित्र, बालघाती या मूर्ख—जो भी यहाँ मरता है, वह चतुर्भुज होकर अनन्त काल तक वैकुण्ठ में वास करता है। देवर्षे! प्रयाग में जो माघस्नान करता है, उसके पुण्यफल की कोई गणना नहीं।"

भगवान् राम ने अपने वनवास काल में चित्रकूट जाते समय तीर्थराज प्रयाग के दर्शन व स्नान किये। बलराम व भगवान् कृष्ण भी पर्वकाल में त्रिवेणी संगम में स्नान के लिये जाते रहे। सप्तपुरियों में इसकी प्रधानता है। भगवान् शंकर एवं पार्वती की तो यह लीलास्थली ही है। प्रयाग में प्रतिवर्ष माघ मास में बहुत से धर्मप्रेमी यात्री कल्पवास करते हैं। यहाँ प्रति बारहवें वर्ष पूर्णकुम्भपर्व मेला लगता है, जिसमें भारत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं विदेश के सभी धर्माचार्य एवं यात्री यहाँ जाते हैं। पूर्णकुम्भ से छठे वर्ष अर्द्धकुम्भ का मेला लगता है। हालांकि प्रयाग के सभी तीर्थों दर्शन के लिये समिति द्वारा बसों की व्यवस्था की थी किन्तु बसें इलाहाबाद स्टेशन पर प्रतीक्षा कर रही थी इधर यात्रियों की उत्सुकता के कारण बस वालों को विशेष वाहक भेजकर संगम से यात्रियों को ले लेने के निर्देश दिये गये।

महाराजश्री के साथ सभी यात्रियों को त्रिवेणी संगम पहुँचने में विशेष देर नहीं लगी, नाव वालों एवं पण्डों को इतनी अपार भीड़ देखकर आश्चर्य हुआ। स्नान दान पुण्य श्राद्ध तर्पणादि धार्मिक कृत्यों में सभी व्यस्त थे। नाव वाले संगम में यात्रियों को ले जा रहे थे। बड़े उत्साह से सभी यात्री कीर्तन भजन करते हुए नाव से जा रहे थे। महात्मा कार्यकर्ता यात्रियों को नाव में चढ़ाने और उन्हें संगम में उतारने में सहयोग दे रहे थे एवं स्नान-दान विधि के बारे में आवश्यक निर्देश दे रहे थे।

इलाहाबाद स्टेशन से सूचना मिली कि आपकी गाड़ी प्रयाग ही रुकी रहेगी इस कारण बस वालों को निर्देश दिये गये कि वे यात्रियों को श्रीबिन्दुमाधव, अलोपी देवी (शक्ति पीठ) भारद्वाज आश्रम के दर्शन कराते हुए प्रयाग छोड़ दें। संगम स्नान के पश्चात् यात्रियों ने किले में स्थित अक्षयवट के दर्शन किये। कहते हैं सृष्टि के जलप्रलय होने पर महर्षि मार्कण्डेय को इसी अक्षयवट पर भगवान् बालमुकुन्द के दर्शन हुए थे। अब यह दिव्य अक्षयवट सेना के संरक्षण में है। किले के भीतर पातालपुरी गुफा है यहाँ विभिन्न देवताओं के मन्दिर हैं। किले पर लेटे हुये हनुमान जी का मन्दिर है, मंगलवार एवं शनिवार को हजारों की संख्या में दर्शनार्थी आकर हनुमान जी को प्रसाद चढाते हैं एवं अपनी कामना पूर्ण होने की प्रार्थना करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगम बांध के पास सुन्दर डिलक्स बसें यात्रियों को प्रयाग तीर्थ घुमाने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी। संगम स्नान का विशेष माहात्म्य समझकर प्रातःकालीन चायनाश्ता नहीं करने के कारण कुछ यात्रियों को फल दूध-चाय ग्रहण करने में व्यस्त देखा गया।

महात्मा कार्यकर्ताओं ने यात्रियों को समझा दिया था कि आप बसों में बैठकर श्रीबिन्दुमाधव अलोपी देवी (शक्ति पीठ) एवं भारद्वाज आश्रम के दर्शन कर प्रयाग स्टेशन ही जाएँ वहीं भोजन का प्रबन्ध है। कुछ यात्री गल्ती से इलाहाबाद स्टेशन जाकर अपनी कैलास स्पेशल की प्रतीक्षा करने लगे, वाद में विशेष वाहक भेजकर उन्हें वहाँ से प्रयाग लाया गया। इससे उन्हें इलाहाबाद के बड़े-बड़े बाजार देखने को मिल गये। प्रयाग तीर्थ में दर्शन कर यात्री २ बजे से प्रयाग स्टेशन आने प्रारम्भ हो गये भोजन की पूर्व से ही व्यवस्था थी। जिसको जो कुछ आनन्द या असुविधा हुई, वे एक दूसरे से व्यक्त कर रहे थे। कोई एक दूसरे के प्रति सहानुभूति व्यक्त कर रहे थे। इनमें उन १००-१२५ यात्रियों को असुविधा हुई जो बिना उचित निर्देश के अपनी-अपनी सवारी से तीर्थों में गये एवं बस सुविधा न प्राप्त कर सके। यद्यपि उनके लिये विशेषरूप से कार्यकर्ताओं को नियुक्त कर उन्हें सहृदयता से कैलास स्पेशल में लाया गया, प्रेम से भोजन कराया गया, तो भी आंशिक रूप से उनके चेहरे में सन्तोष की भावना दीखने को मिली। शाम को प्रयाग स्टेशन पर ही भजन संकीर्तन सत्संग का विशाल आयोजन हुआ। रात्रि आरती महिम्न गाड़ी में ही हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रकूट माहात्म्य

"यावता चित्रकूटस्य नरः शृङ्गाण्यवेक्षते।
कल्याणानि समाधत्ते न मोहे कुरुते मनः।।
(वा. रा. २।५४।३०)

ऋषयस्तत्र बहवो विहृत्य शरदां शतम्।
तपसा दिवमारूढाः कपालशिरसा सह।।
(वा. २।५० ६१)

"मनुष्य जब तक चित्रकूट के शिखरों का अवलोकन करता रहता है, तब तक वह कल्याण-मार्ग पर चलता रहता है तथा उसका मन मोह-अविवेक में नहीं फँसता। बहुत से ऋषि वहां सैकड़ों वर्ष तक भगवान् शिव के साथ विहार करके अन्त में तपस्या के द्वारा को स्वर्ग को चले गये।"

गंगा सागर का प्रोग्राम बढ़ने से चित्रकूट के कार्यक्रम को समिति को स्थगित करना पड़ा। हालांकि कुछ यात्री कामद-गिरि की परिक्रमा एवं भगवान् राम की वनवास स्थली के दर्शनों पर जोर दे रहे थे परन्तु ज्योतिर्लिङ्ग एवं गंगासागर की अपरिहार्यता समझ कर उन्होंने प्रयाग से वाराणसी चलकर भगवान् विश्वनाथ के दर्शनों के लिए सहमति व्यक्त की। महाराजश्री ने इसे सब यात्रियों को समझा दिया। प्रयाग से गाड़ी २५-१२-८० को रात्रि ८-२० पर चल दी, चलने से पूर्व बहुत सी माताओं ने इञ्जन की पूजा की एवं निर्विघ्न यात्रा के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फूलपुर (३० कि०) : प्रयाग से चलकर गाड़ी फूलपुर रुकी। यहाँ दो गाड़ियों का क्रासिंग था। क्रासिंग होते ही गाड़ी सिगनल मिलने पर अगले स्टेशन के लिये रवाना हो गई। आकाश में धुंध ही धुंध छाई थी। शीत ऋतु में धुंध का एक अपना अलग सौन्दर्य होता है।

जंघई जं० (२४ कि०) : जंघई स्टेशन के आउटर पर गाड़ी रुकी रही फिर जंघई पर रुकी तो रुकी ही रही। वाराणसी कन्ट्रोल से कोई फोन उठा ही नहीं रहा था। मारे सर्दी के सबकी घिग्गी बँध रही थी। जैसे-तैसे रात्रि २ बजे जंघई स्टेशन को कैलास स्पेशल ने छोड़ा।

भदोही (३० कि०) : भदोही स्टेशन पर गाड़ी कुछ क्षणों को रुकी। यात्री अभी समाधि में मग्न थे। रात्रि के तीन बजे थे। सर्दी के मारे सबने अपनी-अपनी खिड़कियाँ बन्द कर रखी थी।

सेवापुरी (२२ कि०) : हाँ सेवापुरी स्टेशन पर आशा हुई कि अब कैलास स्पेशल अपने गन्तव्य स्थान पर यथासमय पहुँच जाएगी। यात्रियों को सूचित किया गया कि शौच-दातुन कुल्ला आदि नित्यकर्मों से निवृत्त हो लें।

लोहटा (१७ कि०) : गाड़ी लोहटा स्टेशन पर १ घंटा रुकी रही, यहीं चाय नाश्ता वितरित किया गया। बड़े प्रयत्नों के बाद वाराणसी कन्ट्रोल ने वाराणसी स्टेशन पर लाने की अनुमति दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाराणसी (७ कि०) : इस कारण २६-१२ ८० को प्रातः ७-५० कैलास स्पेशल वाराणसी स्टेशन लगी ।

काशी माहात्म्य

वाराणसी तु भुवनत्रयसारभूता
रम्या नृणां सुगतिदा किल सेव्यमाना ।
अत्रागता विविधदुष्कृतकारिणोऽपि
पापक्षये विरजसः सुमनः प्रकाशाः ॥

(ना० पु० उ० ४८।१३

'काशी परम रम्य ही नहीं, त्रिलोकी का सार है। वह सेवन किये जाने पर मनुष्यों को सद्गति प्रदान करती है अनेक पापाचारी भी यहाँ आकर पापमुक्त होकर देवव प्रकाशित होने लगते हैं।'

अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तिकराणि च ।
काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः ॥
कदा काश्यां गमिष्यामि कदा द्रक्ष्यामि शंकरम् ।
इति ब्रुवाणः सततं काशीवासफलं लभेत् ॥
येषां हृदि सदैवास्ते काशी त्वाशीविषाङ्गदः ।
संसाराशीविषविषं न तेषां प्रभवेत् क्वचित् ॥
श्रुतं कर्णामृतं येन काशीत्यक्षरयुग्मकम् ।
न समाकर्णयत्येव स पुनर्गर्भजां कथाम् ॥
काशी काशीति काशीति जयतो यस्य संस्थितिः ।
अन्यत्रापि सतस्तस्य पुरो मुक्तिः प्रकाशते ॥

(काशी खण्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अवन्तिका आदि सात मोक्षपुरियाँ हैं, पर वे कालान्तर में काशीप्राप्ति कराके ही मोक्ष प्रदान करती हैं। काशी ही एक पुरी है जो साक्षात् मोक्ष देती है। "मैं काशी कब जाऊँगा, कब शंकर जी का दर्शन करूँगा" इस प्रकार जो सोचता तथा कहता है, उसे सर्वदा काशीवास का फल होता है। जिनके हृदय में काशी सदा विराजमान है, उन्हें संसार-सर्प के विष से क्या भय ? जिसने काशी—यह दो अक्षरों का अमृत कानों से पान कर लिया, उसे गर्भजनित व्यथाकथा नहीं सुननी पड़ती। जो दूर से भी काशी-काशी सदा जपता रहता है, वह अन्यत्र रहकर भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है।'

महाराजश्री की विद्यास्थली वाराणसी, जहाँ उन्होंने ७-८ वर्षों तक तप और संयम से रहकर गुरुचरणों में विद्या प्राप्त की थी एवं कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया, अपने को गौरवशाली अनुभव कर रही थी। वाराणसी स्टेशन के प्लेट-फार्म पर स्वामी शाश्वतानन्द जी महाराज, श्रीरामनरेशदासजी न्यायाचार्य, ब्र० शारदानन्दजी वेदान्ताचार्य, ब्र० पुण्यानन्दजी वेदान्ताचार्य प्रभृति, बहुत से महात्मा एवं सद्गृहस्थ अगवानी के लिए उपस्थित थे। भक्तिसंगीत की मधुर ध्वनि कैलास स्पेशल के हर डिब्बे में गूँज रही थी। इस बीच "कैलासवासी महामण्डलेश्वर भगवान् की जय, सद्गुरुदेव महाराज की जय" की जय-जयकार से कैलास के भक्तों, शिष्यों एवं महात्माओं का समूह जो स्टेशन पर पहले से ही अगवानी के लिए प्रतीक्षा कर रहा था, उमड़ पड़ा। महाराजश्री एवं तीर्थजी सहित सभी महात्माओं को उन्होंने फूलमालाएँ पहनाई एवं प्लेटफार्म से बाहर चलने का मार्ग निर्देशन किया। यात्रियों को पहले ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूचना दी जा चुकी थी कि वे प्लेटफार्म के बाहर प्रतीक्षा कर रही १२ बसों में जाकर अपना स्थान ग्रहण करें। सभी यात्री प्रसन्न मुद्रा में सीढ़ियाँ चढ़ते-पुल से जाते एवं पुनः सीढ़ियाँ उतरकर बाहर जाते बड़े सुन्दर लग रहे थे। कोई रिक्सा वाला, स्कूटर वाला, टेक्सी वाला अथवा गाइड किसी यात्री से कुछ नहीं पूछ रहा था, वे आपस में कह रहे थे कि ये ऋषिकेश के कैलास आश्रम की स्पेशल ट्रेन के यात्री हैं इनके लिए पहले से ही बसों का प्रबन्ध है। महाराजश्री, श्री स्वामी हरिहर तीर्थजी कार पर बैठकर दशाश्वमेध घाट की ओर चले, पीछे से सभी बसें भी चलीं। सभी बसों में यात्री भगवत्संकीर्तन में तन्मय थे। किसी को कहीं की याद नहीं एक ही धुन, तीर्थस्नान एवं दर्शन। सभी बसें गौदोलिया चौराहे के निकट खड़ी हुई, वहाँ से थोड़ी दूर दशाश्वमेधघाट था; काफी लम्बा घाट है, वैसे वाराणसी के घाट प्रसिद्ध हैं। गंगा किनारे बने ये घाट पत्थर के बने हैं। राजा-महाराजाओं के बने घाटों के समीप गगन-चुम्बी महल, भवन, मन्दिर एवं धर्मशालाएँ इसकी प्राचीनता को सिद्ध करते हैं। लगभग पाँच मील लम्बे पक्के घाट विश्व में अन्यत्र उपलब्ध नहीं; यह भारतीय जन-मानस की देव नदी एवं तीर्थों के प्रति अपार श्रद्धा को अभिलक्षित करता है। सप्तपुरियों में काशीपुरी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। "काश्यां हि मरणान्मुक्तिः" काशी में देहोत्सर्ग करने से मुक्ति मिलती है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में भगवान् शिव का "विश्वनाथ" ज्योतिर्लिङ्ग यहीं है एवं ५१ शक्तिपीठों में मणिकर्णिका पर विशालाक्षी शक्तिपीठ काशी में ही है।

कुछ यात्री नाव पर बैठकर गङ्गा के उस पार चले गए एवं वहाँ जाकर स्नान, दान, तर्पण, संध्यादि नित्य-नैमित्तिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्म कर रहे थे। स्नान-दान के पश्चात् घाटों के दर्शन करते हुए, यात्री पूजा-सामग्री एवं गंगाजल लिए भगवान् विश्वनाथ मन्दिर के दर्शन को चल दिए। जिन्होंने प्रथम बार इस मुक्ति-भूमि के दर्शन किए; उनके हृदय में विशेष उत्कण्ठा थी। सभी बड़ी श्रद्धा से "ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते रुद्राय" इत्यादि मन्त्रों का मन ही मन जप करते हुये चलते जा रहे थे। वाराणसी की छोटी-छोटी गलियों, विशेषकर विश्वनाथ गली में लगभग २-२॥ घंटे तक श्री कैलास आश्रम के यात्रियों का अनवरत आवागमन बना रहा। मन्दिर के पुजारी जी से पहले ही अनुरोध किया गया था कि वे कैलास के यात्रियों को सुविधा-पूर्वक दर्शन-पूजन करने में हर संभव सहयोग करें, काशी के इस प्रधान मन्दिर में सोने का कलश चढ़ा है। इसकी जलहरी चौरस है। मन्दिर के पास ज्ञानवापी कूप है, जिसके पास प्राचीन विश्वनाथ मन्दिर है। इसे औरंगजेब ने तुड़वा दिया था, तब भगवान् शंकर इस कूप में चले गये थे। वहीं से इन्हें वर्तमान मन्दिर में स्थापित किया गया है।

विश्वनाथ मन्दिर से थोड़ी दूर माँ अन्नपूर्णा का मन्दिर है, जहाँ माता जी की भव्य मूर्ति विराजमान है। सुख-समृद्धि की दात्री माँ अन्नपूर्णा के दर्शन का विशेष फल है। इसके पास ही 'ढुण्डिराज गणेश' जी का मन्दिर है। इनके अङ्गों में चाँदी मढ़ी हुई है।

मुख्य दर्शन करने के पश्चात् यात्रियों को बसों पर बैठाकर मानस मन्दिर ले जाया गया। यहाँ स्वचालित विद्युत यन्त्रों से भगवान् श्रीराम एवं रासेश्वर कृष्ण की अति मनोहारी लीलाएं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी को देखने को मिली, संगमरमर की दीवारों में सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस खुदा है। भगवान् राघवेन्द्र सरकार एवं जगज्जननी के मनोहारी दर्शन किए। तत्पश्चात् दुर्गाजी का मन्दिर देखा, इसमें कूष्माण्डा देवी की मूर्ति है। दुर्गा जी एवं मानस मन्दिर के दर्शनों के बाद संकटमोचन के दर्शन कराए गए। कहते हैं गोस्वामी तुलसीदास जी को यहीं पर रामभक्त हनुमान् के दर्शन हुए। एक बड़े बगीचे में उन्हीं द्वारा प्रतिष्ठापित मूर्ति यहाँ है। सामूहिक स्वर में "हनुमान् चालीसा" का पाठ कर एवं अपनी भेंट सामग्री निवेदन कर नमस्कार कर, यात्री बसों द्वारा वापिस स्टेशन पर आ गए। मार्ग में लौटते समय गोदौलिया के निकट दो बसें रुकीं। सभी महात्माओं एवं कुछ सद्गृहस्थों को लेकर दक्षिणामूर्तिमठ में महाराजश्री द्वारा वहाँ के महात्माओं का स्वागत किया गया।

मुगलसराय जं० (१७ कि०) : वाराणसी स्टेशन कैलास स्पेशल ने २६-१२-८० को रात्रि ८ बजे छोड़ दिया। मार्ग में शिव नीराजन-स्तोत्र एवं शिव महिम्न स्तोत्र हुआ, सभी भक्तों एवं सन्तों ने अपनी-अपनी सीट पर बैठकर पाठ किया। मुगलसराय स्टेशन पर रात्रि का भोजन वितरित किया गया। उत्तर रेलवे का यह अन्तिम स्टेशन है। यहाँ गाड़ी २।। घंटे रुकी। यहाँ से बिजली का इञ्जन दिया गया। यात्रियों को सावधान किया गया कि अपनी-अपनी सीट ग्रहण कर लें एवं गया के मार्ग में गाडी के रुकने पर गाड़ी से न उतरें।

गया जं० (२०७ कि०) : अब पूर्व रेलवे के क्षेत्र में गाड़ी चल रही थी। विद्युत् इञ्जन लगने से इसकी गति काफी तीव्र थी, मेल-एक्सप्रेस गाड़ियों की अपेक्षा भी तेज; सैयद राजा में कुछ धीमी हुई फिर इसके बाद भभुया रोड, शिवसागर रोड,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सासाराम जं०, डेहरी-आन-सोन, अनुग्रह नारायण रोड, इस्माइलपुर आदि मुख्य स्टेशनों को भी छोड़ती हुई २७-१२-८१ को प्रातः २-४५ को कैलास स्पेशल गया स्टेशन पहुँची। यहाँ यद्यपि इसे प्रातः ४ बजे पहुँचना था, परन्तु बीच में कोई क्रासिंग न होने के कारण गाड़ी सीधी गया आ पहुँची। २०७ किलोमीटर की यात्रा को तीन घंटे से भी कम समय में पूरा किया। परन्तु यात्री अभी निश्चिन्तता से निद्रामग्न थे। उद्घोषण-कक्ष से सभी डिब्बों में सूचना सुनाई दी कि 'गया" स्टेशन आ गया है, यात्री गाड़ी से बाहर न निकलें क्योंकि कुछ ही क्षणों में कैलास स्पेशल 'तीर्थयात्रा' प्लेटफार्म में लगेगी। तीर्थयात्रा प्लेटफार्म में एक अन्य स्पेशल खड़ी थी, उसे दूसरी जगह कर दिया गया। सर्दी अधिक पड़ रही थी। धुँध ही धुँध चारों ओर थी। शौच, दातुन एवं पंचस्नान कर यात्रियों ने चाय-नाश्ता किया। महाराजश्री के साथ सभी यात्री गया तीर्थ में स्नान, श्राद्ध तर्पण, दर्शन आदि के लिए निकल पड़े।

गया माहात्म्य

एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्।
यजेत वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्॥

(पद्मपु० स्वर्ग० ३८।१७)

'बहुत-से पुत्रों की मनुष्य को इसलिए कामना करनी चाहिये कि उनमें से कोई एक गया हो आये अथवा पिता की सद्‌गति के लिए नीले रंग का साँड़ छोड़ दे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गयायां नहि तत् स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते ।
सांनिध्यं सर्वतीर्थानां गयातीर्थं ततो वरम् ॥
ब्रह्मज्ञानेन किं साध्यं गोगृहे मरणेन किम् ।
वासेन किं कुरुक्षेत्रे यदि पुत्रो गयां व्रजेत् ॥

(वायुपुराण, गया माहा० ३)

'गया में ऐसा कोई स्थान नहीं है, जो तीर्थ न हो। वहाँ सभी तीर्थों का सांनिध्य है; अतः गया तीर्थ सर्वश्रेष्ठ है। ब्रह्म-ज्ञान, कुरुक्षेत्र के वास तथा गोशाला में मरने से क्या लेना है यदि पुत्र गया जाकर पिण्डदान कर दे।'

गया को प्रमुख पितृतीर्थ कहते हैं। यहाँ पिण्डदान करने से पितरों को असीम तृप्ति होती है। सभी यात्रियों ने हाथ से गड्ढा खोदकर जलपात्रों से फल्गु नदी में स्नान किया और वहीं पर श्राद्ध एवं पिण्डदान किया। इसके पश्चात् यात्रियों ने गया के प्रधान विष्णुपद मन्दिर के दर्शन किए। मन्दिर में अष्टकोण वेदी पर भगवान् विष्णु के चरण चिह्न बने हुए हैं।

गया से सात मील दूर बुद्धगया में भगवान् बुद्ध का विशाल मन्दिर है। इसी स्थान पर बैठकर भगवान् बुद्ध ने तपस्या की थी। गया के सब तीर्थों के दर्शन कर यात्रियों ने बौद्धगया के भी दर्शन किये। लौटकर सभी ने प्रेमपूर्वक भोजन किया। पर्याप्त समय मिलने पर यात्रियों ने अपने वस्त्र प्रक्षालन किये। शाम को प्लेटफार्म पर ही विशाल सत्संग का आयोजन हुआ। गया के सहायक स्टेशन मास्टर को सायं ७ बजे गाड़ी को प्रस्थान का समय दिया गया था किन्तु लोको से समय से इञ्जन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न मिल सका। आखिर स्टेशन अधीक्षक के विशेष प्रयत्नों से मुगलसराय कन्ट्रोल से अनुमति मिली एवं ८-१५ पर इञ्जन लगा, रात्रि ८-३० को कैलास स्पेशल ने गया स्टेशन छोड़ दिया। सायं आरती एवं शिवमहिम्न स्तोत्र का पाठ प्लेटफार्म पर कर लिया गया एवं रात्रि भोजन भी वितरित कर दिया गया।

गया स्टेशन पर अन्य दो यात्रा स्पेशल भी खड़ी थी, जिन्हें इञ्जन के लिए दो दिन से प्रतीक्षा करनी पड रही थी; परन्तु अपनी यात्रा स्पेशल के लिए स्टेशन अधीक्षक ने व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी ली एवं उच्च अधिकारियों को संस्तुति की कि यह विशुद्ध धर्म प्रचार एवं राष्ट्रीय एकता को जाग्रत् करने के उद्देश्य से है एवं कैलास आश्रम की शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित की गई है। सब महादेव की प्रेरणा थी अन्यथा कुछ कार्यकर्ता अत्यधिक परेशान हो रहे थे। धीरे-धीरे गाड़ी आगे बढ़ने लगी। वजीरगंज स्टेशन में जमालपुर सवारी गाड़ी के इञ्जन की खराबी के कारण प्लेटफार्म खाली नहीं था, इसके लिए क्यूल जं० से इञ्जन आना था। इस कारण कैलास स्पेशल का मार्गावरुद्ध हो गया। इसे तीन घण्टे यहीं इन्तजार करनी पड़ी। आखिर इस दैनिक चलने वाली गाड़ी का इञ्जन आने पर इसे आगे चलने की अनुमति मिली।

जमुआवाँ जं० (१८ कि०) : रात्रि १॥ बजे जमुआवाँ स्टेशन पर पहुँची, यहाँ भी कुछ समय के लिए कैलास स्पेशल रुकी। उसके बाद नवादा स्टेशन पहुँचते-पहुँचते ब्रह्ममुहूर्त हो गया था। यात्रियों को परामर्श दिया गया कि आध घंटे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय में नवादा में वे स्नान कर लें क्योंकि इसके बाद क्यूल जंक्शन में ही पानी सुलभ होगा।

क्यूल जं० (६१ कि०) : क्यूल जंक्शन में कैलाश स्पेशल प्रातः ७॥ बजे पहुँची, यहाँ अवशिष्ट यात्रियों ने स्नान किया। सभी डिब्बों की सफाई करवाई गई एवं पानी भरवाया गया। यहीं पर प्रातःकालीन जलपान की व्यवस्था की गई। 'हर हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गङ्गे' की धुन सभी डिब्बों में चल रही थी, इस बीच ९-१५ पर गाड़ी ने क्यूल स्टेशन छोड़ दिया। इसके बाद भक्ति संगीत की मधुर ध्वनि सभी डिब्बों में सुनाई देने लगी 'मैली चादर ओढ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ'। महाराजश्री का सत्संग प्रवचन चलता रहा। गाड़ी पहले ही कुछ लेट चल रही थी किन्तु 'भलुई हाल्ट' स्टेशन आने पर गाड़ी वहीं रुक गई।

भलुई हाल्ट (२२ कि०) : इस स्टेशन पर गाड़ी लगभग चार घंटा रुकी। झाझा कन्ट्रोलरूम में फोन करने पर पता चला कि किसी अन्य ट्रेन की दुर्घटना से झाझा प्लेटफार्म से गुजरने के लिए मार्ग नहीं है। गिद्धौर से झाझा के बीच मार्ग ठीक करने के लिए रेलवे कर्मचारी सतत प्रयत्नशील थे किन्तु अपनी सीमित शक्ति एवं संसाधनों से रास्ता साफ करने में उन्हें ३-४ घण्टे का समय लग गया।

भलुई हाल्ट स्टेशन पर ही मध्याह्न के भोजन को वितरित किया गया। सभी यात्रियों को उत्सुकता थी कि किसी प्रकार वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन छूट न जाएँ। भोजन के बाद सभी भजन संकीर्तन में मग्न थे एवं परमेश्वर से प्रार्थना कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे थे कि किसी प्रकार आजकी यात्रा पूर्ण और सफल हो। और आखिर २-३० बजे अपराह्न कैलास स्पेशल को सिगनल मिल गया और यह गिद्धौर स्टेशन के लिए रवाना हो गई। अब यहाँ से पर्वतीय क्षेत्र आरम्भ होता जा रहा था। दोनों तरफ छोटी-छोटी पहाड़ियों का दृश्य अतीव रमणीक था। कैलास स्पेशल को चलते देख यात्रियों के मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी।

गिद्धौर (२० कि०) : गिद्धौर स्टेशन आने पर गाड़ी कुछ क्षणों के लिए रुकी यहाँ चाय वितरित की गई एवं झाझा स्टेशन को सूचित किया गया कि इञ्जन की पूर्ण व्यवस्था रखें। गिद्धौर से झाझा केवल १२ किलोमीटर था। कैलास स्पेशल झाझा स्टेशन में चार बजे पहुँच चुकी थी।

झाझा (१२ कि०) : यहाँ पर सहायक स्टेशन मास्टर ने काफी तत्परता से सहयोग दिया। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण उन्होंने दो इञ्जनों की व्यवस्था की। इस कार्य में केवल दस मिनट लगे। सब प्रभु की कृपा थी। सायं ४-१५ पर कैलास स्पेशल जसिडीह के लिए छूटी। आगे-पीछे दो इञ्जनों के लग जाने से गाड़ी अच्छी रफ्तार से चल रही थी, सूर्य भगवान् अपनी दिन भर की लम्बी यात्रा से विश्राम लेने की सोच रहे थे। सायंकालीन सूर्य की आभा से हरी-भरी पहाड़ियों को देखते ही बनता था। सभी के मन में एक अजीब उत्साह था। इस बीच महाराजश्री ने वैद्यनाथ धाम का माहात्म्य निरूपण किया जिसका श्रवण सभी यात्रियों ने अपनी-अपनी सीट पर बैठे हुए चलती गाड़ी में श्रवण किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारं परमेश्वरम् ॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने ।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये ॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥
यं यं काममपेक्ष्यैव पठिष्यन्ति नरोत्तमाः ।
तस्य तस्य फलप्राप्तिर्भविष्यति न संशयः ॥
एतेषां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति ।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वरः ॥

(शि॰ पु॰ ज्ञा॰ सं॰ अ॰ ३८)

काठियावाड़ में श्री सोमनाथ, श्रीशैल पर श्री मल्लिकार्जुन, उज्जैन में श्री महाकाल, नर्मदा में श्री ओंकारेश्वर, हिमाच्छादित केदारखण्ड में श्रीकेदारनाथ, डाकिनी में श्री भीमशङ्कर, काशी में श्री विश्वनाथ, गोदावरी तट पर श्री त्र्यम्बकेश्वर, चिताभूमि में श्री वैद्यनाथ, दारुकावन में श्रीनागेश्वर, सेतुबन्ध पर श्री रामेश्वर और शिवालय में श्रीघुश्मेश्वर—ये द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनका बड़ा माहात्म्य है। जो कोई नित्य प्रातःकाल उठकर इन नामों का पाठ करता है, उसके सात जन्मों के पाप क्षय हो जाते हैं। जिस-जिस कामना को हृदय में रख कर इसका पाठ करेंगे; उनकी वह-वह कामना फलीभूत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो जायगी—इसमें कोई संशय नहीं। इनके दर्शनमात्र से पापों का नाश हो जाता है। जिस पर भगवान् शङ्कर प्रसन्न हो जाते हैं, उसके (शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के) कर्म क्षय हो जाते हैं।

जसिडीह जं० (४४ कि०) : जसिडीह स्टेशन में शाम के सवा पाँच बज चुके थे। कैलास के कुछ विशिष्ट महात्मा कार्यकर्ताओं को देवघर भेजकर मन्दिर में सूचना भिजवा दी गई ताकि सभी यात्रियों को सुविधा पूर्वक दर्शन हो। जसिडीह स्टेशन से वैद्यनाथ धाम मन्दिर ९ किलोमीटर है। सभी के लिए सवारी की व्यवस्था की गई। पूर्व से सवारी की व्यवस्था न होने पर भी अचानक सभी के लिए बसों की व्यवस्था हो जाना भूतनाथ भगवान् की असीम अनुकम्पा थी। यात्रियों ने बसों में चढ़ते-उतरते समय जिस धैर्य का परिचय दिया, वह श्लाघनीय था। अपनी-अपनी डिब्बे की सवारियों की अलग-अलग टोली लाइन में खड़ी थी, कोई व्यवस्था भङ्ग नहीं कर रहा था, सभी को पूर्ण आशा थी, हमें वैद्यनाथ भगवान् के दर्शन होंगे। देवघर पहुँचने पर यात्रियों ने शिवगङ्गासरोवर में स्नान किया। कहते हैं जल की आवश्यकता पड़ने पर रावण ने अपने पदाघात से इस सरोवर को उत्पन्न किया था। यह सरोवर मन्दिर के पास ही है। शक्तिपीठ एवं "वैद्यनाथं चिताभूमौ" चिताभूमि में होने के कारण इसे ही वास्तविक वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग माना जाता है। जब भगवान् शंकर यज्ञ में सती हुई पार्वती के शव को कंधे पर रखे विचर रहे थे तो उनका हृत्पिण्ड यहीं गिरा था, जिसका यहीं दाह संस्कार किया गया। कैलास से रावण इस ज्योतिर्लिङ्ग को लाया था परन्तु मार्ग में लघुशङ्का निवृत्ति के लिए रावण बैठा तो किसी अहीर को संभाल कर पकड़ने के लिए कहा। परन्तु भार संभाल न सकने से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसने उसे भूमि में रख दिया। लङ्का ले जाने की इच्छा से रावण ने उसे पूरी शक्ति लगाकर उठाना चाहा किन्तु वह उठा नहीं। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने आकर उसकी यहीं प्रतिष्ठा की। लिङ्गमूर्ति ऊँचाई में बहुत छोटी है। वैद्यनाथ मन्दिर के घेरे में २६ मन्दिर और हैं। गौरी मन्दिर यहाँ का शक्तिपीठ है। कार्तिकेय मन्दिर, गणपति मन्दिर, कालभैरव मन्दिर, मनसादेवी मन्दिर, हरगौरी मन्दिर. कालिका मन्दिर, अन्नपूर्णा मन्दिर आदि परिक्रमा में ही हैं। मन्दिर की विशालता, प्राचीन कलाकृतियों एवं अद्वितीय वास्तु-शिल्प को देखते ही बनता है। सभी यात्रियों ने मन्दिर के भीतर जाकर दर्शन एवं पूजन किया। यहाँ का बाजार छोटा है किन्तु सुन्दर है। यहाँ पण्डे नहीं हैं। यहाँ की स्मृतिरूप में यात्रियों को मूर्ति, चित्र तथा पूजन सामग्री को खरीदते हुए देखा गया। इस प्रकार दर्शन करा कर सभी यात्रियों को बसें पुनः जसिडीह स्टेशन ले आईं। वहाँ सभी ने प्रेमपूर्वक भोजन किया एवं अपने-अपने स्थान पर महादेव की महिमा का गुणानुवाद करने लगे।

मधुपुर जं० (२६ कि०): चितरंजम जं० (५७ कि०): जसिडोह स्टेशन से गाड़ी ३ बजे प्रातः रवाना हुई। मधुपुर जं० आकर कुछ समय के लिए रुकी और फिर कुछ यात्रियों को स्नान कराकर अगले स्टेशन की ओर बढ़ चली। ब्रह्ममुहूर्त होने लगा। शौच-दातुन से सभी निवृत्त होते जा रहे थे। प्रातःकालीन प्रार्थना हुई।

सीतारामपुर जं० (१६ कि०) : सीतारामपुर जंक्शन आने पर सभी यात्रियों को प्रातः का चाय-नाश्ता वितरित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया गया। जसिडीह से हवड़ा की यात्रा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार १० घंटे में पूरी होनी थी, इसलिये यात्री आश्वस्त थे कि मध्याह्न १ बजे से पूर्व हवड़ा पहुँचने का प्रश्न ही नहीं उठता।

आसनसोल जं० (६ कि०) : आसनसोल जंक्शन आने पर प्रयास किया गया कि यहाँ से विद्युत् इञ्जन मिल जाए। प्रभु ने इस कार्य में सफलता दी। हाँ ! इस प्रयत्न में कुछ देरी अवश्य लग गई, आसनसोल से कैलास स्पेशल १० बजे के कुछ बाद ही रवाना हो पाई। अब इसमें एक बार फिर विद्युत् इञ्जन लगा था। यात्रियों को अब आशा बँध चली थी कि आज पूरे दिन के बजाय आधा दिन कलकत्ता भ्रमण में व्यतीत होगा और कल तीर्थों के तीर्थ गंगासागर का दर्शन संभव हो जाएगा। कैलास स्पेशल के यात्री आने-जाने वाली दूसरी गाड़ियों के यात्रियों से अब अपने को किसी प्रकार कम नहीं समझ रहे थे।

अण्डाल जं० (२५ कि०) : अब गाड़ी केवल महत्त्वपूर्ण जंक्शनों पर रुकती, वो भी क्रासिंग अथवा अन्य अपरिहार्य कारणों को लेकर। अण्डाल जंक्शन में गाड़ी रुकी। स्टेशन के अधिकारियों ने भी भक्तिसंगीत सुना, जो सभी डिब्बों में समान रूप से हो रहा था, ज्यादा देर न रोककर उन्होंने इसे जल्दी ही सिगनल दे दिया।

दुर्गापुर (१७ कि०) : कैलास स्पेशल अब अपने विश्व-विख्यात शिष्यों की भूमि में प्रवेश कर रही थी। पश्चिम बंगाल के स्वामी विवेकानन्द एवं स्वामी अभेदानन्द ने कैलास आश्रम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में शिक्षा ग्रहण कर देश-विदेश में इसका प्रचार कर भारत की गरिमा सिद्ध की थी। स्टील की नगरी दुर्गापुर को जल्दी ही से पीछे छोड़ती हुई कैलास स्पेशल वर्द्धमान जं० गाड़ी रुकी।

वर्द्धमान जं० (६३ कि०) : जिन डिब्बों में पानी नहीं था यहाँ भरवा लिया गया एवं सफाई कर्मचारी शीघ्रता से सफाई में लग गए। १२-४५ वर्द्धमान स्टेशन छोड़कर गाड़ी व्याण्डेल जंक्शन की ओर बढ़ी। कार्यकर्ताओं व यात्रियों को अवगत कराया गया कि व्याण्डेल जंक्शन में भोजन की व्यवस्था होगी।

व्याण्डेल जं० (५५ कि०) : व्याण्डेल जक्शन आने में एक घण्टे से भी कुछ कम समय लगा। गाड़ी रुकी, प्रत्येक डिब्बे के विशिष्ट कार्यकर्ता अपने-अपने डिब्बों के लिए भोजन सामग्री लेकर उसे वितरण करने में जुट गये। सबको पूर्ण एवं पर्याप्त भोजन पहुँच जाने पर गाड़ी को सिगनल देने के लिए सहायक स्टेशन मास्टर से अनुरोध किया गया।

श्रीरामपुर (२० कि०) : श्रीरामपुर रुककर गाड़ी हावड़ा के लिये चल दी। कलकत्ता की विशालता वर्द्धमान से ही दृष्टिगोचर होने लगती है। यहीं से गगनचुम्बी इमारतें प्रारम्भ हो गईं थीं। उद्योग एवं व्यापार का केन्द्र यह नगर तीर्थयात्रियों के लिए भी कम आकर्षक का विषय नहीं था।

हावड़ा (२० कि०) : महाराजश्री ने कलकत्ता यात्रा कार्यक्रम को सभी यात्रियों को सूचित किया। हावड़ा स्टेशन पर शिवानन्द आश्रम के कार्यकर्ता, स्वामी प्रणवानन्द आदि ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्माओं व सद्गृहस्थों को काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी। कुछ यात्रियों के संबन्धी अपने तीर्थप्रेमी बन्धु-बान्धवों के दर्शन के लिये उत्सुक थे। हावड़ा जंक्शन पर गाड़ी अपराह्न २-३० पर पहुँची। अपार भक्त एवं सन्त समुदाय ने पुष्पमालाओं एवं पुष्पवृष्टि से कैलास स्पेशल के तीर्थयात्रियों का स्वागत किया। स्टेशन के बाहर सभी यात्रियों के लिए बसों का प्रबन्ध था। बसें आदिकाली,काली मन्दिर, दक्षिणेश्वर एवं बेलूरमठ दिखाती हुई श्री कैलास आश्रम शताब्दी समारोह के सम्मेलन में तिकोना पार्क ले गईं जहाँ लाखों की संख्या में भक्त समुदाय ने महापुरुषों के प्रवचन सुने, स्वामी प्रणवानन्द जी ने कैलास आश्रम की सौ वर्ष की उपलब्धियों के बारे में कलकत्ता की जनता को परिचय दिया। सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण महाराजश्री ने किया एवं आयोजन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। इस कार्यक्रम में रात्रि के १०-३० बज चुके थे। लौटकर सभी यात्री स्टेशन पर आए एवं भोजन के उपरान्त विश्राम किया।

सभी यात्रियों से अनुरोध किया गया था कि उन्हें प्रातः ३ बजे गंगा सागर यात्रा के लिये तैयार रहना है क्योंकि कैलास आश्रम यात्रा स्पेशल के तीर्थयात्रियों के लिये आरक्षित बसें ३ बजे स्टेशन के बाहर लगनी शुरू हो जाएँगी। उधर महाराजश्री के पास कलकत्ता के भक्तों की अपार भीड़ जमा थी, सभी चाह रहे थे कि महाराजश्री हमारे यहाँ पधारें, सभी महात्माओं सहित। परन्तु इस समय महाराजश्री की मण्डली ६०० से अधिक की थी। आखिर वहीं दर्शन कर कैलासवासी भगवान् की जय, महामण्डलेश्वर भगवान् की जय जयकार से वे मध्यरात्रि के बाद गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगासागर की यात्रा का कार्यक्रम बनाने में चिन्तन शील एवं पुराने लोगों के अनुभव को प्राथमिक दी गई थी। वैसे गंगासागर की यात्रा वर्ष में एक बा मकर संक्रान्ति के अवसर पर होती है; इस अवसर पर सरका की ओर से विशेष प्रबन्ध होता है एवं स्टीमर आदि उपल होते हैं; मन्दिर कपिल मुनि के आस-पास का क्षेत्र समुद्र रूप से छोड़ देता है; अन्य अवसरों पर यात्रा करने का को खतरा मोल नहीं लेना चाहता; ऐसी धारणा है किन्तु क्षेत्र लोगों, स्टीमर संचालकों ने परामर्श दिया कि समुद्र १५-२० दि पूर्व ही अपनी जगह छोड़ देता है, जहाँ मकर संक्रान्ति मेला लगता है एवं वहाँ से मन्दिर बिल्कुल समीप है। इस लिये दिल्ली से दो बार महात्मा कार्यकर्ताओं को भेजा ग एवं वहाँ से क्षेत्रीय अनुभवी लोग दिल्ली में इसको वास्तवि स्थिति अवगत कराने के लिये आये। अन्त में यात्रियों को पैद न चलना पड़े एवं पूर्ण सुरक्षा का विशेष प्रबन्ध हो, इस शर्त साथ बसों और स्टीमरों को तय किया गया था। मकर संक्रा के १५ दिन पूर्व गंगासागर यात्रा हो जाये, इस कल्पना साकार रूप देने में परिश्रम जो भी हुआ हो परन्तु इ यात्रियों के मन में पूर्ण सन्तोष हुआ। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार बसें स्टेशन के बाहर ३ बजे लगनी प्रारम्भ हो ग अभी स्टेशन के अन्दर-बाहर सन्नाटा था क्योंकि अभी गाड़ि का आवागमन प्रारम्भ नहीं हुआ था एवं सर्दी के मौसम ३ बजे कार्यारम्भ का समय नहीं हुआ करता था। तो कैलास की शान निराली; स्टेशन के अन्दर-बाहर चमच हुए विद्युत् प्रकाश से यात्रियों को अपनी-अपनी बसों में चढ़ कोई असुविधा नहीं हुई; अपनी-अपनी मण्डलियों सहित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाइन में खड़े थे एवं कुछ पुरुष एवं महिलाएँ बैठी बस की प्रतीक्षा कर रही थी। प्रातः ५ बजे सभी को बसों में सुरक्षित स्थान मिल जाने एवं महाराजश्री एवं स्वामी हरिहर तीर्थ जी के कारों में स्थान ग्रहण करने के पश्चात् गंगासागर की महान् यात्रा प्रारम्भ हुई। कलकत्ता नगर के बाहर होने में कुछ समय लगा। अभी रात्रि शेष थी एवं चन्द्रमा की रोशनी से वातावरण बड़ा सुखद लग रहा था। इधर-उधर सड़क के दोनों ओर हरे-भरे खेत एवं नारियल के पेड़ दर्शनीय थे। कुछ दूर जल का साधन मिलने पर बसें रुकी और जो यात्री शौच-दातुन, कुल्ला पंचस्नान नहीं कर पाये थे उन्होंने इस नित्य कर्म को सम्पादित किया।

गङ्गासागर के मार्ग में अपनी बसें ऐसे खाड़ी प्रदेशों से गुजर रही थीं, चारों ओर कुछ दूर जल ही जल, फिर कुछ दूर जल ही जल, फिर कुछ भूमि आ जाती, नारियल के पेड़ और खेतों की हरियाली। उधर इस सारे वातावरण में उगते हुए बाल सूर्य अपनी रक्तिम एवं स्वर्णिम आभा से चारों ओर सौन्दर्य की वृष्टि कर रहे थे, लगता था "बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि" मार्कण्डेय ऋषिश्वर की तरह आज हम भगवान् बालमुकुन्द के दर्शन कर उनकी माया का रहस्य पाने के प्रयत्न में हों। प्रभु की माया ही थी जो बिना समय के गंगासागर की धुन सवार हो गई परन्तु महादेव को साक्षी कर उनकी कृपा से ही यह कार्य पूर्ण होना था।

आगे की बसों की जिम्मेदारी थी कि वे पिछली बसों को साथ लेते हुए चलें, कहीं दिशा भ्रम न हो जाये। अचानक आगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की तीनों बसें रुकी, पता चला पीछे की एक बस में यान्त्रिक गड़बड़ी हुई है सभी यात्री सुरक्षित थे; वे सभी थोड़े-थोड़े करके अन्य बसों में एडजस्ट हो गये। तब पुनः आगे की यात्रा शुरू हुई। अब बसें बंगाल की खाड़ी में उस स्थल के समीप जाकर रुकी, जहाँ से मकर संक्रान्ति के अवसर पर स्टीमर उपलब्ध होते हैं। एक ओर छोटी सी बस्ती, बाकी सब ओर समुद्र ही समुद्र। यात्रियों को निर्देश दिया गया कि स्टीमर सागर के किनारे लगने वाले हैं तब तक किनारे मे बेठकर जल-पान, भजन, ध्यानादि करें। हावड़ा स्टेशन से आते समय यात्रियों को नाश्ता एवं मध्याह्न भोजन के लिये फूड-पैकेट्स वहीं वितरित कर दिये थे। अपनी-अपनी रुचि के अनुसार यात्री विभिन्न क्रियाएं करते हुये दिखाई दे रहे थे। कोई मकर संक्रान्ति मेले के उपलक्ष्य में निर्माणाधीन बड़े-बड़े प्लेटफार्मों को देख रहे थे; जो स्टीमर में चढ़ने-उतरने के लिए उपयोगी होते हैं, कुछ यात्री समुद्र किनारे घूम रहे थे, कुछ बैंठे समुद्र की ठंडी हवाओं का आनन्द ले रहे थे, कुछ नाश्ता पा रहे थे और कुछ नाश्ते के साथ पूड़ियों को समेटने में मग्न थे और पास के खोखों से लेकर चाय की चुस्की भर रहे थे। सब कार्यों को करते हुए स्टीमर के किनारे में लगने की प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही स्टीमर किनारे लगा, यात्रियों का झुण्ड उसी ओर बढ़ने लगा। स्टीमर पर चढ़ने के लिए दो बड़े-बड़े लकड़ी के स्लीपर लगाये गये थे। वहाँ महात्मा कार्यकर्ता सभी यात्रियों को सुविधापूर्वक चढ़ाने में सहयोग दे रहे थे। माइक से साव-धान किया जा रहा था कि जल्दबाजो न करें, दोनों स्टीमरों में ७०० यात्रियों तक के बैठने का पर्याप्त स्थान है। यहाँ फलौदी-नागौर वालों के लिये एक स्टीमर सुरक्षित रखा गया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गङ्गा सागर का एक मार्मिक दृश्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचे हुए फलौदी के कुछ यात्री दूसरे स्टीमर में भी बैठाने पड़े। इस बीच कुछ नोक-झोक भी सुनने को मिली परन्तु कार्यकर्ताओं ने समय से हस्तक्षेप कर परिस्थिति को शान्तमय बना दिया।

कैलास स्पेशल के यात्रियों के लिए जो स्टीमर आए थे; वे बहुत ही सुन्दर, आधुनिकतम संयंत्रों से युक्त दो मंजिले थे, डाक्टर व्यास आवश्यक औषधियों से युक्त साथ में चल रहे थे। जिन यात्रियों ने समुद्र प्रथम बार देखा, उनके मन में विशेष उत्सुकता थी, उसमें भी स्टीमर में बैठकर ३०-३५ किलोमीटर की यात्रा करना एक सुखद एवं मार्मिक अनुभूति थी। सभी यात्रियों के सुविधापूर्वक बैठ जाने पर स्टीमर के पायलट ने यात्रियों को आवश्यक निर्देश दिए एवं भगवान् के संकीर्तन के साथ गंगा सागर की यात्रा प्रारम्भ हुई। सूर्य भगवान् आकाश साफ होने के कारण स्पष्ट अपनी मीठी मीठी ताप दे रहे थे एवं समुद्र की ठण्डी-ठण्डी लहरों में आह्लाद का संचार कर रहे थे। रात्रि जागरण के कारण लहरों की हिलोरों में कुछ यात्रियों को तन्द्रा भी आ गई थी। मध्याह्नकालीन शीत ऋतु का सूर्य ९ दिन को तीर्थयात्रा से मुरझाये हुये एवं टूटे हुए शरीरों में विटामिन-डी का संचार कर रहा था। कहीं-कहीं बीच समुद्र में उत्ताल तरंगों का जल स्टीमर में जोरों से टकरा कर फुहारें-सी छिड़का देता था। सभी यात्री मन्त्रमुग्ध से ३॥ घंटे की यात्रा कर गंगा सागर के तट के करीब आ चुके थे। यहाँ से छोटी नावों में उतर कर किनारे जाना था क्योंकि स्टीमर को कुछ दूर ही खड़ा रखना पड़ता है। स्टीमर से यात्री क्रम से छोटी नाव में बैठकर किनारे आ रहे थे। दोनों स्टीमरों को खाली करने में एक घंटा का समय लग गया। महाराजश्री,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी हरिहर तीर्थ जी, अन्य महात्मा एवं भक्तों के सहित गंगा सागर में एक मेला सा लगने लगा था। सागर द्वीप से कुछ पण्डित, ब्राह्मण एवं कुछ क्षेत्रीय लोग कौतुकतावश एकत्रित हो गये थे। गंगासागर की रेत में यात्री बैठने थोड़ी देर में ऊँची-ऊँची लहरें आतीं और उनके शरीर के ऊपर से गुजरती हुई चली जातीं, कभी-कभी तो बहुत दूर पटक देतीं परन्तु किसीको इससे चोट न लगती।

मन बुद्धि से प्रसन्न अन्तरात्मा की सन्तुष्टि सबके चेहरों पर झलक रही थी। कुछ यात्री बहुत देर तक जल में रहकर अपने इष्ट मित्रों, सगे सम्बन्धियों को भी मन से स्नान करा रहे थे, ऐसे में उनकी स्मृति होना स्वाभाविक है। स्नान, तर्पण, श्राद्ध-पिण्डदानादि के बाद भगवान् कपिल का दर्शन व पूजन किया गया फिर बालू में बैठकर सभी ने प्रेमपूर्वक वैश्वानर की पूजा की। सूर्य भगवान् अस्ताचल पर्वत पर जाने की तैयारी कर रहे थे और समुद्र की लहरें बढ़नी प्रारम्भ हो गई हीं। अब उसी क्रम से छोटी नावों में चढ़ाकर स्टीमर में बैठाया गया। जो अशक्त यात्री थे उन्हें महात्मा कार्यकर्ताओं ने सहयोग एवं सहारा देकर नाव पर बैठाया। स्टीमर के चलते-चलते सन्ध्या हो चली थी। अधिकांश यात्रियों के कपड़े गीले थे परन्तु प्रभु-प्रेम एवं भगवती भागीरथी की कृपा से इसका किसी को भान नहीं हुआ, उन्हें सगर के ६०००० पुत्रों की स्मृति मन में थी जिनकी मुक्ति के लिये गंगा को इतनी दूर आना पड़ा था। स्टीमर के ऊपर में प्रकाश की आभा को छोड़कर सर्वत्र दूर-दूर तक अन्धकार एवं जल ही जल था। "तोरे जादू भरे पाँव मोहे डर लागे राम, कैसे बैठाऊँ तुम्हें नाव में" भजन सबकी जुबाँ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था, हरि संकीर्तन की मस्ती में सब रात्रि १० बजे किनारे आ लगे, वहाँ से पुन बसों में बैठकर रात्रि १२-३० हावड़ा स्टेशन पहुँचे। कैलास स्पेशल में पहले ही विद्युत् इञ्जन लगा था, ३१-१२-८० को रात्रि १ बजे गाड़ी ने हावड़ा स्टेशन छोड़ दिया।

खड़गपुर (११६ कि०) : विद्युत् इञ्जन लगने से डेढ़ घण्टे में एक सौ सोलह किलोमीटर चल कैलास स्पेशल खड़गपुर स्टेशन आ लगी। हावड़ा में समय कम होने के कारण सभी डिब्बों में एक बार ही आवश्यकता अनुसार भोजन पहुँचा दिया था एवं फलौदी वाले यात्रियों के लिये कलकत्ते में बसे फलौदी के सेठजी ने भोजन की व्यवस्था की थी। तो भी कार्यकर्ताओं ने खड़गपुर में सभी डिब्बे के कार्यकर्ताओं एवं यात्रियों से पूछ लिया। यहाँ से स्टीम इञ्जन लगना था इसलिये गाड़ी आध घण्टा रुकी। इञ्जन की व्यवस्था हो जाने पर गाड़ी अपनी गति से चल दी।

बालासोर (११३ कि०) भद्रख (६५ कि०) : बालासोर स्टेशन में प्रातः हो चुकी थी। यात्रियों को यहीं स्नानादि नित्य क्रिया करने का निर्देश दिया। प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना एवं जलपान वितरण के पश्चात् ८॥ बजे गाड़ी चल दी। अब कैलास स्पेशल के लिये समस्या हो गई थी क्योंकि उसे माल-गाड़ियों एवं दैनिक सवारी गाड़ियों को क्रासिंग देते हुए आगे बढ़ना था। भद्रख में कुछ विशेष रुकी।

जाजपुर क्योंझर रोड (४३ कि०) : इसके बाद जाजपुर क्योंझर रोड आते-आते मध्याह्न का एक बज चुका था, जल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की पर्याप्त सुविधा होने के कारण यहाँ मध्याह्न के भोजन की व्यवस्था हुई। एक घण्टे में सभी यात्रियों ने इस दैनिक वैश्वानर पूजन को संपन्न किया।

नेरगुन्दी (४० कि०) कटक (२२ कि०) : हावड़ा से भुवनेश्वर तक ४७५ किलोमीटर की यात्रा थी। २१-१२-८० को अपराह्न पहुँचना था किन्तु अब लगता था शाम अवश्य हो हो जाएगी। गाड़ी नेरगुन्दी में रुकी और चल दी। महाराजश्री ने दिन का सत्सङ्ग एवं माहात्म्य श्रवण कराया। भुवनेश्वर महादेव एवं पुरी के समस्त तीर्थों का विशद माहात्म्य एवं तत्त्व समझाया तत्पश्चात् चलती गाड़ी में ही भगवन्नाम संकीर्तन हुआ। महाराजश्री के प्रथम श्रेणी की डिब्बे में 'ए' केबिन में ही स्वर्णिमा बहिन जी की अध्यक्षता में मनोहारी भजन भगवद्भक्ति एवं तन्मयतासक्ति को द्योतित कर रहे थे। "दिल तुमको दिया नन्दलाला......दिल देके बड़ा पछताये" "कहो कैसे तुम्हारी बन जाऊँ रसिया......" इत्यादि। सभी यात्री इसका आनन्द ले रहे थे एवं इसके मधुर संगीत एवं भावों में मस्ती ले रहे थे। इसी आनन्द वृष्टि के साथ शाम पौने छः बजे भुवनेश्वर स्टेशन आ गया।

भुवनेश्वर (७६ कि०) : यहाँ पर शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश से सम्बन्धित भक्त समुदाय स्वागत के लिये तैयार खड़े थे। उन्होंने फूलमालाओं एवं स्वागत नारों से यात्रियों का मनोबल ऊँचा किया। यहाँ केवल भुवनेश्वर महादेव के दर्शन करने थे एवं उड़ीसा के प्रसिद्ध नगर व राजधानी को देखना व शताब्दी आयोजन का प्रचार करना था। बसों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी व्यवस्था की गई एवं जो यात्री अपनी इच्छा से नगर भ्रमण करना चाहते थे उन्हें ४ घण्टे की स्वतन्त्रता दी गई।

भुवनेश्वर महादेव का दर्शन, पूजन, शिवमहिम्न का पाठकर अधिकांश यात्री नगर भ्रमण के लिये निकल पड़े। भुवनेश्वर प्राचीन कलाकृतियों एवं हैन्डलूम के लिये प्रसिद्ध है। जिसके मन में जो आया उन्होंने यहाँ की स्मृति के रूप में वस्तुएँ खरीदी। समृद्धि की दृष्टि से कलकत्ता की तरह यहाँ के बाजार नहीं थे। यहाँ के लोग उड़ियाभाषी होने पर भी अपने यात्रियों से हिन्दी भाषा में बोल रहे थे। शायद भाषा एवं लोक संस्कृति के भेद के कारण शास्त्रों ने तीर्थयात्रा के बिना अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्ग, सौराष्ट्र और मगध देशों में यात्रा वर्जित की है।

"अङ्गबङ्गकलिङ्गेषु सौराष्ट्रमगधेषु च।
तीर्थयात्रां विना गच्छन् पुनः संस्कारमर्हति॥"

किन्तु भाषा एवं संस्कृति की दीवारें मिटती जा रही हैं। अब भारतीय संस्कृति के महान् स्वरूप से थोड़ी बहुत वैभिन्नताओं को हम उसी में अन्तर्भूत कर लेते हैं। यात्री अपने ही शहर में घूमते हुए जैसे लग रहे थे। साफ एवं उज्ज्वल कपड़ों में निकला ये कैलास का काफला स्थानीय लोगों की कौतुहल का विषय बन रहा था। रात्रि १० बजे तक सभी यात्री वापिस आ गये। भोजन कर चुकने के बाद सबने विश्राम किया। यहाँ से कैलास स्पेशल ने १ जनवरी १९८१ को प्रातः ५-३० बजे पुरी के लिये प्रस्थान किया। प्रातःकालील सामूहिक प्रार्थना हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुरदा रोड (३१ कि०) : खुरदा रोड में आध घण्टा गाड़ी रुकी एवं उसके बाद सीधी चलकर प्रातः ८-२५ पर पुरी स्टेशन जा लगी।

पुरी जं० (४४ कि०) : पुरी स्टेशन पर भी शिवानन्द आश्रम से सम्बन्धित कार्यकर्ताओं, स्थानीय भक्तों एवं महापुरुषों ने महाराजश्री, सन्त-महात्माओं एवं तीर्थयात्रियों का स्वागत किया। जगन्नाथपुरी चार धामों में एक धाम और सप्तपुरियों में एक पुरी है। यह शक्तिपीठ भी है। यहाँ सती की नाभि गिरी थी। यात्री सर्वप्रथम समुद्र स्नान के लिए गए। समुद्र के लिए श्री जगन्नाथ मन्दिर से सीधा रास्ता जाता है, स्वर्गद्वार में सभी यात्रियों ने स्नान किया। पुरी में अब शीत ऋतु नहीं थी, दिन में चलने से हल्की-हल्की पसीने की बूँदें भी टपक रही थीं, समुद्र स्नान बहुत प्रिय लग रहा था। यहाँ तर्पणादि कर यात्री मार्ग में प्रथम पड़ने वाले श्री गोवर्धन पीठ (श्री शङ्कराचार्य मठ) देखने गए। संस्कृत एवं संस्कृति की शिक्षण व्यवस्था जिसको यहाँ आदि शंकराचार्य ने मूर्तरूप देने के लिए सोचकर इस मठ की स्थापना की थी, वो देखने को नहीं मिली। कारण जो भी हो किन्तु इस दिशा में रचनात्मक प्रयास जारी रहना चाहिए। इसके बाद महाराजश्री का अभिनन्दन स्थानीय भक्तों एवं शिवानन्द आश्रम के कार्यकर्ताओं ने किया। इस अवसर पर कैलास आश्रम की अक्षुण्ण परम्परा की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। महाराजश्री ने अपने भाषण में कहा—आने वाली चुनौतियों का निर्भयता से सामना करते हुए देश की अखण्डता की प्रतीक अपनी संस्कृति की रक्षा करनी है। जैसे पिछले १०० वर्षों में कैलास आश्रम समाज की सेवा करता आ रहा है, उससे दुगने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

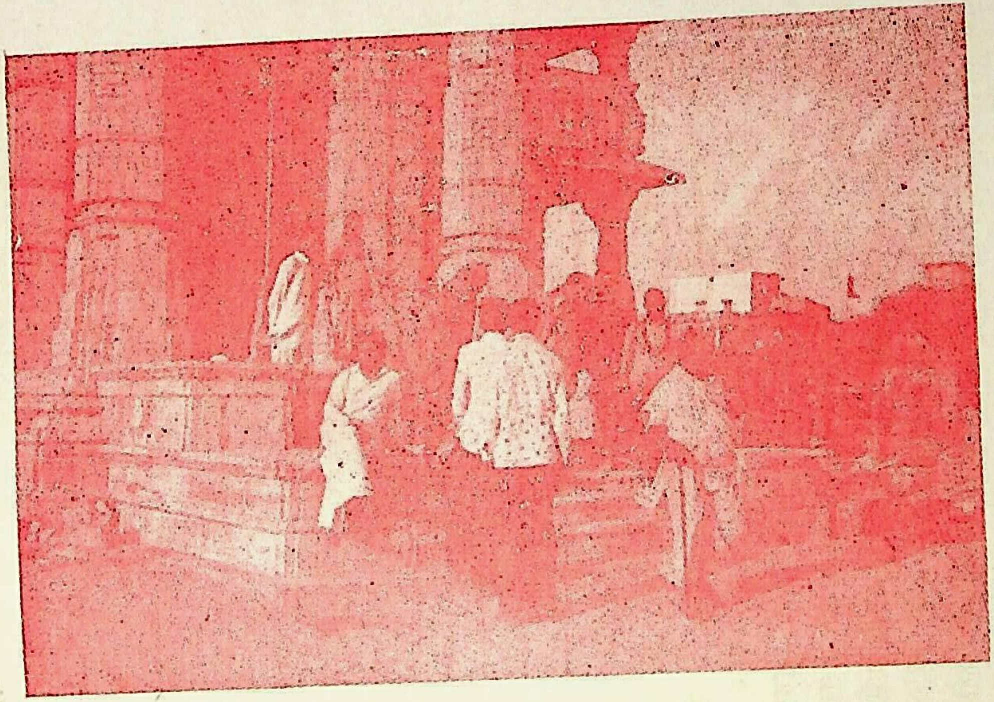

जगन्नाथ पुरी धाम-विशाल मन्दिर की कलाकृतियों का दर्शन करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्साह से यह सेवा करता रहेगा। आयोजन समाप्ति के पश्चात् सभी भक्त पुरी धाम के जगन्नाथ मन्दिर के दर्शनार्थ गये। एवं निज मन्दिर के घेरे के मन्दिरों के दर्शन किए। मन्दिर की विशालता एवं कलाकृति को देखते-देखते जी नहीं भरता था। यद्यपि मन्दिर की ओर से कैलास के यात्रियों को सामूहिक प्रसाद की व्यवस्था थी, परन्तु उस दिन वहाँ के राजा भी दर्शन को आये थे, इसलिए भोग लगने में देरी होते देख साक्षीगोपाल एवं सूर्य मन्दिर के लिए बसों को निर्देश दे दिए गए। विश्व का सर्वश्रेष्ठ सूर्य मन्दिर, कलाप्रेमियों एवं ज्योतिर्विदों के लिए दर्शनीय स्थल माना जाता है। पुरी से लगभग ६० किलोमीटर दूर बसे हुए कोणार्क को पुराणों में पद्मक्षेत्र कहा जाता है। पुराणों में कथा है कि कृष्णतनय साम्ब को कुष्ठ रोग हो जाने से उन्होंने भगवान् की आज्ञा से यहाँ आकर कोणादित्य की पूजा की, जिससे उनका कुष्ठ रोग दूर हुआ। साम्ब ने यहाँ सूर्य की मूर्ति स्थापित की थी जो अब पुरी में है। पुरी से डिलक्स बसों द्वारा सभी यात्री सूर्य भगवान् नवग्रह मन्दिर एवं साक्षीगोपाल के दर्शन करने निकल पड़े। कोणार्क में कोई विशेष बस्ती नहीं है। पुरातत्त्व विभाग ने इसकी सौन्दर्य वृद्धि के लिए बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया है। मन्दिर घेरे के बीच में है। सूर्य रथ के पहिये, सात घोड़े एवं सारथि का स्थान बना है। शिखर भाग को मुसलमान आक्रमणकारियों ने तोड़ दिया। ज्योतिर्विदों को सूर्य सम्बन्धी शास्त्रीय जानकारी के लिए यहाँ पर्याप्त सामग्री मिलती है। वात्स्यायन के कामसूत्र पर आधारित एवं वाममार्गियों की कल्पनानुसार मन्दिर के रथों व भित्तियों पर रतिक्रिया के विविध आसनों की मूर्तियाँ खुदी हैं। पुरी के जगन्नाथ मन्दिर, साक्षी मन्दिर एवं दक्षिण भारत के प्रायः सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राचीन मन्दिरों में ऐसी मूर्तियाँ पाई जाती हैं। लगता है उस समय राजा-महाराजा एवं समाज मन्दिरों में इस प्रकार मूर्तियों के खुदवाने में रुचि लेते थे। जीवन की सरसता बनाये रखने के लिए तभी तो "उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्" भगवान् ने गीता में कहा है। फिर भी कुछ ही यात्री ऐसे थे जिन्होंने जीवन के कलात्मक पक्ष को द्योतित करने वाले इन चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण किया।

सूर्य भगवान् के मन्दिर के बाद नवग्रह मन्दिर के दर्शन किए। एक ही शिला पर यह सुन्दर कलाकृति दर्शनीय है। स्वल्प जलपान कर यात्री बसों में अपने-अपने स्थान पर सुरक्षित बैठ गए और साक्षी गोपाल के दर्शनों के लिए बसें चल दीं। कोणार्क से साक्षीगोपाल का रास्ता जंगल ही जंगल था पर "जानकीनाथ सहाय करे तो कौन बिगाड़ करे नर तेरो।" रात्रि ७ बजे बसों ने साक्षीगोपाल मन्दिर में पहुँचाया। जनश्रुति के अनुसार एक वृद्ध धनी ब्राह्मण की एक निर्धन युवक ने तीर्थयात्राकाल में बहुत सेवा की जिससे सन्तुष्ट होकर उस वृद्ध ने वृन्दावन के गोपालजी के मन्दिर में उसे अपनी कन्या ब्याहने का वचन दिया। परन्तु तीर्थयात्रा से लौटने पर उसके पुत्रों ने कहा—हमारे पिता जी ने किसके सामने आपको वचन दिया था। वह कंगाल युवक श्रद्धा भावना से वृन्दावन गोपालजी को बुलाने गया कि चल कर मेरी साक्षी दो। भगवान् वृन्दावन से पैदल चलकर यहाँ आए। गोपालजी साक्षी देने के लिए खड़े हुए और युवक को कन्या मिल गयी। यहीं कटक के नरेश ने साक्षीगोपाल का मन्दिर बनवा दिया। मन्दिर के दोनों ओर श्यामकुण्ड और राधाकुण्ड हैं। मुख्य मन्दिर में गोपाल जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती के समय के दर्शन थे, शृङ्गार मनोरम था; सभी यात्रियों ने पूजन सामग्री प्रभु के श्रीचरणों में निवेदित की और साक्षीगोपाल के दर्शन कर कृतकृत्य हुए। वहाँ से प्राप्त भगवान् का तुलसीमिश्रित प्रसाद ग्रहण किया। समीप ही श्री राधिका जी का मन्दिर है। कहते हैं गोपालजी का अकेले मन नहीं लगता था इसलिए वृषभानु दुलारी एक अंश से यहाँ अवतीर्ण हुई। उसी की मन्दिर में प्रतिष्ठा की गई। महाराजश्री के साथ साक्षीगोपाल की यात्रा कर सभी यात्री प्रसन्न थे परन्तु साक्षीगोपाल ने अपने दर्शनों के लिए सबको कठिन तपस्या कराई थी। किसी ने भी भोजन नहीं किया था। बसें वापिस पुरी स्टेशन लौटीं। वहाँ भोजन का प्रबन्ध था। जगन्नाथजी का महाप्रसाद भी यात्रियों को मिला एवं कैलास के भंडार का प्रसाद भी पाया। यात्रियों के आते ही उन्हें प्लेटफार्म पर लगी पट्टियों में बिठाकर भोजन कराया जा रहा था। दिन भर के उपवास से एवं भोजन की पूर्ण अनुकूलता न होने के कारण कुछ यात्रियों के चेहरों पर उदासीनता-सी भी झलक रही थी! उन्हें समझाया कि जगन्नाथ का महाप्रसाद प्रसाद समझ कर लेना चाहिए, यहाँ की लोकरीति के अनुसार उसका बनना स्वाभाविक है; तब कहीं उन्होंने चैन ली। दिन भर की थकान दूर करने के लिए सबको चाय वितरित की गई। सभी अपनी-अपनी दुनिया की अपूर्व स्मृतियों में खोए हुए अपनी बर्थ में बैठे। महाराजश्री ने दिन में महाप्रसाद देर में लगने का कारण सबको समझाया; आरती शिवमहिम्न हुआ और सभी भगवच्चर्चा करते हुए विश्राम करने लगे।

खुरदा रोड जं० (८४ कि०) : २ जनवरी १९८१ रात्रि १-१५ को कैलास स्पेशल मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कराने के लिए विजयवाड़ा के लिए चल दी। हावड़ा से वाल्टेयर पर्यन्त दक्षिण-पूर्व रेलवे के अधीन कैलास स्पेशल चल रही थी। अभी तक भुवनेश्वर एवं पुरी की सुखद यात्रा हुई थी किन्तु अब इसके लिए परीक्षा का समय था। पुरी से विजयवाड़ा पहुँचने के लिए आधा मार्ग दक्षिण-पूर्व रेलवे को तय कराना एवं शेष आधा भाग दक्षिण-मध्य रेलवे को पूर्ण कराना था। ९०० कि० मी० के इस लम्बे सफर में यात्रियों को भी अपने धैर्य एवं साहस का परिचय देना था। परन्तु कैलासपीठाधीश्वर महामण्डलेश्वर जी एवं तीर्थ जी महाराज की तितिक्षापूर्ण दिनचर्या से सब को प्रेरणा मिलती थी। प्रातःकाल होने पर सामूहिक दैनिक प्रार्थना हुई।

ब्रह्मपुर जं० (१४७ कि०) : ब्रह्मपुर में कैलास स्पेशल को कुछ समय के लिए रुकवा लिया गया। यहाँ सभी ने स्नान एवं जलपान किया। फिर वही भक्तिसंगीतमय वातावरण प्रत्येक डिब्बे में गूँज रहा था "तेरा राम ही करेगा बेड़ा पार, उदासी मन काहे को करे"। कैलास यात्रा स्पेशल अब आन्ध्र प्रदेश में प्रवेश करती हुई हरी-भरी भूमि को दिखाती हुई बंगाल की खाड़ी के समानान्तर दक्षिण की ओर चल रही थी। समुद्र निकट रहने के कारण सर्दी नहीं थी, जहाँ कहीं यात्री पंखे भी चला रहे थे।

पलासा जं० (७४ कि०) : पलासा एवं तिलुरु स्टेशनों पर स्पेशल रुकी। महाराजश्री के स्पष्ट निर्देश के परिणामस्वरूप आज यात्री एकादशी का व्रत कर रहे थे। चौलाई (रामदाना) के आटे की पूरी साग फलाहार में बना था, परन्तु पूरी में कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंकरों का सन्देह हुआ; इसलिए भंडार विभाग के कार्यकर्ताओं ने तिलुरु उतर कर "श्रीकाकुलम्" से फल खरीद लाने का संकल्प किया। तिलुरु स्टेशन के बाहर श्रीकाकुलम् जाने के लिए कोई टैक्सी न मिली, आखिर एक्सप्रेस बस में श्री काकुलम् जाना पड़ा, वहाँ की फलों की मार्किट के पूरे फल खरीदने पर भी यात्रियों के लिए पर्याप्त नहीं हुए। वहाँ से पुनः श्रीकाकुलम् रोड स्टेशन १०-१२ किलोमीटर कोई द्रुतगामी सवारी नहीं थी; खैर ! स्टेशन मास्टर ने कैलास स्पेशल को इस आपात् स्थिति से निपटने के लिए रोक रखा था, सभी यात्रियों को केले और सन्तरे दिए गए किन्तु बाद में पता चला कि चौलाई के दाने ही कुरकुर बजते हैं, फिर क्या था, सभी फलाहार के सामान का यात्रियों ने प्रेम से भोग लगाया, कोई चीज नहीं बची, फलाहार का भंडारा शाम तक चलता रहा क्योंकि चलती गाड़ी में पूरी बनाने में असुविधा होती है और देर भी लगती है विशेषकर फलाहारी पूरी बनाने में।

श्रीकाकुलम् रोड (७२ कि०) विजयनगरम् (७० कि०) : श्रीकाकुलम् रोड से कैलास स्पेशल सायं ३। बजे रवाना हो गई। अब महाराजश्री का सत्सङ्ग प्रवचन चालू हुआ। महाराजश्री ने समझाया कि तीर्थ यात्रा में हुए कष्टों को सहने से तप करने का फल मिलता है एवं एकादशी के अवसर पर कार्यकर्ताओं द्वारा तत्परतापूर्वक सेवा की मुक्त कण्ठ से सराहना की। सायं ६। बजे कैलास स्पेशल विजयनगर पहुँची यहाँ सबको चाय वितरित की गई। आज रात्रि का भोजन नहीं होना था, इसलिए भोजन विभाग के कर्मचारी निश्चिन्त हो गये। यात्रा का आनन्द लेने लगे। सन्ध्याकालीन आरती महिम्न चलती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाड़ी में हुआ। उसके पश्चात् सभी डिब्बों में कीर्तन प्रारम्भ हुआ।

वाल्टेयर (६० कि०) : वाल्टेयर स्टेशन आने से पूर्व यात्रियों को सावधान कर दिया गया कि वाल्टेयर स्टेशन पर १ घण्टा गाड़ी रुकेगी। विजयनगरम् के स्टेशन मास्टर के माध्यम से वाल्टेयर स्टेशन मास्टर को अनुरोध किया था कि वाल्टेयर में इञ्जन तैयार रखें। वाल्टेयर स्टेशन पर यात्रियों ने अपनी आवश्यकतानुसार पानी रख लिया, डिब्बों में जल एवं विद्युत् की आपूर्ति करवा दी गई। वाल्टेयर स्टेशन के व्यस्त प्लेटफार्मों में गाड़ी अधिक देर तक रोकना संभव नहीं था इसलिए निर्धारित समय तक रुककर कैलास स्पेशल २-१-८१ को रात्रि १०-१५ को अग्रिम यात्रा के लिये चल दी।

अन्नवरम् (११७ कि०) राजामण्ड्री (८३ कि०) : श्रीकैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल के संयोजक इस बात के अभिचिन्तित थे कि अग्रिम ४४६ किलोमीटर की यात्रा किस प्रकार व्यवधान रहित हो, इसके लिये बहुत सावधानी की आवश्यकता थी। ३-१-८१ को प्रातः विजयवाड़ा से मल्लिकार्जुन के लिये गाड़ी तय की गई थी। समय बहुत कम था; दक्षिण-मध्य रेलवे के अधिकारियों को, सारी रात हर स्टेशन पर, जहाँ गाड़ी रुकती थी, कैलास स्पेशल की यात्रा के महत्त्व को अवगत कराया कि इसको यथासंभव 'रन थ्रु' चलाया जाये, ताकि कल गाड़ी अधिक लेट न होने पाये। राजामण्ड्री स्टेशन आते-आते ब्राह्म मुहूर्त के ३। बज चुके थे। यात्रियों को सावधान किया गया कि राजामण्ड्री में कैलास स्पेशल आध घंटे रुकेगी; स्नान आदि में सावधानी बरतें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निडायवोलु जं० (२७ कि०) : इसके पश्चात् गुडम् -में रुकने पर सभी यात्रियों ने प्रेमपूर्वक स्नान किया। इञ्जन में पानी भरने के निमित्त लगे बड़े पाइपों में यहाँ सभी ने स्नान किया। कोनार्क एक्सप्रेस गाड़ी पास हुई और अपनी गाड़ी को सिगनल मिल गया। इस बीच सभी यात्रियों को चाय नाश्ता वितरित करवा दिया गया।

एलुरु (६३ कि०) : एलुरु स्टेशन आने पर सभी यात्रियों को 'फूड-पैकेट्स' वितरित कर दिये गये ताकि विजयवाड़ा स्टेशन में इसके लिये विशेष प्रतीक्षा न करनी पड़े। ९ बज चुके थे और अभी विजयवाड़ा ५९ किलोमीटर दूर था। दक्षिण-पूर्व रेलवे के अधिकारियों ने अपने सद्व्यवहार से कैलास यात्रा स्पेशल को अधिक लेट नहीं होने दिया। इस बीच महाराजश्री ने विजयवाड़ा नगर के दर्शनीय स्थल, कृष्णा नदी एवं मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग का स्वरूप, कथा एवं माहात्म्य श्रवण कराया।

विजयवाड़ा (५९ कि०) : यहाँ कैलास के बहुत से भक्त एवं महात्मा तथा शिवानन्द आश्रम से संबन्धित कार्यकर्ता बड़ी उत्सुकता से कैलास स्पेशल की प्रतीक्षा कर रहे थे। भगवल्लीला द्योतक भजनों की ध्वनि से विजयवाड़ा के वायुमण्डल को पवित्र करती हुई ३-१-८१ को प्रातः १०॥ बजे कैलास स्पेशल विजयवाड़ा पहुँची। फूलमालाओं से महाराजश्री, तीर्थजी एवं अन्य महात्माओं का स्वागत हुआ, पुष्पवृष्टि से वातावरण सुमधुर हो उठा। यात्रियों को अपनी-अपनी मण्डली एवं बोगी के हिसाब से बसों का विभाजन किया गया। प्रथम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेणी के यात्रियों की सुविधा के लिए अलग से दो बसें अलाट कर दी गई थीं। दो कारें भी महाराजश्री एवं विशिष्ट महानुभावों के लिये की गईं। सभी १२ सुपर डिलक्स बसें एवं २ कारें भगवान् मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग के लिये मध्याह्न १२ बजे विदा हुईं। ७-८ घंटे की यात्रा थी क्योंकि अधिकांश कच्चा रास्ता एवं पहाड़ी मार्ग था। सभी बसों का ध्यान रखते हुए चलना था जब मार्ग में एक बस में टायर वायुविहीन हो गया तो अन्य सभी को उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ी। एक ही परिवार के सदस्यों की तरह सबका व्यवहार था, यह सब महाराजश्री के आदर्श अनुकरणीय दिनचर्या से उन्हें प्रेरणा मिली थी। मन के रोगों के लिये सन्त-महापुरुषों की सङ्गति ही परम-औषध है।

शाम हो चली थी किन्तु अभी भगवान् मल्लिकार्जुन के दर्शन होने में डेढ़ घण्टा लग सकता था। यहाँ से घोर जगंल प्रारम्भ हो गया, रास्ते में भीलों के लूट लेने का समाचार प्रायः सुनने को मिलते हैं। इसलिए सरकार द्वारा प्रश्रय प्राप्त होम गार्ड एवं सेक्युरिटी गार्ड के और भी दस बन्दूकधारी जवानों को साथ में ले लिया क्योंकि दर्शन करके रात को ही विजयवाड़ा वापिस लौटना था। रात्रि ७॥ बजे सभी यात्रियों को लेकर महाराजश्री भगवान् मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शनार्थ विशाल मन्दिर में पहुँचे। विशाल गोपुर में प्राचीन कलाकृतियों के नमूने देखते ही बनता था। श्रीशैल पर्वत पर भगवान् चन्द्रमौलीश्वर को कैलास छोड़कर क्यों आना पड़ा इस संबन्ध में पुराणों में बहुत सी गाथाएँ है।

गणेश जी का विवाह पहले कर देने पर कार्तिकेय जी रुष्ट हो गये और कैलास छोड़कर श्री शैलपर्वत पर निवास करने लगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माता का हृदय कोमल होता है; पुत्र की याद आने पर शिवजी से उमा बोली—चलो ! श्रीशैल चलें। परन्तु बाल हठ प्रबल होता है। कार्तिकेय श्रीशैल से ६ मील दूर कुमार पर्वत पर जा निकले। भगवान् शिव एवं उमा श्रीशैल पर्वत पर वास करने लगे, तब से पार्वती का नाम मल्लिका एवं शंकर जी का नाम अर्जुन प्रसिद्ध हुआ।

यहाँ मन्दिर में दर्शनों के लिये यात्रियों को टिकट लेना पड़ता है एवं पंक्तिबद्ध दर्शन किये जाते हैं, लोहे के पाइप लगे हैं जिनके बीच में से होकर जाना पड़ता है। अन्दर गर्भगृह बहुत छोटा है, एक समय में दो दर्शनार्थी पूजा कर सकते हैं। दक्षिण भारत के मन्दिरों में प्रचलित प्रथा के अनुसार मन्दिर के अन्दर गर्भगृह में विद्युत् प्रकाश नहीं किया जाता। इतने परिश्रम से भगवान् के दर्शन मिले, इसलिये यात्रियों के चेहरों पर अपूर्व प्रसन्नता थी। लाइन में खड़े सभी भक्तवृन्द 'ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय' का सस्वर कीर्तन कर रहे थे एवं अपना क्रम आने पर भगवान् शंकर की भावनानुसार पूजा करते थे। इस प्रकार दो घण्टे से कुछ अधिक समय में सभी ने दर्शन कर पाया। मन्दिर के परकोटे में बहुत बड़ा चौक चारों ओर है। श्रीमल्लिकार्जुन मन्दिर के पीछे पार्वती माता का मन्दिर है, इनके भी दर्शन किये गये। मन्दिर के बाहर भी पक्के चबूतरे बने हुये हैं। उनमें सभी यात्री बैठकर भगवान् मल्लिकार्जुन का जप-ध्यान कर रहे थे। पहले ही स्पेशल आर्डर से वहीं पर दक्षिणी पद्धति का भोजन तैयार करवाया गया, जिसे सभी यात्रियों ने भगवान् के प्रसाद की भावना से सेवन किया। सभी भोजन सेवन के पश्चात् अपनी-अपनी बसों में विराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गये। मध्यरात्रि के पश्चात् बसें विजयवाड़ा के लिये प्रस्थान कर गयीं। रात्रि में कुछ शीत हो चली थी थोड़ी देर बाद पहाड़ी क्षेत्र को पार कर समतल प्रदेश में बसें प्रवेश कर गईं। होम-गार्ड एवं सेक्युरिटी गार्ड के जवानों को बख्शीश दी गई और बसें अपनी गति से विजयवाड़ा की ओर बढ़ चलीं। अपनी-अपनी शाल एवं गर्म वस्त्रों को ओढ़े हुए कुछ यात्री सारी रात भजन-कीर्तन में तन्मय थे एवं कुछ तन्द्रा में अपनी समाधि स्थिति का परिचय दे रहे थे। प्रातः ७ बजे विजयवाड़ा पहुँच कर सबने कृष्णा नदी में स्नान किया। जगदम्बा मन्दिर के दर्शन किये। दिन में सभी यात्रियों को नगरभ्रमण का अवकाश मिला। अपने-अपने वस्त्र प्रक्षालन भी अधिकांश माताओं ने किये। सायं ६ बजे गाड़ी तिरुपति के लिये विदा हो गई।

तेनाली जं० (३२ कि०) चिराला (५६ कि०) : श्रीकैलाश यात्रा स्पेशल को विजयवाड़ा से तिरुपति के लिये ३८५ किलो-मीटर यात्रा करनी थी। दक्षिण-मध्य रेलवे प्रशासन को केवल यही यात्रा करानी थी, उसके पश्चात् दक्षिण रेलवे के अधिकार क्षेत्र में प्रवेश होना था। इस बार भी दक्षिण मध्य रेलवे के अधिकारी बड़ी चुस्ती से कार्य कर रहे थे। तेनाली स्टेशन में थोड़ी देर रुकी। पुरी एवं लिंक एक्सप्रेस गाड़ी पास होने के बाद पुनः गति में आ गई। महाराजश्री सन्त महापुरुषों के साथ सभी भक्तों ने अपने-अपने स्थान में बैठकर आरती महिम्न किया।

ओंगोल जं० (४६ कि०) : ओंगोल जंक्शन में कैलाश स्पेशल आधा घण्टा रुकी। यहाँ रात्रि भोजन वितरित किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। आन्ध्र प्रदेश का समुद्रतटीय प्रदेश होने के कारण मौसम बड़ा सुहावना था "नहि तहाँ शीतलता न वारि"। दिन भर की थकान से यात्री सुख की नींद में सो गये थे।

विट्रगुण्टा (८२ कि०) : गाड़ी विट्रगुण्टा कुछ क्षणों के लिये रुकी। यहाँ से कैलास आश्रम स्पेशल के संयोजक स्वयं (महात्मा-कार्यकर्ता सहित) मद्रास से दक्षिण यात्रा सम्बन्धी वर्तमान स्थिति का समांकन के लिये काकीनाडा मद्रास सरकार एक्सप्रेस से मद्रास के लिये रवाना हुए।

नेलोर (३४ कि०) गुडूर (३८ कि०) : इधर कैलास यात्रा स्पेशल अच्छी गति से जा रही थी। नेलोर स्टेशन में भी कुछ क्षण रुकी। कुछ एक्सप्रेस गाड़ियों को यहाँ पास देकर गाड़ी गुडूर के लिये बढ़ चली।

रेनीगुण्टा जं० (८४ कि०) : कैलास स्पेशल गुडूर होती हुई रेनीगुण्टा प्रातः ८ बजे पहुँची। दक्षिण में इन दिनों 'अय्यप्पा' प्रेमियों की यात्रा चल रही थो जिसमें वे एक मास के लिये व्रत धारण कर काले कपड़े पहने हुए दक्षिण भारत के सभी प्रमुख तीर्थों एवं मन्दिरों में दर्शन करने जाते हैं। अधिकांश युवक होते हैं, इन्हें सामान्य व्यक्ति बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। इस कारण कैलास यात्रा स्पेशल को रेनीगुण्टा रोक लिया गया। यहाँ से बसों में तिरुपति की यात्रा प्रारम्भ हुई। तिरुपति से श्रीबालाजी (वेंकटेश्वर भगवान्) के दर्शन के लिये पैदल मार्ग भी है जिसमें छोटे-छोटे सात पर्वत हैं। सातवें पर्वत पर तिरुमलै में भगवान् बाला जी का मन्दिर है। परन्तु दुर्गम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यात्रा पैदल न कर सकने के कारण सभी के लिये बसों की व्यवस्था की गई। बसों में चढ़ने-उतरने एवं क्रम से तिरुमले (वेंकटाचल पर्वत) पहुँचने में काफी समय लग गया।

श्री बाला जी के दर्शन के पूर्व सभी यात्रियों ने मन्दिर के समीप स्थित स्वामिपुष्करिणी सरोवर में स्नान किया। इसमें स्नान करने का शास्त्रीय माहात्म्य है। भगवान् के रथचालक गरुड़ ने वैकुण्ठ से इस पुष्करिणी को लाया था ताकि भगवान् वराह इसमें स्नान कर सकें। इसमें भगवान् नारायण श्रीदेवी भूदेवी के साथ नित्य स्नान एवं जलक्रीडा करते हैं, इसलिये इसे पवित्र एवं पापनाशिनी मानते हैं।

स्वामिपुष्करिणी के पश्चिम में वराह मन्दिर के दर्शन कर मुख्यमन्दिर के दर्शन किये। तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के अधिकारियों को कैलास आश्रम यात्रा स्पेशल की पूर्व सूचना दी गई थी इसलिये सभी यात्रियों से दर्शन की व्यवस्था में उन्होंने परम सौहार्द व उदारता का वर्ताव किया। श्री बाला जी के दर्शन के लिये पंक्ति में धैर्यपूर्वक सभी ने खड़े होकर अपनी बारी आने पर दर्शन पूजन व नमस्कार किया।

श्री बाला जी के तीन परकोटों में सुन्दर एवं विशाल गोपुर बने हैं, जिन पर स्वर्णकलश स्थापित हैं। प्रथम द्वार तथा द्वितीय द्वार के मध्य की प्रदक्षिणा को सम्पङ्गि प्रदक्षिणा कहते हैं। द्वितीय द्वार को पार करने पर जो प्रदक्षिणा है उसे विमान-प्रदक्षिणा कहते हैं। तीसरे द्वार के भीतर भगवान् के निज मन्दिर (गर्भगृह) के चारों ओर एक प्रदक्षिणा है। उसे वैकुण्ठ प्रदक्षिणा कहते हैं। मन्दिर के सामने सोने का स्तम्भ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, उसके आगे सभामण्डप है। द्वार पर जय-विजय की मूर्तियाँ हैं। पाँचवें द्वार के भीतर वेङ्कटेश्वर भगवान् (श्री बाला जी) का दिव्य विग्रह है। सभी भक्तों ने प्रेमपूर्वक दर्शन किये। यहाँ मुख्य दर्शन के समय दोपहर में प्रत्येक दर्शनार्थी को भगवान् का भात-प्रसाद मिलता है। इस प्रसाद में स्पर्श आदि का दोष नहीं मानते। दर्शन करते अपराह्ण हो चुकी थी। यात्रियों ने प्रसाद ग्रहण किया और रेनीगुण्टा जाने के लिये बसों में बैठ गये। सन्ध्या हो चली थी। यात्री अपनी-अपनी बसों में कीर्तन भजन कर रहे थे। रेनीगुण्टा में कैलास स्पेशल में आरती-महिम्न हुआ और सभी यात्री तिरुपति बाला जी की यात्रा की अनुभूति का परस्पर वर्णन कर रहे थे। बहुत आनन्द आ रहा था। सभी को रात्रि भोजन वितरित किया गया और रात्रि ११·३० को कैलास स्पेशल ने रेनीगुण्टा स्टेशन छोड़ दिया।

यहाँ से दक्षिण रेलवे प्रशासन के अधीन कैलास स्पेशल चल रही थी। कुछ दूर आन्ध्र प्रदेश में चलने पर गाड़ी तिरुत्तनि रुकी। तमिलनाडु के चिंगलपेट जिले में स्थित यहाँ भगवान् सुब्रह्मण्यस्वामी का मन्दिर जो पहाड़ी पर स्थित है दर्शनीय है। नक्कीरार, रामलिङ्ग, मुत्तुस्वामी दीक्षितार जैसे प्रसिद्ध कवियों ने इस स्थान की महिमा में भक्तिसंगीत की रचना की है। आरक्कोणम् में गाड़ी काफी देर रुकी। यहाँ अधिकांश यात्रियों ने प्रातः स्नान आदि किया। इधर मद्रास में महेश्वरी भवन, शिवानन्द आश्रम एवं कैलास के भक्त फोन से निरन्तर सम्पर्क किये हुए थे।

रायपुरम् जं० (मद्रास) १२१ कि० : प्रातः ७ बजे पता चला कि कैलास स्पेशल 'मद्रास बीच' स्टेशन न आकर रायपुरम्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्टेशन ही रुकेगी । मद्रास बीच में प्रतीक्षा करने वाले भक्तों को रायपुर जाना पड़ा । भक्तिसंगीत "मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊँ" वातावरण को आकर्षक और सात्त्विक बना रहा था । प्रातः ८-५० पर कैलास स्पेशल रायपुरम् स्टेशन पहुँची । स्थानीय भक्तों ने भावभीना स्वागत किया । यहाँ कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल के संयोजक ने अवगत कराया कि भोजन के पश्चात् मद्रास के मन्दिरों के दर्शन के लिए बसों से यात्रा का प्रबन्ध किया गया है । बसें दो बजे स्टेशन पर आईं । सब यात्रियों को सुविधापूर्वक बैठाकर बसें सर्वप्रथम समुद्र स्नान कराने ले गईं । यहाँ से मेलापूर स्थित प्राचीन कपालेश्वर मन्दिर गए । प्राचीन कलाकृतियों से विभूषित पार्थसारथि मन्दिर भी गए । मन्दिर के समीप विशाल सरोवर है । यहाँ पर यात्रियों ने आचमन किया एवं पार्थसारथि मन्दिर की भित्तियों, गोपुरों एवं मुख्य मन्दिर को बड़ी तल्लीनता से देख रहे थे । कुछ यात्री अपनी-अपनी सुविधा से मद्रास के दर्शनीय नगर एवं शोपिंग सेन्टरों को भी देखने की इच्छा से स्वतन्त्र सवारी में विचरण कर रहे थे । किन्तु शाम को महेश्वरी भवन में मद्रास स्थित फलौदी के भक्तों द्वारा सभी यात्रियों के भोजन की व्यवस्था हुई । भोजन के पश्चात् श्री शिवानन्द आश्रम की मद्रास शाखा के कार्यकर्ताओं एवं फलौदी के स्थानीय भक्तों द्वारा विशाल सत्संग एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन हुआ । शान्ति पाठ के पश्चात् सभा संचालक द्वारा कैलास आश्रम के उद्देश्यों, सौ वर्षों की उपलब्धि के बारे में प्रकाश डाला गया । इसके बाद सभी विशिष्ट महात्माओं द्वारा सत्संग प्रवचन का शुभारम्भ किया गया । सत्संग देर रात १०॥ बजे तक चला जिसका लाभ मद्रास से हजारों नर-नारियों ने लिया । भोजन एवं सत्संग के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आयोजन में अपूर्वता को देखकर सभी यात्रियों को आत्मगौरव एवं आत्मसन्तोष के साथ-साथ अत्यन्त प्रसन्नता हुई। प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में मद्रास में रायपुरम् स्टेशन में ही सभी यात्री उठे। स्टेशन मास्टर एवं अधीनस्थ कर्मचारियों के सौहार्दपूर्ण व्यवहार से सभी यात्रियों को प्रातःकालीन नित्यकर्म सम्पादित करने में कोई असुविधा नहीं हुई। मद्रास से दक्षिण यात्रा के लिए दोनों विकल्पों पर प्रयत्न चल रहे थे किन्तु यात्रियों की सुविधा को प्राथमिकता देने के कारण बड़ी लाइन से ही यात्रा करने के निर्णय को अन्तिम रूप दिया गया। अब मद्रास से छोटी लाइन की यात्रा स्थगित कर दी गई।

मद्रास के पास के तीर्थों को बसों द्वारा करने की व्यवस्था की गई। मद्रास से ६० किलोमीटर दूर चेंगलपेट नगर में पक्षि-तीर्थ के दर्शन किए। वेदाचल पर भगवान् शङ्कर नित्य निवास करते हैं; ऐसी मान्यता है। इसके पूर्व में इन्द्रतीर्थ, अग्निकोण में रुद्रकोटि तीर्थ, दक्षिण में वसिष्ठ तीर्थ, नैर्ऋत्य कोण में अगस्त्य तीर्थ, मार्कण्डेय तीर्थ तथा विश्वामित्र तीर्थ, पश्चिम में नन्दी तीर्थ, वरुण तीर्थ और पश्चिमोत्तर में अकालिका तीर्थ है। यह पूरा पर्वत ही तीर्थ माना जाता है एवं श्रद्धालु धार्मिक लोग इसकी परिक्रमा करते हैं। पर्वत के शिखर पर भगवान् शङ्कर का दक्षिणामूर्ति लिङ्ग है। मन्दिर के नीचे दाहिनी ओर कुछ सीढ़ियाँ उतर कर एक ऊँची शिला है। इसके किनारे कुण्ड है, यहाँ पुजारी आकर कटोरी-तश्तरी पटक कर संकेत करता है तो दो पक्षी आते हैं, वे भोजन ग्रहण कर पानी पी कर चले जाते हैं। कहते हैं, ब्रह्मा के आठ मानस पुत्र शिवजी के शाप से गीध पक्षी हो गए। उनमें से दो सत्ययुग के अन्त में, दो त्रेता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग के अन्त में, दो द्वापर के युग में मुक्त हो चुके। ये शेष दो कलियुग के अन्त में मुक्त हो जाएँगे। यात्री बड़ी उत्सुकता से इनकी प्रतीक्षा करते रहे एवं दर्शन पाकर कृतार्थ हुए।

पक्षितीर्थ के दर्शन कर यहाँ से १५ किलोमीटर दूर समुद्र के किनारे स्थित 'महाबलिपुरम्' भी बसें ले गईं। महाबलिपुरम् के गुफा मन्दिर दर्शनीय हैं। पत्थरों को काट-काटकर कुशल शिल्पियों द्वारा हनुमान्, दुर्गा, शिव, विष्णु की मूर्तियाँ बनाई गई हैं। ये मन्दिर पल्लववंश के राजाओं द्वारा बनाए गए हैं। विदेशी आक्रमणों का इन पर कोई प्रभाव नहीं हो पाया है।

सप्तपुरियों में काञ्ची हरि-हरात्मक पुरी है; शिवकाञ्ची और विष्णुकाञ्ची में प्रायः शिव और विष्णु की प्रधानता है। काञ्ची ५१ शक्तिपीठों में से एक प्रमुख पीठ है। यहाँ सती का कङ्काल गिरा था। दक्षिण के पञ्चतत्त्व लिङ्गों में भूतत्त्वलिङ्ग यहीं है। एकाम्रेश्वर शिवकाञ्चो का प्रमुख मन्दिर है। यह यह सर्वतीर्थ सरोवर के समीप में पड़ता है। प्रधान गोपुर दस मंजिल ऊँचा है। बालुका निर्मित लिङ्गमूर्ति श्याम है। लिङ्ग-मूर्ति के पीछे उमा-महेश्वर की युगल छवि है। यहाँ शिवलिङ्ग पर जल नहीं चढ़ता। मन्दिर की परिक्रमाओं में गणेश-नन्दिकेश्वर, कालिका कोटिलिङ्ग की मूर्तियाँ हैं।

यहाँ के कामाक्षी देवी के मन्दिर को आदि शंकराचार्य ने बनवाया है। कामाक्षी देवी आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी की ही प्रतीक हैं। इन्हें कामकोटि भी कहा जाता है। मुख्य मन्दिर में कामाक्षी देवी की मनोहारिणी छवि के दर्शन सभी यात्रियों ने किए। मन्दिर में अन्नपूर्णा और शारदा देवी के भी मन्दिर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि शंकराचार्य की मूर्ति भी प्रतिष्ठापित है। कामाक्षी मन्दिर के निज द्वार पर कामकोटि यन्त्र में आद्यालक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, वीर्यलक्ष्मी तथा विजयलक्ष्मी का न्यास किया हुआ है। शक्ति के उपासकों के लिए इसकी विशेष महत्ता है।

इसके पश्चात् भगवान् वामन की त्रिविक्रम मूर्ति के दर्शन किए। यह मूर्ति १५ फीट ऊँची है। भगवान् के दर्शन पुजारी मशाल द्वारा कराता है। भगवान् का एक चरण ऊपर के लोकों के नापने के लिए ऊपर उठा है। उनके चरण के नीचे राजा बलि का मस्तक है। वामन भगवान् के मन्दिर के सामने सुब्रह्मण्य स्वामी का मन्दिर है। इसमें स्वामी कार्तिकेय जी के दर्शन सभी ने उत्सुकतापूर्वक किए।

शिवकाञ्ची से तीन किलोमीटर दूर विष्णुकाञ्ची है। यहाँ भगवान् विष्णु का देवराजस्वामी (वरदराजस्वामी) मन्दिर है। इस मन्दिर के पूर्व का गोपुर ग्यारह मंजिल ऊँचा है। पश्चिम के गोपुर से प्रवेश करने पर शतस्तम्भ मण्डप के दर्शन होते हैं। मण्डप के पास ही कोटितीर्थ सरोवर है। सरोवर में स्नान कर यात्री देवदर्शन को गए। गरुड़स्तम्भ के दक्षिण में एक मन्दिर भगवान् श्री रामानुजाचार्य का मन्दिर है। दूसरे घेरे में श्रीलक्ष्मी जी का मन्दिर है। इस घेरे के पश्चिम में हनुमान्, हाथी, घोड़ा, गरुड़, मयूर, बाघ, सिंह आदि की रजत एवं स्वर्णमण्डित मूर्तियाँ हैं। तीसरे घेरे में भगवान् वरदराज का निज मन्दिर आँगन के बीच में है। यह मन्दिर एक ऊँचे चबूतरे पर बना है, यह ऐरावत का प्रतीक है। चबूतरे पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़ने के लिए चौबीस सीढ़ियाँ बनी हैं। इन्हें गायत्री के अक्षरों का प्रतीक मानते हैं। तीन द्वारों के भीतर ६ फीट ऊँची भगवान् देवराज की मूर्ति विराजमान है। भगवान् के दर्शन सभी ने प्रेमपूर्वक किए, सन्ध्या आरती के भी दर्शन हुए। विष्णुकाञ्ची में आदि शङ्कराचार्य ने कामकोटि पीठ की स्थापना की है, यहाँ की पीठ के शङ्कराचार्य अब भी परम्परा से अद्वैत वेदान्त का प्रचार कर रहे हैं। महाराजश्री सभी भक्तों के सहित कामकोटि पीठ के दर्शन करने गए। रात्रि ६॥ बजे सभी बसें वापिस मद्रास ले आईं। इधर श्री कैलास आश्रम शताब्दी ट्रेन के संयोजक महोदय ने दक्षिण रेलवे के मुख्य वाणिज्यिक अधीक्षक से बड़ी लाइन का नवीन कार्यक्रम स्वीकृत करा लिया था। इसके अनुसार कटपाडी, जोलारपट्टै, सलेम, इरोड, त्रिचनापल्ली होते हुए कालड़ी, त्रिवेन्द्रम् एवं कन्याकुमारी जाना निश्चय हो गया। सभी यात्रियों ने प्रेमपूर्वक भोजन कर अपनी-अपनी सोने की बर्थ पर विश्राम किया। कार्यकर्ता मद्रास के रायपुरम् स्टेशन से गाड़ी को प्रस्थान कराने के प्रयत्न में लग गये।

त्रिवेल्लोर जं० (३६ कि०) : मध्यरात्रि के बाद ८ जनवरी को एक बजे इञ्जन आया और कैलास स्पेशल को अपने दामन में बाँधकर धीरे-धीरे खींच कर ले गया। इधर कल के दर्शनों के लिए बसों की व्यवस्था काटपाड़ी पर करने के लिए विशेष कार्यकर्ता भेज दिए गए थे ताकि छोटी लाइन पर यात्रा के अभाव में तिरुवन्नमलै स्थित अरुणाचल मन्दिर एवं रमण आश्रम के दर्शनों को बसों द्वारा कराया जाए।

आरक्कोनम् जं० (२७ कि०) : कैलास स्पेशल प्रातः १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बजे आरक्कोनम् जंक्शन पहुँची। यहाँ सभी यात्रियों ने स्नान किया, प्रार्थना के बाद जलपान की व्यवस्था हुई।

काटपाडी जं० (६१ कि०) : कैलास स्पेशल दिन के ११ बजे काटपाडी जंक्शन पहुँच गई। सभी को मार्ग के लिए "पूरी साग" पैकेट्स में वितरित कर दिए गए। १०० किलोमीटर से कुछ अधिक की यात्रा थी। मार्ग में मद्रास के उस उपजाऊ प्रदेश के दर्शन हुए, जिसने चावल उत्पादन में रिकार्ड स्थापित किया है। कहीं-कहीं छोटे जगल भी मार्ग मे दिखाई पड़े तो कहीं कठोर परिश्रम करते हुए कृषक भी देखे गए। मार्ग में वेल्लोर शहर भी पड़ा, यहाँ का हस्पताल एवं मैडिकल कालेज एशिया में अपने ढंग का अद्वितीय है। १३वीं सदी में बना यहाँ का किला भी उस समय की सैन्य-शक्ति का परिचय देता है। इसके बाद बसें पोलूर शहर होती हुई तिरुवन्नमले पहुँची। अपराह्ण २ बजे से साय ६ बजे तक सभी यात्रियों को यहाँ के मन्दिरों एवं श्रीरमण महर्षि के आश्रमादि के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। २५ एकड़ क्षेत्र में बना विशाल अरुणाचल मन्दिर दक्षिण भारत के वड़े मन्दिरों में एक है। इसका गोपुर २०० फीट ऊँचा एवं ११ मंजिलों में प्राचीन कलाकृतियों से विभूषित है। पञ्चतत्त्वलिङ्गों में अग्निलिङ्ग अरुणाचल पर्वत में है। इसे दिव्य पर्वत माना जाता है, पर्वत के चारों ओर परिक्रमा की जाती है। मन्दिर के चारों ओर गोपुर हैं। निजमन्दिर तक पहुँचने के पूर्व तीन आँगन मिलते हैं। अरुणाचलेश्वर शिव लिङ्ग तीसरे आँगन में प्रतिष्ठापित है। परिक्रमा में पार्वती, गणेश, नवग्रह, दक्षिणामूर्ति आदि देवताओं के दर्शन किए। यहाँ आरती महिम्न कर भक्तों को अतीव आनन्द हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्दिर से तीन किलोमीटर दूर दक्षिण भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक सन्त महर्षि रमण का आश्रम है। पर्वत के शिखर पर जहाँ पर महर्षि जी ने तप किया था, उसके भी कई भक्तों ने दर्शन किए। आश्रम में देवी जी का भव्य मन्दिर है, वहाँ महर्षि जी की मूर्ति प्रतिष्ठापित की गई है। ब्रह्मचारी एवं महात्मा साधना पठन-पाठन करते हुए देखे गए। शान्त एवं मनोरम वातावरण है। दर्शन करने के बाद सभी यात्री बसों द्वारा वापिस काटपाडी लौट आए। मार्ग में आनन्दोन्माद से सभी भगवत्कीर्तन एवं महिमा का गान करते हुए आ रहे थे, २।। घंटे का मार्ग कब तय हो गया, इसका पता ही न चला।

जौलारपट्टै (८४ कि०) समालपट्टी(३१) : काटपाडी स्टेशन में लौट कर सभी यात्रियों ने सामूहिक महिम्न पाठ किया एवं भोजन पाकर विश्राम किया। कुछ यात्री वस्त्र प्रक्षालन में भी लग गए क्योंकि पिछले ३ दिनों के व्यस्त कार्यक्रम में सभी को कम अवकाश मिला था। यहाँ से गाड़ी को ब्रह्ममुहूर्त में चलना था। यात्री देर रात तक भगवत्संकीर्तन हरिचर्चा करते रहे। प्रातः पौने पाँच बजे कैलास स्पेशल ने काटपाड़ी स्टेशन छोड़ा। ८ बजे के लगभग जौलारपट्टै स्टेशन पहुँची यहाँ सभी यात्रियों यात्रियों ने स्नान एवं जलपान किया। कृष्णगिरि एवं एलगिरि पर्वतों का निरीक्षण करते हुए धर्मपुरी जिले से गुजर रहे थे। यहीं कृष्णा नदी का बाँध जो उत्तरी-मध्य तमिलनाडु के एक बड़े भूभाग को सिंचाई सुविधा प्रदान करता है। आज का पूरा दिन गाड़ी में ही व्यतीत होना था क्योंकि काटपाडी से त्रिचनापल्ली की ४०८ किलोमीटर यात्रा कैलास स्पेशल को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करनी थी। मार्ग में भोजन जलपान आदि की व्यवस्था के साथ महत्त्वपूर्ण दैनिक गाड़ियों को भी क्रासिंग देना था।

इरोड जं० (५९ कि०), सलेम जं० (६० कि०) : दक्षिण की भूमि को यात्री विशेष उत्सुकता से देख रहे थे। दक्षिण भारत के खनिज भंडारों की भूमि सलेम की समृद्धि के वीक्षण का आनन्द लेते हुए, मार्ग में पड़ने वाले विभिन्न औद्योगिक नगरों से विकास की गति का समांकन करते हुए उन्हें भारत भूमि पर विशेष गर्व अनुभव हो रहा था। कहीं-कहीं दूर तक फैले हुए कॉफी के पौधे, सन्तरों के बगीचे, नदियाँ और पथरीले पर्वत और ऐसे में जब गाड़ी किसी छोटे स्टेशन पर रुक जाती तो सभी यात्री नीचे उतर चारों ओर के दृश्य को जी भर के देखते। सलेम में पहुँच कर शाम की चाय वितरित की गई। गाड़ी अपनी गति से आगे चल दी। शाम को ८ बजे इरोड पहुँचे। कोयम्बतूर जिले का यह एक प्रधान नगर है। हथकरघा उद्योग, दरी एवं डेयरी उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। कावेरी नदी के किनारे यह नगर बसा है। विश्व के बहु उद्देश्यीय बाँधों में एक भवानीसागर बाँध यहाँ से लगभग ७५ किलोमीटर दूर है। इरोड में गाड़ी ३ घंटे रुकी, इस बीच आरती महिम्न कर भोजन की व्यवस्था की गई, सभी डिब्बों में पानी और बिजली की कमी को पूरा किया गया।

त्रिरुच्चिरपल्ली जं० (९२ कि०) : श्री कैलास स्पेशल १० जनवरी को ब्राह्ममुहूर्त में ३ बजे त्रिचनापल्ली पहुँची। यहाँ सभी यात्रियों ने कावेरी नदी में स्नान किया। यहाँ से बृहदेश्वर मन्दिर के लिए बसों की व्यवस्था की जानी थी किन्तु इन दिनों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मदुराई में अन्तर्राष्ट्रीय तमिल उत्सव चलने के कारण इतनी मात्रा में बसों की व्यवस्था न हो सकी। इसलिए तमिलनाडु की दैनिक बस सेवा से ही तञ्जावूर जाया गया। तञ्जौर चोल राजाओं की राजधानी एवं सांस्कृतिक केन्द्र है। मन्दिर का विमान २१६ फीट ऊँचा है। यहाँ की विशाल नन्दी की मूर्ति जो ७०० मन है, शिवजी की आज्ञानुसार ४०० मील दूर से लाई गई थी। मन्दिर के ऊपर ८० टन वजन का एक ही पत्थर कलाकृतियों से युक्त है जिसके ऊपर स्वर्णकलश है। मन्दिर में भगवान् शङ्कर की विशाल लिङ्गमूर्ति है। शिव मन्दिर के दक्षिण-पश्चिम में गणेशजी का मन्दिर है। पश्चिमोत्तर भाग में सुब्रह्मण्य का मन्दिर है। उसमें स्वामी कार्तिकेयजी की मूर्ति है। नन्दी के उत्तर अलग से पार्वतीजी का मन्दिर है। इसकी जगमोहन भी विस्तृत है। कई ड्योढ़ी पार करके भगवती पार्वती की दिव्य छवि के दर्शन होते हैं। तञ्जौर में अमृत सरोवर है। कहा जाता है कि महर्षि पराशर ने अमृत की कुछ लोकोपकार के लिए इस सरोवर में डाल दी थी।

तञ्जौर के बृहदीश्वर मन्दिर के दर्शन कर सभी यात्री त्रिची लौट आये एवं यहाँ के प्रसिद्ध मन्दिर श्रीरंगनाथजी मन्दिर के दर्शनों के लिए बसों में ही गये। मार्ग में पड़ने वाले गणेश मन्दिर के भी दर्शन किए। एक ही विशाल शिला पर गणेश, पार्वती एवं भगवान् शिव के मन्दिर बने हैं। दक्षिण कैलास कहते हैं। भित्तियों एवं छत पर अद्भुत कला कौशल के दर्शन होते हैं। पास ही कावेरी नदी में सभी यात्रियों ने स्नान किया। कावेरी की दो धाराओं के बीच श्रीरंगम् द्वीप बसा है। इसकी उत्तरी धारा को कोलिलडम् एवं द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धारा को कावेरी कहते हैं। श्रीरङ्गमन्दिर सात प्राकारों में विस्तृत हैं। इन प्राकारों में १८ गोपुर हैं। मन्दिर के पहले घेरे में बहुत-सी दुकानें हैं। दूसरे एवं तीसरे घेरे में पण्डों एवं ब्राह्मणों के सुन्दर घर सुनियोजित ढंग से बने हुए हैं। चौथे घेरे में एक सहस्र-स्तम्भ मण्डप है। पाँचवें घेरे में गरुड़मण्डप है, इसमें गरुड़जी का स्वर्णभूषित स्तम्भ है। इसी घेरे में चन्द्र-पुष्करिणी नामक सरोवर है। श्रीलक्ष्मीजी को यहाँ श्रीरङ्ग-नायकी कहते हैं। छठे घेरे के पश्चिम भाग में एक द्वार तथा दक्षिण भाग में मण्डप हैं। इसके भीतर सातवाँ घेरा है इसके उत्तरी भाग में श्रीरङ्गजी का निज मन्दिर है। इसका शिखर स्वर्ण से विभूषित है। श्रीरङ्गनाथजी की श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति को पुजारी कपूर की मशाल से दर्शन कराता है। बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से विभूषित भगवान् के दिव्य विग्रह को देखकर मन नहीं भरता; लगता है देखते ही रहें किन्तु सहायक पुजारी कैलास स्पेशल की अपार भीड़ को सम्बोधित करता रहता है कि दर्शन आध घण्टे बाद बन्द हो जाएँगे और फिर दो घण्टे बाद खुलेंगे। सभी प्रेमपूर्वक दर्शन कर त्रिची स्टेशन वापिस आ गए।

इधर ट्रेन के संयोजक महोदय ने रामेश्वरम् के लिये तीन डिब्बे आरक्षित करा लिये ताकि बसों के अभाव में रामेश्वर धाम की यात्रा छूटने न पाये। एवं यात्रियों को निर्देश दिये गए कि १६५ कोयम्बटूर रामेश्वरम् एक्सप्रेस के आने पर ये तीन डिब्बे उसमें जुड़ेंगे, अतः इन तीन डिब्बों में जितने यात्री बैठ सकें निश्चित विभागानुसार बैठें, अवशेष गाड़ी के त्रिची आने पर उसमें बैठ सकते हैं। अपनी सुविधा के लिये ६०-६५ यात्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टैक्सी से मण्डपम् तक गये, पुनः इसी ट्रेन से रामेश्वरम् तक साथ हो लिए। गाड़ी १२-३० मध्यरात्रि आई एवं एक बजे रामेश्वरम् के लिए विदा हो गई। गाड़ी यद्यपि ब्राह्ममुहूर्त में ४-४० पर मदुराई पहुँची किन्तु पृथक् से इस सार्वजनिक छोटी लाइन की ट्रेन में सभी ने अपना नित्य कर्म किया। यहाँ गाड़ी एक घण्टा रुकी। मदुराई से रामेश्वरम् तक सवारी गाड़ी की चाल हो जाती है।

मानमदुरै (१५० कि०) : सवा सात बजे हम सब मानमदुरै पहुँचे। कैलास स्पेशल से मिले जलपान का सभी ने भोग लगाया। तमिलनाडु के रामनाथपुर जिले की सीमा यहाँ से अन्य जिलों से सागर तट पर अधिक है। यहाँ पाण्ड्यन वंश के राजाओं की राजधानी थी। प्रकृति की सुन्दरता को देखते ही बनता है। नारियल के पेड़ अधिक हैं। मण्डपम् में एशिया का सर्वप्रसिद्ध "मेरीन रिसर्च सेन्टर है"। बसें यहीं तक जाती हैं आगे गाड़ी, नाव या स्टीमर से जाना पड़ता है। यहाँ से रामेश्वरम् १८ किलोमीटर है। यहाँ सभी यात्री इसी ट्रेन में इकट्ठे मिलकर बड़े प्रसन्न हुए।

रामेश्वरम् (१०५ कि०) : मण्डपम् से रामेश्वरम् पहुँचने में १ घण्टे का समय लगा। यात्री ताँगों अथवा टैक्सी से मन्दिर दर्शन करने गए कुछ विवशता से पैदल भी गए क्योंकि उस छोटे से द्वीप में इतने यात्रियों के लिये सवारी की सुविधा प्राप्त नहीं हो सकी। यात्रियों में अद्भुत श्रद्धा, लगन एवं उत्साह था। इतनी अपार भीड़ को वहाँ से ओझल होने में विशेष समय नहीं लगा। सब कुछ प्रभु की प्रेरणा एवं सामर्थ्य से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहा था। आशा में निराशा और निराशा में आशा यही तो जिन्दगी के दो पहलू हैं। प्रथम पक्ष में मनोमालिन्य एवं दूसरे पक्ष में प्रफुल्ल होना मनुष्य का सहज स्वभाव है।

रामेश्वर माहात्म्य

सेतुं रामेश्वरं लिङ्गं गन्धमादनपर्वतम् ।
चिन्तयन् मनुजः सत्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।
सेतुसैकतमध्ये यः शेते तत्पांसुकुण्ठितः ।
यावन्तः पांसवो लग्नास्तस्याङ्गे विप्रसत्तमाः ।।
तावतां ब्रह्महत्यानां नाशः स्यान्नात्र संशयः ।।

(स्कं० ब्राह्मखं० सेतुमा० १।४७-४८)

'सेतु, श्री रामेश्वरलिङ्ग तथा गन्धमादन पर्वत—इनका चिन्तन करने वाला मनुष्य भी वस्तुतः समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। ब्राह्मणो ! जो सेतु की बालुकाओं में शयन करता है, उसकी धूलि से वेष्टित होता है, उसके शरीर में बालु के जितने कण लग जाते हैं, उतनी ब्रह्महत्याओं का नाश हो जाता है—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।'

चारों धामों में रामेश्वर दक्षिण दिशा का धाम है। भगवान् राम ने यहाँ रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की स्थापना की थी। भगवान् राम की यह लीलाविहार-स्थली रही है। रामेश्वर मन्दिर जाने से पूर्व यात्री लक्ष्मण तीर्थ, सीता तीर्थ तथा राम तीर्थ के कुण्ड एवं सरोवरों में स्नान करते है, इसका विशेष माहात्म्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामेश्वर मन्दिर के चारों ओर परकोटा है। इसके पूर्व द्वार में दस मंजिल का एवं पश्चिम द्वार में सात मंजिल का गोपुर है। पश्चिम द्वार से जाने पर सामने माधव तीर्थ सरोवर है, अन्य गन्धमादन तीर्थ, गवाक्ष तीर्थ, गवय तीर्थ, नल तीर्थ तथा नील तीर्थ नामक कूप आँगन में हैं। रामेश्वर मन्दिर के २२ तीर्थों में स्नान करने का माहात्म्य है। रामेश्वर मन्दिर के सामने स्वर्णमण्डित स्तम्भ है। उसके पास ही मण्डप में विशाल नन्दी की मूर्ति है। श्री रामेश्वर मन्दिर के समीप ही हनुमान्जी द्वारा लाया गया विश्वनाथ लिङ्ग है। इसके दर्शन पूजन के पश्चात् रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा का नियम है। मूर्ति पर गङ्गोत्तरी या हरिद्वार से लाया गया जल यात्री से लेकर पुजारी द्वारा चढ़ाया जाता है। अनेक प्रकार की अर्चा-पूजा के लिए भिन्न-भिन्न शुल्क निर्धारित हैं।

श्री रामेश्वर मन्दिर की परिक्रमा में कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं मन्दिर के दक्षिण में पार्वती जी का विशाल मन्दिर है। मन्दिर के एक भवन में झूलन पर पार्वती जी की मूर्ति है। यह भवन शयनागार है। रात्रि आरती के पश्चात् भगवान् रामेश्वर की उत्सव मूर्ति इस भवन में लाकर पार्वती जी के समीप विराजित की जाती है। फिर शयन आरती होती है और यहीं से श्री रामेश्वर जी की चल मूर्ति की सवारी उनके निजमन्दिर में ले जायी जाती है।

श्री रामेश्वर मन्दिर के पूर्वद्वार के समीप हनुमान् जी का मन्दिर है। श्री रामेश्वर महादेव के समीप विश्वनाथ लिङ्ग है, इसे हनुमान् जी भगवान् राम की इच्छा से कैलास से लाये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। हनुमान् जी के मन्दिर के सामने सावित्रीतीर्थं, गायत्रीतीर्थं और सरस्वती तीर्थं हैं तथा पूर्वद्वार के सामने महालक्ष्मी तीर्थं है। श्री रामेश्वर मन्दिर के पूर्व के गोपुर से निकलकर समुद्र तट पर महाकाली मन्दिर मिलता है। वहीं अग्नि तीर्थं है जहाँ सीता जी की अग्नि परीक्षा हुई थी।

सभी तीर्थों में स्नान, दर्शन, देव पूजनादि कर यात्री सायं को पुनः स्टेशन लौट आए। यहाँ रामेश्वर मदुरै पैसेन्जर में अपने तीन डिब्बे जोड़ दिये गये। वैसे अपनी सुविधानुसार यात्री अन्यत्र भी बैठ गये क्योंकि यह गाड़ी यहीं से बनकर मदुरै के लिये चलती है।

मदुरै (१७७ कि०) : यद्यपि अपनी शताब्दी स्पेशल त्रिची में रुकी रहने से यात्रियों को सोने की सुविधा नहीं मिल सकी तो भी सभी प्रसन्नचित्त थे एवं मीनाक्षी देवी के पवित्र दर्शनों के लिए व्यग्र थे, रात्रि भर गाड़ी चलते रहने के पश्चात् प्रातः ५ बजे से पूर्व मदुरै जंक्शन पहुँची। सभी यात्रियों ने नित्यक्रिया से निवृत्त होकर सप्तसमुद्र नामक सरोवर में स्नान किया। भगवान् शङ्कर ने स्वयं सात समुद्रों का जल इसकी सात धाराओं में प्रकट किया है।

मीनाक्षीमन्दिर दक्षिण भारत की कला लोक संस्कृति प्रदर्शित करने में सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाता आ रहा है। छोटे-बड़े मिलाकर मन्दिर में २७ गोपुर हैं। सबसे ऊँचा दक्षिण का गोपुर है एवं कला सौन्दर्य की दृष्टि से पश्चिम का गोपुर दर्शनीय है। नगार मण्डप, अष्टशक्ति मण्डप, मीनाक्षी मण्डप,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँधेरामण्डप आदि के देवविग्रहों के दर्शन कर मन्दिर के समीप के पुरुषमृगमण्डप की झाँकी मिलती है। इसके सामने ही मीनाक्षी देवी के निज मन्दिर का द्वार है। कई ड्योढ़ियों के भीतर श्री मीनाक्षी देवी की मूर्ति है। बहुमूल्य वस्त्राभरणों से सजीं देवी जी के श्याम विग्रह के दर्शन होते हैं। मन्दिर के महामण्डप के दाहिनी ओर देवी जी का शयन मन्दिर है। मन्दिर के सम्मुख बाहर स्वर्णमण्डित स्तम्भ है। निजमन्दिर के परिक्रमा में अनेक देवमूर्तियों के दर्शन होते हैं।

मीनाक्षीमन्दिर के समीप सुन्दरेश्वर महादेव का मन्दिर है। यह स्वयम्भूलिङ्ग है इस पर स्वर्ण का त्रिपुण्ड्र लगा है। परिक्रमा में प्राचीन कदम्ब का वृक्ष है। इसी के मूल में भगवान् सुन्दरेश्वर ने मीनाक्षी का पाणिग्रहण किया था। यात्रियों ने सभी दर्शनीय स्थलों में श्रद्धा भक्ति के सुमन चढ़ाए एवं मदुरै स्टेशन लौट आये। मद्रास जाने वाली गाड़ियों में कुछ यात्रियों ने त्रिची के लिए यात्रा की, अन्य अपने आरक्षित तीनों डिब्बों में बैठे जिससे वे सायं ४ बजे त्रिची जंक्शन पहुँच गये।

त्रिची (१५५ कि०) : त्रिची में सभी ने प्रेमपूर्वक भगवत्-प्रसाद सेवन कर वैश्वानर की ज्वाला को शान्त किया। समय रहने पर कुछ यात्री पुनः नगर-भ्रमण के लिये गये एवं अन्य वस्त्र-प्रक्षालनादि कार्यों में लग गये। रात्रि में शिव नीराजन एवं सामूहिक शिवमहिम्न स्तोत्र का पाठ हुआ। शिवानन्द आश्रम की त्रिची शाखा के कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित सत्संग सम्मेलन में महाराजश्री भाग न ले सके। संयोजक महोदय ने इस असमर्थता का कारण क्षेत्रीय आयोजकों को अवगत कराया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं उनकी असुविधा के लिये हार्दिक संवेदना अभिव्यक्त की। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार तिरुनेलवेली से बसों द्वारा कन्याकुमारी दर्शन की बजाय बड़ी लाइन से ही पालघाट त्रिचूर, एर्नाकुलम् एवं त्रिवेन्द्रम् होते हुये कन्याकुमारी जाना था। १३ जनवरी मध्य रात्रि के पश्चात् १२-४५ को कैलासाश्रम शताब्दी स्पेशल ने त्रिची स्टेशन छोड़ा।

इरोड १४२ कि०) : प्रातः इरोड के समीप सभी यात्रियों को प्रार्थना के बाद अवगत कराया गया कि इरोड गाड़ी २ घंटे रुकेगी। वहीं प्रातःकालीन स्नान, जलपानादि सम्पन्न हुए। स्टेशन के कर्मचारियों ने जल की पर्याप्त व्यवस्था सम्पादन में कोई कसर नहीं छोड़ी। यहाँ से नया इञ्जन लगा जिसने एर्नाकुलम् तक साथ दिया। यहाँ से प्रातः ११ बजे कैलास स्पेशल पालघाट स्टेशन की ओर बढ़ी। यात्रियों में एक बार फिर से नवीन उत्साह, केरल प्रदेश की प्राकृतिक सुरम्यता को देखने की लगन से उनका मन आह्लादित हो उठा। कावेरी नदी को पूर्व ओर समानान्तर रखती हुई कैलास स्पेशल दक्षिण के मानचेस्टर से गुजर रही थी।

तिरुप्पूर (५१ कि०) : तिरुप्पूर गाड़ी रुकने पर सभी यात्रियों को दिन का भोजन वितरित किया गया। लघु उद्योग एवं बुनाई की फैक्ट्रियों के लिये प्रसिद्ध यह उपनगर प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये भी प्रसिद्ध है।

पोदानूर (५५ कि०) : तिरुप्पूर से सीधे ही पोदानूर जंक्शन के लिये गाड़ी को सञ्चालित करने के लिये मैमो दिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया, कोयम्बटूर में समय की बचत के लिये गाड़ी को ले जाना उचित नहीं समझा गया। घने जंगलों, पथरीले प्रदेश एवं मध्य-मध्य पड़ने वाली नोय्याल नदी के तीर, सायंकालीन सूर्य की स्वर्णिम आभा सब कुछ मिलाकर बहुत अच्छा लग रहा था। नारियल, केले एवं रबड़ के बगीचे एवं उनमें कार्य करके लौटते हुए केरल के नर-नारी वहाँ की संस्कृति का परिचय दे रहे थे।

पालघाट (४६ कि०) : सभी मनोहारी दृश्यों का अवलोकन करते हुए सायं ६ बजे पालघाट स्टेशन पहुँची। पर्वतों के बीच से गुजरती हुई गाड़ी से तलहटी में स्थित कुटीर ऋषियों के आश्रमों की स्मृति दिला रहे थे। उत्तराखण्ड में जहाँ इस समय कड़ाके की सर्दी पड़ती है, वहाँ केरल में वसन्त ऋतु का जलवायु था। किसी प्रकार के गर्म कपड़ों को ओढ़ने पहनने या बिछाने की आवश्यकता नहीं थी। गाड़ी अच्छी गति से चल रही थो। पालघाट जंक्शन पर गाड़ी कुछ क्षणों के लिए रुककर आगे को चल दी। साँझ ढल चुकी थी। शिव नीराजन प्रारम्भ हुआ तत्पश्चात् सामूहिक शिव महिम्न स्तोत्र का पाठ समवेत स्वरों में हुआ। दिन भर गाड़ी में रहने पर भी यात्री भारत भूमि के दर्शन कर भारतमाता के दर्शनों का पुण्य मान रहे थे। सभी प्रसन्नचित्त थे एवं किसी प्रकार के उद्वेग की अभिव्यक्ति नहीं थी।

मन्नानूर (३९ कि०) : मन्नानूर स्टेशन आने पर सभी कार्यकर्ताओं को अवगत कराया गया कि रात्रि भोजन वितरण करने के लिये अगले स्टेशन त्रिचूर में गाड़ी २ घंटे रुकेगी। महिम्न के पश्चात् भगवन्नाम संकीर्तन प्रारम्भ हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिचूर (३७ कि०) : रात्रि ७। बजे गाड़ी त्रिचूर स्टेशन पहुँची। स्टेशन के कर्मचारी बड़ी उत्कण्ठा से यात्रियों की तन्मयता का समांकन कर आश्चर्यचकित हो रहे थे। स्टेशन मास्टर भी सब सुविधाओं एवं आदर्श व्यवस्था को देखकर महाराजश्री के दर्शन करने आए। उन्होंने विद्युत् एवं जल की पूर्ण व्यवस्था सम्पादित करने के आदेश दिए। गाड़ी रात्रि १० बजे तक रुकी रही। तब तक सभी ने प्रेमपूर्वक भोजन कर पुनः भगवच्चिन्तन करते हुए निद्रा (समाधि-स्थिति) ली।

एर्नाकुलम् (७५ कि०) : रात्रि के अन्धेरे को चीरती हुई गाड़ी द्रुत गति से अवश्य बढ़ रही थी किन्तु एर्नाकुलम् में नया इञ्जन लगना था इस कारण कल त्रिवेन्द्रम् पहुँचते-पहुँचते शाम हो जाएगी ऐसी संभावना बढ़ती जा रही थी। एर्नाकुलम् स्टेशन में गाड़ी १४-१-८१ को मध्य रात्रि के एक बजे पहुँची। सभी यात्री चैन की नींद लेते हुए सुषुप्ति का आनन्द ले रहे थे। कन्ट्रोलरूम से अवगत हुआ कि प्रातः ९ बजे से पूर्व नये इञ्जन आने की सम्भावना नहीं। सभी यात्रियों ने मकर-संक्रान्ति का स्नान समुद्र तट पर बसे इस नगर के जल में किया। उसके पश्चात् सभी ने महाराजश्री सहित सभी महात्माओं की पूजा की। सामूहिक रुद्री एवं तत्पश्चात् शिवमहिम्न स्तोत्र का पाठ हुआ। तत्पश्चात् तिल मिश्रित मिष्ठान्न का प्रसाद वितरित हुआ। विशाल जनसमूह भी इस आयोजन में उपस्थित हो चुका था। उन्हें इस सब व्यवस्था से आश्चर्य भी हुआ। मूवी फिल्म के डायरेक्टर ब्रह्मचारी रामानन्द जी अच्छी-अच्छी भावभङ्गिमाओं की सुखद स्मृतियों को शाश्वत बनाने के प्रयास में लगे थे। यहाँ से कैलास स्पेशल प्रातः ११ बजे विदा हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोट्टायम् (६० कि०) चेंगनूर (३५ कि०) : कोट्टायम् से पूर्व कुछ पर्वतीय मार्ग को चढ़ने में इञ्जन विशेष प्रयत्न करने के पश्चात् सफल हो गया। चेंगनूर में कैलास स्पेशल एक घण्टा रुकी एवं मध्याह्न की भिक्षा-प्रसादी यहीं वितरित की गई। दिन भर सभी यात्री प्राकृतिक दृश्यों का मार्मिक अवलोकन करते हुए भारतमाता के अपूर्व स्वरूपों की अनुभूति करते रहे।

क्विलन (६१ कि०) वर्कला २४ कि०) : शाम के समय गाड़ी क्विलन रुकी। महाराजश्री का सत्संग, कन्याकुमारी एवं त्रिवेन्द्रम् के तीर्थों का माहात्म्य सुनने के बाद सभी ने चाय ग्रहण की। क्विलन में कुछ कार्यकर्ता सामान लाने के लिये बाजार गये किन्तु गाड़ी पहले ही चल दी, उन्हें दूसरी गाड़ी से त्रिवेन्द्रम् आना पड़ा।

त्रिवेन्द्रम् सेन्ट्रल (४१ कि०) नागरकोइल (७१ कि०): वहाँ से पुनः त्रिवेन्द्रम् से ६ किलोमीटर बाहर आना पड़ा क्योंकि अपनी ट्रेन त्रिवेन्द्रम् स्टेशन पर न जाकर बाहर-बाहर नागर-कोइल के लिए रवाना होनी थी। यहाँ से डीजल इञ्जन लगा परन्तु वह २८ माल डिब्बों को साथ जोड़कर आधीरात बाद चला और नागरकोइल प्रातः ३॥ बजे पहुँचकर अचानक रुक गया। इसी डीजल इञ्जन को काटकर दैनिक ट्रेन में जोड़ दिया क्योंकि उसका चलाना अनिवार्य था। अधिक लोड के भय से हमारे सभी बारह डिब्बे नागरकोइल में खड़े कर दिये गये। कोई अन्य विकल्प न देखकर यात्रियों को कन्याकुमारी की यात्रा बसों अथवा लोकल ट्रेन से करने के संकेत दे दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाथेय उनको वितरित कर दिया एवं सायं ८ बजे तक सभी को सूर्यास्त तक के दर्शनों को करते हुए लौट आने के निर्देश दिये गए।

कन्याकुमारी माहात्म्य

ततस्तीरे समुद्रस्य कन्यातीर्थमुपस्पृशेत्।
तत्तोयं स्पृश्य राजेन्द्र सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
(महा० वन० तीर्थयात्रा ८५।२३)

कन्याकुमारी भारत की अन्तिम दक्षिणी सीमा है। इसके पूर्व की ओर बंगाल की खाड़ी, पश्चिम की ओर अरबसागर एवं सम्मुख दक्षिण की ओर हिन्दमहासागर है। चैत्र पूर्णिमा को बादल न हो तो सूर्यास्त एवं सूर्यास्त के समय सूर्य का बिम्ब चित्ताकर्षक होता है जिसे देखने की इच्छा प्रत्येक यात्री की बनी रहती है। समुद्रतट पर स्नान के लिये पक्के घाट बने हुये हैं। घाट के समीप एक गणेश जी का मन्दिर हैं, इसे कन्या-विनायक कहते हैं। मन्दिर के द्वितीय,प्राकार के भीतर इन्द्रकान्त विनायक हैं। कन्याकुमारी के दर्शन कई द्वारों से भीतर जाने पर होते हैं। भगवान् शंकर को पति रूप में पाने के लिये दुर्गास्वरूपा यह कन्या तपस्या में तल्लीन हैं। दक्षिण के तीर्थों में कन्याकुमारी की मूर्ति अत्यन्त चित्ताकर्षक है। यह ५१ शक्ति पीठों में एक है। यहाँ सती जी का पृष्ठभाग गिरा था। मन्दिर में अनेक देव विग्रह हैं।

विवेकानन्द शिला समुद्र के बीच में विवेकानन्द का स्मारक है। यहाँ विवेकानन्द जी तैरकर गये थे एवं तीन दिन निर्जल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठकर आत्मचिन्तन करते रहे। यहाँ का ध्यानकक्ष, शारदा माता, रामकृष्ण परमहंस का मन्दिर दर्शनीय है। यात्रियों को स्टीमर द्वारा ले जाया जाता है। यहाँ की व्यवस्था एवं स्थिति सुरम्य है, समुद्र की उत्ताल तरङ्गों को देखते रहने को जी करता है।

शुचीन्द्रम् नागरकोइल के मार्ग में स्थित तीर्थ है। गौतम के शाप से इन्द्र को यहीं मुक्ति मिली। शुचीन्द्रम् मन्दिर के निकट विशाल सरोवर है। मन्दिर के प्राकारों पर मूर्तिकला दर्शनीय है। मन्दिर में भगवान् विष्णु, ब्रह्मा एवं शङ्कर के अलग-अलग मन्दिर हैं। शुचीन्द्रम् में स्थाणु शिवलिङ्ग है, ऊपर मुखाकृति बनी है। इस मन्दिर में हनुमान् जी की मूर्ति भी है इतनी बड़ी मूर्ति के अन्यत्र दर्शन नहीं होते। नागरकोइल स्टेशन के समीप शेषनाग एवं नागेश्वर महादेव के मन्दिर हैं। दिन भर सभी यात्रियों ने प्रेमपूर्वक तीर्थाटन एवं समुद्रस्नान किया। रात्रि वापिस आकर आरती महिम्न के पश्चात् भोजन हुये। १६-१-८१ को मध्यरात्रि के बाद १२-३० को कैलास स्पेशल ने नागरकोइल स्टेशन छोड़ा।

त्रिवेन्द्रम् जं० (७१ कि०) : डीजल इन्जन लगने से कैलास स्पेशल प्रातः ४-३० बजे त्रिवेन्द्रम् स्टेशन पहुँची, यहां से पद्मनाभ स्वामी के मन्दिर दर्शन के लिए यात्री चल पड़े। मन्दिर के समीप ही विशाल सरोवर है। यहाँ महाराजश्री, सब सन्त महात्माओं एवं यात्रियों ने स्नान किया। तत्पश्चात् भगवान् के दर्शनों के लिए मन्दिर के विस्तृत प्राङ्गण में प्रतीक्षा करने लगे। दर्शन में कुछ देरी थी। इसलिए वहीं सभी यात्रियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने सस्वर रुद्री एवं शिवमहिम्न का पाठ किया। मन्दिर के चारों किनारों पर मण्डप बने हैं और बीच में भगवान् पद्मनाभ का मन्दिर है। शेषशय्या पर लेटे हुए भगवान् की इतनी विशाल मूर्ति कहीं भी नहीं है। नाभि से निकले कमल पर ब्रह्मा जी विराजमान हैं। भगवान् का दाहिना हाथ शिवलिङ्ग पर स्थित है। एक द्वार से भगवान् के श्रीमुख के दर्शन, मध्यद्वार में वक्ष-स्थल तथा नाभि के दर्शन, तीसरे द्वार से श्रीचरणों के दर्शन होते हैं। मन्दिर के पूर्व भाग में गरुड़स्तम्भ है। मन्दिर के दक्षिण भाग में हरिहरपुत्र का छोटा मन्दिर है। पश्चिम भाग में श्रीकृष्ण मन्दिर है। अय्यपा के लिए ४० दिन के व्रत में रत काले वस्त्रों वाले ५००० स्वामी भी यात्रा में थे, इससे मन्दिर में काफी भीड़ थी। दर्शन करने में काफी देर लगी। पुराणों में त्रिवेन्द्रम् को अनन्तवन का नाम दिया है। दिवाकर भक्त को दर्शन देने के लिए भगवान् यहाँ अवतीर्ण हुए, उन्हीं की स्मृति में 'कटुशर्करयोग' नामक मिश्रण विशेष से भगवान् का श्रीविग्रह निर्मित हुआ। सभी यात्री दर्शन कर एवं केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम् महानगर का भ्रमण कर मध्याह्न तक लौट आए। सौभाग्य से इस दिन एकादशी थी। अतः अधिकांश यात्रियों ने फलाहार किया। शाम को तीन बजे कैलास स्पेशल ने एर्नाकुलम् के लिए प्रस्थान किया।

आदि शंकराचार्य के जन्मस्थान को देखने के लिए यद्यपि सभी यात्रियों की इच्छा थी किन्तु तीर्थयात्रा की दृष्टि से विशेष महत्त्व न समझ कर महाराजश्री ने सन्तमण्डली सहित दर्शन करना उचित समझा। वे पूर्व ही मद्रास मेल से आलवाई के लिए रवाना हुए एवं वहाँ से बस द्वारा कालडी गए। शारदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माता की विधिवत् पूजा की, शृंगेरी पीठाधीश्वर द्वारा निर्मित आदि शंकराचार्य का सात मञ्जिलों वाले स्मारक के दर्शन किये एवं रामकृष्ण मिशन में कुछ समय विराज कर सत्संग प्रवचन किया और कैलास स्पेशल के एर्नाकुलम् पहुँचने से पूर्व ही सभी वहाँ पहुँच गये।

एर्नाकुलम् (२२१ कि०) : कैलास स्पेशल मध्यरात्रि १७-१-८१ को एक बजे एर्नाकुलम् पहुँची। महाराजश्री एवं सन्तमण्डली से कालड़ी दर्शन की चर्चा सबने सुनी तो उनकी इच्छा हुई कि ये यात्रा की जाये। इसलिये आलवाई में ठहरने की व्यवस्था न होने के कारण गाड़ी को एर्नाकुलम् ही रोका गया, सभी के लिये बसों की व्यवस्था की गई एवं आदिशंकराचार्य का दर्शन सभी ने किया। पेरियार नदी में स्नान किया, जहाँ मगरमच्छ ने शंकराचार्य को पकड़ लिया था एवं माता द्वारा संन्यास ग्रहण कर वेदान्त प्रचार की आज्ञा मिलने पर उसने उन्हें छोड़ दिया था। सभी यात्री दर्शन कर आनन्दित हुए। लौटकर मध्याह्न का भोजन एर्नाकुलम् ही हुआ। फिर स्टेशन पर भी भजन संकीर्तन हुआ। शाम को ४।। बजे कैलास स्पेशल ने एर्नाकुलम् स्टेशन छोड़ा।

एक बार फिर गाड़ी की संगीतमयी ध्वनि के साथ ताल-मेल करते हुए "तन उजले और मन के काले" "गोपालो तेरो प्यारो नाम है" की संगीत लहरी में झूमते-झूमते यात्री न जाने किस दुनियाँ में खो गये। धीरे-धीरे केरल का प्रकृति-सुखद प्रदेश छूटता जा रहा था और यात्री बंगलौर के सत्यनारायण मैसूर की चामुण्डा देवी एवं शृंगेरीमठ के दर्शनों के मधुर स्वप्न सँजोने लग गये थे। १८-१-८१ को प्रातः तिरुप्पुर पहुँचे, यहीं स्नानादि नित्यकर्म करने-पश्चात् जलपानादि हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इरोड (३०७ कि०) : इरोड पहुँचते-पहुँचते कैलास स्पेशल को मध्याह्न हो गई, यहीं दोपहर की भिक्षा प्रसादी हुई। अब सभी को अवगत कराया गया कि बंगलोर कल प्रातः पहुँचने की संभावना है। शृंगेरी मठ दर्शन करने वालों की सूची तैयार की तो अधिकांश ने इच्छा व्यक्त की। तदनुसार दो कार्यकर्ता बंगलोर बस-व्यवस्था हेतु भेजे गये। इरोड से २॥ बजे कैलास स्पेशल विदा हुई।

सलेम (५९ कि०) जोलारपट्टै (१२० कि०) : शाम की चाय सलेम जंक्शन में हुई। महाराजश्री ने शृंगेरी, बंगलोर, मसूर के तीर्थों का माहात्म्य श्रवण कराया इसके पश्चात् गाड़ी जौलारपट्टै पहुँची। यहाँ से बंगलोर के लिये इञ्जन बदलना था। इसलिए गाड़ी काफी समय तक रुकी। रात्रि आरती शिवमहिम्न का पाठ स्टेशन पर ही हुआ। रात्रि भोजन सभी ने प्रेमपूर्वक किया और विश्राम किया। इधर कार्यकर्ता कैलास स्पेशल को बंगलोर पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील थे। १४४ कि. की यह यात्रा रात्रि में पूर्ण होनी थी इसलिए संयोजक महोदय विशेष सतर्क थे। गाड़ी को कोयले का इञ्जन मिला एवं रात्रि दस बजे कैलास स्पेशल ने जोलारपट्टै स्टेशन छोड़ा। गाड़ी अच्छी गति से जा रही थी।

बंगारपेट (७६ कि०) वाइटफील्ड (४७ कि०) : बंगारपेट तक बिना किसी स्टेशन के रुके चली। १६-१-८१ मध्यरात्रि को रात्रि के एक पहुँची, परन्तु १०-१५ मिनट रुकने के पश्चात् इसे बंगलोर के लिए रवाना किया। प्रातः ५ बजे वाइटफील्ड पहुँचने पर गाड़ी ने रुकने का व्रत लिया और लगभग ५ घण्टे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक रुकी रही। कुछ तो प्रातःकालीन गाड़ियों को आने जाने की बाधाशून्यता के लिए एवं कुछ बंगलोर के प्लेटफार्म में स्थान की व्यवस्था न होने के कारण। इसी बीच सभी यात्रियों ने स्नानादि नित्य कृत्य कर जलपान किया। कुछ यात्री निकट ही साईं बाबा के आश्रम को देखने भी गए।

बंगलोर (२१ फि०) : यद्यपि बंगलोर में पहुँचकर सीधे ही शृंगेरी मठ बसों द्वारा यात्रा करनी थी किन्तु कार्यकर्ताओं एवं स्वयं प्रधान जी द्वारा प्रयत्न करने के बावजूद भी बसों की व्यवस्था न हो सकी इसलिए शृंगेरी मठ की यात्रा को स्थगित करना पड़ा। स्टेशन पर शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश की बंगलोर शाखा के अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने महाराजश्री, सन्तमण्डल एवं सभी यात्रियों का हार्दिक स्वागत किया। स्टेशन पर २ घं० हरिनाम संकीर्तन होता रहा एवं महाराजश्री ने सभी बंगलोर के कार्यकर्ताओं की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। अन्त में सभी यात्रियों को निर्देश दिए गए कि आज केवल बंगलोर भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया है। यात्री अपने-अपने संगी-साथियों के साथ बंगलोर के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए निकल पड़े। महानगर बंगलोर कर्नाटक की राजधानी है। यहाँ का जलवायु सुहावना है लगभग बारह महीने ही मनोनुकूल, समशीतोष्ण न अधिक सर्दी न अधिक गर्मी। चौड़ी एवं साफ सड़कें, यहाँ तक कि जनबाहुल्य वाले क्षेत्र में भी सुरक्षित, यातायात की निर्बाधता। नारियल का जल लगभग हर चौराहे, बस स्टेण्ड पर मिलता है जो यहाँ के लोगों के स्वभाव का परिचय देता है। यहाँ का सत्यनारायण मन्दिर लाल बाग, म्यूजिअम दर्शनीय है। फूलों से बने महल, घर एवं पर्वत;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल बाग की मनोरमता एवं विशेषता है। विभिन्न प्रकार के पुष्प उनके रख-रखाव की व्यवस्था की चिन्ता अभी भी भारत सरकार उतनी ही संजीदगी से करती है जितने इसके संस्थापक राजे-महाराजे किया करते थे। लोकल-बस सेवा शहर के हर कोने को मिलाती है, बसों में दिल्ली-बम्बई की तरह भीड़-भाड़ नहीं। लोग शालीन एवं सभ्य। हिन्दी-अंग्रेजी जानने से कन्नड न जानने पर भी कोई असुविधा नहीं होती। यहाँ गङ्गाधरेश्वर महादेव का शिवमन्दिर है जो दर्शनीय है।

शृंगेरी पीठ की यात्रा न होने से जहाँ यात्री कुछ उदास थे। वहाँ महाराजश्री को भी गम्भीर चिन्तामग्न पाया गया। तो भी आगे के लिए इस तरह निराशा न हो इसके लिए देर रात तक समिति कार्यकर्ताओं की मीटिंग हुई एवं विचार परामर्श कर ठोस निर्णय लिए गए।

नवीन व्यवस्था के अनुसार अगले दिन बसों द्वारा मैसूर यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया। डोलक्स बसों की रात-रात व्यवस्था कर प्रातः ७॥ बजे उन्हें स्टेशन पर आ जाने के निर्देश दिए गये। प्रातः बंगलोर स्टेशन पर ही सभी यात्रियों ने स्नानादि नित्य कर्म किया। स्वामी उमानन्द गिरि जी, महेश भारती एवं शम्भु गिरि जी प्रयास से दिन भर का पाथेय सभी यात्रियों के लिए तैयार किया गया। प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद जलेबी एवं चाय का नाश्ता हुआ। यात्रियों को अपनी-अपनी मण्डली के लिए आरक्षित बसों में बैठ जाने के संकेत दिए गये। ११ बसों के अतिरिक्त एक मिनि बस भी की गई जिसमें विशिष्ट कार्यकर्ता बैठे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इधर संयोजक महोदय ने बंगलोर डिवीजनल रेल मुख्यालय के अधीक्षक से दक्षिण एवं दक्षिण-मध्य रेलवे के संशोधि कार्यक्रम को पुनः पारित करवाया। इससे पूर्व मद्रास से बंगलो तक का कार्यक्रम बनवाया गया था इसलिए यहाँ से अग्रि यात्रा निर्बाध सम्पादित कराने के लिए इसकी आवश्यकत थी क्योंकि बड़ौदा हाउस से पारित एवं निर्गत कार्यक्रम के अनुसार १७-१-८१ को बंगलोर छोड़ना था किन्तु २०-१-८१ के अभी मैसूर की यात्रा ही हो रही थी। कैलास स्पेशल के यात्रियों का ४ दिन कम समय होने पर सभी तीर्थ दिखाने क कार्यक्रम बनाने एवं उसे क्रियान्वित करने के प्रयासबाहुल दायित्व को निभाना था और अब देवों के देव महादेव को सहयोग और मारुतिनन्दन हनुमान् जी को भी अपनी ग घुमानी थी।

प्रथम कावेरी स्नान के लिये श्रीरङ्गपट्टन बसें रुकी। स यात्रियों ने कावेरी की शान्त एवं निर्मल धारा में स्नान किया श्रीरङ्गम् के दर्शन किए। शेषशायी विष्णु की यह दिव्य मू महर्षि गौतम ने स्थापना की थी यह उनकी तप-स्थली रही है सामने श्री लक्ष्मी नृसिंह मन्दिर है। यहाँ से १२ किलोमी दूर मैसूर था। मध्याह्न का भोजन श्रीरङ्गपट्टन में हुआ। मैं में राजमहल, अजायबघर, चामुण्डादेवी, वृन्दावन गार्डन आ के दर्शन किए। चामुण्डादेवी का विशाल मन्दिर पर्वत शि पर है। गोपुर के भीतर कई द्वार पार करने पर देवी जी दर्शन हुए। महिषासुरमर्दिनी चामुण्डादेवी ने यहीं प्रकट हो महिषासुर का वध किया था। सूर्यास्त के बाद सभी वृन्दावन गार्डन दिखाया गया। रात्रि रंग-बिरंगे विद्युत् प्र बाग की शोभा को देखने देश-विदेश के लोग आते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब रात्रि को बसों को अपने गन्तव्य-स्थान बंगलोर पहुँचना था। रात्रि ११ बजे के बाद क्रमशः सभी यात्री सुरक्षित बंगलोर लौट आए। रात्रि को अन्नपूर्णा ८ बजे से ही सबकी प्रतीक्षा कर रही थी। दिन भर के परिश्रम के बाद भोजन में बड़ा रस आया तत्पश्चात् सभी ने विश्राम किया। २१-१-८१ रात्रि २॥ बजे कैलास स्पेशल ने बंगलोर स्टेशन छोड़ा। प्रातः बंगारपेट में नित्यक्रिया के पश्चात् सामूहिक प्रार्थना एवं जलपान हुआ।

जोलारपट्टै (१४४ कि०) : मध्याह्न १२-३० कैलास स्पेशल जोलारपट्टै पहुँची, यहाँ से इन्जन बदलना था जिसमें ४॥ घण्टे लग गए। इस बीच सभी ने प्रेम पूर्वक भिक्षा प्रसादी ग्रहण की, दोपहर का सत्संग हुआ। सबको शाम की चाय पिला-कर निर्देश चलने के दिए गए। शाम को ५ बजे कैलास स्पेशल ने जोलारपट्टै स्टेशन छोड़ा।

कटपाडी (८४ कि०) टिरुटनी (७१ कि०) : ड्राइवर इस बार पुराना अनुभवी था, उसने २॥ घण्टे में कटपाडी स्टेशन पहुँचाया। रात्रि भिक्षा यहीं वितरित कराने के लिये गाड़ी को आध घंटा रुकवाया गया। तत्पश्चात् फिर अपनी गति से चल दी।

रेनीगुन्टा (५३ कि०) : टिरुटनी होती हुई यह प्रातः ३॥ बजे रेनीगुण्टा पहुँची। यहाँ दूसरा इन्जन बदलना था इसलिये यात्रियों को स्नानादि नित्यकर्म के निर्देश दिये गये। सभी यात्री ६ बजे तक तैयार होकर सामूहिक प्रार्थना कर अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भजन पूजन पाठ में लग गये। इञ्जन में देरी को देखते हुए प्रातःकालीन चाय-नाश्ता यहीं वितरित किया गया। अन्त में ७ बजे इञ्जन लग गया। एवं ७। बजे गाड़ी ने रेनीगुण्टा स्टेशन छोड़ दिया। इससे पूर्व भी कैलास स्पेशल तिरुपति बाला जी के दर्शनों के लिये रेनीगुण्टा रुकी थी। आन्ध्रप्रदेश की संस्कृति भारतीय संस्कृति की महानता का एक अङ्ग है। उत्तर की तरह यहाँ के लोग भी प्राचीन परम्परा एवं आस्थाओं में दत्तचित्त धर्म भीरुता के साथ कर्तव्य के प्रति उतने ही जागरूक रहते हैं।

नन्दलूर (८६ कि०) कडप्पा (३९ कि०) : लहलहाते खेत और कहीं पथरीली भूमि, कहीं छोटे-छोटे बन-उपवन और प्रकृति के नाना रूपों में क्रीड़ा करते हुए देख परमेश्वर की सहज ही अनुभूति हो आती थी। मार्ग में जहाँ कहीं नदी, नहर अथवा तालाब आते, लगता उतर कर प्रभु की इस नित्य अव्यक्त क्रीडा का आनन्द लें किन्तु भगवान् पण्डरी नाथ गाड़ी को अपने दर्शनों के लिये खींच रहे थे। "कैसे ब्याह दूँ राधे कन्हैया तेरो कारो" वृषभानु महाराज की भी मजबूरी थी, गाड़ी की भी अपनी परिसीमाएँ थी। तभी तो "दोनों भाइयों में प्रथम ब्याह उसीका होगा जो पृथिवी की परिक्रमा कर पहले आएगा" महादेव के इस प्रकार कहने पर गणेश जी ने परेशानी से बचने के लिये माता-पिता की ही परिक्रमा कर ली। नन्दलूर में सभी की भिक्षा प्रसादी हुई। इसके बाद कडप्पा भी इञ्जन में वाष्प पूर्ति के अभाव के कारण गाड़ी को रोकना पड़ा। सभी यात्री भगवत्संकीर्तन में रत थे। कडप्पा में काले पत्थर के चकले प्रसिद्ध हैं। यात्री अधिक थे, चकले कम खैर जिनके भाग्य में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कडप्पा की यह निशानी थी, उनकी पाकशाला को यह सुशोभित कर रहे होंगे, शेष इनकी मधुर स्मृतियों में जी रहे होंगे। यहाँ मौसम में गर्मी थी, शीत का लेश मात्र नहीं था। कुछ यात्रियों ने पंखे चलाने भी आरम्भ कर दिए थे।

येरगुण्टला (४० कि०) : येरगुण्टला में गाड़ी २॥ घंटा रुकी। यहाँ प्लेटफार्म पर सभी यात्रियों ने राधामाधव का संकीर्तन एवं नृत्य किया, भाव मुग्ध होकर राधे-राधे...... श्याम श्याम, यह भी पता न चला कि गाड़ी चलने को तैयार है। कैसे भूलें यह सब। तभी तो कहते हैं सभी—एक बार फिर निकालो यात्रा। रात्रि ६ बजे येरगुण्टला से गूटी की ओर गाड़ी अच्छी गति से चली।

गूटी (११५ कि०) गुण्टकल (२६ कि०) : प्रातः २॥ बजे गूटी एवं ३॥ बजे गुण्टकल पहुँची। यात्रियों को मना किया गया कि यहाँ स्नान हेतु रुकने का कार्यक्रम नहीं है तब भी १५-२० मिनट के समय का धर्मानुरागी भाई-बहनों ने फायदा उठाया एवं नित्य क्रिया से मुक्त हो गये। चलती गाड़ी में हनुमान् चालीसा का पाठ हुआ।

अडोनी (५२ कि०) : अडोनी गुजरने पर सभी को संकेत दिया गया कि "मन्त्रालयम् रोड" स्टेशन में गाड़ी आध घंटा रुकेगी।

मन्त्रालयम् रोड (४१ कि०) : प्रातः ६॥ बजे कैलास स्पेशल मन्त्रालयम् रोड पहुँची। अवशिष्ट यात्रियों ने यहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्नान किया। स्टेशन मास्टर ने जल की पूर्ण व्यवस्था की। सभी को यहीं प्रातःकालीन चाय नाश्ता वितरित किया गया। जिन देवियों का आज संकष्ट चतुर्थी का व्रत था उन्होंने महाराजश्री से इस व्रत की कथा व माहात्म्य सुना। चाय भी न लेकर दिनभर व्रत किया। रात्रि को चाँद के दर्शन कर उसे अर्घ्य देकर इस व्रत में वे अपने प्रियतम की आयुष्य व स्वास्थ्य धन-धान्य समृद्धि की कामना करती हैं और चन्द्रमा भी "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" की महत्ता पर विचार कर सबकी मनोकामना पूर्ण करता है। आखिर उसे भी तो किसी कल्प में ऋषिशाप से राजयक्ष्मा से ग्रस्त होने पर तपश्चर्या कर स्वास्थ्य लाभ करना पड़ा था। प्रत्येक डिब्बे की व्रती महिलाओं में विशेष उत्साह था, प्रभु संकीर्तन एवं भजन डिब्बे में सुनने को मिल रहे थे। महाराजश्री के नियन्त्रण कक्ष से यात्रियों को यथासमय पूर्व निर्देश मिलते जाते थे।

रायचूर (२८ कि०) यादगीर (६९ कि०) : रायचूर एवं यादगीर स्टेशनों को मात्र स्पर्श करती हुई गाड़ी बढ़ती जा रही थी।

वाडी (३९ कि०) : प्रातः ९॥ बजे कैलास स्पेशल वाडी जंक्शन पहुँची, यहाँ गाड़ी में इञ्जन बदला जाना था इसलिए यात्रियों को एक घंटे का समय दिया गया। यात्री अपने वस्त्र-प्रक्षालनादि में लग गए। इधर संयोजक महोदय ने डिब्बों में जल-विद्युत् आपूर्ति एवं नये इञ्जन की व्यवस्था की चिन्ता में स्टेशन के अधिकारियों से सम्पर्क किया एवं एक घंटे से पूर्व ही नया इञ्जन, सभी डिब्बों में सफाई, जल विद्युत्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिल गई। कुछ यात्री नगर भ्रमण के लिये निकले जिनमें अधिकांश लौट आए किन्तु दो-चार मूर्तियाँ रह गईं जिन्हें बाद में दूसरी गाड़ी से आना पड़ा। कैलास स्पेशल ने १०॥ बजे वाडी स्टेशन छोड़ दिया। अब यात्रियों को कुछ धैर्य बँध गया गया था कि आज भगवान् पण्ढरीनाथ के दर्शन हो जाएँगे। "विट्ठला विट्ठला" पण्ढरपुर में भगवान् का प्रिय नाम जिनके कीर्तन में मग्न होकर यात्री भाव-विभोर हो रहे थे उन्हें आज अपना चमत्कार दिखाना था। गाड़ी को अभी सवा दो सौ किलोमीटर चलना था।

गुलबर्गा (३७ कि०) : दक्षिण मध्य रेलवे ने केवल भूप्रदेश दिखाकर कृतार्थ किया। वाडी से मध्य रेलवे का क्षेत्र चालू होता था। इसने पूर्व रेलवे की तरह अपनी कार्यकुशलता दिखाई।

कुलाली (४० कि०) होतगी जं० (७५ कि०) : कुलाली में भोजन के पश्चात् संयोजक महोदय ने महाराजश्री से विचार परामर्श कर शोलापुर से ही पण्ढरपुर जाने की योजना स्वीकृत कराई। तदनुसार होतगी जंक्शन से शोलापुर जंक्शन के स्टेशन मास्टर को कैलास स्पेशल के निर्णय से अवगत कराया गया।

शोलापुर जं० (१५ कि०) : शोलापुर अपराह्न ४ बजे पहुँचने पर तत्काल संयोजक महोदय अपने मुख्य सहकारी को लेकर महाराष्ट्र रोडवेज के मैनेजर से मिले एवं ६०० यात्रियों को पण्ढरपुर ले जाने की व्यवस्था तत्क्षण कराने के लिए अनुरोध किया। विट्ठल भगवान् की कृपा से ६ बसों एवं २ डबल-डेकर बसों की व्यवस्था हो गई। पूरे बस-स्टैण्ड में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आध घंटे के लिए कैलास स्पेशल के यात्री-ही-यात्री नजर आते रहे और सभी ने बिना किसी असुविधा के अपनी-अपनी आरक्षित बसों में स्थान ग्रहण किया और बसें शाम को गणेश चतुर्थी के शुभ दिन विट्ठल भगवान् का दर्शन कराने चल दीं। लगातार दो दिन-दो रात गाड़ी में रहने के बाद महाराष्ट्र प्रान्त के इस महान् तीर्थ के दर्शन करने की सभी के मन में अपार प्रसन्नता थी।

भीमा नदी के तट पर बसे पण्ढरपुर में भक्त पुण्डरीक, तुकाराम जी, नामदेव, नरहरि जी आदि उदारचेता सन्तों की साधनास्थली रही है। पण्ढरपुर का मुख्य मन्दिर श्री विट्ठल भगवान् का है। इसकी विशालता भी अपूर्व है। निजमन्दिर में भगवान् श्री कृष्ण जिन्हें यहाँ विट्ठल अथवा पण्ढरीनाथ पुकारा जाता है, कमर पर दोनों हाथ रखे खड़े हैं। मन्दिर के अहाते में रुक्मिणी, सत्यभामा, जाम्बवती, श्रीराधाजी एवं बलराम जी के मन्दिर हैं। भीमा (चन्द्रभागा) नदी के किनारे कई मन्दिर हैं। नारद जी का मन्दिर भी है, भगवान् के चरणचिह्न एक चबूतरे पर अङ्कित हैं, इन्हें विष्णु पद कहते हैं। पास ही गोपाल जी, जनाबाई, एकनाथ, नामदेव, ज्ञानेश्वर तथा तुकाराम जी के मन्दिर हैं।

पण्ढरपुर में कोदण्डराम एवं लक्ष्मीनारायण जी के मन्दिर हैं। भीमानदी के उस पार श्री वल्लभाचार्य की बैठक है। पण्ढरपुर के बारे में भक्त पुण्डरीक की कथा प्रसिद्ध है। वे माता-पिता को अपना परमाराध्य देव मानकर उनकी सेवा करते थे। उनकी इस भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् अवतीर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए। भक्त पुण्डरीक ने उनके बैठने के लिए एक ईंट सरका दी। बाद में सेवा से निवृत्त होकर प्रभु के पास आए तो भगवान् ने वरदान माँगने को कहा। इस पर भक्त ने यही माँगा कि आप इस रूप में यहाँ विराजे रहें। तभी से प्रभु का दिव्य चिन्मय विग्रह यहाँ प्रतिष्ठापित है।

विट्ठल भगवान् के दर्शन करवाकर महाराष्ट्र रोडवेज की बसें सभी यात्रियों को वापिस शोलापुर ले आईं। रात्रि के ११॥ बज चुके थे। व्रती महिलाओं ने चन्द्रमा को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया एवं सभी यात्रियों ने प्रेम से भोजन किया। विट्ठल भगवान् की कृपा एवं गुणानुवाद का गान करते-करते सभी यात्री अपनी बर्थ में निद्रा को प्राप्त हुए।

कुर्दवाडी (७९ कि०) : २४-१-८१ मध्यरात्रि के बाद १॥ बजे कैलास स्पेशल पूना के लिए विदा हुई। ब्रह्ममुहूर्त में कुर्दवाडी पहुँची। यहाँ सभी यात्री अत्यन्त शीघ्रता से स्नानादि दैनिक क्रिया से निवृत्त हो गये। हनुमान् जी को मनाने के बाद चाय नाश्ता वितरित किया गया और कैलास स्पेशल महाराष्ट्र की भूमि को प्रदर्शित कराती हुई आगे अच्छी गति से बढ़ती गई।

ज्योर (३२ कि०) भीगवान (४४ कि०) : दौंड में कैलास स्पेशल को नया इञ्जन लगना था। इस बीच ज्योर और भीगवान स्टेशनों पर गाड़ी रुकी। यहाँ से स्टेशन मास्टर दौंड जं० को पूर्व व्यवस्था के लिये अवगत कराया गया।

दौंड (२३ कि०) : स्पेशल के दौंड पहुँचते ही स्वयं स्टेशन मास्टर महाराजश्री के दर्शनों के लिये उनके डिब्बे में गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबके लिये एक जैसा एवं एक साथ भोजन को देखकर वह बड़ा प्रभावित हुआ। यह व्यवस्था पिछले १०० वर्षों से कैलास में चली आ रही है कि यहाँ के मण्डलेश्वरजी के लिये कोई स्पेशल या अलग भोजन नहीं बनता वे सभी के साथ एक साथ बैठकर भिक्षा-प्रसादी ग्रहण करते हैं। स्टेशन मास्टर को ऋषिकेश कैलास आश्रम के लिये आमन्त्रित किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकृत किया। अपने स्टाफ के सहयोग से उन्होंने २५ मिनट में ही नये इञ्जन की व्यवस्था कर गाड़ी में जोड़ दिया। यात्रियों ने शीघ्रता से अपने कार्यकर्ताओं के सहयोग से भोजन प्राप्त कर डिब्बों में ही ग्रहण किया। इसी बीच गाड़ी को सिगनल मिला और कैलास स्पेशल ने पूना के लिये इस स्टेशन से विदा ली।

केडगाँव (२२ कि०) पूने (५४ कि०) : मार्ग में कुछ क्षणों के लिये केडगाँव रुकी और इसके पश्चात् ३ बजे अपराह्न पूना पहुँचा दिया। यहाँ से भीमाशंकर के लिये बसों की व्यवस्था न हो सकने से नासिक से भीमाशंकर जाने का निर्णय आपातकालीन बैठक में लिया गया एवं यात्रियों को निर्देश दिया गया कि विद्वानों की इस महानगरी पूना का भ्रमण कर लें। पूना में स्टेशन मास्टर नें कैलास स्पेशल को पूर्ण सम्मान के साथ विशाल यात्री प्लेटफार्म में स्थान दिया।

पूना में सभी यात्रियों ने मोटा और मूला नदियों का संगम देखा। यद्यपि ये ऐतिहासिक महत्त्व की नदियाँ हैं किन्तु जल की आपूर्ति नागरिकों को मिलने के कारण उन्हें छोटे से नाले की दयनीय दशा में पाया गया। पास ही अनेक देवमन्दिर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूना से ४ मील भगवती पार्वती का विशाल मन्दिर है। मन्दिर में चाँदी की शङ्करमूर्ति है इनके वाम भाग में स्वर्ण की पार्वती गोदी में विराजमान् हैं एवं दक्षिण भाग में स्वर्ण के गणेश जी हैं। पूना से १३ मील दूर अलन्दी में ज्ञानेश्वर महाराज का समाधि मन्दिर है, यहाँ उन्होंने जीवित अवस्था में समाधि ली थी। बहुत से यात्रियों ने इस दिव्य स्थान के भी दर्शन किये। यहाँ की इन्द्राणी नदी में स्नान करने का विशेष माहात्म्य है।

पूना के उक्त तीर्थों का दर्शन एवं नगर भ्रमण कर सभी यात्री ७ बजे तक लौट आये किन्तु ३५ यात्री गाड़ी के स्वभाव की गलत कल्पना कर देर से आये। उनके लिये कार्यकर्ताओं को रख दिया एवं दौंड में उनकी प्रतीक्षा की। वे जनता एक्सप्रेस से चलकर दौंड आ गये। इसमें कुछ विशिष्ट महात्मा एवं सत्संग मण्डल की सञ्चालिका भी थीं, जिन्हें अलन्दी यात्रा के कारण समय ज्यादा लग गया। थोड़ी बहुत चर्चा हुई किन्तु महाराजश्री ने समय का ध्यान रखने के लिये सभी को सचेत किया क्योंकि कम समय में सभी तीर्थों को कराने के लिये समय की नियमितता अपेक्षित है।

दौंड (७६ कि०) : मध्यरात्रि के बाद कैलास स्पेशल दौंड से मनमाड के लिये वढ़ी। अब कैलास स्पेशल को ३५० कि. की यात्रा करनी थी और २५ जनवरी को किसी समय औरंगाबाद के समीप घृश्मेश ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन करना अवश्य था। सभी कुछ परमेश्वर के हाथ छोड़ते हुए भी "कर्मण्येवाधिकारस्ते" की उक्ति के अनुसार सारी-सारी रात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाग कर इञ्जन की गति पर प्रभाव डालने वाले तत्त्वों से प्रेमपूर्वक जूझना था।

बिसापुर (४८ कि०) अहमदनगर (३७ कि०) : गोदावरी देवनदी के प्रदेशों में रात भर गाड़ी चली। अहमदनगर गाड़ी रुकी परन्तु इञ्जन को अधिक विश्राम करने का अवसर न मिला।

राहुरी (५४ कि०) : राहुरी में कुछ क्षणों के लिये गाड़ी रुकी क्योंकि इञ्जन को पानी लेना था। अभी तीन नहीं बजे थे।

बेलापुर (४० कि०) : इसके बाद कैलास स्पेशल बेलापुर में रुकी। यहाँ स्नान के लिये कुएँ के जल में कुछ यात्रियों ने स्नान किया। बेलापुर में कोल्हापुर-नागपुर एक्सप्रेस क्रासिंग था। उसके जाने के बाद इसे सिगनल मिला। जैसे-तैसे ड्राइवर एवं गार्ड को समझाकर कुछ क्षणों और रुकवाया ताकि स्नान करने वाले स्त्री-पुरुष गाड़ी में चढ़ सकें। इसमें इञ्जन के पास वाले डिब्बे में अधिकांश यात्री चढ़ गये क्योंकि यही डिब्बा उस कुएँ के निकट था।

पुतम्बा (१९ कि०) : पुतम्बा में कैलास स्पेशल के इञ्जन में फिर पानी लिया। यहाँ अवशिष्ट यात्रियों ने स्नान किया क्योंकि जल की इस स्टेशन पर पर्याप्त व्यवस्था थी। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण मौसम में कुछ नमी एवं धुंध भी पड़ रही थी तो घृश्मेश की प्रसन्नता के लिए सब कुछ करना था। प्रातः स्तवन के बाद पुतम्बा में जलपान वितरित किया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोपारगाँव (२५ कि०) अर्क (२८ कि०) : कैलास स्पेशल मनमाड के निकट आती जा रही थी। कोपारगाँव में झेलम एक्सप्रेस को पास देकर कैलास स्पेशल अर्क जाकर रुक गई। मनमाड में इसके ठहरने की सुविधा के बारे में स्टेशन मास्टर ने हार्दिक प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप २।। घंटे के बाद गाड़ी मनमाड के लिए बढ़ी। इसी बीच महाराजश्री के साथ विचारपरामर्श से मनमाड से मीटर गेज की ट्रेन द्वारा औरंगाबाद जाना उपयुक्त समझा गया एवं वहाँ से बसों से घृश्मेश का कार्यक्रम बनाया गया। परिणामस्वरूप दिन का भोजन फूड-पैकेट्स में वितरित किया गया ताकि मनमाड उतरते ही मनमाड-कचीगुडा ट्रेन में सभी सुरक्षित बैठ सकें।

मनमाड (१४ कि०) : मनमाड स्टेशन कैलास स्पेशल २५-१-८१ को प्रातः ११। बजे पहुँची थोड़ी देर बाद दूसरी गाड़ी मीटर गेज के प्लेटफार्म पर लगी। इसमें दो डिब्बे पूर्ण रूप से कैलास के यात्रियों के लिए सुरक्षित थे, अवशिष्ट डिब्बों में यात्री अपनी सुविधानुसार बैठ गए। औरंगाबाद तक केवल तीन घंटे की यात्रा थी, इसलिए प्रभुचर्चा, संकीर्तन भजन में तल्लीन सभी सकुशल ३-३० पर औरंगाबाद पहुँच गए।

औरंगाबाद (११३ कि०) : आज ही प्रातः महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री सहित अन्य कई मन्त्री औरंगाबाद के दौरे से लौटे थे। इसलिए औरंगाबाद डिपो में महाराष्ट्र की कई बसें अतिरिक्त पड़ी थीं। डिपो के ए. टी. एस. कक्करे जी ने यात्रियों की सुविधा के लिए तुरन्त ९ बसों, उनके ड्राइवर कण्डक्टरों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का प्रबन्ध किया इसमें करीब एक-डेढ़ घंटे का समय तो अवश्य लगा किन्तु सभी यात्रियों को ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन करने में सुविधा हो गई।

विश्वविख्यात इलोरा की गुफाओं के निकट घृश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में एक है। कहते हैं मौत द्वारा मारे गये घुश्मा के पुत्र को जीवन दान देने के लिये भगवान महादेव यहाँ अवतीर्ण हुए थे। घुश्मा प्रतिदिन १०१ पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर महादेव की पूजा करती थी। भगवान् शंकर ने कहा—वरदान माँगो देवि! घुश्मा ने शिवजी को यहीं रहने की प्रार्थना की। तब से भगवान् घुश्मेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए एवं पास के तालाब का नाम शिवालय हो गया। आदिशङ्कराचार्य ने भी यहाँ आकर इस प्रकार स्तुति की है—

"इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन्समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घुश्मेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये॥"

प्रदोष पूजा का विशेष महत्त्व है। यहाँ के महादेव वास्तव में भोले-भाले लगते है कैलास से इतनी दूर आकर निवास किया भक्ति के वशीभूत हुए। यहाँ सभी ने प्रेमपूर्वक पूजा की एवं बाहर लगी बसों से वापिस मनमाड आ गए। रात्रि की यात्रा बसों में कर प्रातः ३ बजे मनमाड पहुँच गए थे किन्तु संयोजक सहित कुछ यात्री बसों में स्थानाभाव के कारण औरंगाबाद से एलौरा एक्सप्रैस से मनमाड आ गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनमाड (११३ कि०) : रात्रि का समय होने के कारण एलौरा गुफाओं को सभी यात्री अन्दर से न देख सके थे, तो भी यात्रियों ने घुश्मेश के दर्शन से अपने को कृतकृत्य जाना। मनमाड से प्रातः ७ बजे कैलास स्पेशल को विद्युत् इञ्जन दिया गया जिससे १॥ घंटे से भी कम समय में नासिक रोड स्टेशन पहुँच गये।

नासिक रोड (७३ कि०) : वहाँ पर स्वामी ज्ञानस्वरूप भारती एवं मेधानन्द पुरी बम्बई के भक्तों सहित इन्तजार कर रहे थे। २६ जनवरी १९८१ को आज गणतन्त्र दिवस था। इस दिन सभी भारतीय प्रसन्नता की मुद्रा में रहते हैं क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इस दिन से नया संविधान लागू हुआ था और भारत को सार्वभौम प्रजातान्त्रिक गणतन्त्र देश घोषित किया था। स्टेशन के बाहर १२ बसें तैयार थीं। इनसे नासिक एवं त्र्यम्बक दर्शन की यात्रा बड़ी अच्छी तरह सम्पन्न हुई।

नासिक पञ्चवटी में भगवान् राम ने बनवास काल व्यतीत किया था। यहाँ गोदावरी नदी नासिक और पञ्चवटी के बीच बहती है। बृहस्पति के सिंह राशि में स्थित होने पर प्रति बारहवें वर्ष नासिक में कुम्भ पर्व होता है, इसमें पूरे वर्ष भर गोदावरी-स्नान का विशेष माहात्म्य माना जाता है। गोदावरी में रामकुण्ड, सीताकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड, धनुषकुण्ड, प्रयाग, अरुणा सङ्गम आदि कई तीर्थ हैं। स्नान मुख्यतः रामकुण्ड पर किया जाता है। रामकुण्ड के ऊपर ही श्री गङ्गा जी का मन्दिर है, पास में गोदावरी मन्दिर है। यह बारह वर्ष में एक बार पूर्ण कुम्भ के अवसर पर खुलता है और वर्ष भर खुला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहता है। गोदावरी मन्दिर के पीछे विट्ठल भगवान् का मन्दिर है। इसके अतिरिक्त कपालेश्वर शिव मन्दिर, काला राम मन्दिर, सुन्दरनारायण मन्दिर, नीलकण्ठेश्वर, पञ्चरत्नेश्वर, गोरा राम मन्दिर, मुरलीधर मन्दिर, भद्रकाली मन्दिर दर्शनीय हैं। पञ्चवटी में पाँच वट वृक्ष हैं, समीप में एक मकान है, जिसमें सीता गुफा है।

यहाँ के सभी तीर्थों का स्नान दर्शनादि कराने के बाद वे त्र्यम्बकेश्वर ले गईं। यह नासिक से लगभग २५ किलोमीटर दूर पहाड़ की तलहटी पर स्थित है। ब्रह्मगिरि नामक पर्वत गोदावरी का उद्गम स्थान है। महर्षि गौतम के प्रयास से भगवती गोदावरी जनकल्याण हेतु यहाँ अवतीर्ण हुईं। महर्षि गौतम एवं गोदावरी की प्रार्थना से भगवान् शंकर ने त्र्यम्बकेश्वर रूप से यहाँ रहना स्वीकार किया। मन्दिर के भीतर एक छोटे से गर्त में तीन छोटे-छोटे लिङ्ग हैं जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव के प्रतीक माने जाते हैं। त्र्यम्बकेश्वर महादेव के दर्शन एवं पूजन करने वाले को इस लोक में सुख एवं मरने पर मोक्ष प्राप्त होता है। त्र्यम्बकेश्वर में केवल अर्घा ही दीखता है किन्तु पूजन के पश्चात् चाँदी का पञ्चमुख वहाँ चढ़ा दिया जाता है, उसी के दर्शन होते हैं दूसरा पञ्चमुख सोने का है जिसे प्रति सोमवार को पालकी में कुशावर्त लाया जाता है, वहाँ उसकी सविधि अर्चा होती है। त्र्यम्बकेश्वर से थोड़ी दूर कुशावर्त सरोवर है इसमें नीचे से गोदावरी का जल आता है। सरोवर के पास गङ्गा मन्दिर कृष्ण मन्दिर हैं।

सन्त ज्ञानेश्वर के बड़े भाई एवं गुरु श्री निवृत्तिनाथ जी की समाधि बस्ती के किनारे एक पर्वत के नीचे है। गङ्गा द्वा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के मार्ग में यह स्थान है। गङ्गा द्वार के लिये ७५० सीढ़ियाँ चढ़ कर कौल गिरि पर्वत जाना पड़ता है। ऊपर गोदावरी जी का मन्दिर है। मूर्ति के चरणों में बूँद-बूँद करके जल निकलता है। यह जल समीप के कुण्ड में एकत्रित होता है। पर्वत पर दो-तीन गुफाएँ हैं जिनमें से एक गोरखनाथ जी की गुफा है। त्र्यम्बक से चक्रतीर्थ आठ किलोमीटर दूर है। कुशावर्त से गुप्त हुई गोदावरी यहाँ आकर प्रकट हुई है। यहाँ के कुण्ड से निरन्तर जलधारा बाहर निकलती है। यही धारा नासिक आई है।

उक्त सभी तीर्थों का दर्शन कर यात्री अपराह्न नासिक रोड चले आए। वहीं भिक्षा-प्रसादी हुई। इसके बाद यात्रियों को रात्रि ११ बजे तक भीमाशङ्कर चलने की सूचना दी गई। बीच के समय में अपनी-अपनी सुविधानुसार किसी ने नगर भ्रमण किया, किसी ने बाग-बगीचे देखे किसी ने आधुनिक शैली से बने मन्दिरों को देखा, कोई वस्त्र-प्रक्षालन में दत्तचित्त देखे गये।

इस बीच नासिक रोड के डिपो मैनेजर से १२ बसों के लिये प्रस्ताव किया। भीमाशङ्कर नासिक रोड से ३०० किलोमीटर एवं उस पर भी पर्वतीय मार्ग होने के कारण लम्बे रूट वाली बसों की व्यवस्था करनी थी। नासिक रोड डिपो में इतनी संख्या में अतिरिक्त बसें न होने के कारण बम्बई एवं पूना डिपो की बसों को भेजने के लिए फोन किया गया। सायं ४। बजे उन्होंने पूर्ण रूप से आश्वस्त हो उपयुक्त धनराशि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमा करने को कहा। इस प्रकार रात्रि ७ बजे सभी बसों के लिए अनुबन्ध पत्र भर कर राशि जमा कर दी गई। रात्रि आरती महिम्न के पश्चात् यात्रियों को अवगत कराया गया कि रात्रि ११ बजे भीमाशङ्कर को यात्रा के लिए तैयार रहें। नासिक रोड स्टेशन के बाहर सभी बसों को आने का संकेत दिया गया था। समय से सभी बसें स्टेशन के बाहर आ गईं एवं सभी यात्रियों ने बसों में स्थान ग्रहण किया। स्वास्थ्य खराब, थकावट एवं उतराई-चढ़ाई के भय से अचानक कुछ यात्रियों ने भीमाशङ्कर का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। इसलिए दो बसों को खाली लौटा देना पड़ा। जहाँ इससे समिति के कार्यकर्ताओं का मनोबल कम हुआ, वहाँ वृथा की की आशङ्का से वे यात्री भीमाशङ्कर के दर्शन से वञ्चित रह गये क्योंकि वहाँ कोई गोमुख या जमनोत्री जैसी चढ़ाई-उतराई नहीं थी। हाँ कुछ सीढ़ियाँ उतर कर अवश्य दर्शन करना पड़ा था।

सह्याद्रि पर्वत के शिखर पर भगवान् भीमाशङ्कर का स्थान है। "डाकिन्यां भीमशङ्करम्" डाकिनी शिखर पर स्थित यह द्वादश ज्योतिलिङ्गों में एक है। ७ घंटे की यात्रा के पश्चात् सूर्योदय के समय वहाँ पहुँचे। मार्ग में एक सरोवर आने पर बसें कुछ क्षणों के लिए रुक गई थीं जिससे यात्रियों ने शौच-दातुन कर लिया था। रात भर पर्वतीय यात्रा और उसमें रात्रि को झाँकता हुआ अष्टमी के चाँद का भीना-भीना प्रकाश मनोरम लग रहा था और उस पर 'ॐ नमः शिवाय' की मधुर ध्वनि आह्लादक थी। भीमाशङ्कर मन्दिर के समीप दो कुएँ और एक कुण्ड है इनमें सभी यात्रियों ने प्रेमपूर्वक स्नान किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्दिर के पास ही भीमा नदी का उद्‌गम स्थान है। मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। इसका जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। पर्वतों के बीच में इस कलापूर्ण मन्दिर के दर्शन एवं पूजन से से सभी को अलौकिक शान्ति मिली। मीलों दूर कोई बस्ती न होने से इसकी सुरम्यता और भी बढ़ जाती है। रात्रि निवास हेतु झौंपड़ियों के प्रकार के पण्डों के घर हैं जो सूने पड़े दिखाई दे रहे थे।

मुख्य मूर्ति में थोड़ा-थोड़ा जल झरता रहता है। भगवान् शङ्कर ने त्रिपुरासुर को मार कर जब इस स्थान पर विश्राम किया, उस समय राजा भीमक यहाँ तपस्या कर रहे थे। भोले शंकर ने प्रसन्न होकर इन्हें दर्शन दिया। तब से इस ज्योतिर्लिङ्ग का नाम भीमाशङ्कर पड़ा।

महाराजश्री, महात्माओं सहित सभी भक्तों ने षोडशोपचारेण पूजन कर सामूहिक आरती एवं शिवमहिम्न स्तोत्र का पाठ किया। इस छोटे से प्राचीन स्थान में कैलास आश्रम के इतने भक्त एवं प्रेमी आएँ, शायद महादेव की ऐसी ही कृपा थी उसी से यह संभव हुआ। भगवान् को भोग लगा कर सभी ने जलपान ग्रहण किया। पण्डों के द्वारा समीपस्थ गाँव में सूचना देने पर दूध, चाय की व्यवस्था भी प्रभु ने कर दो। वैसे तो महादेव के दर्शन से ही रात्रि की थकान दूर हो गई थी तो भी महादेव का प्रसाद समझकर इसका ग्रहण किया। इसके बाद देवी मन्दिर के भी दर्शन किये जो यहाँ से थोड़ी दूर है।

भीमाशङ्कर महादेव के लिए पूना से जाने का कार्यक्रम था किन्तु वहाँ से समुचित बस व्यवस्था के अभाव में स्थगित हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाने के कारण यात्री भगवान् से मना रहे थे कि किसी प्रकार नासिक मार्ग से आपके दर्शन हो जायें और भक्तवाञ्छाकल्पतरु ने इस बार निराश न कर अपने दुर्लभ दर्शन दिये।

उसके बाद सभी यात्री अपनी-अपनी बसों में आकर बैठ गए। कोई सांसारिक गाथा नहीं केवल प्रभु की कृपा एवं महिमा का चिन्तन और अब वापिस नासिक रोड के लिए तैयार सब बसें इन्तजार में थी कि महाराजश्री का आदेश हो तो ग्रीन सिगनल दिया जाए। बसों के सभी ड्राइवरों और कण्डक्टरों ने भी कुण्ड में स्नान कर भीमाशङ्कर महादेव के दर्शन किए थे, उनके वापिस आने पर सभी प्रसन्न हुए एवं सभी बसें नासिक की ओर पुनः चल दीं। हर-हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गङ्गे, ॐ नमः शिवाय का मनोहारी कीर्तन सभी बसों में हो रहा था। सभी बसें जल का साधन आने पर एक घंटे के लिए रुकी और इस बीच अपने-अपने पाथेय से सभी ने मध्याह्न का भोजन ग्रहण किया। कुछ यात्री जिन्होंने भीमाशङ्कर में ही मध्याह्न भोजन का सेवन कर लिया था उन्होंने दूध फल चाय का भोग लगा कर मार्ग की थकान दूर की। क्षेत्रीय महानुभाव यात्रियों को देखकर मन्त्रमुग्ध से रह जाते। एक हल्का और मधुर पेय जो मार्ग में सबके लिए अनुकूल पड़ा, वह था गन्ने का रस; यह उन पुरुष एवं महिलाओं की मान्यताओं में बाधक नहीं था जो पवित्रता पर विशेष ध्यान रखते थे, अपना जल पात्र ले जाकर उसे इक्षुरस से पूरित करवा यथेच्छा सेवन करते। विशेष कर सड़क के किनारे चाय की दुकानों में जहाँ निषिद्ध खाद्य वस्तुओं पर झलक पड़ जाती तो उस जगह खड़े होने का मन न करता। बसों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक साथ अपराह्न चायादि के लिए भी रुकवाया गया। जहाँ सभी बसें एकत्र हो कर ठहरतीं, सभी उतरते एक उत्सव सा शुरू हो जाता। "असङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा" वाली भगवान् की उक्ति को पारमार्थिक दृष्टि की समझकर "स एकाकी न रेमे" वाले मन्त्र को लोकव्यवहार में स्वीकृति सी दी जा रही थी। सभी आपस में एक दूसरे बोलते, हँसते, मुस्कुराते और मग्न रहते। अधिकाश यात्रियों का स्पष्ट अनुभव था कि अकेले में इतनी सुविधापूर्वक इतने तीर्थ हो जाना सर्वथा असम्भव था। शाम को नासिक रोड पहुँचकर अधिकांश ने रास्ते के कपड़ों को परिमार्जन किया, स्नानादि किया। रात्रि महिम्न आरती के बाद सामूहिक भोजन बड़े प्रेमपूर्वक हुआ, कल बम्बई नगरी की मुम्बादेवी की स्मृति में सभी खो गए। कैलास स्पेशल २८-१-८१ को मध्यरात्रि के बाद १-३० पर बम्बई के लिए छूटी। इस बार भी कैलास स्पेशल को को विद्युत् इञ्जन दिया गया था किन्तु बम्बई का आवागमन अधिक होने के कारण दूसरी गाड़ियों के मार्ग को अवरुद्ध न कर इसे रोक लिया जाता था।

ईगतपुरी (५० कि०) कल्याण (८४ कि०) : ईगतपुरी पर गाड़ी ३। पर पहुँची, रुकने का लाभ उठाकर कैलास स्पेशल में पानी भरवा दिया गया क्योंकि नासिक रोड में जल की कमी के कारण इसमें पूर्णरूपेण जल की आपूर्ति नहीं हो पाई थी। इसके बाद पुनः यह तेजी से बढ़ी कि आशा हो गई कि लाइन क्लीयर मिलने पर बम्बई सात बजे से पूर्व पहुँचा जा सकता है किन्तु कल्याण रुकना पड़ा।

थाने (२० कि०) दादर (२४ कि०) : उसके बाद थाने तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाड़ी बहुत समय तक रुकी। उधर बम्बई वी० टी० पर प्रतीक्षा कर रहे सभी प्रमुख नागरिकों एवं कैलास के भक्तों के आग्रह पर इसके लिए यात्री प्लेटफार्म खाली करवाया गया उसके पश्चात् कन्ट्रोल से इसे सिगनल मिल पाया।

बम्बई (६ कि०) : दादर से छूटने के पश्चात् २८ जनवरी ८१ को प्रातः ८-२० पर कैलास स्पेशल बम्बई वी० टी० स्टेशन पर पहुँची। स्टेशन पर बहुत से महानुभाव जिसमें कैलास के भक्त एवं यात्रियों के इष्टमित्र शामिल थे, पधारे हुए थे, प्रसन्नता के साथ-साथ इतनी शिकायत अवश्य थी कि गाड़ी की हम पिछले पाँच दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे। यहाँ नगर के प्रमुख स्थानों के भ्रमण के लिए रात्रि १० बजे तक का समय दिया गया। भोजन का प्रबन्ध कैलास के माननीय ट्रस्टी श्री भोमराज बोहरा एवं स्थानीय भक्तों की ओर से मारवाड़ी धर्मशाला में रखा गया। जिसका संकेत सभी को दिया गया। आयोजकों ने इसके कार्ड सभी को दिए ताकि वे नगर के सबसे व्यस्त बाजार में बिना किसी कठिनाई के पहुँच सकें।

बम्बई पहुँचने पर फिर महाराजश्री के साथ परामर्श के बाद निर्णय लिया गया कि गुजरात के तीर्थों का भ्रमण बसों द्वारा किया जाए एवं पूर्व निर्धारित छोटी लाइन से यात्रा को स्थगित किया जाए। एतदनुसार दिन भर के प्रयास से मुख्य वाणिज्यिक अधीक्षक (पश्चिम रेलवे) से नए संशोधित कार्यक्रम को स्वीकृत कराया गया। उनके कथनानुसार कोयले की कमी के कारण पश्चिम रेलवे एवं मध्य रेलवे की यात्री गाड़ियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थगित होने से कई स्थानों पर हड़ताल चल रही है इस कारण उज्जैन की यात्रा निरस्त करनी पड़ेगी । परन्तु उज्जैन एवं ओङ्कारेश्वर के मुख्य ज्योतिर्लिङ्गों का दर्शन अपरिहार्य है एवं प्रभु कृपा से तब तक स्थिति सामान्य हो जाएगी, इसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते देखकर उन्होंने नए कार्यक्रम को स्वीकृत कर लिया । पश्चिम रेलवे के मुख्य कार्यालय के स्टाफ ने जिस सहानुभूति का परिचय दिया वो अपने में एक उदाहरण है ।

इधर यात्री माधव बाग के लक्ष्मीनारायण मन्दिर, महालक्ष्मी, बालकेश्वर महादेव (मालाबार हिल के दक्षिण भाग स्थित) एवं मुम्बादेवी के दर्शन कर मारवाड़ी धर्मशाला पहुँचते जा रहे थे, वहाँ मध्याह्न १२ बजे से सायं ६ बजे तक अखण्ड भण्डारा चलता रहा, यात्री अपनी-अपनी सुविधानुसार आ-आकर भिक्षा-प्रसादी ग्रहण कर शोपिंग अथवा समुद्र किनारे की छटा देखने के लिए निकल पड़े । कुछ यात्रियों ने पूरे दिन के लिए बम्बई भ्रमण कराने वाली डिलक्स बसों अथवा टैक्सियों का भी प्रयोग किया । उन्होंने राजभवन, हैंगिग गार्डन, चौपाटी, योगेश्वरी गुफा, कन्हेरी गुफा एवं वज्रेश्वरी कुण्ड के दर्शन किए । अपने संबन्धियों को मिल कर लौटने वालों को बहुत से उनके रिश्तेदार बम्बई स्टेशन से विदा कराने आए । बम्बई वी. टी. के प्लेटफार्म पर कैलास स्पेशल को ११-३० रात्रि को लाया गया । सभी यात्रियों ने जल्दी-जल्दी अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लिया । यात्री महानगर में घूमने के विशिष्ट नए या उजले कपड़ों में बम्बई के इतने भीड़-भाड़ वाले प्लेटफार्म में कुछ विशिष्टता लिए नजर आ रहे थे, सभी प्रसन्न थे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यात्रा के सभी सुखद अनुभवों को लिए हुए जो एक साथ चिन्तन का विषय नहीं बन पा रहे थे ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अलग-अलग जगह संगृहीत द्रव्य को कोई व्यक्ति क्रम-क्रम से निकाल कर परीक्षण करते हुए सन्तोष लाभ करता है।

सन्दूहर्स्ट रोड (५ कि०) : मध्यरात्रि के बाद १२-२० पर गाड़ी ने बम्बई वी. टी. स्टेशन छोड़ा किन्तु ५ किलोमीटर दूर पश्चिम रेलवे को विद्युत् इञ्जन लगाने के लिए गाड़ी ने अप्रत्याशित समय लगा दिया। आखिर बहुत प्रयत्न के पश्चात् प्रातः ५ बजे अहमदाबाद के लिए बढ़ी। इस बार विद्युत् इञ्जन के साथ गार्ड महोदय मिश्रा जी सौभाग्य से पूर्ण कर्तव्य-निष्ठ मिल गए जो अपने दायित्व को सम्यक् रूप से निभाने के साथ-साथ मार्ग में पड़ने वाले, स्टेशनों के स्टेशन मास्टरों को भी पूर्ण सहयोग करने-करवाने का अनुरोध करते रहे।

वलसाड (१९४ कि०) : प्रातःकाल ८-३० पर बलसाड पहुँची, यहाँ तक गाड़ी बिना किसी स्टेशन में रुके आई। इसके पीछे गुजरात एक्सप्रेस गाड़ी थी किन्तु इसकी अबाध गति से वह इससे आगे न हो पाई।

सूरत (६९ कि०) : इसके पश्चात् सूरत रुका गया। ताप्ती किनारे बसे इस नगर की एक अपनी ही शोभा है। यहाँ के जैनमन्दिर, कपड़ा उद्योग एवं रेशम बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ की बन्दरगाह अब उतनी उपयोगी नहीं रही तो भी समुद्र किनारे का वातावरण चित्ताकर्षक है। यहाँ की महिमा की स्वाप्निक चर्चा के बाद गाड़ी बड़ोदरा के लिए बढ़ चली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंकलेश्वर में सभी के भोजन हुए इसलिए गाड़ी आधा घंटा रुकवा दी गई।

भरूच जं (५९ कि०) बड़ोदरा (७० कि०) : विद्युत् इञ्जन लगा होने से कैलास स्पेशल एक एक्सप्रेस, मेल ट्रेन की गति से चल रही थी। गायकवाड़ों के मन्दिरों, महलों के प्रसिद्ध नगर बड़ौदा में गाड़ी अपराह्न २।। बजे पहुँची। प्राचीन संस्कृति एवं मूर्तिकला के प्रेमी राजा लोग इस ऐतिहासिक नगरी को सजाते सँवारते रहे। यहाँ के नज़रबाग, मकरपुर, प्रताप विलास लक्ष्मीविलास आदि महल दर्शनीय हैं। कीर्ति मन्दिर और प्लेटेनियम भी अद्वितीयता में अग्रगण्य हैं। समय की कमी के कारण सभी दर्शनीय स्थलों का निरीक्षण न हो सका क्योंकि आज सायं अहमदाबाद तक पहुँचना अनिवार्य था ताकि गुजरात के तीर्थों की यात्रा की जा सके।

आनन्द (३५ कि०) नडियाद (१९ कि०) : बडोदरा से ३५ किलोमीटर दूर आनन्द स्टेशन पर गाड़ी कुछ क्षणों के लिए रुकी। सहकारिता के क्षेत्र में यहाँ का दुग्ध उद्योग देश-विदेश में प्रसिद्ध है, इससे क्षेत्रीय कृषकों के जीवन में आमूल परिवर्तन सहज ही देखने को मिला। शाम की चाय की व्यवस्था इसी स्टेशन पर हुई और कैलास स्पेशल नडियाद स्टेशन के यात्रियों एवं रेलवे कर्मचारियों को भजन संकीर्तन सुनाती हुई आगे को चल दी। सन्तों एवं महापुरुषों की वाणी का रसास्वादन सभी को करते देखा गया क्योंकि भाषा ने उनकी सार्वजनीनता में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं की। आध्यात्मिक रस के मतवाले नर-नारी दूसरों को भी प्रेमोन्माद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में आप्लावित कर देते हैं और फिर भारत तो धर्मप्राण देश है तभी तो देवता भी यहाँ आकर जन्म लेना अपना अहोभाग्य मानते हैं ।

अहमदाबाद (४६ कि०) : शाम को ६-३० पर गाड़ी अहमदाबाद पहुँची । यहाँ की "श्री कैलास आश्रम शताब्दी समारोह उपसमिति" पहले से ही विशिष्ट कार्यकर्ताओं, स्त्री-पुरुषों सहित स्टेशन में स्वागत के लिये इन्तजार कर रही थी। कैलास स्पेशल के यात्रियों को सूचना दी गई कि वे बिना अग्रिम कार्यक्रम का विवरण सुने प्लेटफार्म छोड़कर न जायें । अहमदाबाद भेजे हुए महात्माओं ने अवगत कराया कि बसों की व्यवस्था नहीं हो सकी है तो अध्यक्ष महाराजश्री सहित संयोजक महोदय कुछ विचार में पड़ गए । परन्तु प्रभु प्रेरणा से सभी यात्रियों को सूचित किया कि वे रात्रि १० बजे तक नगर भ्रमण कर वापिस स्टेशन आ जायें, तब तक वैकल्पिक व्यवस्था का प्रयत्न किया जा रहा है । कुछ अन्तरङ्ग महात्माओं को साथ लेकर संयोजक महोदय ने स्टेशन अधीक्षक से जानना चाहा परन्तु कैलास स्पेशल के लिए आरक्षित छोटी लाइन के डिब्बों को उन्होंने बम्बई से तार मिलने पर स्थगित कर दिया था । विवश होकर एक स्कूटर वाले को पकड़ा गया कि वह किसी बड़ी कम्पनी में ले जाये जहाँ से १२ बसों की व्यवस्था की जा सके । जे० के० ट्रेवल्स कम्पनी के मेनेजिंग डायरेक्टर ने एक घंटे तक पूर्ण प्रयत्न कर १२ बसों की व्यवस्था का आश्वासन दिया । तत्काल महाराजश्री को अवगत कराया गया कि बसों की व्यवस्था हो चुकी है, सभी बसें १२ बजे मध्यरात्रि को अहमदाबाद स्टेशन के बाहर आ जायेंगी, इसकी सूचना जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी यात्रियों को मिली तो उन्हें निराशा में आशा बँध जाने अतीव आनन्द हुआ। मार्ग का पाथेय सभी को वितरित किया गया क्योंकि दो दिन दो रात्रि में सभी तीर्थों के दर्शन का कार्यक्रम था।

जहाँ वसों की निराशा ही उपस्थित थी वहाँ सभी सुपर डिलक्स बसें विद्युत् पंखों, मल्टीचेनल संगीत एवं टेलिविजन से युक्त थीं। १२ बसों में सभी के न आ सकने के कारण तत्काल एक मिनि बस के लिये फोन किया गया। इस प्रकार सभी बसें ३० जनवरी ८१ को ब्रह्ममूहूर्त में ३ बजे जूनागढ़ के लिये विदा हुई। साबरमती नदी के किनारे-किनारे बदरवा, ढोलका होती हुई बसें प्रातः ५ बजे गोंडल शहर पहुँची। यह गोंडली नदी के किनारे बसा है। यहाँ बसें कुछ क्षणों के लिये रुकी जिससे यात्री नित्यक्रिया से निवृत्त हुए, उसके पश्चात् जेतपुर होते हुए प्रातः १० बजे जूनागढ़ पहुँचीं। सभी बसें दामोदरकुण्ड के समीप रुकीं। यहाँ पर बने पक्के घाटों पर सभी ने स्नान तर्पण किया। स्वर्ण रेखा नदी से बने इस सरोवर को ब्रह्मा जी ने स्थापित कर यहाँ यज्ञ किया था। पास में ही राधा दामोदर मन्दिर है, आगे मुचुकुन्द महादेव हैं, यहीं पर राजा मुचुकुन्द को भगवान् श्री कृष्ण ने दर्शन दिए थे। नरसी मेहता का घर शहर में ही है। गिरनार पर्वत पर भर्तृहरि गुफा है जिसे ढाई हजार सीढ़ियाँ चढ़कर जाना पड़ता है। इसे रैवतगिरि भी कहते हैं, यहाँ पर भगवान् बलराम ने द्विविद को मारा था। गिरनार का प्रथम शिखर अम्बिकाशिखर है। यहाँ भगवती पार्वती कैलास से आकर रहतीं हैं। यह ५१ शक्तिपीठों में एक है, यहाँ सती का उदरभाग गिरा था। उसके पश्चात् गोरक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिखर है यहाँ गुरु गोरखनाथ जी ने तपस्या की थी। इन्द्रेश्वर शिव मन्दिर के श्री महन्त ने महाराजश्री एवं सभी यात्रियों का स्वागत किया। यहीं मध्याह्नकालीन भिक्षा हुई। अपराह्न ३ बजे बसें सोमनाथ के लिए चल दीं। मार्ग में बाण तीर्थ में भगवान् श्री कृष्ण के दिव्य विग्रह के दर्शन के लिये बसें रुकीं, बाण (भालक) तीर्थ में भगवान् श्री कृष्ण के श्री चरण में जरा नामक व्याध ने बाण मारा था, जिस पीपल के नीचे भगवान् विराजमान् हैं, उसे मोक्ष पीपल कहते हैं, समीप में ही भाल कुण्ड है। भगवान् की छवि अत्यन्त मनोहारी एवं दर्शनीय है। कृतकार्य हो स्वधाम गमन की प्रसन्नता उनके प्रत्येक रोम-रोम में झलकती है। "उत्सीदेयुरिमे लोकाः न कुर्यां कर्म चेदहम्" के उद्घोषक सभी के प्रेरणा स्रोत होकर अपनी ऐहलौकिक यात्रा का यहाँ संवरण कर रहे हैं। पुजारी जी ने सभी को तुलसी दल का प्रसाद दिया उसके बाद बसें सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग मन्दिर के समीप रुकीं। इसका माहात्म्य शिव पुराण में इस प्रकार है—

"सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापात् प्रमुच्यते।
लब्ध्वा फलं मनोऽभीष्टं मृतः स्वर्गं समीहते॥
यद्यत्फलं समुद्दिश्य कुरुते तीर्थमुत्तमम्।
तत्तत्फलमवाप्नोति सर्वथा नात्र संशयः॥
प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसम्भवम्।
फलं प्राप्नोति शुद्धात्मा मृतः स्वर्गे महीयते॥"

सोमनाथ मन्दिर को विधर्मियों ने कई बार तोड़ा, फोड़ा। मन्दिर को वर्तमान स्वरूप में बनाने का श्रेय सरदार बल्लभ भाई पटेल को है। सोमनाथ-तीर्थ में चन्द्रमा ने भी आराधना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर दक्ष के शाप से विमुक्त पाई थीं; दक्ष की सत्ताईस कन्याओं में जो चन्द्रमा को ब्याही गई थी, रोहिणी पर ही उनका अनुराग था, इसी कारण दक्ष के शापभाजन बने थे। सभी यात्रियों ने ३ घटे तक भगवान् सोमनाथ की पूजा अर्चा की, शिव नीराजन एवं शिव महिम्न स्तोत्र का सामूहिक पाठ किया गया। इधर कैलास स्पेशल के कार्यकर्ता रात्रि निवास के लिए धर्मशाला को बुक कराने में लगे थे। दो धर्मशालाओं के बुक हो जाने से ४० कमरों एवं दो सभागारों में सभी यात्रियों ने सुविधापूर्वक विश्राम लिया।

प्रातः २॥ बजे से उठकर पुनः समुद्रस्नान कर सभी यात्री अग्रिम यात्रा के लिये तैयार हो गये थे। ब्रह्ममुहूर्त में ४ बजे सभी बसें पोरबन्दर की ओर बढ़ीं। प्रातः ७ बजे बसें महात्मा गाँधी के जन्मस्थान एवं सुदामापुरी को देखने के लिये रुकीं। गाँधी जी का कीर्ति मन्दिर सुन्दर बना है। वह कमरा भी राष्ट्रीय संग्रहालय के अधीन सुरक्षित है, जिसमें गाँधी जी का जन्म हुआ था। सुदामा जी का मन्दिर, नगर के बाहर विस्तृत घेरे में है। आस-पास जगन्नाथ मन्दिर, बिल्वकेश्वर मन्दिर, गायत्री मन्दिर, हिङ्गलाज भवानी का मन्दिर तथा गिरधरलाल जी के मन्दिर हैं। केदारकुण्ड में यात्रियों के स्नान की व्यवस्था है, पास में केदारेश्वर महादेव का मन्दिर है।

पोरबन्दर से प्रस्थान कर बसें हर्षद माता रुकीं, यद्यपि इसका दर्शनीय स्थलों में समावेश नहीं हो पाया था किन्तु गुजरात की इस प्रसिद्ध सिद्ध पीठ का दर्शन करना उचित समझा गया क्योंकि अब मन्दिर तक पक्की सड़क हो गई है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब कि किसी समय खाड़ी को पार करके जाना पड़ता था। पुराना मन्दिर पर्वत पर था, अब मन्दिर पर्वत के निचले भाग में है। महाराज विक्रमादित्य आराधना करके यहीं से देवी जी को उज्जैन ले गये। उज्जैन के हरसिद्धि मन्दिर में देवी दिन में और यहाँ रात्रि में रहती हैं। दोनों स्थानों की मूर्तियां एवं यन्त्र एक जैसे हैं। देवी को आरती में घण्टा घड़ियाल नाद एवं श्रद्धा के अतिरेक से कई यात्री भावविभोर हो अर्द्ध चेतनावस्था में गिरते देखे गए। देवी जी के मन्दिर में कुछ अलौकिकता अवश्य थी, लगता था देवी जी अपनी ओर आकर्षित कर आशीर्वाद प्रदान कर रही हैं। पूजन आरती एवं निवेद्य सामग्री अर्पित कर सभी ने प्रसाद ग्रहण किया।

इसके बाद बसें सीधी ओखा के लिए चल दीं, समुद्र के किनारे-किनारे बने सड़क मार्ग से चलने में सुखद अनुभूति हो रही थी, बीच-बीच रेलवे लाइन को भी तीन बार पार करना पड़ा; जामनगर से ओखा जाने वाली छोटी लाइन है। बेट (द्वीप) द्वारका में मध्याह्न १२ बजे पहुँचे। स्टीमर द्वारा यात्रियों को पार पहुँचने में कोई असुविधा नहीं हुई। अधिकांश श्रद्धालु नर-नारियों ने यहाँ पुनः समुद्र की लहरों में स्नान किया। जहाँ रासेश्वर कृष्ण अपनी विशाल यादवी सन्तति सहित सुखपूर्वक महलों में आवास करते थे उनका दर्शन अत्यन्त उत्सुकता से किया। यहाँ तीन दुमंजिले तथा पाँच महल तीन मंजिले हैं। द्वार में होकर पूर्व की ओर जाने पर दाहिनी ओर श्री कृष्ण भगवान् का महल मिलता है; इसके पूर्व में प्रद्युम्न जी का मन्दिर है, मध्य में रणछोड़ जी का मन्दिर है एवं उसके दूसरी ओर वामन भगवान् का मन्दिर है। रणछोड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

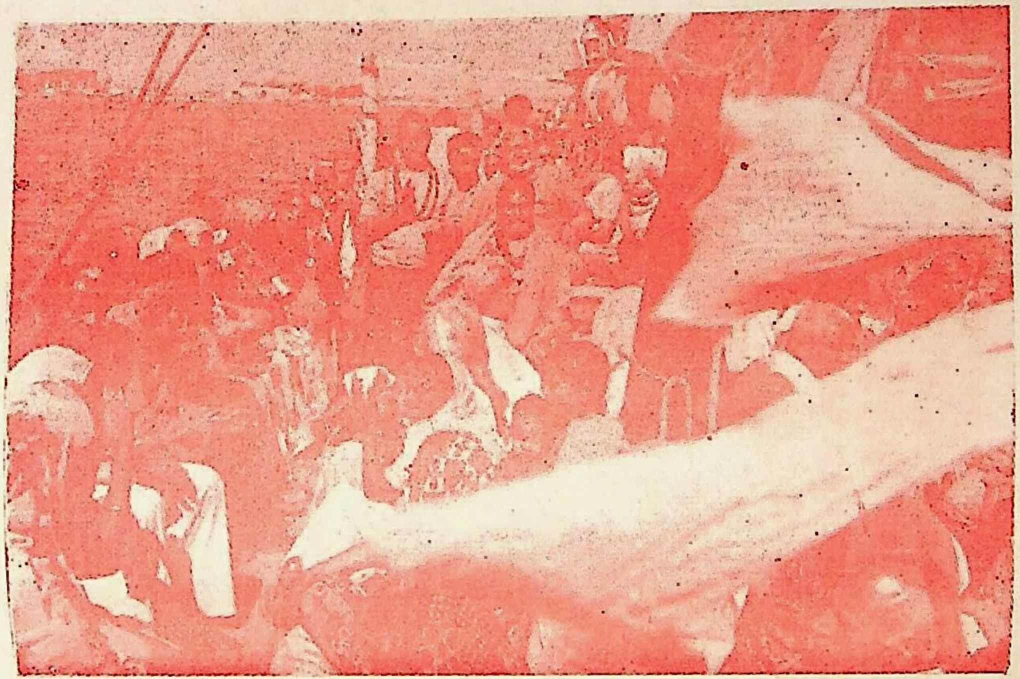

बेट द्वारका-महाराज श्री तीर्थजी एवं भक्तगण स्टीमर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौराष्ट्र का दर्शनीय स्थल—रुक्मिणी मन्दिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी के महल के समीप सत्यभामा एवं जाम्बवती के महल हैं, उत्तर में रुक्मिणी एवं राधिका जी के महल हैं, पूर्व में साक्षी गोपाल का मन्दिर है। यहाँ श्री कृष्ण महल में पूजा पद्धति अभी भी सात्त्विक एवं राजोचित सम्मान सहित होती है। भगवान् की सभी सेवाएँ समय से होती हैं। नित्य-निरन्तर सूरसागर के संगीतमय पदों से भगवान् को रिझाया जाता है। दर्शन कर सभी कृतकृत्य हुए। पुनः स्टीमर में बैठ कर वापिस बसों में आ गये।

अब गुजरात के नागेश ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन के लिये बसें बढ़ीं। कच्चा रास्ता होने से बस चालकों को प्रथम कुछ आपत्ति हुई किन्तु संयोजक महोदय की सूझ-बूझ से सभी बस चालक चलने के लिये तैयार हो गए। बेट द्वारका से प्रथम नागेश का कार्यक्रम बना। उसके बाद सायंकाल द्वारकाधाम के दर्शन करना उपयुक्त समझा गया। एक घंटे से कम समय में सभी बसें नागेश्वर महादेव मन्दिर के समीप आ लगीं।

शिव पुराण में नागेश महादेव की कथा आती है। शिव-भक्त सुप्रिय वश्य को दारुक राक्षस द्वारा किसी समय जेल में बन्द कर दिया गया। किन्तु वहाँ भी उसकी पूजा बन्द न हुई। दारुक ने इसे अपने विरुद्ध षड्यन्त्र समझकर उसे मार डालने के आदेश दिए। इधर सुप्रिय की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् शंकर वहां अवतीर्ण हुए एवं सुप्रिय को पाशुपतास्त्र दिया जिससे उसने राक्षसों का संहार किया। तब से भगवान् नागेश रूप से यहीं विराजते हैं। कहा है—

एतद् यः शृणुयान्नित्यं नागेशोद्भवमादरात्।
सर्वान् कामानियाद् धीमान् महापातकनाशनान् ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्दिर अत्यन्त प्राचीन किन्तु गुफा की तरह छोटा सा है। इसमें एक समय में एक यात्री ही पूजा कर पाता था इसलिए सभी ने लाइन लगाकर अपनी-अपनी बारी आने पर पूजा की। भगवान् शंकर की कृपा से यह सब अनिर्वचनीय आनन्द सभी को अनुभव करने को मिला।

अब पश्चिम भारत के धाम को देखने के लिए सबका मन व्यग्र था। सूर्य भगवान् अस्ताचल पर्वत की ओर जाने की तैयारी कर रहे थे। किन्तु इससे पहले कि सूर्य भगवान् अपनी लोक यात्रा कर विश्राम लेते, बसें उनके देखते-देखते द्वारका-धाम में पहुँच चुकी थीं। गोमती के समीप सभी बसें रुकीं। इसमें समुद्र का जल रहता है, इसी कारण इसे गोमती द्वारका भी कहते हैं। सर्वप्रथम यहाँ सभी ने स्नान किया।

स्कन्द पुराण में द्वारकाधाम का विशेष माहात्म्य है—

"अपि कीटपतङ्गाद्याः पशवोऽथ सरीसृपाः।
विमुक्ताः पापिनः सर्वे द्वारकायाः प्रभावतः॥
किं पुनर्मानवा नित्यं द्वारकायां वसन्ति ये।
या गतिः सर्वजन्तूनां द्वारकापुरवासिनाम्।
सा गतिर्दुर्लभा नूनं मुनीनामूर्ध्वरेतसाम्॥"

द्वारका का मुख्य मन्दिर रणछोड़राय जी का मन्दिर है। इसे ही द्वारकाधीश का मन्दिर कहते हैं। सप्त पुरियों में ए[क] द्वारकाधाम के मन्दिर में भगवान् की श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति है। मन्दिर सात मंजिला और शिखर युक्त है। यहाँ की मूल मू[र्ति] वोडाणा भक्त डाकोर ले गये थे उसके बाद दूसरी मूर्ति लाड[...]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्राम के पास एक बावली में मिली, वही मूर्ति मन्दिर में विराजमान है। मन्दिर के दक्षिण में त्रिविक्रम भगवान् का मन्दिर है। उत्तर में मोक्षद्वार के पास कुशेश्वर शिव मन्दिर है। सभी ने बड़ी श्रद्धा से भगवान् के दिव्य विग्रह एवं झाँकी के दर्शन किये। भावुकता में कोई नेत्र खोलकर, कोई नैनों को मूँद कर, कोई भावविभोर हो पत्र, पुष्प, माल्यार्पण करते हुए दर्शन कर रहा था। पता नहीं क्या बात थी कि दर्शन करते तृप्ति ही नहीं होती थी अन्त में पुजारियों ने पर्दा डाल दिया, पट बन्द कर दिया और भक्तों ने मनोहारी छवि को हृदय में समाए हुए नमस्कार किया। जगद्गुरु शङ्कराचार्य का शारदामठ मन्दिर के घेरे में ही है। तुलसी एवं प्रसाद ग्रहण कर यात्री अपनी-अपनी बसों में आ विराजे। किसी को कोई असुविधा नहीं, दो दिन-दो रात की यात्रा में भी कोई क्लान्ति नहीं चेहरे पर। परीक्षित की वही बात याद आ जाती है।

"नैषातिदु:सहा क्षुन्मां त्यक्तोदमपि बाधते।
पिबन्तं त्वन्मुखाम्भोजच्युतं हरिकथामृतम्॥

रात्रि १० बजे वसों को वापिस अहमदाबाद पहुँचने के निर्देश दिए गए। चलती बसों में रात्रि भर नाम संकीर्तन चलता रहा। लौटते समय बसें विभिन्न मार्ग खम्भालिया, जामनगर, राजकोट, लिमडी होती हुई प्रात: ८ बजे अहमदाबाद पहुँच गई। यहाँ सभी ने प्रेमपूर्वक स्नान कर जलपान किया। उसके बाद कुछ यात्री नगर भ्रमण में निकल पड़े एवं कुछ वस्त्र-प्रक्षालनादि में व्यस्त देखे गए। दो दिन में गुजरात के सभी तीर्थों का सुविधापूर्वक दर्शन कर पाना यह स्टेशन अधीक्षक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं क्षेत्रीय लोगों के लिये भी आश्चर्य था परन्तु यह वास्तविकता थी और उस पर भी दारुका वन में विराजित नागेश ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन जाने कैसे हो गए। यह सब कैलास के पूर्वाचार्यों की कृपा जिनकी स्मृति में शताब्दी स्पेशल ट्रेन का संकल्प महाराजश्री ने लिया। मध्याह्न १ बजे तक सभी यात्रियों ने भोजन ग्रहण कर लिया एवं रणछोड़ जी के दर्शनों के लिए गाड़ी छूटने की आतुरता से प्रतीक्षा करने लगे। १-२-८१ को गाड़ी ने १-२५ पर अहमदाबाद स्टेशन बहुत से कैलास भक्तों एवं प्रेमियों द्वारा भावभीनी विदाई स्वीकार करते हुए छोड़ा। निरभिमानी हो जब सब कुछ प्रभु पर छोड़ दिया जाता है तो उन्हें जीव की चिन्ता स्वयं हो जाती है।

नडियाद (४६ कि०) आनन्द जं० (१९ कि०) : जब प्रभु के कीर्तन में तन्मय हुए, एक बहुत ही सात्त्विक वातावरण था। महाराजश्री ने डाकोर माहात्म्य चलती गाड़ी में सुनाया। नडियाद व आनन्द जं० गाड़ी रुकी।

भलेइ (१२ कि०) डाकोर (१८ कि०) : यहाँ विद्युत इञ्जन को बदलकर स्टीम इञ्जन लगा दिया गया किन्तु पूर्व व्यवस्था रहने से देरो नहीं लगी और बातों-बातों में गाड़ी सायं ४-४० पर डाकोर स्टेशन जा लगी। स्टेशन आने से पूर्व ही दिए गए निर्देशानुसार सभी यात्री अपनी-अपनी टोली बनाकर पैदल ही रणछोड़ जी के दर्शनों को निकल पड़े। श्री रणछोड़ जी पहले द्वारकाधीश मन्दिर में प्रतिष्ठित थे। जरासन्ध से युद्ध में लड़ते-लड़ते द्वारका भाग आने से इनका नाम 'रणछोड़' जी पड़ा। डाकोर के भक्त विजयसिंह बोड़ाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं उनकी पत्नी गङ्गाबाई नियम से ठाकुर जी के दर्शनों के लिए द्वारका जाते थे, वृद्धावस्था आने पर भगवान् ने उनसे कहा—अब तुम्हारे यहाँ मुझे चलने की इच्छा है। भक्तवाञ्छा-कल्पतरु भाव के भूखे भगवान् अपने दिव्य विग्रह से डाकोर आ गये। द्वारका के पुजारियों ने जब आग्रह किया तो प्रभु ने आदेश दिया—छः मास बाद श्रीवर्द्धिनी बावली से मेरी चिन्मयी मूर्ति निकलेगी, उसे मन्दिर में प्रतिष्ठापित कर लेना।

डाकोर में मुख्य मन्दिर रणछोड़राय जी का है। मन्दिर के चारों ओर खुला प्राङ्गण है। विशिष्ट पूजा कर भगवान् के सभी सेवा गृहों के दर्शन सभी यात्रियों ने सुविधापूर्वक किये। शयन गृह की सेवाओं को देखकर लगता था जैसे प्रभु नित्य यहाँ भाववशीकृत हो शयन करते हैं। क्या करें उनकी भी मजबूरी है, भक्त जो प्रेम की डोरी से बाँध लेते हैं, जिससे वो खिंचे हुए चले आते हैं। पता नहीं क्या बात थी जो यहाँ की छोटी-छोटी गलियों, स्थान-स्थान पर भगवान् के लीलावतारों के स्मारक मन्दिर, सरोवरादि को देखकर मन में सत्त्वगुणी वृत्तियों का समावेश हो जाता था। सरोवर के पार मनोकामना सिद्ध हनुमान् साधकों की तपःस्थली को ध्वनित कर रहे थे। इसी प्रकार गुफा में विराजमान महिषासुरमर्दिनी भगवती दुर्गा का मन्दिर शाक्त एवं तान्त्रिक पूजापद्धति का एक अलौकिक प्रतीक था, यहाँ की हर कलाकृति का अपना एक चमत्कारी रहस्य था, जो निष्ठावान् साधकों को अनुष्ठान काल में दृष्टिगोचर हो सकता था। सभी यात्री दर्शन कर स्टेशन लौट आए। स्टेशन मास्टर ने सहानुभूतिपूर्वक पहले से ही कैलास स्पेशल को विदा करने के लिए सभी तैयारियाँ कर ली थीं। रात्रि ९ बजे कैलास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पेशल ने डाकोर स्टेशन छोड़ा। यात्रियों को दिन भर का आनन्द भूलता न था। आखों में नींद, शरीर में थकान, किन्तु आनन्द की अनुभूति इतनी आतुर किए हुए थी कि उसकी अभिव्यक्ति जरूरी थी, फिर नींद कैसे आए।

गोधरा जं० (४६ कि०) दाहोद (७४ कि०) : गोधरा स्टेशन आया गाड़ी इञ्जन में पानी के लिए रुकी और चल दी, इसके पश्चात् पुनः दो घंटे चलकर दाहोद स्टेशन रुकी, जलपान करके चल दी, रात्रि के १२॥ बजे थे किन्तु चैन कहाँ, महाकालेश्वर के दर्शन की सुप्त वासना जाग रही थी।

रतलाम जं० (११४ कि०) नागदा जं० (४१ कि०) रात्रि ३-३० रतलाम जंक्शन पहुँची। यहाँ से इञ्जन बदला गया किन्तु रेलवे अधिकारियों की चुस्ती-फुरती से सब कार्य ३५ मिनट में ही पूरा हो गया। कुछ यात्री ब्रह्ममुहूर्त से पूर्व ही स्नान कर निश्चिन्त हो गए। क्षिप्रा में स्नान तो सूर्योदय के पश्चात् संभव था। ६॥ बजे प्रातः कैलास स्पेशल नागदा जं० पहुँची। यहाँ उज्जैनस्थ महाकालेश्वर के प्रधान पुजारी आए हुए थे उन्होंने नागदा से ही उज्जैन फोन कर सभी कैलास भक्तों को दर्शन कराने के लिए अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं को निर्देश दिए। प्रातः ७-१० नागदा जंक्शन से कैलास स्पेशल विदा हुई। भगवान् अंशुमाली के उदय होने में कुछ ही क्षण थे, हल्की-हल्की लालिमा आकाशमण्डल में व्याप्त थी न अधिक सर्दी, न अधिक गर्मी और मध्यप्रदेश के प्रधान तीर्थ महाकालेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग को मिलाने के लिए गाड़ी द्रुत गति से बढ़ी जा रहती थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिपलोदा बागला (११ कि०) : पिपलौदा बागला में गाड़ी रुकी और सभी को चाय नाश्ता वितरित कर दिया गया। महाराजश्री ने एक घंटे तक उज्जैन के सभी तीर्थों का विस्तृत वर्णन एवं माहात्म्य सुनाया। यात्रियों ने बड़े ध्यान से सुना। कुछ अपनी डायरी में भी नोट कर लिया करते थे।

असलौदा (२५ कि०) उज्जैन (२१ कि०) : कुछ क्षणों के लिए गाड़ी असलौदा रुकती हुई २ फरवरी १९८१ प्रातः ८-२० पर उज्जैन स्टेशन जा लगी।

उज्जैन माहात्म्य

"महाकालः सरिच्छिप्रा गतिश्चैव सुनिर्मला।
उज्जयिन्यां विशालाक्षि वासः कस्य न रोचयेत् ॥
स्नानं कृत्वा नरो यस्तु महानद्यां हि दुर्लभम्।
महाकालं नमस्कृत्य नरो मृत्युं न शोचयेत् ॥"

"उज्जैन में कौन रहना नहीं चाहेगा जहाँ शान्त गम्भीर अत्यन्त निर्मल क्षिप्रा नदी बहती है, भगवान् महाकालेश्वर के नित्य दर्शन होते हैं। देवदुर्लभ क्षिप्रा महानदी में स्नान कर महाकालेश्वर को नमस्कार कर मनुष्य आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाता है।"

उज्जैन में सर्वप्रथम सभी ने क्षिप्रा नदी में स्नान किया। भगवान् नारायण के शरीर से उत्पन्न होने वाली इस महानदी पर दोनों ओर पक्के घाट बने हुए हैं, घाटों पर मन्दिरों में अधिकाश शिवलिङ्ग एवं उनका परिवार प्रतिष्ठापित है। नरसिंहघाट, रामघाट पिशाचमोचन तीर्थ, छत्रीघाट, गन्धर्व-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीर्थ प्रसिद्ध हैं। गङ्गा दशहरा, कार्तिकी पूर्णिमा एवं वैशाखी पूर्णिमा को श्रद्धालु लोगों की अपार भीड़ हो जाती है। बृहस्पति की सिंहराशि में होने पर क्षिप्रा स्नान का महत्त्व और भी अधिक होता है।

रामघाट में स्नान कर सीढ़ियों को चढ़कर कुछ दूर रुद्र-सरोवर के पास हरसिद्धि देवी का मन्दिर है। अवन्तिका पुरी उज्जैन का यह शक्तिपीठ है। ५१ शक्तिपीठों में एक इस शक्ति-पीठ में सती की कूर्पर (केहुनी) गिरी थी। यहाँ माँ भगवती की केहुनी की पूजा होती है। महाराज विक्रमादित्य इन्हीं की आराधना करते थे। इन्हें सौराष्ट्र से वे उज्जैन ले आए थे। महारानी जी दिन में उज्जैन और रात्रि में अपने मूल स्थान में वास करती हैं। मुख्यपीठ पर केवल श्रीयन्त्र है और उसके पीछे माँ अन्नपूर्णा की मूर्ति है।

महाकालेश्वर जाते समय मार्ग में बड़े गणेश का मन्दिर है। अत्यन्त विशाल गणेश जी का यह दिव्य विग्रह अपने ढंग का अलग ही है। यद्यपि मन्दिर सीमित दर्शनार्थियों को ही अपनी बाहों में भर सकता है तो भी इतने विशाल जनसमुदाय को दर्शन बड़ी सुविधापूर्वक हुए। उसके पास ही पञ्चमुखी हनुमान् जी का मन्दिर है। इस मन्दिर में अन्य भी देवमूर्तियाँ हैं।

उज्जैन का प्रधान मन्दिर भगवान् महाकालेश्वर का है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में महाकाल ज्योतिर्लिङ्ग यही है। राजा विक्रमादित्य के समय उज्जयिनी भारत की राजधानी थी अतः देश-विदेश के लोग यहाँ आते थे। मन्दिर का प्राङ्गण इतना विशाल है कि एक समय में एक लाख से भी अधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्ति इसमें एकत्र होकर यथाक्रम भगवान् के दर्शन कर सकते हैं। प्राङ्गण के मध्य में मन्दिर है। इस मन्दिर में दो खण्ड है। इसमें भगवान् की लिङ्गमूर्ति ओङ्कारेश्वर महादेव से पूजी जाती है। ओङ्कारेश्वर के नीचे, नीचे के खण्ड में महाकाल लिङ्गमूर्ति है। महाकालेश्वर लिङ्गमूर्ति चाँदी की जलहरी में नागपरिवेष्टित है। इसके एक ओर गणेश जी, दूसरी ओर पार्वती और तीसरी ओर स्वामी कार्तिकेय प्रतिष्ठापित हैं। यहाँ प्राचीन परम्परानुसार घृतदीप और एक तेलदीप जलता रहता है। उज्जैन महाकालेश्वर भगवान् का ब्रह्ममुहूर्त में भस्मी शृङ्गार दर्शनीय है। यहाँ विद्वान् पण्डित, ब्राह्मण एवं पुजारियों के द्वारा २ घंटे से अधिक समय में सम्पादित होने वाली इस पूजा की छवि देखते ही बनती है ऐसी पूजा भारत के किसी ज्योतिर्लिङ्ग में नहीं होती। इस समय घड़ियाल घंटों डमरू के निनाद में लगता है स्वयं महादेव ताण्डव नृत्य कर असीम सृष्टि विलास का आनन्द ले रहे हों। महाकालेश्वर मन्दिर के नीचे सभामण्डप है, उसके नीचे सरोवर है, उसके आसपास शिवछतरियाँ है, जहाँ ब्राह्मण समुदाय जप, पाठ-पूजा करता रहता है। सभी ने यथाक्रम लाइन में खड़े होकर महा-काल को अपनी पूजा-अर्चा निवेदित कर कृतकृत्य जाना।

महाकाल से बाजार की ओर जाते समय यात्रियों ने चौबीस खंभा के दर्शन किए। इनकी कलाकृति प्राचीन भारतीय संस्कृति की स्मृति दिलाती है। यहाँ भद्रकाली देवी का मन्दिर है।

उज्जैन का गोपाल मन्दिर शहर के मध्य में है। यह मन्दिर महाराज दौलतराव सिन्धिया की महारानी बायजाबाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का बनवाया है। यहाँ श्री राधाकृष्ण प्रतिष्ठित हैं जिनकी सेवा-पूजा नियमानुसार राजोचित ठाट-बाट से होती है। शृङ्गार से विभूषित राधामाधव की छवि दर्शनीय होती है।

स्टेशन समीप में जानकर अन्य दर्शनों को अधिकांश यात्रियों ने बाद में किया। मध्याह्न १ बजे से ३ बजे तक सभी ने आकर वैश्वानर भगवान् को भिक्षाग्रहण कर तृप्त किया।

सभी को सूचना दी गई कि ओङ्कारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन के लिए स्टेशन के पास से सभी १२ बसें मध्यरात्रि १२ बजे आकर एक बजे विदा होंगी। अगली यात्रा के सम्बन्ध में निश्चित होकर यात्री उज्जैन के अन्य प्रमुख तीर्थों के दूसरे दौर पर चल दिए।

महाकवि कालिदास की तपःस्थली गढ़कालिका देवी मन्दिर के दर्शन उस स्वर्ण युग की याद दिलाता है जिस समय भारत-वर्ष में कला एवं संस्कृति अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर थी। और "प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः" के उद्घोषक महाकवि कालिदास को अपनी दैवी शक्ति के लिए यहाँ शरण लेनी पड़ी, इससे परम्परागत आध्यात्मिक निष्ठा के संकेत मिलते हैं। पास में गणेश जी एवं प्राचीन हनुमान् जी का मन्दिर है।

गढ़कालिका से थोड़ी दूर भर्तृहरिगुफा एवं राजा भर्तृहरि की समाधि है। "धिक् तां च तं च मदनञ्च इमां च मां च" की अनुभूति कर "शिव-शिव भवानी-भवानी" जपने में तल्लीन राजा भर्तृहरि अपना सम्पूर्ण राजवैभव त्यागकर यहीं तपस्या करने एकान्त में चले आए थे। उनका धूना अभी भी गुफा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखा जा सकता है। भित्तियों की प्राचीनता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

उज्जैन का सान्दीपनि आश्रम अपनी प्राचीनता एवं सौन्दर्य के लिए दर्शनीय स्थल बन गया है। श्री कृष्ण बलराम सुदामा आदि की शिक्षा यहीं हुई थी। उन दिनों वाराणसी की उतनी ख्याति शायद नहीं थी। यहाँ आचार्य वल्लभाचार्य की बैठक है। भित्तिओं पर संगमरमर के लीलाविग्रह अत्यन्त चित्ताकर्षक हैं।

उज्जैन में ज्योतिर्विदों की दृष्टि से सूर्य मन्दिर, मङ्गलनाथ, शनिमन्दिर एवं वेधशाला भी दर्शनीय है। धर्मप्रेमी उज्जैन की पञ्चक्रोशी यात्रा भी करते हैं जिसमें सभी तीर्थों का दर्शन एवं पैदल चलने का नियम होता है। रात्रि को सभी ने यथासमय वापिस आकर अपनी महिम्न कर भोजन प्रसाद ग्रहण किया। अभी थोड़ा विश्राम करने लगे ही थे कि बसों की आने की सूचना दी गई। यात्रियों को ओङ्कारेश्वर महादेव के दर्शन एवं नमदा स्नान की बड़ी उत्सुकता थी अतः कुछ यात्री स्टेशन के बाहर पूर्व मे ही वसों की प्रतीक्षा में खड़े थे। निर्देशानुसार सभी के बैठ जाने पर मध्यरात्रि के बाद डेढ़ बजे बसें इन्दौर होती हुई ओङ्कारेश्वर के लिए चल पड़ी। 'ॐ नमः शिवाय, हर हर महादेव' के मधुर सङ्कीर्तन में मार्ग का पता ही नहीं चला। प्रातः ४॥ बजे मान्धाता में सभी बसें रुकीं। कहते हैं राजा मान्धाता ने यहाँ भगवान् शंकर की आराधना की थी, इससे इस द्वीप का नाम मान्धाता पड़ गया। यहाँ नर्मदा की दो धाराएँ बहती हैं। सभी ने नर्मदा किनारे पक्के घाटों पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्नान किया। ओङ्कारेश्वर एवं अमलेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन किए। दोनों का अस्तित्व पृथक्-पृथक् होने पर भी एक ही ज्योतिर्लिङ्ग में गणना की जाती है। विन्ध्यपर्वत की आराधना से भगवान् शंकर ने प्रसन्न हो वहाँ प्रतिष्ठित होने का वचन दिया किन्तु देवता एवं ऋषियों की प्रार्थना पर आपने ॐकार नाम लिङ्ग के दो भाग किये प्रणवरूप लिङ्ग का नाम ओङ्कारेश्वर एवं पार्थिव लिङ्ग का नाम अमलेश्वर हुआ।

ओङ्कारेश्वर लिङ्ग प्राकृतिक है। इसके चारों ओर हमेशा जल भरा रहता है, यह गुम्बज के ठीक नीचे नहीं है। शिखर पर महाकालेश्वर की मूर्ति है। मन्दिर में पार्वती जी की भी मूर्ति है। तीसरी मञ्जिल पर वैद्यनाथेश्वर लिङ्गमूर्ति है। ओङ्कारेश्वर की छोटी-बड़ी परिक्रमाएँ की जाती हैं। तीन दिन की यात्रा में श्रद्धालु तीर्थयात्री सभी तीर्थों का दर्शन करते हैं।

लौटते समय सभी ने अमलेश्वर महादेव का दर्शन किया। यह मन्दिर महारानी अहल्याबाई का बनवाया हुआ है। यहाँ बहुत से ब्राह्मण पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर रुद्री पाठ एवं पूजन करते रहते हैं। यहाँ के सभी दर्शन बड़े मनोरम हैं। बहुत छोटा सा बाजार होने से पर्वत, देवनदी नर्मदा एवं प्राचीन तीर्थों की पवित्रता एवं सात्त्विकता ज्यों की त्यों देखने को मिली। लौटते समय बन्दरों को चनों का जलपान हुआ क्योंकि सैकड़ों बन्दर अपना टैक्स लेने के लिए यात्रियों को अपने प्रदर्शन हाव-भाव द्वारा मन्त्र मुग्ध कर लेते हैं। यहाँ के निरञ्जनी अखाड़े में महाराजश्री एवं भक्तों का स्वल्पाहार जलपान के द्वारा स्वागत हुआ। यात्रियों को इस दर्शनीय स्थल को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखने में बड़ा आनन्द आया। कोई नर्मदा किनारे बैठा लहरों का आनन्द ले रहे हैं, कोई ज्योतिर्लिङ्ग में लघुरुद्री करवा रहे हैं, कोई पर्वतों पर चढ़कर अन्यान्य मन्दिरों के दर्शन में व्यस्त हैं, यहाँ के आनन्द को देखते हुए किसी को असुविधा न हो इसलिये बसों को दस बजे तक रुकवा लिया गया। अन्तिम बस सब यात्रियों की प्रतीक्षा कर उन्हें लेकर १०·३० पर चल दी। मार्ग में इन्दोर के गीता मन्दिर के दर्शन करते हुए सभी यात्री अपराह्न २-३० बजे वापिस उज्जैन आ गए।

सभी के भोजन के लिए पूर्व से ही व्यवस्था थी। यात्रियों के आने पर सभी कार्यकर्ताओं ने भोजन वितरित किया। स्टेशन मास्टर ने इञ्जन पहले से ही तैयार कर दिया था। ३ फरवरी ८१ को अपराह्न ३ बजे कैलास शताब्दी ने उज्जैन स्टेशन छोड़ कोटा के लिए प्रस्थान किया।

नागदा जं० (५५ कि०) : उज्जैन से नागदा आने में लगभग दो घंटे लगे यहाँ से इञ्जन बदलना था, इसलिए यात्रियों को ३ घटे का अवकाश मिल गया। नागदा स्टेशन महात्माओं एवं यात्रियों से भरा पूरा दीखने लगा। आरती महिम्न का संकेत मिलने पर यात्री सामूहिक प्रार्थना में सम्मिलित हुए। प्रार्थना पूर्ण होते ही भजन संकीर्तन का कार्यक्रम हुआ।

महीदपुर रोड (१७ कि०) चौमहला (४५ कि०) : कैलास स्पेशल नए इञ्जन से कोटा जंक्शन के लिए चली। रात्रि ९ बजे महीदपुर रोड में आध घंटे के लिए रुकवा कर भोजन वितरित कराया गया। आज की रात को स्टेशन मास्टरों से सम्पर्क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनाकर गाड़ी को समय से कोटा पहुँचाना आवश्यक था क्योंकि वहाँ प्रातः ३ बजे बसों की व्यवस्था थी। चौमहला स्टेशन में कैलास स्पेशल के इञ्जन ने पानी लिया और बिना किसी प्रतीक्षा के चल दी।

शामगढ़ (२६ कि०) भवानी मण्डी (३३ कि०) : दोनों तरफ से आने वाली जनता एक्सप्रेस एवं पश्चिम एक्सप्रेस को मार्ग देने के लिए कैलास स्पेशल को कुछ-कुछ क्षणों के लिए शामगढ़ उसके बाद भवानी मण्डी में रुकना पड़ा। कैलास स्पेशल पैसेञ्जर गाडी से कुछ द्रुत गति से चली या यूँ कहो कि एक्सप्रेस की गति से चली, ठीक आधा घण्टे बाद नागदा से अपने पीछे चलने वाली २३ जनता एक्सप्रेस को कैलास स्पेशल ने आगे बढ़ने नहीं दिया।

झलावर रोड (१७ कि०) रामगंज मण्डी (१२ कि०) : इसके बाद झलावर रोड एवं रामगंज मण्डी भी गाड़ी रुकी। रामगंज मण्डी में रात्रि डेढ़ बजे फिर इसे प्यास लगी। पानी पीकर स्वास्थ्य लाभ कर फिर अपनी गति से बढ चली।

कोटा जंक्शन (७२ कि०) : रामगंज मण्डी से कोटा जं० की ७२ किलोमीटर की दूरी को इसने बिना विश्राम लिए डेढ़ घंटे में पूरा कर लिया। स्टेशन पर पहुँचते ही बसों की व्यवस्था सम्बन्धी सूचना दी गई। यात्रियों को चार बजे स्टेशन से बाहर अपनी-अपनी निर्धारित-आरक्षित बसों पर चढ़ने के लिए परामर्श दिया गया। प्रथम श्रेणी के यात्रियों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डीलक्स बसों की व्यवस्था थी। कोटा से पुष्कर पहुँचने में बसों को केवल ४ घंटे का समय लगा।

पुष्कर माहात्म्य

"दुष्करं पुष्करं गन्तुं दुष्करं पुष्करे तपः।
दुष्करं पुष्करे दानं वस्तु चैव सुदुष्करम् ॥
त्रीणि शृङ्गाणि शुभ्राणि त्रीणि प्रस्रवणानि च।
पुष्कराण्यादिसिद्धानि न विद्मस्तत्र कारणम् ॥"

"पूर्वजन्म के शुभकर्म के पुण्य के उदय होने पर ही पुष्कर में यात्रा, तप, दान एवं वास संभव है। पापों के नाशक, देदीप्यमान तीन पुष्कर क्षेत्र हैं, इनमें सरस्वती बहती है। ये आदिकाल से सिद्धतीर्थ हैं, इनके तीर्थ होने में कोई अन्य कारण नहीं है।"

पुष्कर तीर्थों के गुरु होने से पुष्करराज कहे जाते हैं। पुष्कर, कुरुक्षेत्र, गया, गङ्गा और प्रभासरूप पञ्चतीर्थों में पुष्कर अन्यतम हैं। पञ्च सरोवरों में पुष्कर भी आता है; मानसरोवर, पुष्कर, बिन्दुसरोवर (सिद्धपुर), नारायण-सरोवर (कच्छ) एवं पम्पा सरोवर (हासपेट)।

पुष्कर के विशाल सरोवर में बने पक्के घाटों में सभी यात्रियों ने स्नान किया। पुष्कर के किनारों पर गौघाट, ब्रह्मघाट, कपालमोचनघाट, यज्ञघाट, बदरीघाट, रामघाट और कोटितीर्थ घाट पक्के बने हुए हैं। यहाँ के पण्डों के पास सैंकड़ों वहियाँ हैं जिनमें देश के कोने-कोने से आए हुए यात्रियों के वंशावली का उल्लेख मिल जाता है। इनकी स्मृतिशक्ति भी अलौकिक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्कर का मुख्यमन्दिर ब्रह्मा जी का मन्दिर है। पूरे भारत का यही एक मन्दिर है जहाँ चतुर्मुख ब्रह्मा जी दिव्य मूर्ति प्रतिष्ठापित है। दाहिनी एवं बायीं ओर सावित्री देवी एवं गायत्री देवी के मन्दिर हैं। संगमरमर की बनी सीढ़ियों से चढ़कर शिखर में ब्रह्मा जी विराजमान हैं। यहाँ से करीब दो किलोमीटर दूर एक छोटी सी पहाड़ी पर गायत्री देवी जी का मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठों में से एक है, यहाँ सती का मणिबन्ध गिरा था। दूसरी ओर एक पहाड़ की चोटी पर सावित्री देवी जी का मन्दिर है। कहते हैं यज्ञ में ब्रह्मा जी के साथ गोपकुमारी गायत्री के सहधर्मिणी के रूप में बैठने से सावित्री रुष्ट होकर पर्वत पर चली आईं।

पुष्कर के अन्य मन्दिरों में बहुत से प्राचीन मन्दिर हैं जिनमें श्री बदरीनारायण जी का मन्दिर, अटपटेश्वर महादेव और श्री रमा बैकुण्ठ मन्दिर अन्यतम हैं। श्रद्धालु तीर्थयात्री अपनी सुविधानुसार पुष्करतीर्थ की अन्तर्वेदी, मध्यवेदी, प्रधान-वेदी और बहिर्वेदी रूप चार परिक्रमाएँ करते हैं। इन परि-क्रमाओं में प्राचीन मन्दिर एवं ऋषि मुनियों के आश्रमों के दर्शन मिलते हैं।

सभी दर्शन करने के बाद अब नाथद्वारा की यात्रा के लिए बसों को प्रस्थान करना था। पुष्कर से नाथद्वारा की लगभग ४०० किलोमीटर यात्रा में काफी समय लगा। मार्ग में कुछ समय के लिए बसें भीलवाड़ा रुकीं। मार्ग में राजस्थान की झाँकी मिलती। रेगिस्तान एवं छोटे-छोटे कंटीले वृक्ष दूर-दूर तक देखने को मिले। इस भूमि के लिए मुगल साम्राज्य के साथ कई बार राजपूत नरेशों ने रणभूमि में लोहा लिया। इसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार्ग में ऐतिहासिक हल्दी घाटी भी है। भीलवाड़ा अब एक औद्योगिक महत्त्व का स्थान एवं औद्योगिक केन्द्र बन गया है।

रात्रि देर से पहुँचने की संभावना से अब श्रीनाथ जी के दर्शन प्रातः ही किए जा सकते थे। अतः चित्तौड़गढ़ में भी बसों को रुकवाया गया। राजस्थान के इतिहास में चित्तौड़ का अपना विशिष्ट इतिहास है जो चिरस्मरणीय रहेगा। मातृभूमि एवं धर्मप्रेम से प्रेरित होकर लाखों राजपूतों ने हँसते-हँसते अपने प्राणों की बलि दी है। असंख्य पतिव्रता महिलाएँ सामूहिक रूप से 'जौहर' व्रत लेकर सती हुई हैं। यहाँ का दुर्ग अब शून्य-शून्य सा दीखने पर भी पूर्वजों की स्मृति दिलाता है। दुर्ग के अन्दर महाराणा प्रताप का जन्म स्थान, रानी पद्मिनी, पन्ना धाय, मीरा बाई के महल, कीर्तिस्तम्भ, जयस्तम्भ, जटाशङ्कर महादेव का मन्दिर एवं कालिका माता का मन्दिर है।

चित्तौड़गढ़ के शम्भुकुञ्ज में श्री चारभुजा रघुनाथ जी का मन्दिर है। श्री रघुनाथ जी चतुर्भुजी विग्रह में श्री सीता जी के साथ सुशोभित हैं। कुञ्ज में ही श्री मुरलेश्वर महादेव का मन्दिर है। चित्तौड़ में मीराबाई के प्रभु गिरधर नागर का मन्दिर है उसके समीप ही देवी जी का मन्दिर है।

शाम हो चली थी। बसें अपने गन्तव्य स्थान श्री नाथद्वारा की ओर बढ़ चलीं। रात्रि १०॥ बजे से १२॥ के बीच सभी बसें श्री नाथद्वारा में आ पहुँचीं। नाथद्वारा में यात्रियों के लिए अनेक धर्मशालाएँ हैं। सुविधानुसार श्रीनाथ जी के समीप वाली धर्मशालाओं में ही स्थान की व्यवस्था हो गई। भगवत चर्चा एवं संकीर्तन में सुन्दर कालक्षेप हुआ। यात्री प्रातः ३ बजे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से ही शौच-स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त होने लगे ताकि प्रातः ५ बजे की मंगला श्रृंगार आरती के दर्शन संभव हो सकें।

नाथद्वारा में मुख्य मन्दिर श्रीनाथ जी का है। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी की यह प्रधान पीठ है। भारत की वैष्णव पीठों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन परम्परा के अनुसार यहाँ बालरूप भगवान् की पूजा होती है। कहते हैं महाप्रभु वल्लभाचार्य को श्रीविग्रह के दर्शन व्रज में गोवर्धन पर हुए थे। श्रीनाथ जी के दर्शन वल्लभ सम्प्रदाय के शिष्य-प्रशिष्यों को होते रहे हैं उनकी लीलाओं के उन्होंने साक्षात् दर्शन किए हैं। श्रीनाथ जी का विग्रह व्रज से मेवाड़ लाया गया। श्रीनाथ जी की गाड़ी दिलवाड़ा ग्राम के पास रुक गई और लाख प्रयत्न करने पर भी आगे न बढ़ सकी। प्रभु की इच्छा यहीं वास करने की है—ऐसा अनुभव कर नाथद्वारा में विशाल मन्दिर प्रभु के लिए बना। यहाँ बनास नदी है जो बारहमासी नहीं है।

मंगला दर्शन के लिए पट खुलने के पूर्व ही कैलास स्पेशल के सभी यात्री प्रेम से बैठ कर एवं खड़े होकर भगवान् के गुणानुवाद कर प्रतीक्षा कर रहे थे। भगवान् की सेवापूजा ठीक समय से एवं श्रद्धा भक्ति से होती है। अलग-अलग समय में भगवान् के काल एवं लीलानुरूप श्रृङ्गार होते हैं। प्रातः उनींदे मुख से उठते हैं, बाल भगवान् की झाँकी चित्ताकर्षक है। दर्शन करते मन ही नहीं भरता। महिलाओं के लिए भगवान् के दर्शनों की अलग व्यवस्था है। आगे का भाग उनके लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरक्षित है। पीछे के भाग में पुरुष खड़े होकर दर्शन करते हैं। दर्शन करते समय भगवान् से अपने मन की बात कहना बड़ा अच्छा लगता है। कभी-कभी अपनी प्रार्थना मनवाने के लिए बाधित करते हैं तो कभी केवल उनकी नित्य कृपादृष्टि की अभियाचना भी की जाती है और श्यामसुन्दर तो

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्"

अपने जन के मन की बात को सुनते समझते एवं जो उसके लिए हितकारक हो, उसे करते हैं।

अभी इच्छा पूर्ति हुई नहीं थी कि पुजारियों ने अगले कलेऊ दर्शन तक के लिए मन्दिर के पट बन्द कर दिए। इस बीच कैलास स्पेशल के भक्तवृन्द उन सभी कक्षों में दर्शन के लिए गए जहाँ भगवान् को अर्पित करने के लिए निवेद्य सामग्री तैयार होती है। केसर-कस्तूरी पीसने के लिए चाँदी एवं सोने की चक्की को देखने की सबको इच्छा थी क्योंकि ऐसा उन्होंने पूरी यात्रा में किसी मन्दिर में नहीं देखा था। कहीं सैंकड़ों माताएं बहनें भगवान् के लिए फूलमालाएँ बना रही हैं, कहीं भगवान् के लिए बीड़ा बना रही हैं, कहीं चन्दन रगड़ा जा रहा है, कहीं वस्त्राभूषणों को व्यवस्थित ढंग से रखा-निकाला जा रहा है, कहीं विविध षट्रस व्यञ्जन तैयार हो रहे हैं। इतने वैभव एवं भावपूर्वक पूजा को देखते ही बनता था। हर एक दर्शन में अलग-अलग शृंगार कितनी सूक्ष्मता से किया जाता था। फूलों के झूलन में भगवान् श्यामसुन्दर बाल रूप में कलेऊ कर रहे हैं तो गोचारण में कमर में फेंटा बाँधे, सिर में मोर मुकुट लगाये हुए दर्शन भगवान् की मनोहारी लीलाओं की साक्षात् अनुभूति करा देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८ बजे प्रातः गोचारण के दर्शन कर सभी ने यथासमर्थ धन दान कर रसीद प्राप्त की, इसके बदले मन्दिर ट्रस्ट की ओर से दिया जाने वाला प्रसाद लिया। श्रीनाथ जी का सभी भोग बाजार में बहुत कम मूल्य पर लिया जा सकता है। अधिकांश महिलाओं ने बाजार घूमकर सौभाग्य सूचक प्रसाधन सामग्री भी खरीदी ताकि श्रीनाथ जी की स्मृति के रूप में अपने सम्बन्धियों एवं इष्टमित्रों को दी जा सके। जगन्नाथ जी की तरह यहाँ का प्रसाद भी परम दिव्य एवं स्पर्श दोष से मुक्त माना जाता है।

श्रीनाथ जी के मन्दिर के आसपास ही श्री नवनीतलाल जी, विट्ठलनाथ जी, कल्याणराय जी, मदनमोहन जी और बनमाली जी के मन्दिर तथा महाप्रभु हरिराय जी की बैठक है। एक मन्दिर भक्तिमती मीराबाई का भी है। समय को देखते हुए मन्दिर की व्यवस्था श्रद्धा, भक्ति, निष्ठा एवं परम्परा से चलाते रहना अपने आप में एक आदर्श है एवं भारतीय मन्दिरों की सेवा-पूजा में रत महानुभावों के लिए प्रेरणाप्रद भी है। यात्रियों ने भगवान् के प्रसाद का स्वल्पाहार ग्रहण किया एवं प्रतीक्षा कर रही अपनी-अपनी बसों में आ गए। अपने-अपने यात्रियों के पूरे हो जाने पर बस चालकों को कोटा चलने के लिए निर्देश दिए गए। प्रातः १० बजे अन्तिम बस भी चल दी जिसमें संयोजक महोदय विशिष्ट महापुरुष एवं फलौदी के भक्त थे। २०० कि० से अधिक इस यात्रा में बूँदी एवं केशवराय पाटण के तीर्थस्थलों के दर्शन हुए। भीमलात एवं रामेश्वर स्थल महाभारत काल से सम्बन्धित हैं, यह देखने पर आश्चर्य भी हुआ कि किस प्रकार वनवास काल में पाण्डवों ने यहाँ वास किया एवं जल न मिलने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर पदाघात करके जलधारा प्रकट की। भीमलात नामक प्रसिद्ध स्थान में पर्वत से निकलते हुए इस जलप्रपात के दर्शन किए।

श्री केशवराय पाटण में भगवान् केशवराय एवं भगवान् जम्बुमार्गेश्वर के मन्दिर दर्शनीय हैं। अज्ञातवास के समय यहाँ पाण्डव ठहरे थे। पाण्डव यज्ञशाला आज भी विद्यमान है। भगवान् परशुराम ने २१ बार पृथिवी को क्षत्रियविहीन कर अन्त में यहीं पर तपस्या की थी। चर्मण्वती नदी के किनारे बसे इस नगर में अब भी प्राचीन अवशेष पुरातत्त्व विभाग के निर्देशन में मिलते हैं, जिन्हें कोटा के संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।

सभी बसों को कोटा पहुँचते-पहुँचते सायं ६ बज गये थे। आते ही यात्रियों ने स्नान कर अपनी थकान दूर की एवं प्रेमपूर्वक भोजन किया। सूचित किया गया कि कैलास स्पेशल कोटा स्टेशन से मथुरा के लिये रात्रि १२ बजे के बाद विदा होगी। इस बीच यात्रियों ने समय पाकर कोटा नगर एवं यहाँ के नवनीतप्रिया जी, मदनमोहन जी, गोकुलनाथ जी, बालकृष्ण जी, मथुरेश जी आदि मन्दिरों के दर्शन किये।

रात्रि ११-३० बजे कैलास शताब्दी स्पेशल प्लेटफार्म नं० १ पर लाई गई यहाँ से इसे शुरू होना था और अगले दिन मथुरा वृन्दावन की यात्रा करनी थी। सभी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे थे कि गार्ड साहब हरी झण्डी दिखाएँ, सीटी मारें और गाड़ी प्रस्थान करे किन्तु यह इतनी जल्दी न हो सका। जिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजस्थान की धरती को ६५० यात्रियों की नेत्रसुधा का अमृत-पान, वात्सल्य स्नेह मिला हो उसके सूक्ष्म कण विदा देने में आनाकानी कर रहे थे। परन्तु इस डेढ़ घंटे और रोकने के लिये एक छोटा सा बहाना लिया कि 'इन्जन वेकम' नहीं ले रहा है'। कोटा जंक्शन के सभी विशेषज्ञ जुट गए तो कुछ नहीं हुआ और अन्त में प्रभु कृपा से स्वयं ही वेकम आ गया और गाड़ी चल दी।

कैलास स्पेशल की कोटा जंक्शन में अच्छी तरह सफाई करवा दी गई थी। कीटनाशक फिनायल से सभी डिब्बे धुलवाए गये थे। दो-दिन की अत्यधिक थकान और उस पर मनोनुकूल भोजन मिला, सुन्दर सुखद वातावरण, फिर निद्रा देवी ने अपने कुछ भी न जानने वाली अनुभूति से रोम-रोम को सहलाया। किन्तु अन्तिम दिन के तपस्या से संयोजक महोदय को विशेष सजग रहना था। "या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी" किन्तु (वेदान्त की भाषा में) यह सब अज्ञानावस्था का जागरण था, भले ही इससे बहुत सी जीवात्माओं को सुविधा व सुख मिलता था।

सवाई माधोपुर जंक्शन (१०८ कि०) गंगापुर सिटी (६३ कि०) : रात्रि तीन बजे सवाई माधोपुर जंक्शन रुकी। स्टेशन मास्टर को अति शीघ्र जाकर लाइन क्लीयर करने का अनुरोध किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर गङ्गापुर सिटी तक लाइन क्लीयर रखने का आश्वासन प्राप्त कर लिया। गङ्गापुर सिटी एक घन्टे से भी कम समय में ड्राइवर महोदय ने लगा दी, जिस गाड़ी के इन्जन में वेकम ही नहीं लग रहा था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मथुराधिपति द्वारकाधीश भगवान् इसमें शक्तिसञ्चार कर अपनी ओर खींचने की कृपा कर रहे थे।

बयाना जं. (७८ कि०) भरतपुर जं. (४१ कि०) : बयाना जंक्शन में भी कैलास स्पेशल को अधिक रोकने का अवसर नहीं दिया। अभी अधिकांश यात्री कैलास स्पेशल की इस गौरवपूर्ण गति से अनभिज्ञ होकर निद्रा में मग्न थे। बयाना गुजरने के बाद सभी को अवगत कराया गया कि अब भरतपुर स्टेशन आने वाला है, जहाँ से अगला स्टेशन मथुरा ही है। भरतपुर पहुँचते-पहुँचते ५-२० हो चुके थे किन्तु यहाँ भी ,गाड़ी ने कुछ क्षणों के लिए रुकने से स्नानार्थियों को कृतार्थ नहीं किया।

मथुरा (३४ कि०) : भरतपुर से कैलास स्पेशल रुनझुन चली और ६ फरवरी ८२ को ६-४५ प्रातः मथुरा जा लगी जबकि अभी सूर्य भगवान् उदय भी नहीं हुए थे। सभी को मथुरा-वृन्दावन दर्शन हेतु पाँच घन्टे समय दिया गया। मथुरा और वृन्दावन में सभी यात्री अपनी-अपनी सुविधानुसार बस, ताँगों और स्कूटरों में दर्शन करने गए।

मथुरा-वृन्दावन माहात्म्य

न विद्यते च पाताले नान्तरिक्षे न मानुषे।
समानं मथुरायाा हि प्रियं मम वसुन्धरे॥
सा रम्या च सुशस्ता च जन्मभूमिस्तथा मम।
(वाराहपुराण १५२।८-९)

महामाघ्यां प्रयोगे तु यत्फलं लभते नरः।
तत्फलं लभते देवि मथुरायां दिने दिने॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णं वर्षसहस्रं तु वाराणस्यां हि यत्फलम् ।
तत्फलं लभते देवि मथुरायां क्षणेन हि ॥
कार्तिक्यां चैव यत्पुण्यं पुष्करे तु वसुन्धरे ।
तत्फलं लभते देवि मथुरायां जितेन्द्रियः ॥
(वा॰ पु॰ १५२।१३-१६)

हे पृथ्वी ! पाताल, अन्तरिक्ष अथवा मनुष्यलोक में मुझे मथुरा के समान कोई प्रिय स्थान नहीं है। यह रमणीक एवं अत्यन्त प्रसिद्ध है तथा मेरी जन्मभूमि भी है।

माघी पूर्णिमा में प्रयाग में स्नान करने से जो फल मिलता है, वह फल मथुरा सेवन से प्रतिदिन मिलता रहता है। वाराणसी पुरी में एक सहस्र वर्ष रहने से जो फल मिलता है, मथुरा में केवल एक क्षण वास का उतना ही फल है। हे देवी पृथिवी ! कार्तिकी पूर्णिमा में पुष्कर वास का जो फल है, इन्द्रिय-जित होकर मथुरा वास करने का वही फल प्राप्त होता है।

मथुरा-वृन्दावन (व्रजमण्डल) का विस्तार ८४ कोश में है। मथुरा का प्राचीन नाम मधुपुरी, मधुरा अथवा मधुवन भी शास्त्रों में आता है। ध्रुव ने यहीं तपस्या कर भगवान् का साक्षात्कार किया था। इसका प्रसङ्ग श्रीमद्भागवत महापुराण में आता है।

मथुरा में श्री यमुना जी के किनारे चौबीस घाट हैं, परन्तु प्रधान एवं भगवल्लीला से संबद्ध होने के कारण सभी यात्रियों ने विश्रामघाट में स्नान कर देव-ऋषि-पितृ तर्पणादि किया। यहाँ कंसवध के पश्चात् भगवान् श्री कृष्ण ने विश्राम किया था। घाट के समीप ही महाप्रभु वल्लभाचार्य जी की बैठक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदुपरान्त यात्रियों ने श्री द्वारिकाधीश भगवान् के दिव्य दर्शन किए। यह मन्दिर मथुरा का प्रधान मन्दिर है, जिसमें वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार पूजा होकर समय-समय पर दर्शन होते हैं। भोग लगी प्रसादी को मन्दिर के बाहर लगी दुकानों में भी यात्री खरीद सकते हैं।

मथुरा से ६ किलोमीटर उत्तर की ओर वृन्दावन है। वृन्दावन में स्वामी श्री हरिदास जी के आराध्य भगवान् बांके विहारी जी का मन्दिर है। श्री बिहारी जी का पर्दा बीच में आता जाता है इसलिए भगवान् जी के लगातार दर्शन नहीं होते। केवल अक्षय तृतीया को उनके श्रीचरणों के दर्शन होते हैं। केवल शारदी पूर्णिमा में रासमहोत्सव वेला में ठाकुर जी वंशी धारण करते हैं तथा केवल श्रावण शुक्ला तृतीया के दिन ही झूले पर विराजमान होते हैं। वृन्दावन की दानगली, मानगली यमुना गली, कुञ्जगली तथा सेवा कुञ्ज आदि दर्शनीय स्थल हैं। सेवाकुञ्ज में भगवान् श्री कृष्ण की प्रतिदिन रात्रि को रासलीला होती है, इसोलिए यहाँ रात्रि में कोई भी जीव नहीं रहने पाता; यहाँ तक की पशु पक्षी भी सांय होते-होते वहाँ से चले जाते हैं। वंशीवट के पास श्री गोपेश्वरनाथ महादेव का मन्दिर है। इसके दर्शन के बिना वृन्दावन यात्रा पूर्ण नहीं मानी जाती। ब्रह्मकुण्ड के समीप वृन्दावन का प्रसिद्ध श्री रङ्ग जी का मन्दिर है। श्रीरामानुज सम्प्रदाय के श्रीरङ्गम् के श्रीरङ्ग मन्दिर की तरह दक्षिण भारत शैली का यह अत्यन्त विशाल एवं दर्शनीय मन्दिर है। इस मन्दिर के उत्सवों में पौष मास का ब्रह्मोत्सव एवं चैत्र का वैकुण्ठोत्सव मुख्य हैं। यहां का स्वर्णिम स्तम्भ एवं ठाकुर जी का दिव्यविग्रह अत्यन्त मनो-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हारी है। श्री रङ्ग मन्दिर के पीछे ज्ञानगुदड़ी स्थान है। यहाँ का श्री राममन्दिर दर्शनीय है। स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज का आश्रम, उड़िया बाबा जी का आश्रम, मानव सेवासंघ आश्रम, भजनाश्रम, वृन्दावन भजन सेवाश्रम भी वृन्दावन को महिमान्वित करने में योगदान करते चले आ रहे हैं।

व्रजमण्डल में गोकुल, महावन, बलदेव, नन्दगाँव, बरसाना एवं गोवर्धन के मन्दिर भी दर्शनीय हैं। यहाँ श्रद्धालु भक्त चौरासी कोस परिक्रमा पैदल एवं कोई-कोई व्रजरज में लौटते प्रणाम करते हुए भी अनुष्ठान करते हैं। अभी भी व्रजमण्डल का भगवन्मय सात्त्विक वातावरण अनुभव करने को मिलता है। भगवान् की लीलाओं का कीर्तन, श्रवण एवं अनुकरण, चारों ओर गली-गली में राधे-राधे श्याम-श्याम की भावनामयी ध्वनि किसे प्रेरणास्रोत का काम नहीं करती।

सभी यात्री १२ बजे मध्याह्न के बाद लौटने प्रारम्भ हो गए थे। यहाँ अन्तिम सत्संग प्रवचन एवं भण्डारा हुआ। बड़ा आनन्द एवं पर्याप्त सन्तुष्टि का आभास सभी के चेहरों पर मिल रहा था। कानपुर, आगरा एवं फलौदी के यात्रियों ने महाराज श्री से मथुरा में ही विदाई ली। शेष सभी यात्रियों को लेकर कैलास स्पेशल ने अपराह्न तीन बजे मथुरा स्टेशन छोड़ दिया।

४८ दिन और ४७ रातें एक साथ रहते चलते खाते पीते सभी यात्रियों को एक दूसरे से आन्तरिक स्नेह हो गया था। एक दूसरे से अब वियोग भी देखना था। सबसे महत्त्वपूर्ण बात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी, मानस पटल में समाई हुई इतने दिनों की असंख्य स्मृतियाँ जिन्हें जीवन भर भुला पाना सहज नहीं था। सभी तीर्थ, नदी सागर, झरने, पर्वत देवमन्दिर एक साथ हृदय को उद्वेलित कर रहे थे। किन्तु इन दिव्य स्मृतियों के सहारे चिन्तन करने के लिए पर्याप्त सामग्री सब को मिल गई थी। आश्रय आश्रयी भाव संबन्ध सदा के लिए शाश्वत गरिमा लिए हृदय कमल में विराजमान हो गया।

कोसीकलां (४१ कि०) फरीदाबाद (७२ कि०) ओखला (१७ कि०) : कोसीकलां, फरीदाबाद एवं ओखला रुकती हुई कैलास स्पेशल ६ फरवरी १९८१ सायं ६-३० हजरत निजामुद्दीन स्टेशन पहुँची। महाराजश्री सन्तमण्डली एवं तीर्थयात्रियों के लिए असंख्य स्वागतकर्ता स्टेशन पर पूर्व से ही विद्यमान थे। सन्त-महापुरुषों के शान्ति पाठ एवं भगवान् शङ्कर के जय-जयकार के साथ सभी यात्री इस ४८ दिनों की संगिनी ट्रेन को बहुत जल्दी छोड़कर प्लेटफार्म पर उतर आये, एक दूसरे से भावपूर्वक मिले, धन्यवाद अभिव्यक्त किए। महाराज श्री को प्रणाम करते हुए सभी ने अपने-अपने घर जाने के लिए विदाई ली। अपूर्व कैलास स्पेशल की सभी बातें अपूर्व रहीं।

ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलास शताब्दी स्पेशल ट्रेन से तीर्थयात्रा के रोमाञ्चक अनुभव

सब धर्माचार्य अपने-अपने भक्तों को साथ लेकर तीर्थयात्रा कराने में एक विशिष्ट सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। वैसे तो इसकी परम्परा काफी प्राचीन है। वैदिक काल से मन्त्रद्रष्टा ऋषि अपनी शिष्य मण्डली को साथ लिए नदियों के सङ्गम में, पर्वतों के शिखर में ज्ञानार्जन के लिए तीर्थाटन करते थे। जहाँ उन्हें सद्-असद् वस्तु विवेकिनी बुद्धि उत्पन्न होती थी। कभी-कभी उपासना पद्धति को लेकर शास्त्र चर्चा होती थी, कभी-कभी आत्मविद्या के संबन्ध में विचार होता था। इधर रामायण महाभारत काल में तो संसार एवं परमार्थ निर्णय करने के लिए शिष्य-प्रशिष्य सहित ऋषि-मुनि एकत्र होकर निर्णय लेते थे। यह निर्णय सभी को मान्य होते थे।

महामण्डलेश्वर स्वामी चैतन्य गिरि जी महाराज पीठाधीश्वर होते हुए भी विरक्त थे इसलिए उन्हें इस तरह के आयोजन भारस्वरूप लगते थे। जुलाई सन् १९६९ में पीठाधीश्वर पर आसीन होने के पश्चात् श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज का सर्व प्रथम कार्य कैलास आश्रम के बिखरे हुए भक्तों को सङ्गठित करना था और इसे उन्होंने अपने प्रद्वैत निष्ठा एवं व्यवहार कुशलता के द्वारा बहुत ही अल्प समय में पूर्ण कर लिया। शक्ति से कार्य लेना चाहिए इस सिद्धान्तानुसार १९७१ में महाराज श्री ने श्री कैलासाश्रम उत्तरकाशी का पुनर्निर्माण आरम्भ किया। दो वर्ष में ही आश्रम का कायाकल्प हुआ, और मन्दिर में देवप्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज से भक्त समुदाय प्रार्थना करता—महाराज ! अपने साथ तीर्थ करा दो । महाराज कहते—धैर्य रखो, महादेव जल्दी ही गाड़ी चलाएँगे । प्रतीक्षा करते-करते १९७९ में सुनने से हृदय में सान्त्वना हुई कि दिसम्बर १९८० को कैलास शताब्दी स्पेशल का आयोजन होगा ।

२४ सितम्बर १९८० को सभी भक्तों को प्रामाणिक सूचना मिली कि कैलास शताब्दी स्पेशल ट्रेन तीन धाम एकादश ज्योतिर्लिङ्गों सहित एक सौ पच्चीस तीर्थों के दर्शन २१ दिसम्बर १९८० से ६ फरवरी १९८१ तक कराएगी । इसका प्रबन्ध कार्यालय ५३/१७ राधाकृष्ण मन्दिर, पुराना राजेन्द्र नगर नई दिल्ली–६० रखा गया । यहीं से सभी आवश्यक सूचना सभी भक्तों को भेजी जाती ।

कैलास आश्रम परिवार तो इतना विशाल है कि सब को यदि बुलाया जाता तो कम से कम उत्तर रेलवे की रेल-गाड़ियों को कैंसल करना पड़ता परन्तु हमें महात्माओं एवं स्टाफ को मिलाकर ७०० सदस्यों को ही ले जाना था । इसलिए भारत सरकार के बौण्डस की तरह एक तिथि निश्चित की गई ताकि इस बीच आने वाले यात्रियों को अवसर दिया जा सके । प्रत्युत्पन्नमति भक्तों ने झटिति अपने निर्णय से समिति को अवगत करा दिया किन्तु दीर्घसूत्री बाद में पूछा-ताछी करते रहे किन्तु उन्हें "फिर कभी महाराज हमारे लिए चलेंगे" ऐसा सोचकर ही धैर्य धारण करना पड़ा । कौन जानता है उनके अन्तरात्मा की वेदना को सुनने के लिए कैलासपीठाश्वर बाधित हों ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शाङ्कर सिद्धान्त है "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः"। जगत् को मिथ्या जानकर व्यवहारशून्य होने का आदेश भगवान् शङ्कराचार्य नहीं देते। व्यवहार तो ज्ञानी का परिसीमित सहज एवं रजोप्राय सात्त्विकबहुल हो जाता है। ऐसी परिस्थितियाँ उसके सामने बहुत कम आती हैं जिसमें उसकी निष्ठा को किसी प्रकार का आघात पहुँचे। हाँ, इतना जरूर है प्रतिकूल परिस्थितियों में भी एकरस रहने की, पता नहीं क्यों, उसकी आदत सी बन जाती है। २० दिसम्बर शाम ४ बजे से सुरक्षा दल के १० जवानों की हजरत निजामुद्दीन ड्यूटी लगी, वर्दी में लैस ये व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने का स्वतः ही सङ्केत दे रहे थे। रात्रि १२ बजे तक सभी आवश्यक सामान प्लेटफार्म पर पहुँच चुका था। रसोई-यान एवं पार्सल यान में इसे व्यवस्थित करने में अवशिष्ट रात्रि बीत गई।

२१ दिसम्बर ७-३० बजे प्रातः कैलास शताब्दी स्पेशल हजरत निजामुद्दीन प्लेटफार्म नं० ६ में लगी। रिजर्वेशन सम्बन्धी सूचना देने के लिए शताब्दी स्पेशल के कार्यकर्ता बैज लगाए काउण्टर पर यथासमय आ विराजे थे। फस्ट क्लास के तीनों डिब्बे बीच में, बाकी ५ डिब्बे आगे एवं ४ डिब्बे व रसोईयान पीछे था। हर एक डिब्बे में टाइप किया हुआ चार्ट चिपका दिया गया था जिसमें यात्री का नाम, पता रसीद नं०, बर्थ नं. अंकित था। दिल्ली के हर एक यात्री को विदा करने उसके परिवार के अन्य सदस्य एवं इष्ट मित्र भी पधारे हुए थे जो सभी दृश्यों को देखकर आनन्द ले रहे थे। ट्रेन प्रारम्भ होने का दृश्य जब आँखों में घूमता है तो उन दिनों को वापिस बुलाने के लिए इच्छा जाग्रत् हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलास शताब्दी स्पेशल के आयोजकों ने यह भान नहीं होने दिया कि हम अपने मूल उद्देश्य को पूर्ण करने में अपने को विवश पा रहे हैं अथवा किसी के हाथ में मात्र कठपुतली बन कर रह गये हैं, एक ही परिवार के सदस्यों की तरह सब से आत्मीयता का व्यवहार, कितनी बड़ी बात है। कैलास पीठाधीश्वर के दर्शनों के समय वे अपनी आनन्द की अनुभूति का वर्णन करते। प्रत्येक स्टेशन पर गाड़ी रुकने पर यात्रियों को उनकी असुविधा के बारे में पूछा जाता; बिजली, पानी, सफाई की हर संभव व्यवस्था की जाती। हर एक यात्री को लगता पता नहीं, हमारा इतना ध्यान क्यों रखा जा रहा है। आखिर महाराज श्री का एक प्रिय श्रुतिवाक्य है—

"सर्वत्रैकं प्रपश्यति"

(ब्रह्मज्ञानी सर्वत्र ब्रह्मात्मैक्य दर्शन करता है)

२१ दिसम्बर को काफी सर्दी थी, कई यात्रियों ने सोचा था कि रात्रि हो जाएगी, स्नान करके आचमन कर लेंगे परन्तु श्रीकृष्ण सन्निहित तीर्थ एवं सरोवर जाकर भगवान् श्रीकृष्ण ने क्या प्रेरणा दी, आबाल वृद्ध सभी ने जी-भर के स्नान किया। किसी को न खाँसी न ठंड ने पकड़ा। १४ किलोमीटर दूर स्थाण्वेश्वर महादेव के भी दर्शन रात्रि ८-१५ को हरयाणा रोडवेज की बसों ने कराए। वहाँ पूर्ण चन्द्रमा की चन्द्रिका में एकाकी प्राचीन मन्दिर की स्मृति अभी भी आह्लादित करती है।

२३ दिसम्बर को दिन भर वर्षा होती रही और कैलास स्पेशल की पाकशाला से दोनों समय तन्दूरी रोटी चावल साम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दालादि का प्रसाद वितरण हुआ। फलौदी एवं नागौर के अधिकांश यात्री तन्दूर की रोटी के अभ्यस्त नहीं थे। उन्हें सन्देह हुआ कि पता नहीं यह किस चीज की रोटी है। पूछने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि यह तन्दूर की रोटी है। उन्होंने सोचा ये भी कोई ज्वार-बाजरा गेहूँ मक्का आदि की तरह कोई अन्न विशेष है। कोई बात नहीं, उन्होंने सोचकर धैर्य धारण किया। २४ दिसम्बर को अयोध्या में गाड़ी रुकने एवं पर्याप्त समय मिलने पर प्लेटफार्म में चूल्हों में फुल्के बने, सभी को बड़ा आनन्द आया। गया से जसिडीह जाते हुए फिर इसी प्रकार कैलास स्पेशल को दिन भर चलना पड़ा तो नागौर और फलौदी वाले शिकायत करने लगे कि हमें गेहूँ की रोटी अनुकूल आती है तन्दूर की रोटी नहीं'। तब कार्यकर्ताओं ने उन्हें समझाया कि यह भी गेहूँ की ही रोटी है, एक विशेष आकार के चूल्हों में जिसे तन्दूर कहते हैं उसमें इसे बनाया जाता है, तब कहीं उनकी भ्रान्ति की निवृत्ति हुई। फिर तो उन्हें भी तन्दूर की रोटी में गेहूँ की रोटी का स्वाद आने लगा।

बसों की व्यवस्था में हमेशा यह प्रयत्न किया जाता था कि २५-३० सवारी अधिक भी हों तो कोई असुविधा न हो। किन्तु प्रायः हर जगह ५-७ सवारी ऐसी मिलती जिन्हें उपयुक्त मनोनुकुल सीट न मिल पाती। इसमें कई कारण रहे, जो भारतीय मानसिक स्तर का परिचायक हैं। उदाहरणार्थ अपनी धर्मपत्नी के साथ यात्रा करने वाले महानुभाव तीन सीटों वाले भाग में बैठ जाते और सवारी के लिए आधा से भी कम जगह दया करके छोड़ देते जिसमें कोई जानबूझकर न बैठेगा और उन्हें तीनों सीटों का पूर्ण उपभोग के लिए अवसर मिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाएगा। दूसरे, छोटे बच्चों वाली माताएँ उस बच्चे को अपने से भी अधिक सुविधामय एवं पूर्ण सीट में बैठाने एवं सुलाने का प्रयत्न करतीं। तीसरे, बसों में यात्रा करते समय सभी के पास प्राय: थैले होते जिन्हें वह गोदी में अथवा सीट के नीचे न रखकर अपनी बगल में सीट पर ही रखने का आग्रह करते जिसके कारण उनके साथ बैठने वालों को असुविधा होती। परिणाम स्वरूप इस स्वाभाविक चर्या को दूर करने लिए नियम उपनियम बनाने पड़े, सीट के अनुसार बसों को अलाट कर ततद् बसों में दो मुख्य पर्यवेक्षक रखे जाते जो प्रेमपूर्वक समझा बुझा कर सबको सुख सुविधापूर्वक बिठलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते। जब उन्हें भी ऐसी दिव्य मूर्तियों से सामना करना पड़ जाता जो दुराग्रह ग्रस्त हो उस बस में न बैठना चाहती तो उन्हें अन्यत्र सुखमय स्थानों में अलङ्कृत कराया जाता, इसके लिए कुछ सहनशील यात्रियों को स्वेच्छा से कृतज्ञता के लिए निवेदन किया जाता जिसे वे स्वीकार करने में परम आनन्द अनुभव करते।

जलपान भोजन आदि के लिए किसी को जल्दबाजी नहीं थी। तीनों समय भूख लगने से पूर्व ही अन्नपूर्णा महारानी की नानाविध सुगन्धि डिब्बों में आने लगतीं। इसमें किसी को कभी भी लाइन में लगना नहीं पड़ा। अपनी-अपनी बर्थ पर बैठे-बैठे ही थाली कटोरी में भोजन परस दिया जाता। ४८ दिनों तक पुरुष और महिलाओं ने पाकशाला से दूर रहने का व्रत ले लिया था। स्मृतिकार महात्माओं को स्वयं भोजन बनाने के लिए निषेध करते हैं ताकि वे अधिक से अधिक आत्मचिन्तन में समय दें, नून तेल लकड़ी के चक्कर में न पड़े रहें। कैलास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पेशल में इस सुविधा से जहाँ सब को हर समय भजन, कीर्तन एवं प्रभु चर्चा में लीन पाया गया, वहाँ यात्रा के अन्तिम दिनों में माताओं एवं बहिनों को इस चिन्ता में आतुर अनुभव किया गया कि यात्रा के बाद यह दिव्य दिनचर्या नहीं चल पाएगी फिर वही कर्त्तव्यकर्म रूप प्रपञ्च में पड़ जाएँगे।

तीर्थ यात्रा में चलने वाले अधिकांश यात्री ५० वर्ष से अधिक की आयु वाले थे किन्तु सभी को सर्वदा जागरूक चेतन एवं अप्रमादी पाया गया। चाहे ब्रह्ममुहूर्त में २॥ बजे कोई सूचना दी जाती अथवा देर रात में, चाहे सुबह अथवा दोपहरी में, परन्तु सभी तत्परता से श्रवण कर तदनुकूल आचरण के लिए सदैव यथासमय तैयार रहते। कभी-कभी वे मिलिट्री से भी अधिक अनुशासित दिखाई देते। जसिडीह में सभी को सूचना दी गई कि सभी यात्रियों को अगली सूचना मिलते तक अपने-अपने डिब्बे के सामने उतर कर प्लेटफार्म पर खड़े रहना है तो यात्री उसी प्रकार निस्तब्ध खड़े रहकर मन-ही-मन वैद्यनाथ महादेव का चिन्तन करने लगे और प्रभु कृपा से सन्ध्या के समय भी सभी ६५० यात्रियों के लिए इस छोटे से स्टेशन में १४ किलोमीटर दूर जाने के लिए समुचित सवारी की व्यवस्था हो गई।

यात्री को दी जाने वाली सभी सुविधाओं के लिए सेवा विभाजन का विकेन्द्रीकरण कुछ इस प्रकार कर दिया गया था कि महाराजश्री एवं तीर्थ जी महाराज के नित्य प्रति दर्शन करते समय किसी यात्री को कोई शिकायत करने का अवसर ही नहीं रह पाता था। तीर्थ जी महाराज तो साक्षात् महादेव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही हैं, उन्हें हर क्षण अपनी स्थिति में देख कर हर किसी को अलौकिक प्रेरणा मिलती थी। शाश्वत सुख और शान्ति के दाता के पास जाकर यही कहने को रह जाता "महाराज! बहुत आनन्द आ रहा है; आपके बीच में, आपके साथ तीर्थ यात्रा करना, ये हमारे पूर्वजन्मों के किये हुए पुण्यों का फल है" और महाराज तो किसी से विशेष कुछ न कह कर अभय मुद्रा से प्रसन्नतापूर्वक देख भर लेते थे।

बंगलोर से पण्ढरपुर के लिए कैलास स्पेशल जा रही थी। बंगलोर से २१-१-८१ को बड़े सबेरे २-३० बजे यह छूटी थी। बंगारपेट में कैलास स्पेशल सात बजे पहुँची परन्तु स्टेशन पर पानी की व्यवस्था न होने के कारण, जल्दी ही इसे आगे बढ़ने दिया। अब प्रभु को अपने भक्तों के लिए पानी व भोजन की व्यवस्था करनी थी। कैलास स्पेशल बिसनट्टम एवं गुडुपुल्ली स्टेशनों के बीच में रुकी। चारों ओर पथरीली भूमि थी किन्तु जहाँ अपनी गाड़ी रुकी उसके बिल्कुल समीप एक पक्का कुआँ देखने को मिला। फिर क्या था सभी यात्रियों ने उतर कर उस एक ही कुएँ में अपनी-अपनी बाल्टी एवं रस्सी से स्नान करना प्रारम्भ कर दिया। देखते-देखते वहाँ पूरी ट्रेन के स्त्री-पुरुष सभी यात्रियों से वह कुआँ घिर गया इधर-उधर छोटी-छोटी पहाड़ियों एवं टीलों पर बैठ कर स्नान करते हुए वह स्थान अत्यन्त रमणीक लग रहा था। पाकशाला के कर्मचारी पीछे क्यों रहते, वह भी अपनी रसोई की बड़ी-बड़ी बाल्टियों से भोजन बनाने के लिए जल का संग्रह करने लगे ताकि समय से भोजन तैयार कर जोलारपट्टै में वितरित किया जा सके। सभी यात्रियों को स्नान करने में एक घंटे का समय लगा। एक कुएँ में इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकार सभी को स्नान से निवृत्त हुए देखकर महाराजश्री ने इस अद्‌भुत कूप को "कैलास शताब्दी कूप" की सञ्ज्ञा दी।

सौराष्ट्र-गुजरात की यात्रा बसों द्वारा करने का निर्णय तो प्रभु प्रेरणा से लिया गया था किन्तु कैलास स्पेशल के अहमदाबाद पहुँचने पर स्वामी उमानन्द गिरि एवं विष्णु जी ने सन्देश दिया कि क्षेत्रीय लोगों के सहयोग से प्रयत्न करने के बावजूद भी बसें नहीं हो पाई हैं। तो भी संयोजक महोदय ने भगवत्कृपा को हृदय में धारण कर तत्काल सूचना प्रसारित की कि बसों के लिए प्रयत्न जारी हैं कुछ ही समय बाद आपको इसकी प्रामाणिक सूचना दी जाएगी। उन्होंने अत्यन्त धैर्य एवं निष्ठा से कार्य करते हुए स्टेशन से बाहर जाकर एक स्कूटर वाले को किया जो जे. के. ट्रेवल्स वालों के पास ले गया। कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर ने उस समय अपने शुभचिन्तकों से फोन एवं प्रत्यक्ष आदमी भेजकर ५०-५५ मिनट के समय में सब १२ बसें अनुबन्धित कर लीं। प्रभु की ऐसी महिमा कि जिसको वह आग्रह करता, वह ही स्वीकारोक्ति दे देता। तुरन्त इसकी सूचना अहमदाबाद में प्रतीक्षारत यात्रियों को प्रसारित करवा दी गई। बाद में जब सभी को इस रहस्य का पता चला तो वे प्रभु की असीम करुणा की स्मृति कर आनन्द विभोर हो गए।

प्रायः यह सर्वविदित है कि पर्वतीय लोग सरल एवं भोले-भाले होते हैं किन्तु जिस दृष्टि से शिक्षा एवं संस्कृति का विकास होता जा रहा है उसमें पर्वतीय क्या, आदिवासी तक शिक्षित एवं अपने अधिकारों की प्राप्ति में जागरूक देखे जाने लगे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी का एक नमूना कैलास शताब्दी स्पेशल के कार्यकर्ताओं को बसों में सीट का विभाजन करते समय देखने को मिला। हमारे साथ २२ तीर्थयात्री उत्तरकाशी के थे जिनको विभाजन क्रम से दो बसों से बैठने का निर्देश किया गया। संकोच एवं अहंमानी होने के कारण इनमें से तीन-चार यात्रियों को मन इच्छित स्थान न मिल सका। इन तीन-चार ने बाकी सबको भी उतार कर योजना बनाई कि हम सभी को एक साथ अलग बस में बैठाया जाए नहीं तो हम सौराष्ट्र यात्रा स्थगित कर देंगे। उनके प्रबल आग्रह को देखते हुए अलग से तेरहवीं एक मिनि बस लाई गई तभी वे राजी हुए। "राम सदा सेवक रुचि राखी"।

वैसे तो प्रत्येक यात्री के हृदय पटल पर बहुत से रोमाञ्चक अनुभव समाङ्कित होते रहे होंगे क्योंकि सभी को विलक्षण परिस्थिति में हर सुबह-साँझ, दिन और रात व्यतीत करनी पड़ती थी जिनका उल्लेख स्थान संकोच के कारण इस लेख में नहीं हो सका है। बहुत से प्रबुद्ध यात्री अपनी डायरी में प्रत्येक दिन के अनुभवों को लिखते थे। कैलास शताब्दी स्पेशल जिसका कुछ अपवादों को छोड़कर प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त सब कुछ सुखद रहा, इसकी स्मृति हृदय पटल में सदैव-सदैव अंकित रहेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन और महाराजश्री

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन को चलाने का निर्णय महाराजश्री एवं कैलास भक्तों के संकल्पानुसार हुआ। कैलास आश्रम शताब्दी समारोह महासमिति ने अपने अधिवेशन में इसे क्रियान्वयन करने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया। शताब्दी स्पेशल के कार्यों का विकेन्द्रीकरण करने के लिए महाराजश्री की अध्यक्षता में एक मीटिंग दिल्ली में हुई जिसमें कार्यकारिणी समिति का गठन हुआ। महाराजश्री ने सभी पदाधिकारी एवं सदस्य बहुमत एवं सर्वसम्मति से चुने, स्वयं "पद्मपत्रमिवाम्भसा" की तरह निर्लिप्त प्रेरक के रूप सभी कार्यकर्ताओं को मार्गनिर्देश करते थे। इस यात्रा का उद्देश्य कैलास आश्रम की १०० वर्षों की उपलब्धियों का जन-जन, नगर-नगर भारत के कोने-कोने तक प्रचार करना एवं राष्ट्रीय एकता जाग्रत् करना था। एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि की भाँति महाराज जी सूत्र रूप में अपना सन्देश कहते। भविष्य-वक्ता की भाँति शताब्दी समारोह के आयोजनों में महाराज प्रायः कहते सुने जाते कि ऐसी यात्रा न कभी हुई है, न कभी होगी। यात्रियों को यात्रा से बची धनराशि वापिस कर दी जाएगी। सभी को मन्त्रमुग्ध करने वाली महाराज की वाणी व आवाहन का इतना प्रभाव पड़ा कि ६०० कैलासाश्रम के भक्तों को ४८ दिन के लिए अपना कामकाज छोड़कर तीर्थयात्रा के लिए निर्णय लेने में देर न लगी।

महाराजश्री दो दिन पूर्व ही फलौदी से दिल्ली आए। इधर कार्यकर्ताओं ने शताब्दी स्पेशल ट्रेन को शुरू करने के लिए सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्व तैयारियाँ सम्पन्न कर ली थीं। स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज एक दिन पूर्व दिल्ली आ गए थे। महाराजश्री के प्रभाव से २० दिसम्बर एवं २१ दिसम्बर दोनों दिन बाहर से आकर यात्रा में सम्मिलित होने वाले महानुभाव यात्रियों के भोजन का प्रबन्ध उनके प्रिय सेवक श्री देसराज जी करोल बाग वालों की तरफ से निष्काम भाव से किया गया। और आखिर २१ दिसम्बर प्रातः ८-१५ पर कुछ न करते हुए सब कुछ करने वाले सब के नयनों को आनन्द देने वाले महाराज जी हजरत निजामुद्दीन प्लेटफार्म नं० ६ पर पहुँच गए। दत्तात्रेय पूर्णिमा की माङ्गलिक घड़ी और पूर्णिमा के चाँद के समान शीतल एवं तेजस्वी आभा से आप सभी ६०० तीर्थयात्रियों के हृदय में श्रद्धा एवं निष्ठा का सञ्चार करते हुए पधारे। एक बार महाराज जी ने पूरी १३ बोगियों का निरीक्षण किया एवं सभी यात्रियों के स्व-स्व स्थानों में आश्वस्त होने एवं उनके द्वारा पूजन-अभिवादन को स्वीकार किया। ट्रेन पूजन कर दही-बर्फी का प्रसाद सभी को वितरण किया। हर-हर महादेव ॐ नमः पार्वतीपतये के गगनभेदी माङ्गलिक घोषों से कैलास स्पेशल को ६-४० पर विदा किया गया।

"को विधि: को निषेधः निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतः" (त्रिगुणातीत निष्ठा में सदैव स्थित रहने वाले महापुरुषों के लिए किसी भी विधि-निषेध का अवकाश नहीं है) ऐसा होने पर भी महाराज जी की यात्राकाल में दिनचर्या एक सामान्य जन की तरह थी। लोकशिक्षा ही संभवतः इसमें हेतु था। महाराजश्री प्रातः उठते ही आत्मचिन्तन करते, शौचादि नित्यक्रिया से निवृत्त होते; कभी-कभी उन्हें भी अपने कम्पार्टमेन्ट के प्रसाधन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में प्रतीक्षा करनी पड़ती। यदि तीर्थ अथवा देव-नदियों के दर्शन में विलम्ब होता तो प्रातःस्नान स्टेशन में लगे नलों में करना पड़ता अन्यथा तीर्थ अथवा देवनदियों के स्नान के लिए महाराजश्री सबको साथ लेकर जाते थे; देवनदी या सरोवर में स्नान करके ही पवित्र तीर्थों एवं श्रीविग्रहों के दर्शन करते थे।

शताब्दी स्पेशल में अभिनव चन्द्रशेखर का प्रतिनिधित्व करने वाले शिवलिङ्ग साथ-साथ चलते थे इन्हें महात्माओं के डिब्बे में प्रतिष्ठित किया गया था। इस डिब्बे का एक हिस्सा गार्ड कक्ष था। इसलिए यह डिब्बा प्रायः सबसे पीछे लगता था। वस्तुतः गार्ड तो भगवान् शंकर ही थे जो सबकी समान रूप से रक्षा करते थे। सामूहिक भोजनालय में जो भोजन बनता, स्वामी परमेश्वरानन्द जी सरस्वती भगवान् को प्रेम से भोग लगाते थे, उसके पश्चात् यात्रियों को वितरित करने का निर्देश दिया जाता; वैसे अधिकांश यात्रियों के पास अपने-अपने ठाकुर जी थे जिन्हें वह पूर्व अर्पित कर प्रसाद ग्रहण करते थे। कभी-कभी बसों में यात्रा करने पर ठाकुर जी को साग, पूरी, अचार का नदी, सरोवर अथवा तीर्थ में पेड़ों की छाया में भोग लगता और फिर सभी के साथ बैठ कर महाराज जी पाते। मार्ग की थकान और क्षुधा में उस पाथेय में कितना रस आता कि गोवर्धन के बाँके बिहारी की तरह किन्हीं-किन्हीं को तो तृप्ति ही न होती। बसें तो सभी पास में खड़ी हैं फिर चिन्ता किस बात की, वैश्वानर आत्मा की सन्तुष्टि करना भी तो जरूरी था। सभी यात्री महाराजश्री एवं महात्मावृन्द के दर्शन करते उनके बीच में अपनी आध्यात्मिक यात्रा का आनन्द ले रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराजश्री के साथ गंगा सागर में सागर की लहरों में स्नान सभी को याद आ रहा है, स्टीमर से छोटी किश्तियों में उतरना, छोटी किश्तियों से सागर की उत्ताल तरङ्गों में उतरना, फिर घण्टों तक स्नान की अनुभूति करना। सागर के किनारे की बालुका में इकट्ठे भोजन करना कितना मनमोहक था, शायद देवता भी इस झाँकी को व्यक्त एवं अव्यक्त रूप से देखते हुए आनन्द ले रहे थे एवं अपनी द्योतनशीलता रूप महत्ता में भी गौरव का अनुभव नहीं कर पा रहे थे। सबके बीच में सबकी तरह कैलासपीठाश्वर महाराजश्री एवं तीर्थ जी ने बालू में बैठ कर प्रसाद ग्रहण किया।

कभी जूनागढ़ की सुरम्य पहाड़ियों के बीच देवालय में सभी बसों का खड़ा हो जाना और फिर वही प्रेम, वही एकात्मता बिना किसी भेद-भाव के पेड़ों की घनी छाया में प्रणयकोप करना "सब्जी लाओ", "पूरी तो लाए नहीं", "अचार हो तो थोड़ा दे जाओ", "सबको मिलेगी, घबराओ नहीं बहुत सामान है" वो छीनना-झपटना, किन्हीं-किन्हीं का नाराज होकर एक किनारे बैठ जाना आदि बहुत कुछ याद आता है। फिर "सब की तृप्ति" को उद्देश्य रख कर कार्यकर्ता उन्हें मनाते और फिर वहीं सभी के चेहरों पर सन्तुष्टि एवं पूर्णता की मुस्कान उभर आती। कहाँ खोजने जाओगे आत्माराम, पूर्णकाम ब्रह्म की साक्षात् अनुभूति के दर्शन यहीं कर लो! और बसें चल पड़ती। सोचते हैं फिर ऐसा मधुर अवसर आए पर अभी तो उन्हीं स्मृतियों पर जीना है।

महाराज जी विशिष्ट तिथि, पर्व, व्रतों आदि के बारे में पूर्व से अवगत करा देते ताकि उक्त अवसर पर सकाम अथवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैमित्तिक अनुष्ठानों का सम्पादन हो सके। संकष्ट चतुर्थी को बहुत-सी देवियों ने व्रत रखा था। महाराजश्री के "चाय आदि ग्रहण भी यथाशक्ति न करे" कहने पर बिना चाय-दूध के रात्रि १२ बजे को चन्द्रमा को अर्घ्य देकर सभी ने शोलापुर में आकर भोजन किया क्योंकि सायं सभी यात्री बसों से भगवान् पण्ढरीनाथ के दर्शन के लिए पण्ढरपुर गए थे, जहाँ से लौटने में मध्य रात्रि हो गई थी।

प्रातःकालीन हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ एवं सायंकालीन शिवमहिम्न स्तोत्र का पाठ नियम से सभी करते। इस समय अन्य सभी काम बन्द किए जाते। यात्रियों के प्रत्येक डिब्बे में महिम्न की मधुर संगीतमयी ध्वनि गूंजती, वो बड़ी तन्मयता से पुष्पदन्ताचार्य की तरह भगवान् शिव की महिमा का वर्णन करने में अपने को असमर्थ पाते। जब सभी देवता किन्नर गन्धर्व एवं नेति नेति कहकर श्रुतियों तक को चुप होना पड़ा फिर हम जीवों की क्या गणना है? वो समय इतना मधुर लगता कि घंटे सवा घंटे तक भाव-समाधि लग जाती। चित्तूर में शताब्दी स्पेशल महिम्न के समय में रुकी, कुछ भावुक यात्री प्लेटफार्म में घास पर बैठकर आनन्द से पाठ को करते रहे। इस आनन्दमय दृश्य को शायद "मूवी फिल्म" अपनी सीमित मर्यादा में बंधी रहने के कारण अभिव्यक्त करने में समर्थ न हो किन्तु जो इसकी मधुर स्मृति हृदय पटल पर पड़ती जा रही थी वो चिरस्मरणीय रहेगी।

महाराजश्री ने सभी ज्योतिर्लिङ्गों में भगवान् शंकर के पूजन के अवसर पर शिवमहिम्न एवं रुद्राष्टाध्यायी का सामू-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिक पाठ कराया हो; साथ ही साथ लक्ष्मीनारायण मन्दिरों में भी इसका पाठ कराया। इसी अभिप्राय से मधुसूदन सरस्वती ने शिवमहिम्न की हरि-हर-परक टीका की थी। शास्त्रों ने रुचियों की विचित्रता के कारण मानव समाज के लिए देवता के स्वरूप का वर्णन किया है किन्तु सब सिद्धान्तों एवं मार्गों का पर्यवसान एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म में है जिस प्रकार विभिन्न नाम-रूप वाली नदियाँ सागर में जाकर अपना नाम-रूप खो बैठती हैं।

महाराजश्री प्रातः-सायं सत्संग प्रवचन करते, विशेष उस-दिन के दर्शनीय तीर्थों एवं देवनदियों का माहात्म्य वर्णन करते। प्रातःकाल सामूहिक प्रार्थना के बाद एवं सायं ३ से ५ बजे तक। महाराजश्री के मुखारविन्द से निकली हुई वाणी सभी श्रद्धालु भक्त इतने ध्यान से सुनते जैसे राजनीति में दिलचस्पी लेने वाले लोकसभा चुनाव के परिणामों को सुनते हैं।

त्रिवेन्द्रम् में शताब्दी स्पेशल प्रातः ४॥ बजे पहुँची। यात्री पूर्व निर्देशानुसार शौचादि क्रिया से निवृत्त हो चुके थे। सूचना मिली कि पद्मनाभ मन्दिर के पास सरोवर में स्नान कर भगवान् के दर्शन करने हैं। महाराज जी, पूज्य तीर्थ जी सभी सन्तों एवं भक्तों के साथ स्टेशन से पैदल ही सरोवर पहुँचे एवं वहाँ स्नान किया। अय्यपा सम्प्रदाय के हजारों व्रती तीर्थयात्री भी उसमें स्नान कर रहे थे। प्रभु की ऐसी इच्छा कि सरोवर में स्नान से महाराज सहित कुछ यात्रियों को आंखों में २-३ दिन तक पीड़ा अनुभव होती रही। डॉ० व्यास जी के यथासमय उपचार करने के कारण सभी को आराम हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने शरीर की कष्ट की परवाह न कर महाराज जी सबकी कोमल भावनाओं को सुख पहुँचाते एवं कर्तव्य बोध की ओर अग्रसर कराते हुए अपनी चिरस्मरणीय भूमिका निभाते रहे। ऐसे महामनीषी के साथ ऐसी यात्राएँ बार-बार हों, उनके साथ सुख और प्यार सबको कितना मिला यह बता पाना सचमुच कठिन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋद्धि-सिद्धि

यात्रा में वैसे तो सभी यात्रियों में परमेश्वर की विभूति एवं अंश का समावेश था किन्तु कुछ अपने गम्भीर एवं माधुर्यता पूर्ण व्यवहार से सभी को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेते थे। ऐसी ही थीं शताब्दी स्पेशल ट्रेन में यात्रा करने वाली दो मूर्तियाँ...... जिन्हें शताब्दी स्पेशल के सभी यात्री प्यार से ऋद्धि-सिद्धि कहा करते थे। अपनी माता के साथ यात्रा करने वाली इन दोनों बहनों की दिनचर्या कुछ अजीब थी। ब्रह्ममुहूर्त में जहाँ कहीं कुछ क्षणों के लिए गाड़ी रुकतीं, ये स्नानादि नित्यकर्म करतीं, पाठ-पूजन कर नाश्ता करतीं। तीर्थस्थल पर जाते समय सभी यात्रियों को देखती रहतीं, उनके बाद सबके पीछे चलतीं बहुत धीरे-धीरे जैसे सबके कष्ट एवं असुविधा की पीड़ा इनके मन में समाई हो।

"पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलात्" भागवत की इस उक्ति के अनुसार शायद ये भी भूली-भूली सी एवं उद्देश्य विशेष से सब कुछ छोड़कर तीर्थाटन कर रही थीं। यात्रा की हर सफलता से इनको मूक प्रसन्नता होती। जिस बस में बैठतीं उसी के यात्री "ऋद्धि-सिद्धि हमारी बस में बैठी हैं" अनुभव कर प्रसन्न होते। इन्हें अपनी घर-गृहस्थी की बिल्कुल होश नहीं थी जैसे संकुचित दृष्टि उदारता में समीभूत हो गई हो। कैलास के मन्त्रपूत परम्परागत आचार्यों के आशीर्वाद से हमारे बीच आने वाली इन ऋद्धि-सिद्धि की याद अभी भी बनी रहती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्गम ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन

भूतभावन महादेव की प्रेरणा से कैलास आश्रम के पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज ने श्री कैलास शताब्दी स्पेशल में तीर्थ स्थानों का समावेश करते समय एकादश ज्योतिर्लिङ्गों के दर्शन का भी निर्णय लिया। श्रीशैल के श्रीमल्लिकार्जुन, नर्मदा तट के श्रीओङ्कारेश्वर, डाकिनी (महाराष्ट्र) के श्रीभीमाशङ्कर, गोदावरी तट के श्रीत्र्यम्बकेश्वर, चिताभूमि के श्रीवैद्यनाथ, दारुका वन के श्रीनागेश्वर एवं शिवालय (औरंगाबाद) के श्रीघुश्मेश्वर; इन सात ज्योतिर्लिङ्गों के मन्दिर प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण ऐसे एकान्त स्थानों में हैं, जहाँ जाने के लिए यातायात की पूर्ण सुविधा नहीं है। फिर इतने अधिक दर्शनार्थियों को यातायात की व्यवस्था कर एक साथ दर्शन कराना उतना सरल नहीं था। इससे पूर्व के यात्रा स्पेशल ट्रेन के संचालकों को इनकी सुलभता-दुर्लभता के विषय में कोई अनुभव न था क्योंकि उनके प्रयास ऐसे कठिन अवसरों पर उपेक्षापूर्ण होते रहे। वे यात्रियों को इन ज्योतिर्लिङ्गों को स्वयं दर्शन कर आने के लिए कह दिया करते जो अत्यन्त दुःसाध्य होने के साथ-साथ अर्थसाध्य भी हो जाता। इससे यात्री इन सभी ज्योतिर्लिङ्गों के दर्शनों से वञ्चित रह जाते थे। कोई चारा न देख मुख्य-मुख्य महानगरों व रेलवे स्टेशनों के सम्पर्क वाले (सोमनाथ, उज्जैन, वाराणसी एवं रामेश्वर) ज्योतिर्लिङ्गों के दर्शन कर कृतकृत्यता मान लेते। परन्तु कैलास शताब्दी स्पेशल की अपनी इस प्रवृत्ति में महादेव की आराधना प्रधान थी इसलिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महादेव ने भी अपने दर्शनों के लिये आने वाले हर विघ्न को अपनी अनन्त महिमा से दूर किया।

श्रीवैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग—गया में दो यात्रा स्पेशल ३-४ दिन से कोयले की कमी के कारण रुकवा दी गई थीं। कैलास स्पेशल के कार्यकर्ताओं को भी सहायक स्टेशन मास्टर ने हतोत्साहित किया परन्तु स्टेशन अधीक्षक के द्वारा व्यक्तिगत रुचि लेने के कारण इञ्जन की व्यवस्था उसी दिन हो गई। रात्रि एवं अगले दिन भी रेल पथ रुका रहने से कैलास स्पेशल को अनावश्यक दो बार रुकना पड़ा। जसीडीह पहुँचते-पहुँचते ही शाम हो गई थी, तो भी महादेव की कृपा से श्रीवैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन एवं पूजन करने का सभी को अवसर मिला। रावण के अहंकार को चूर्ण कर लोक कल्याण के लिये इस एकान्त पर्वतीय स्थल में विराजने वाले भगवान् वैद्यनाथ की महिमा को हृदय से अनुभव कर बार-बार सभी ने नमस्कार की।

श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग—श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग दर्शनों के लिये विजयवाड़ा से १२ बसों की व्यवस्था थी। २ जनवरी १९८१ को ब्रह्ममुहूर्त में अपनी कैलास स्पेशल अभी पुरी से छूटी थी जबकि ९०० किलोमीटर की यात्रा कर अगले दिन प्रात: विजयवाड़ा पहुँचना अनिवार्य था, अन्यथा सारी व्यवस्था में बाधा आ सकती थी। दो जनवरी को सभी ने एकादशी का व्रत किया था। इस व्रत से सबको श्रीमल्लिकार्जुन दर्शन की ही कामना थी। शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन का फल बताया है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"दुःखं च दूरतो याति सुखमात्यन्तिकं लभेत् ।
जननीगर्भसंभूतं कष्टं नाप्नोति वै पुनः ॥"

फिर मार्ग के विघ्न तो अपने आप दूर होते गए। यथा-समय इतनी लम्बी दूरी को पूर्ण कर कैलास स्पेशल के बड़े-बड़े पहिए विजयवाड़ा में प्रातः १० बजे रुके और बसों से कच्चे-पक्के दुर्गम पर्वतीय मार्ग को पार करते हुए प्रदोष पूजा करने का सभी को सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ भगवान् महादेव प्रति अमावस्या को एवं पार्वती प्रति पूर्णमासी को आती हैं—ऐसा शास्त्रों में वर्णन है। श्रीमल्लिकार्जुन का वो दिव्य वातावरण अभी भी स्मृतिपटल पर आते ही रोमाञ्च हो जाता है।

श्रीघुश्मेश ज्योतिर्लिङ्ग—श्रीघुश्मेश ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन के लिए कैलास स्पेशल पूना से मनमाड के लिए रवाना हुई। मनमाड में अपनी स्पेशल मध्याह्न १२ बजे पहुँची। यहां से छोटी लाइन की गाड़ी में औरंगाबाद गये। बीच में कई बार आशा और निराशा के झूले में झूलते-झूलाते सन्ध्याकाल में शान्तिपूर्वक सभी ने भुक्ति मुक्ति के देने वाले इस ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा की। शिवपुराण में कहा है—

"घुश्मेशाख्यमिदं लिङ्गमित्थं जातं मुनीश्वराः ।
तद्दृष्ट्वा पूजयित्वा हि सुखं संवर्द्धते सदा ॥"

पूना से ५०० किलोमीटर से अधिक की यात्रा कर इस दिव्य ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन कर इतना आनन्द हुआ कि रात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भर बसों से वापिस मनमाड जाते समय उसी झाँकी का चिन्तन होता रहा।

श्रीत्र्यम्बकेश्वर एवं भीमाशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग—पूना से बसों की व्यवस्था न हो सकने से भीमाशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शनों की आशा बहुत धूमिल हो गई थी किन्तु नासिक में आकर एक बार जी-जान से प्रयत्न किया गया। महादेव की कृपा से यहाँ के डिपो मैनेजर ने अत्यन्त शालीनता से कार्यकर त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग के लिए दिन में एवं रात्रि में भीमाशङ्कर के लिए बसों की व्यवस्था की। प्रातःकाल माङ्गलिक वेला में दर्शन कर सभी यात्रियों ने अपने को कृतकृत्य माना। शिव में पूर्ण विश्वास रखने वाले भक्त भीम की भी ऐसी धारणा थी जिसके लिए प्रभु को अवतीर्ण होना पड़ा—

"भविष्यं यद्भवत्येव नास्ति तस्य निवर्तकः।
प्रारब्धाधीनमेवात्र प्रारब्धः स शिवः स्मृतः॥"

होने वाला होकर ही रहता है, उसको कोई रोकने वाला नहीं है। इस संसार में सब कुछ प्रारब्ध के अधीन ही है और इसी प्रारब्ध को शिव तत्त्व से स्मरण किया गया है।

श्रीनागेश ज्योतिर्लिङ्ग—यद्यपि सौराष्ट्र (गुजरात) का बहुँमुखी विकास हुआ है किन्तु श्रीनागेश ज्योतिर्लिङ्ग पहुँचने के लिए श्रीभीमाशङ्कर, श्रीमल्लिकार्जुन आदि ज्योतिर्लिङ्गों की तरह पक्की सड़क नहीं है, इसलिए बस सुविधा आसानी से नहीं मिल पाती। यहाँ भी एक बार सभी ड्राइवरों के आग्रह को देखते हुए श्रीनागेशजी के दर्शनों से वञ्चित रहने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की संभावना बढ़ गई थी किन्तु आखिर प्रेरक रूप में महादेव विराज गये। उन्होंने सहर्ष सभी को श्रीनागेश ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन कराने के लिये मनवा लिया। पुरुष एवं महिलाओं को दो अलग-अलग लाइनें बनवा कर अपनी-अपनी बारी से दर्शन-पूजन करना सभी को स्वभावतः स्मरण होता रहता है क्योंकि एक बार में उस गुफाकार छोटे से मन्दिर में एक ही व्यक्ति पूजा कर पाता था। लगता था इनकी पूजा करने से हमें सब कुछ मिल गया। शिवपुराण में भी तो कहा है—

"एवं नागेश्वरो देव उत्पन्नो ज्योतिषां पतिः।
लिङ्गरूपस्त्रिलोकस्य सर्वकामप्रदः सदा ॥"

श्रीओङ्कारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग—भक्तों का आग्रह रहता है कि उनके भगवान् उनके अत्यन्त समीप में रहें। ऐसा क्यों होता है क्योंकि सन्निकर्ष का सुख अभीष्ट एवं दूरी की वियोग-पीड़ा असह्य होती है। अब प्रभु से यह पूछने की क्या जरूरत कि आप हमसे दूर जाकर क्या करते हो क्यों जाते हो हमें तो इतना ही मतलब है कि आप यहीं रहो, आपकी पूर्णता में कोई अन्तर नहीं आएगा। देवता-ऋषि भी भगवान् शङ्कर से शिवपुराण में कुछ इसी प्रकार बोले—

"एवं च समये देवा ऋषयश्चामलाशयाः।
संपूज्य शङ्करं तत्र स्थातव्यमिति चाब्रुवन् ॥
तच्छ्रुत्वा देववचनं प्रसन्नः परमेश्वरः।
तथैव कृतवान्प्रीत्या लोकानां सुखहेतवे ॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे ओङ्कारेश्वर महादेव को पाने के लिए रात्रि भर बसों में कीर्तन-जागरण किया। नर्मदा की त्रिधारा में एक छोटी सी सुरम्य पहाड़ी पर बसने वाले भोले बाबा ने तब कहीं प्रातः-काल दर्शन दिये। प्रभु की कृपा का साक्षात् अनुभव सबको हुआ।

भगवान् शिव के सभी ज्योतिर्लिङ्ग पापों से छुड़ाकर भोग और मोक्ष दोनों प्रदान करते हैं। ये भगवान् के साक्षात् अवतार स्वरूप हैं, दर्शन और पूजन से सब प्रकार का आनन्द देने वाले हैं।

इन दुर्गम सातों ज्योतिर्लिङ्गों में कितनी सूक्ष्म अनुभूतियाँ सभी भगवदीय जनों को हुई होंगी, इसे वे अपनी-अपनी यादों की पिटारी खोलकर पुनः जब चाहें, जितना चाहें, झाँक सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ततः तीर्थ से तीर्थ जुड़ ही गया

ले०—स्वामी ओंकारानन्द आदिबद्री

कैलास आश्रम शताब्दी प्रसंग पर स्पेशल तीर्थ यात्रा की तैयारी पूर्ण हो चुकी थी। यात्रियों में विशेष उत्साह था। इस यात्रा में अनेक संतगण भी साथ रहेंगे ऐसा भी निर्णय हो चुका था। कृपापूर्वक पूज्य महामण्डलेश्वर जी महाराज ने मेरा नाम भी यात्रा में सम्मिलित किया परन्तु रह-रह कर मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मैं इस यात्रा के प्रति न तो उत्साहित ही हूँ और न ही मुझे हर्ष ही हो रहा है।

यात्रा प्रारम्भ में अभी समय था। आठ दिन अभी शेष हैं। परन्तु लगता था जैसे कोई परमावश्यक वस्तु छूट रही और उसके अभाव में यात्रा अधूरी रहेगी परन्तु इस असमंजस की मनस्थिति से छुटकारे का कोई उपाय भी तो नहीं था।

उस दिन आदिबद्री के अपने आश्रम से सायं समय कैलास आश्रम पहुँचा। १२ घण्टे की लम्बी यात्रा की थकावट के बाद भी जैसे ही देव विद्या मन्दिर के सामने पहुँचा महिम्न स्तोत्र का पाठ पूर्ण हो चुका था। सामान को शीघ्रतापूर्वक यथा स्थान रखा और हस्त-पाद प्रक्षालन कर जब मन्दिर प्रांगण में पहुँचा, भक्तगण आचार्यों को प्रणाम निवेदित कर बाहर जा चुके थे।

कक्ष में पूज्य महामण्डलेश्वर जी एवं छोटे महाराज पूज्य हरिहर तीर्थ जी ही विराजमान थे। पूरे मार्ग भर यही चिन्तन चल रहा था कि चाहे परिणाम कुछ भी न निकले परन्तु बिना कहे नहीं रहूँगा। जानता था कि पूज्य छोटे महा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राज जी यात्रा में अपनी अस्वीकृति व्यक्त कर चुके है, पर मैं स्वयं को रोक न सका और पूज्य मण्डलेश्वर जी महाराज से कहा—'महाराज जी ! अगर इस यात्रा ट्रेन यात्रा में छोटे महाराज जी भी हमारे साथ हों तो अति उत्तम होगा।

मण्डलेश्वर जी महाराज ने कहा—इससे प्रसन्नता की बात तो और हो ही क्या सकती है; पर महाराज जी तैयार हैं कहाँ ?

मैंने कहा—'मना भी तो नहीं कर रहे है।'

भरत को पादुकाएँ मिलने पर जितनी प्रसन्नता न हुई होगी उतनी मुझे मात्र स्वीकृति से मिली। तीर्थ जी महाराज यात्रा की स्वीकृति दे चुके थे। बहुत दिनों से मेरे हृदय पर रखा पत्थर हट जाने से परम सन्तोष का अनुभव हुआ।

तीर्थों से 'तीर्थ' का मिलन। भारत का हर तीर्थ प्रयाग बनने जा रहा था, भला इस मिलन से किसे प्रसन्नता न होती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन
यात्री-सूची

कोच नं० ५००२ (प्रथम श्रेणी)

एफ.	नीचे की बर्थ	महामण्डलेश्वर जी महाराज	ऋषिकेश
	ऊपर की बर्थ	ब्र० अनन्त चैतन्य	ऋषिकेश
जी.	नीचे की बर्थ	स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज	,,
	ऊपर की बर्थ	स्वामी प्रेमानन्द जी	,,
ए.	नीचे की बर्थ	श्रीमती भगवती देवी	दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	,, सावित्री देवी	दिल्ली
	नीचे की बर्थ	,, शान्ति मल्होत्रा	बम्बई
	ऊपर की बर्थ	,, जै जै वन्ती	दिल्ली
बी.	नीचे की बर्थ	,, अवधेश निगम	हरिद्वार
	ऊपर की बर्थ	श्रीमान् आर. आर. निगम	,,
	नीचे की बर्थ	,, मुरारीलाल	दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती राजरानी	,,
सी.	नीचे की बर्थ	,, उषा देवी	,,
	ऊपर की बर्थ	-- संयोजक/नियन्त्रक कैलास स्पेशल	
	नीचे की बर्थ	श्रीमती रतन देवी	दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	,, कुसुमलता	,,
डी.	नीचे की बर्थ	श्रीमती मायावती	दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	माता इन्दु देवी सरस्वती	ऋषिकेश
	नीचे की बर्थ	श्रीमान् वी. एन. नडोला	फलोदी
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती हुलदी देवी नडोला	,,
इ.	नीचे की बर्थ	,, शान्ति देवी	देहरादून
	ऊपर की बर्थ	,, बीना प्रवीन नानावटी	बम्बई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ९०० (प्रथम श्रेणी)

ए. नीचे की बर्थ	श्रीमान्	हरवंसलाल कक्कड़	दिल्ली
ऊपर की बर्थ	श्रीमती	यशोदा अग्रवाल	,,
नीचे की बर्थ	श्रीमान्	पिशोरी लाल	,,
ऊपर की बर्थ	श्रीमती	रामकली कुमार	,,
बी. नीचे की बर्थ	श्रीमान्	एस. पी. मेहता मानसरोवर	दिल्ली
ऊपर की बर्थ	श्रीमती	शान्ति मेहता	,,
नीचे की बर्थ	,,	विद्यावती त्यागी	,,
ऊपर की बर्थ	,,	सुशीला दत्त	,,
सी. नीचे की बर्थ	,,	अञ्जना देवी	ऋषिकेश
ऊपर की बर्थ	,,	सुरक्षा देवी	जालन्धर
डी. नीचे की बर्थ	,,	प्रेम कुमारी कोहली	दिल्ली
ऊपर की बर्थ	,,	राजकुमारी कोहली	,,
नीचे की बर्थ	,,	मोतिया देवी	,,
ऊपर की बर्थ	,,	कृष्णा देवी	,,
इ. नीचे की बर्थ	श्रीमान्	रामलाल कोहली	दिल्ली
ऊपर की बर्थ		डॉ० हेम राज बंगा	,,
एफ. नीचे की बर्थ	,,	माईलाल भाई	खम्भात
ऊपर की बर्थ	श्रीमती	ललिता बेन	,,
नीचे की बर्थ	श्रीमान्	थिगम भाई पटेल	,,
ऊपर की बर्थ	श्रीमती	सरला भाई	,,
जी. नीचे की बर्थ	श्रीमती	राजरानी	दिल्ली
ऊपर की बर्थ	,,	शान्ति देवी खन्ना	,,
नीचे की बर्थ	,,	जीवनी वाई	सहारनपुर
ऊपर की बर्थ	,,	लाजवन्ती ठकराल	दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ६७५ (प्रथम श्रेणी)

ए.	नीचे की बर्थ	श्रीमान् एन. आर. कोरा	चण्डीगढ़
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती शकुन्तला कोरा	"
	नीचे की बर्थ	श्रीमान् ओ. पी. भण्डारी	"
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती कैलाश भण्डारी	"
बी.	नीचे की बर्थ	श्रीमती मदनलाल अरोड़ा	दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	कुमारी नीलम शक्ति	चण्डीगढ़
	नीचे की बर्थ	श्रीमती प्रकाशवती चौधरी	जालन्धर
	ऊपर की बर्थ	श्रीमान् सतीश गुप्ता	दिल्ली
सी.	नीचे की बर्थ ऊपर की बर्थ	कार्यालय	
डी.	नीचे की बर्थ	श्रीमती आर. एन. मेंहदीरत्ता	दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	श्रीमान् आर. एन. मेंहदीरत्ता	"
	नीचे की बर्थ	श्रीमान् शगन चन्द गुप्ता	पटियाला
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती शगन चन्द गुप्ता	"
इ.	नीचे की बर्थ	श्रीमती आनन्द नागरथ	नई दिल्ली
	ऊपर की बर्थ	" निर्मल कुमारी भारतीय	"
एफ.	नीचे की बर्थ	डॉ० व्यास (औषधालय)	
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती राम कली	फलौदी
	नीचे की बर्थ	श्रीमान् भोमराज बोहरा	"
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती नीला ताई	ऋषिकेश
जी.	नीचे की बर्थ	श्रीमान् सन्त राम कपूर	ऋषिकेश
	ऊपर की बर्थ	श्रीमती लज्जा देवी	ऋषिकेश
	नीचे की बर्थ	" राजवंशी	ऋषिकेश
	ऊपर की बर्थ	" धीर	ऋषिकेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ७६४६ द्वितीय श्रेणी स्लीपर

बर्थ नं०	नाम यात्री व स्थान		
१.	श्रीमान्	रमेशनारायण	सहारनपुर
२.	श्रीमती	हरि प्रकाश	,,
३.	श्रीमान्	हरि प्रकाश महेश्वरी	,,
४.	,,	श्यामसुन्दर	,,
५.	श्रीमती	सन्तोष बाला	,,
६.	,,	सुभद्रा देवी	,,
७.	श्रीमान्	चम्पालाल राठी	,,
८.	श्रीमती	चन्द्र प्रभा	,,
९.	श्रीमान्	चिरञ्जी लाल राठी	,,
१०.	श्रीमती	सुन्दर बाई	,,
११.	,,	चन्द्रावती	,,
१२.	श्रीमान्	ओमप्रकाश भूतरा	,,
१३.	श्रीमती	बुघई	,,
१४.	श्रीमान्	मुन्शीलाल महेश्वरी	,,
१५.	श्रीमती	दुर्गादेवी	,,
१६.	श्रीमान्	चिरञ्जी लाल भट्टार	,,
१७.	श्रीमती	चिरञ्जी लाल	,,
१८.	... ...	... ...	
१९.	श्रीमती	पार्वती देवी	,,
२०.	,,	रामप्यारी	,,
२१.	श्रीमान्	लेखराज मक्कड़	,,
२२.	श्रीमती	विद्यावती	,,
२३.	श्रीमान्	जगन्नाथ चानना	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४.	श्रीमान्	रामगोपाल महेश्वरी	सहारनपुर
२५.	,,	मानेक लाल	,,
२६.	श्रीमती	मानेक लाल	,,
२७.	श्रीमती	निर्मल मालपानी	,,
२८.	,,	जीवनदेवी बत्तरा	,,
२९.	,,	राजकुमारी	,,
३०.	,,	द्रौपदी देवी	,,
३१.	,,	कपूरीदेवी महेश्वरी	,,
३२.	,,	पार्वती	,,
३३.	,,	मुल्कीबाई महेश्वरी	,,
३४.	श्रीमान्	उमेशचन्द्र मेहरा	मेरठ सिटी
३५.	श्रीमती	कौशल्या देवी	कानपुर
३६.	,,	रामचमेली	,,
३७.	,,	पुष्पा रानी	,,
३८.	,,	राज मलहोत्रा	,,
३९.	,,	शान्ति रानी कपूर	,,
४०.	,,	सन्तोष रानी	,,
४१.	श्रीमान्	प्रकाशलाल मल्होत्रा	,,
४२.	श्रीमती	सावित्री रानी	,,
४३.	,,	कान्ता रानी मल्होत्रा	,,
४४.	,,	रामप्यारी	,,
४५.	श्रीमान्	अमरनाथ धवन	,,
४६.	श्रीमती	कौशल्या देवी	,,
४७.	,,	पुष्पा रानी मंगा	,,
४८.	श्रीमान्	के० एल० अरोड़ा	,,
४९.	श्रीमती	के० एल० अरोड़ा	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५०.	श्रीमती	लज्जा देवी	कानपुर
५१.	,,	कौशल्या देवी	,,
५२.	श्रीमान्	अतर चन्द	ऋषिकेश
५३.	श्रीमती	जानकी देवी	,,
५४.	श्रीमान्	लाला हरबंस लाल	,,
५५.	श्रीमती	रामप्यारी	,,
५६.	,,	तारा रानी	,,
५७.	,,	रामरूली	,,
५८.	श्रीमान्	प्रेमदास	,,
५९.	श्रीमती	कौशल्या देवी	,,
६०.	श्रीमान्	ईश्वरदास बजाज	,,
६१.	श्रीमती	कैलास देवी	,,
६२.	श्रीमान्	अशोक कुमार अरोरा	,,
६३.	श्रीमती	शान्ति देवी गुप्ता	,,
६४.	श्रीमान्	हरिचन्द काशीनाथ	,,
६५.	श्रीमती	हरप्यारी गुप्ता	,,
६६.	कुमारी	प्रेम गुप्ता	,,
६७.	श्रीमती	शान्ति देवी	जींद
६८.	,,	प्रकाशवती	ऋषिकेश
६९.	श्रीमान्	राधाकृष्ण मेहरा	निजामुद्दीन
७०.	श्रीमती	इन्द्रावती मेहरा	,,
७१.	,,	कौशल्या मेहरा	,,
७२.	,,	लीलावती खन्ना	,,
७३.	श्रीमान्	एन० चौबे	ऋषिकेश
७४.	श्रीमती	विद्यावती धवन	हरिद्वार
७५.	,,	कृष्णा कोहली	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ७६६२

बर्थ नं०	नाम यात्री व स्थान			
१.	श्रीमान्	देशराज चानना	मोतीनगर,	नई दिल्ली
२.	श्रीमती	वीरां देवी	,,	,,
३.	,,	द्रोपदी देवी	राजौरी गार्डन	,,
४.	,,	राम देवी	,,	,,
५.	,,	अरुणा देवी	,,	,,
६.	,,	कृष्णावन्ती गुलाटी	,,	,,
७.		... ...		
८.	श्रीमान्	हरीशचन्द्र	मोती नगर	,,
९.	श्रीमती	सरस्वती देवी	लाजपत नगर	,,
१०.	,,	वीरां देवी	मालवीय नगर	,,
११.	,,	माता विद्यावती		हरिद्वार
१२.	,,	सीता देवी	मालवीय नगर	नई दिल्ली
१३.	,,	जानकी देवी		हरिद्वार
१४.	,,	कृष्णा कपूर	अशोक विहार	नई दिल्ली
१५.	,,	भगवन्ती देवी	मालवीय नगर	नई दिल्ली
१६.	श्रीमान्	हरबंसलाल कक्कड़	पंजाबी बाग(पू०)	,,
१७.	श्रीमती	रमारानी गुलाटी	टैगोर गार्डन	,,
१८.	श्रीमान्	मतवालचन्द गुलाटी	,,	,,
१९.	,,	सत्यवती	,,	,,
२०.	,,	रामदित्ती		लुधियाना
२१.	श्रीमान्	गुरमुखदास तनेजा	पंजाबी बाग(एक्स)	न०दि०
२२.	श्रीमती	सत्यवती तनेजा	,,	,,
२३.	,,	शिवां दित्ती	अजमेरी गेट	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४.	श्रीमती	विद्यावती	टैगोर गार्डन	न.दि.
२५.	श्रीमान्	वृजमोहन शरण माथुर	वेस्ट पटेल नगर	,,
२६.	,,	ईश्वरदास आनन्द	राजौरी गार्डन	,,
२७.	श्रीमती	राजकुमारी आनन्द	,,	,,
२८.	,,	कृष्णावन्ती गुलाटी	टैगोर गार्डन	,,
२९.	,,	मायादेवी	राजौरी गार्डन	,,
३०.	,,	वृन्दादेवी चावला	ज्वालापुर	
३१.	,,	दयावन्ती भाटिया	,,	
३२.	,,	सावित्री देवी	राजौरी गार्डन	,,
३३.	श्रीमान्	रामलाल शर्मा	हरी नगर	,,
३४.	श्रीमती	दयावन्ती	,,	,,
३५.	श्रीमान्	योगराज शर्मा	,,	,,
३६.	,,	रुलडु राम काद	,,	,,
३७.	,,	रामलुभाया काद	,,	,,
३८.	श्रीमती	शकुन्तला	,,	,,
३९.	,,	लाजवन्ती नन्दा	राजौरी गार्डन	,,
४०.	,,	प्रकाशवती सेठ	,,	,,
४१.	,,	राजिन्दर पुरी	ग्रेटर कैलास	,,
४२.	श्रीमान्	दिलबाग राय चोपड़ा	,,	,,
४३.	श्रीमती	फूलन रानी चोपड़ा	,,	,,
४४.	श्रीमान्	रमेशचन्द्र हरियाना	कालकाजी	,,
४५.	श्रीमती	रामेश्वरी देवी ,,	,,	,,
४६.	,,	अंगूरी देवी ,,	,,	,,
४७.	,,	रामदित्ती	गाँधी नगर	दिल्ली
४८.	,,	राजो देवी	अमृतसर	
४९.	,,	मानवती	,,	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५०.	श्रीमान्	अमीर चन्द	अमृतसर	
५१.	श्रीमती	लीलावती	,,	
५२.	,,	प्रेमलता	,,	
५३.	,,	कौशल्या देवी	,,	
५४.	श्रीमान्	केवलकृष्ण नय्यर	तिमारपुर	दिल्ली
५५.	श्रीमती	केवलकृष्ण नय्यर	,,	,,
५६.	श्रीमान्	मक्खनलाल भट्ट	,,	,,
५७.	श्रीमती	कृष्णावन्ती खन्ना	अमृतसर	
५८.	,,	फूलरानी खन्ना	,,	
५९.	श्रीमान्	बैजनाथ खन्ना	राजौरी गार्डन	नई दिल्ली
६०.	श्रीमती	बैजनाथ खन्ना	,,	,,
६१.	श्रीमान्	बनवारी लाल	,,	,,
६२.	श्रीमती	बनवारो लाल	,,	,,
६३.	,,	शीला रानी नाग	मालवीय नगर	,,
६४.	,,	रामप्यारी खन्ना	श्रीगङ्गानगर	,,
६५.	,,	उमा रानी	कीर्तिनगर	,,
६६.	,,	शान्ता मदान	ओल्ड राजेन्द्र नगर	
६७.	,,	भागवन्ती	,,	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ६२१६

बर्थ नं०	नाम यात्री व स्थान			
१.	श्रीमान्	सी० एल० अग्रवाल	रोहतक रोड	नई दिल्ली
२.	श्रीमती	शीलावन्ती	राजेन्द्रनगर	"
३.	श्रीमान्	एल० एल० भटनागर	तिलक ब्रिज	"
४.	"	ओमप्रकाश	राजेन्द्रनगर	"
५.	श्रीमती	अश्विनी क्षेत्रपाल	तिलकनगर	"
६.	"	कपूरी देवी	खारी बावली	दिल्ली
७.	"	चन्दो देवी	नया बाजार	"
८.	"	शीला देवी अग्रवाल	रोहतक रोड	नई दिल्ली
९.	श्रीमान्	जी० एस० बारी	नारायण विहार	"
१०.	श्रीमती	छोटेलाल	गुरुद्वारा रोड	"
११.	"	सावित्री देवी		दिल्ली
१२.	"	दाखा देवी	गुरुद्वारा रोड	नई दिल्ली
१३.	"	खिल्लो देवी मल्होत्रा	कश्मीरी गेट	दिल्ली
१४.	... ...			
१५.	श्रीमती	गोपाल देवी	राजेन्द्र नगर	नई दिल्ली
१६.	"	सुमित्रा देवी	नारायण विहार	"
१७.	"	रामप्रकाश विज	वेस्ट पटेल नगर	"
१८.	श्रीमान्	रामचन्द्र शर्मा	देहरादून	
१९.	श्रीमती	चन्द्रवती शर्मा	"	
२०.	"	कमलावती खन्ना	कलकत्ता	
२१.	"	कृष्णा कोहली	देहरादून	
२२.	श्रीमान्	हरबसलाल	जमुना नगर	
२३.	श्रीमती	सीता रानी	"	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४.	श्रीमती	राधारानी विज	वेस्ट पटेल नगर	नई दिल्ली
२५.	श्रीमान्	रुद्रप्रताप सिंह	हरिद्वार	
२६.	"	विश्वेश्वरी देवी	करोल बाग	"
२७.	"	वीरां वाली	पहाड़गंज	"
२८.	"	राधा रानी	डिफेन्स कालोनी	"
२९.	श्रीमान्	सोमनाथ मेहता	पहाड़गंज	"
३०.	श्रीमती	कमला रानी	"	"
३१.	श्रीमान्	बलदेव राज	"	"
३२.	श्रीमती	सरला	"	"
३३.	"	शान्तिदेवी कक्कड़	"	"
३४.	श्रीमान्	कृष्ण जौली	गाजियाबाद	
३५.	श्रीमती	मोतिया देवी	पहाड़गंज	"
३६.	"	सौदागरमल जी की बहिन	"	"
३७.	"	सुशीलावती	गाजियाबाद	
३८.	श्रीमान्	सौदागरमल कक्कड़	पहाड़गंज	"
३९.	श्रीमती	तारावती कक्कड़	"	"
४०.	श्रीमती	शान्ति देवी बहल	पहाड़गंज	नई दिल्ली
४१.	"	पुष्पारानी धींगरा	ग्रेटर कैलास	नई दिल्ली
४२.	"	भागवन्ती	"	"
४३.	श्रीमान्	वेद प्रकाश कपूर	राजेन्द्र नगर	"
४४.	श्रीमती	वेद प्रकाश कपूर	"	"
४५.	"	दयावती सरदाना	ग्रीन पार्क	"
४६.	श्रीमान्	नाथुराम	चाँदनी चौक	दिल्ली
४७.	श्रीमती	कौशल्या देवी	"	"
४८.	"	सोहनी देवी	शादी खानपुर	"
४९.	श्रीमान्	ज्ञानसिंह माथुर		उत्तरकाशी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५०.	श्रीमती	लीला देवी	उत्तरकाशी
५१.	"	संगरानी देवी	"
५२.	"	राजकुमारी	"
५३.	"	शिवचन्द्री देवी	उत्तरकाशी
५४.	श्रीमान्	गणपति पुरी	"
५५.	"	टेकचन्द सोनी	"
५६.	"	कुन्दनसिंह	"
५७.	"	कंवरसिंह माथुर	"
५८.	"	द्वारका पुरी	"
५९.	"	सुन्दर सिंह	"
६०.	श्रीमती	रुक्मिणी देवी	"
६१.	श्रीमान्	शेरसिंह	"
६२.	श्रीमती	प्यारी देवी	"
६३.	श्रीमान्	गोपी पुरी	"
६४.	श्रीमती	कान्ता पुरी	"
६५.	"	धर्म देवी	"
६६.	"	वक्तोरी देवी	"
६७.	"	कुञ्ज देवी	"
६८.	"	गायत्री देवी	"
६९.	"	सुमित्रा देवी	"
७०.	"	पार्वती देवी	"
७१.	"	वासु देवी	"
७२.	"	विष्णु देवी	राजेन्द्र नगर नई दिल्ली
७३.	"	जसवन्त कुमारी मेहरा	" "
७४.	श्रीमान्	मनमोहन	गाजियाबाद
७५.	श्रीमती	विमला तिवारी	पुराना राजेन्द्र नगर नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ४६८६

१.	श्रीमान् एम० आर० उप्पल	राजेन्द्रनगर,	नई दिल्ली
२.	श्रीमती शान्ति देवी	"	"
३.	श्रीमान् राम प्रकाश	"	"
४.	" आर० एल० गोसाईं	"	"
५.	" दुर्गालाल पुरी	"	"
६.	" आर० एल० गोसाईं	"	"
७.	" बुद्ध प्रकाश	"	"
८.	श्रीमती बुद्ध प्रकाश	"	"
९.	श्रीमान् जे० पी० प्रीति	"	"
१०.	श्रीमती माया देवी	"	"
११.	" धन्नी देवी	"	"
१२.	" पुतली देवी	"	"
१३.	" राजरानी बत्रा	"	"
१४.	श्रीमान् श्रीराम बत्रा	"	"
१५.	" जयदेव नाथ गुप्ता	"	"
१६.	श्रीमती जे० पी० प्रीति	"	"
१७.	श्रीमान् बाबूराम गुप्ता	गाजियाबाद	
१८.	" जगन्नाथ भसीन		नई दिल्ली
१९.	श्रीमती शकुन्तला भसीन		"
२०.	" कमला मेहरा		"
२१.	श्रीमान् के० एल० बत्रा	राजेन्द्रनगर,	नई दिल्ली
२२.	श्रीमती चन्द्रकान्ता	"	"
२३.	श्रीमान् अतर चन्द पाहवा	"	"
२४.	श्रीमती सावित्री देवी गुप्ता	गाजियाबाद	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५.	श्रीमान्	पी० एन० चड्ढा	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
२६.	”	बी० एन० कपूर	” ”
२७.	”	पी० एल० घाई	” ”
२८.	”	राम प्रकाश योगीराज	” ”
२९.	”	मुन्ना लाल	नया बाजार, दिल्ली
३०.	”	मुन्शी राम नागपाल	राजोरी गार्डन, नई दिल्ली
३१.		... ...	... ...
३२.		... ...	... ...
३३.	श्रीमती	विमला देवी	नई दिल्ली
३४.	श्रीमान्	ओ० पी० नारंग	नई दिल्ली
३५.	”	एस० के० मंगला	दिल्ली
३६.	”	बी० के० गुप्ता	दिल्ली
३७.	श्रीमती	पिस्तो देवी	”
३८.	”	चन्द्री देवी	फरीदाबाद
३९.	श्रीमान्	राम नारायण गर्ग	दिल्ली
४०.	श्रीमती	शकुन्तला गोयल	”
४१.	”	पुष्पा बाहरी	”
४२.	श्रीमान्	मोती सागर कोहली	नई दिल्ली
४३.	श्रीमती	राम प्यारी	मुखर्जी नगर, ”
४४.	श्रीमान्	मुन्शी राम	”
४५.	श्रीमती	उषा रानी	”
४६.	”	लक्ष्मी देवी बधवा	”
४७.	”	पार्वती	मुखर्जी नगर, नई दिल्ली
४८.	श्रीमान्	रामस्वरूप बाहरी	दिल्ली
४९.	श्रीमती	सरला देवी	नई दिल्ली
५०.	”	शान्ति देवी	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५१.	श्रीमती ज्ञानदेवी	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
५२.	,, दर्शन कुमारी	,, ,,
५३.	,, जानकी देवी	मेरठ
५४.	,, वेदरानी	दिल्ली
५५.	,, प्रमिला	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
५६.	,, राजमाता	,, ,,
५७.	श्रीमान् भोजराज भञ्जनी	,, ,,
५८.	श्रीमती मैनावन्ती	,, ,,
५९.	,, लाज सरीन	,, ,,
६०.	कुमारी बीना	,, ,,
६१.	श्रीमती रामकली	गुजराँवाला टाउन, दिल्ली
६२.	,, कमला आनन्द	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
६३.	श्रीमान् के० के० देसाई	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
६४.	,, घनश्यामदास बगवानी	,, ,,
६५.	श्रीमती वन्ती देवी	,, ,,
६६.	,, कृष्णा रानी सुखीजा	,, ,,
६७.	,, कृष्णवन्ती	,, ,,
६८.	... ...	... ...
६९.	श्रीमती शान्ति देवी बधवा	लांसर रोड, नई दिल्ली
७०.	,, रामचमेली	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
७१.	... ...	... ...
७२.	श्रीमती कमलेश दीवान	राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली
७३.	श्रीमान् गिरधारी लाल	,, ,,
७४.	श्रीमती हरदेवी	,, ,,
७५.	... ...	... ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं. ६८१४

१.	श्रीमान्	जय गोपाल व्यास	फलोदी
२.	श्रीमती	गीता देवी	,,
३.	श्रीमान्	रामगोपाल चांदा	,,
४.	श्रीमती	गङ्गा देवी	,,
५.	,,	नारायणी देवी	,,
६.	श्रीमान्	राधाकृष्ण बोहरा	,,
७.	,,	गोपी कृष्ण पुरोहित	,,
८.	श्रीमती	हर कंवर पुरोहित	,,
९.	,,	मूली देवी	,,
१०.	,,	राम सुखी पुरोहित	,,
११.	,,	राम कंवर थानवी	फलोदी
१२.	,,	सुन्दर देवी फलोदी	,,
१३.	श्रीमान्	बलदेव दास पुरोहित	,,
१४.	श्रीमती	अहलूरी देवी	,,
१५.	श्रीमती	बसन्ती देवी बिसा	,,
१६.	,,	हीरा देवी	,,
१७.	श्रीमान्	ओंकार दास सोनार	,,
१८.	,,	जेठमल सोनी	,,
१९.	श्रीमती	छोटी देवी	,,
२०.	श्रीमती	दुर्गा देवी सोनार	फलोदी
२१.	,,	सीरा कंवर ,,	,,
२२.	,,	मोहनी देवी ,,	,,
२३.	श्रीमान्	आसु लाल पुरोहित	,,
२४.	,,	छोरु लाल सोनार	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५.	श्रीमान्	रामकृष्ण सोनार	फलौदी
२६.	श्रीमती	जेठी भाई बोहरा	,,
२७.	,,	गोपीदेवी बोहरा	,,
२८.	,,	कँवर बाई व्यास	,,
२९.	,,	नर्मदा देवी व्यास	,,
३०.	,,	हाकूदेवी थानवी	,,
३१.	,,	तुलसी देवी बोहरा	,,
३२.	,,	हस्सीमल जोशी	,,
३३.	,,	नर्मदा देवी	,,
३४.	,,	जानकी देवी	,,
३५.	,,	यशोदा देवी	,,
३६.	,,	छोटो बाई	,,
३७.	,,	यशोदा देवी	,,
३८.	श्रीमती	राम कंवर व्यास	,,
३९.	श्रीमती	मणि देवी व्यास	,,
४०.	,,	भूरी बाई पुरोहित	,,
४१.	,,	हर कंवर व्यास	,,
४२.	श्रीमान्	बद्रीनारायण व्यास	,,
४३.	श्रीमती	सीता देवी व्यास	,,
४४.	,,	कृष्णी देवी व्यास	,,
४५.	श्रीमान्	केदार नाथ व्यास	,,
४६.	श्रीमती	सोहनी बाई	,,
४७.	श्रीमान्	दाऊ लाल पुरोहित	,,
४८.	,,	प्रह्लाददास पुरोहित	,,
४९.	श्रीमती	सत्या देवी पुरोहित	,,
५०.	श्रीमती	बसन्ती देवी पुरोहित	फलौदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५१.	श्रीमती	भंवरी देवी पुरोहित	फलौदी
५२.	,,	लक्ष्मी देवी पुरोहित	,,
५३.	,,	हरप्यारी देवी पुरोहित	,,
५४.	श्रीमान्	ओंकार दास पुरोहित	,,
५५.	श्रीमती	अमृती देवी पुरोहित	,,
५६.	,,	मूर्ती देवी थानवी	,,
५७.	,,	बसन्ती देवी पुरोहित	,,
५८.	,,	कृष्णप्यारी पुरोहित	,,
५९.	श्रीमान्	अम्बालाल जी पुरोहित	,,
६०.	श्रीमती	गोपीकृष्ण थानवी	,,
६१.	,,	कुसुम्बी देवी	,,
६२.	श्रीमान्	रतन लाल बोहरा	फलौदी
६३.	,,	छगन लाल बोहरा	,,
६४.	श्रीमती	पंछी देवी बोहरा	,,
६५.	श्रीमान्	कन्हैया लाल बोहरा	,,
६६.	श्रीमती	मोटो देवी बोहरा	,,
६७.	,,	बनवारी देवी बोहरा	फलौदी
६८.	श्रीमान्	शिवराज शर्मा	,,
६९.	श्रीमती	हंसा देवी शर्मा	,,
७०.	,,	अम्बा देवी	,,
७१.	,,	रुक्मिणी देवी व्यास	,,
७२.	श्रीमान्	रामेश्वर पछारिया	फलौदी
७३.	,,	रामचन्द्र गुजरगोद	,,
७४.	श्रीमती	रामप्यारी देवी गुजरगोद	,,
७५.	श्रीमान्	मोहन लाल पुरोहित	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ९१४२

१.	श्रीमान्	हरदेव दास गुछिया	फलौदी
२.	श्रीमती	लगुदी देवी	"
३.	श्रीमान्	गिरधारी लाल पुरोहित	"
४.	श्रीमती	देवकी देवी पुरोहित	"
५.	"	मगनी देवी पुरोहित	"
६.	"	चोको देवी तारु	फलौदी
७.	"	सरस्वती देवी व्यास	"
८.	श्रीमान्	रामगोपाल पुरोहित जयपुरिया	फलौदी
९.	श्रीमती	पार्वती देवी पुरोहित	फलौदी
१०.	श्रीमान्	आशाराम बिरला	"
११.	श्रीमती	बासन्ती देवी बिरला	"
१२.	"	छोटो देवी चान्दा	"
१३.	श्रीमान्	अमृत लाल व्यास	"
१४.	श्रीमती	सोदरी देवी व्यास	फलौदी
१५.	"	सुभद्रा देवी जोशी	"
१६.	श्रीमान्	विजय लाल पुरोहित	"
१७.	"	चाँद रतन थानवी	"
१८.	श्रीमती	भीखी देवी थानवी	"
१९.	"	मोहनी देवी सवना	"
२०.	"	शान्ति देवी थानवी	फलौदी
२१.	"	गीता देवी पुरोहित	"
२२.	"	यशोदा देवी पुरोहित	"
२३.	श्रीमान्	मेघराज जोशी	"
२४.	श्रीमती	शिवप्यारी जोशी	फलौदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५.	श्रीमती	रखरी देवी जोशी	फलौदी
२६.	,,	शिवप्यारी देवी थानवी	,,
२७.	,,	भीनी देवी व्यास	,,
२८.	,,	बसन्ती देवी व्यास	,,
२९.	,,	त्रिवेणी देवी थानवी	फलौदी
३०.	श्रीमान्	परमसुख सोनार	,,
३१.	,,	मोहन लाल बोहरा	,,
३२.	श्रीमती	सीता देवी बोहरा	,,
३३.	,,	जेठी देवी	,,
३४.	,,	सरस्वती देवी	फलौदी
३५.	,,	कमला देवी पंवार	,,
३६.	,,	अम्बा देवी व्यास	,,
३७.	,,	चन्द्रकला थानवी	,,
३८.	श्रीमान्	पूरणमल जोशी	,,
३९.	श्रीमती	पार्वती देवी जोशी	फलौदी
४०.	श्रीमान्	दुर्गादास गाडोदिया	,,
४१.	श्रीमती	बादामी देवी	,,
४२.	,,	बाहियो देवी व्यास	,,
४३.	श्रीमान्	वासुदेव बोहरा	,,
४४.	श्रीमती	चम्पा देवी बोहरा	फलौदी
४५.	श्रीमान्	मूलचन्द गुछिया पुरोहित	,,
४६.	श्रीमती	रामलेखी देवी गुछिया पुरोहित	,,
४७.	,,	सोमाद्रि थानवी	,,
४८.	,,	मोहन प्यारो	,,
४९.	,,	छोटी देवी	,,
५०.	श्रीमती	मोहिनी देवी	फलौदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५१.	श्रीमती शिवप्यारी देवी	फलोदी
५२.	,, मोहिनी देवी थानवी	,,
५३.	,, छोटी देवी	,,
५४.	,, कृष्णप्यारी बोहरा	,,
५५.	,, चौथो देवी	,,
५६.	,, धापू बाई	,,
५७.	श्रीमान् गिरधारी लाल राठी	,,
५८.	श्रीमती कीलू बाई थानवी	,,
५९.	,, मोहिनी बाई सोनार	,,
६०.	श्रीमान् अम्बालाल बोहरा	,,
६१.	श्रीमती तारादेवी	,,
६२.	,, त्रिवेणी देवी	,,
६३.	,, हस्सी देवी	,,
६४.	,, गंगा देवी व्यास	,,
६५.	,, मंकु देवी	,,
६६.	,, छोटी बाई	,,
६७.	श्रीमान् शिवलाल थानवी	,,
६८.	श्रीमती रामरखी देवी व्यास	,,
६९.	श्रीमान् लक्ष्मी देवी नारायण खत्री	,,
७०.	श्रीमती रानी देवी चान्दाक	,,
७१.	श्रीमान् रामगोपाल रंगा	,,
७२.	श्रीमती रामप्यारी	,,
७३.	,, मूली बाई	,,
७४.	,, शान्ति देवी बोहरा	,,
७५.	श्रीमान् शिवकरण बोहरा	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोच नं० ४५१८

१.	श्रीमती	हरखी देवी बोहरा	फलौदी
२.	,,	पपियो देवी रंगा	,,
३.	श्रीमान्	अंगराज व्यास (वैद्य)	,,
४.	श्रीमती	लाडकंवर बाई	,,
५.	,,	भंवर लाल व्यास	,,
६.	,,	मनकू वाई	,,
७.	,,	शान्ति देवी	,,
८.	श्रीमान्	दानमल खत्री	,,
९.	श्रीमती	मूली देवी	,,
१०.	श्रीमान्	नारायणदास राठी	,,
११.	श्रीमती	सरिया देवी राठी	,,
१२.	,,	टेम्पो देवी	,,
१३.	,,	हरिया देवी दर्जी	,,
१४.	,,	मीना देवी व्यास	,,
१५.	,,	लक्ष्मी देवी रंगा	,,
१६.	श्रीमान्	कन्हैया लाल व्यास	,,
१७	श्रीमती	मोहिनी देवी व्यास	,,
१८.	,,	जीवनी बाई	,,
१९.	,,	कमला देवी महेश्वरी	,,
२०.	,,	मेस्सी देवी	,,
२१.	श्रीमान्	भीमराज बोहरा	,,
२२.	,,	रतन लाल सोनार	,,
२३.	श्रीमती	राधा देवी सोनार	,,
२४.	श्रीमती	रामप्यारी चांदा	फलौदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५.	श्रीमती	जमुना देवी चंगाणी	फलौदी
२६.	,,	काशी देवी चंगाणी	,,
२७.	,,	शिवप्यारी सोनार	,,
२८.	,,	रुक्मिणी देवी	,,
२९.	श्रीमान्	राम जी जोशी	नागोर
३०.	श्रीमती	बृज कंवर	,,
३१.	डॉ०	परसराम जोशी	,,
३२.	श्रीमती	राधा देवी	,,
३३.	श्रीमान्	पुखराज काले	,,
३४.	श्रीमती	रूखा देवी	,,
३५.	श्रीमान्	मूलचन्द शर्मा	नागोर
३६.	श्रीमती	विद्या देवी	,,
३७.	श्रीमान्	गोपीकृष्ण व्यास	,,
३८.	श्रीमती	सुशीला देवी	,,
३९,	,,	विमला द्रोथी	,,
४०.	श्रीमान्	रामकृष्ण व्यास	,,
४१.	श्रीमती	फतेह कंवर	,,
४२.	,,	पतासी देवी	,,
४३.	श्रीमान्	भंवर लाल बोहरा	बम्बई
४४.	,,	हरिकृष्ण बोहरा	,,
४५.	श्रीमती	गणेशी देवी	,,
४६.	,,	जमुना देवी	,,
४७.	,,	तुलछी देवी	,,
४८.	,,	मथुरा देवी बोहरा	,,
४९.	,,	भगवती देवी	,,
५०.	,,	मकू बाई	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५१.	श्रीमती	जगन्नाथ	बम्बई
५२.	,,	कस्तूरी देवी	,,
५३.	श्रीमान्	रामलाल दुग्रा	आगरा
५४.	श्रीमती	कृष्णावती	,,
५५.	श्रीमान्	आत्माराम कुन्दानी	अलवर
५६.	श्रीमती	भागीरथी कुन्दानी	,,
५७.	श्रीमान्	एच. एस. रावत	अहमदाबाद
५८.	... ...	... ...	
५९.	... ...	... ...	
६०.	श्रीमान्	शान्तिलाल चिमनलाल	अहमदाबाद
६१.	... ...	... ...	
६२.	... ...	... ...	
६३.	श्रीमान्	जीवन लाल शर्मा	अहमदाबाद
६४.	श्रीमती	तरलिका एच. रावत	,,
६५.	श्रीमान्	अम्बालाल एम. पटेल	,,
६६.	श्रीमती	सन्तोष बहिन एम. पटेल	,,
६७.	श्रीमती	सीता बहिन रघुबाई पटेल	,,
६८.	श्रीमती	कान्ता देवी	दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कैलास आश्रम शताब्दी स्पेशल ट्रेन यात्रा की

दिव्य स्मृति

द्वितीय भाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तोत्रसंग्रह

संकलनकर्ता
एवं
अनुवादक

डॉ० उमेशानन्द शास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❀ श्री हनुमते नमः ❀

अथ हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरुचरण सरोजरज, निज मनमुकुट सुधार ।
बरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ॥
बुद्धिहीन तनु जान के सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं. हरहु कलेश विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
जै कपीश तिहुँ लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अँजनि पुत्र पवन सुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन वरण विराज सुवेशा ।
कानन कुंडल कुंचित केशा ॥
हाथ बज्र अरु ध्वजा विराजै ।
कांधे मूज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केशरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जगबन्दन ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिवे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया ।
राम लषण सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्मरूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकटरूप धरि लंक जरावा ॥
भीमरूप धरि असुर संहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीनो बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतै सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं ।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।
नारद शारद सहस अहीशा ॥
यम कुबेर दिगपाल जहाँते ।
कवि कोविद कहि सकैं कहाँते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
युग सहस्र योजन परमानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुवारे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिन पैसारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी शरना ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँकते काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नाशै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट से हनुमान छोड़ावैं ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै ।
तासु अमित जीवन फल पावै ॥
चारों युग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता ।
अस वर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हरे भजन राम को भावै ।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥
अन्त काल रघुवर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेय सर्व सुख करई ॥
संकट हरै मिटे सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाई ।
कृपा करो गुरुदेव की नाई ॥
ये शत बार पाठ कर जोई ।
छूटहिं बन्दि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा ।
होय सिद्ध साखी गौरीशा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीज नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दो०—पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरतिरूप ।
राम लषण सीता सहित हृदय बसहु सुरभूप ॥

॥ इति ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिवमहिम्नस्तोत्रम्

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर ! निरपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।२।

हे हर ! (सभी दुःखों के हरने वाले) आपकी महिमा के अन्त को न जानने वाले मुझ अज्ञानी से की गई स्तुति यदि आपकी महिमा के अनुकूल न हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि ब्रह्मा आदि भी आपकी महिमा के अन्त को को नहीं जानते हैं। अतः उनकी स्तुति भी आपके योग्य नहीं है ॥१॥

हे हर ! आपकी निर्गुण और सगुण महिमा मन और वाणी के विषय से परे है, जिसे वेद भी संकुचित होकर कहते हैं। अतः आपकी उस महिमा की स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है ? तब भी अर्वाचीन (भक्तों के अनुग्रहार्थ धारण किया हुआ नवीन) रूप भक्तों के मन और वाणी का विषय हो सकता है ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥
किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं

हे ब्रह्मन् ! जब कि आपने मधु के सदृश मधुर और अमृत के सदृश जीवनदायिनी वेदरूपी वाणी को प्रकाशित किया है, तब ब्रह्मादि से की गई स्तुति आपको कैसे प्रसन्न कर सकती है ? हे त्रिपुरमथन ! जब ब्रह्मादि भी आपकी स्तुति गान करने में समर्थ नहीं हैं, तब मुझ तुच्छ की क्या सामर्थ्य है ? मैं तो केवल आपके गुण-गान से अपनी वाणी को पवित्र करने की इच्छा करता हूँ ॥३॥

हे वरद ! (वर देने वाले) आपके ऐश्वर्य का जो संसार की सृष्टि, रक्षा तथा प्रलय करने वाला हैं, तीनों वेदों से गाया हुआ है, तीनों गुणों (सत्. रज, तम) से परे है, तीनों शक्तियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में व्याप्त है, कुछ नास्तिक अनुचित निन्दा करते हैं। इससे उन्हीं का अधःपतन होता है न कि आपके यश का ॥४॥

"अचिन्त्याः खलु ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत्" के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥
त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

अनुसार कल्पना से बाहर, अपनी अलौकिक माया से सृष्टि करने वाले आपके ऐश्वर्य के विषय में नास्तिकों का यह (वह ब्रह्म सृष्टि करता है, किन्तु उसकी इच्छा, शरीर सहकारी कारण आधार और समवायि कारण क्या है ?) कुतर्क जगत के कतिपय मन्द-मति वालों को भ्रान्ति के लिए वाचाल करता है ॥५॥

हे अमर वर ! (देवश्रेष्ठ) यह सावयव लोक अवश्य ही जन्य है तथा इसका कर्ता भी कोई न कोई है परन्तु वह कर्ता आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं हो सकता ? क्योंकि इस विचित्र संसार की विचित्र रचना की सामग्री ही दूसरे के पास असम्भव है। इसलिये अज्ञानी लोग ही आपके विषय में सन्देह करते हैं ॥६॥

हे अमर वर ! वेदत्रयी, सांख्य, योग, शैव मत और वैष्णव ऐसे भिन्न-भिन्न मतों में कोई वैष्णव मत और कोई शैव मत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥
महोक्षः खट्वाङ्गम्परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव

अच्छा कहते हैं, रुचि की विचित्रता से टेढ़े सीधे मार्ग में प्रवृत्त हुए मनुष्यों को अन्त में एक आप ही साक्षात् या परम्परा प्राप्त होने हो, जैसे नदियाँ टेढ़ी-सीधी बहती हुई साक्षात् या परम्परा से समुद्र में ही मिलती हैं ॥७॥

हे वरद ! महोक्ष (बैल), खटिया का पाया, परशु, गजचर्म, भस्म, सर्प, कपाल इत्यादि आपकी धारण सामग्रियाँ हैं, परन्तु उन ऋद्धियों को जो आपकी कृपा से प्राप्त देवता लोग भोगते हैं, आप क्यों नहीं भोगते ! स्वात्माराम (आत्मज्ञानी) को विषय (रूप-रसादि) रूपी मृगतृष्णा नहीं भ्रमा सकती है ॥८॥

हे पुरमथन ! सांख्यमतानुयायी "न ह्यसत उत्पत्तिः सम्भवति" के अनुसार जगत् को ध्रुव (नित्य) बुद्धमतानुयायी अध्रुव (क्षणिक), तार्किक जन नित्य (आकाश आदि पञ्च और पृथिव्यादि परमाणु और अनित्य कार्यद्रव्य) दोनों मानते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।९।
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरिविरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।१०।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ।११।

इन मतान्तरों से विस्मित मैं भी आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित नहीं होता, क्योंकि वाचालता लज्जा को स्थान नहीं देती ॥९॥

हे गिरीश ! (गिरि में शयन करने वाले) तेजपुञ्ज आपकी विभूति को ढूंढ़ने के लिये ब्रह्मा आकाश तक और विष्णु पाताल तक जाकर भी उसे पाने में असमर्थ रहे, तत्पश्चात् उनकी कायिक मानसिक और वाचिक सेवा से प्रसन्न होकर आप स्वयं प्रकट हुए। इससे यह निश्चय है कि आपकी सेवा से ही सब सुलभ है ॥१०॥

हे त्रिपुरहर ! मस्तकरूपी कमल की माला को जिस रावण ने आपके कमलवत् चरणों में अर्पण करके त्रिभुवन को निष्कण्टक बनाया था तथा युद्ध के लिये सर्वदा उत्सुक रहने वाली भुजाओं को पाया था, वह आपकी अविरल भक्ति का ही परिणाम था ॥११॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।१२।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।१३।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।

रावण, उन्हीं भुजाओं से, जिन्होंने आपकी सेवा से बल प्राप्त किया था, आपके घर कैलास को उखाड़ने के लिये हठात् प्रयोग करते ही आपके अंगूठे के अग्र भाग के संकेत मात्र से पाताल में गिरा, निश्चय ही खल उपकार को भूल जाते हैं।१२।

हे वरद! बाणासुर ने आपके नमस्कार मात्र से इन्द्र की सम्पत्ति को नीचा दिखलाने वाली सम्पत्ति प्राप्त की थी और त्रिभुवन को अपना परिजन बना लिया था। यह आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि आपके चरणों में नमस्कार करना किसकी उन्नति का कारण नहीं होता है।।१३।।

हे त्रिनयन! सिन्धु विमंथन से उत्पन्न कालकूट से असमय में ब्रह्माण्ड के नाश से डरे हुए सुर व असुरों पर कृपा करके एवं संसार को बचाने की इच्छा से उसको (कालकूट को) पान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ।१४
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ।१५
मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा

करने से आपके कण्ठ की कालिमा भी शोभा देती है। ठीक ही है जगत् के उपकार की कामना वाले दूषण-भूषण समझे जाते हैं ॥१४॥

जो विजयी कामदेव अपने बाणों द्वारा जगत् के देव, मनुष्य और राक्षसों को जीतने में सर्वदा समर्थ रहा, उस कामदेव ने अन्य देवों के समान आपको भी समझा, जिससे वह स्मरण मात्र के लिये ही रह गया (दग्ध हो गया)। जितेन्द्रियों का अनादर करना अहितकारक ही होता है ॥१५॥

हे ईश ! आप जगत् की रक्षा के लिये राक्षसों को मोहित करके नाश के लिये नृत्य करते हो, तभी संसार का आपके ताण्डव से दुःख दूर होता है। क्योंकि आपके चरणों के आघात से पृथ्वी धँसने लगती है, विशाल बाहुओं के संघर्ष से नक्षत्रमय आकाश पीड़ित हो जाता है तथा आपकी चञ्चल जटाओं से ताड़ित हुआ स्वर्ग लोक भी कम्पायमान हो जाता है। ठीक ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।१६।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ।१७।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ।१८।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-

है, उपकार भी किसी के लिये अहितकारक हो जाता है ॥१६॥

हे ईश ! तारागणों की कान्ति से अत्यन्त शोभायमान आकाश में व्याप्त तथा भूलोक को चारों ओर से घेरकर जम्बूद्वीप बनाने वाला गङ्गा का जल-प्रवाह आपके जटाकपाल में बूंद से भी लघु देखा जाता है । इतने से ही आपके दिव्य तथा श्रेष्ठ शरीर की कल्पना की जा सकती है ॥१७॥

हे ईश ! तृण के समान त्रिपुर को जलाने के लिये पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा को सारथी, हिमालय को धनुष, सूर्य-चन्द्र को रथ का चक्र तथा विष्णु को विषधर बाण बनाना आपका आडम्बर मात्र है । विचित्र वस्तुओं से क्रीडा करते हुए समर्थों की बुद्धि स्वतन्त्र होती है ॥१८॥

हे त्रिपुरहर ! विष्णु आपके चरणों में प्रति दिन कमलों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यंदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।१९।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ।२०।
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो

का उपहार देते थे। एक दिन एक की कमी होने के कारण उन्होंने अपने एक कमलवत् नेत्र को निकाल कर पूरा किया। यह भक्ति की परम सीमा चक्र के रूप में आज भी संसार की रक्षा किया करती है ॥१९॥

हे त्रिपुरहर ! आप ही को यज्ञ के फल का दाता समझकर, वेद में दृढ़ विश्वास कर मनुष्य कर्मों का आरम्भ करते हैं। क्रिया रूप यज्ञ के समाप्त होने पर आप ही फल देने वाले रहते हैं। आपकी आराधना के बिना नष्ट कर्म फलदायक नहीं होता है ॥ २० ॥

हे शरणद ! कर्मकुशल यज्ञपति दक्ष के यज्ञ के ऋषिगण ऋत्विज, देवता सदस्य थे। फिर भी यज्ञ के फल देने वाले आप की अप्रसन्नता से वह ध्वंस हो गया। निश्चय है आप में श्रद्धा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।२१।
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुःपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तन्तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।२२।
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ।२३।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।

रहित किया गया यज्ञ नाश के लिये ही होता है ॥२१॥

हे नाथ ! काल से प्रेरित मृगरूप धारण किये ब्रह्मा के भय से मृगीरूप धारण करने वाली अपनी कन्या में उन्हें आसक्त देख आपका उनके पीछे छोड़ा गया बाण आर्द्रा आज भी नक्षत्र रूप में मृगशिरा (ब्रह्मा) पीछे वर्तमान है ।। २२ ॥

हे यम नियम वाले त्रिपुरहर ! आपकी कृपा से आपका अर्धस्थान प्राप्त करने वाली, अपने सौंदर्यरूपी धनुष को धारण करने वाले कामदेव को जरा हुआ देखकर भी यदि पार्वती आपको अपने अधीन समझें तो ठीक ही है, क्योंकि प्रायः युवतियाँ ज्ञान हीन होती हैं ।।२३।।

हे स्मरहर ! आपका श्मशान में क्रीडा करना, भूत-प्रेत-पिशाचादि को साथ रखना, शरीर में चिता के भस्म का लेपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ।२४।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ।२५।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं

करना तथा नर-मुण्डों की माला पहिनना आदि बीभत्स कर्मों से यद्यपि आपका चरित अमंगल है तथापि स्मरण करने वालों को हे वरद ! आप परम मंगलरूप हैं ।।२४।।

हे वरद ! जिस प्रकार अमृतमय सरोवर में अवगाहन से (स्नान करने से) प्राणीमात्र तापत्रय से मुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार इन्द्रियों से पृथक् करके मन को स्थिर कर, विधिपूर्वक प्राणायाम से पुलकित तथा आनन्दाश्रु से युक्त योगीजन ज्ञानदृष्टि से जिसे देख कर परमानन्द का अनुभव करते हैं, वह आप ही हैं ।।२५।।

हे वरद, आपके विषय में ज्ञानीजनों की यह धारणा है कि, "क्षितिहुतवहक्षेत्रज्ञाम्भः प्रभजंनचन्द्रमस्तपनवियदित्यष्ट मूर्तिर्नमो भवबिभ्रते" इस श्रुति के अनुसार सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी और आत्मा भी आप ही हैं, किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न विद्मस्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ।२६।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ।२७।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ।२८

मेरे विचार से ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ आप न हों ॥२६॥

हे शरणद ! व्यस्त (अ, उ, म्) 'ॐ' पद, शक्ति द्वारा तीन वेद (ऋग्, यजुः और साम) तीन वृत्ति (जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति) त्रिभुवन (भूर्भुवः स्वः) तथा तीनों देव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)–इन प्रपञ्चों से व्यस्त आपका बोधक है और समस्त 'ॐ' पद, समुदाय शक्ति से सर्व विकार रहित अवस्थात्रय से विलक्षण अखण्ड, चैतन्य आपको सूक्ष्म ध्वनि से कहता है ॥२७॥

हे देव ! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम और ईशान यह जो आपके नाम का अष्टक है, इस प्रत्येक नाम में वेद और देवतागण (ब्रह्मा) आदि विहार करते हैं, इसलिये ऐसे प्रियधाम (आश्रय भूत) आपको मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ ॥२८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।२९।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।३०।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।

हे प्रियदेव ! (निर्जन वन-विहरण शील) नेदिष्ठ (अत्यन्त समीप), दविष्ठ (अत्यन्त दूर), क्षोदिष्ठ (अति सूक्ष्म) महिष्ठ (महान्), वर्षिष्ठ (अत्यन्त वृद्ध) यविष्ठ (अतियुवा), सर्व-स्वरूप और अनिर्वचनीय आपको नमस्कार है ॥२९॥

हे शिवजी ! जगत् की उत्पत्ति के लिये परम रजोगुण धारण किये भव (ब्रह्मा) रूप आपको बार-बार नमस्कार है और उस जगत् के संहार करने में तमोगुण को धारण करने वाले हर (रुद्र) आपके लिये पुनः पुनः नमस्कार है, जगत् के सुख के लिये सत्त्व गुण को धारण करने वाले मृड (विष्णु) आपको बार-बार नमस्कार है। तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे अनिर्वचनीय पद से विशिष्ट आपको बार-बार नमस्कार है। ३०॥

हे वरद ! कहाँ तो राग-द्वेष आदि से कलुषित तथा तुच्छ मेरा मन, कहाँ आपकी अपरिमित विभूति, तिसपर भी आपकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरदचरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।३१।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।३२।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

भक्ति ने मुझे निर्भय बनाकर इस वाक्रूपी पुष्पाञ्जलि को आपके चरणकमलों में समर्पण करने के लिये बाध्य किया ॥३१॥

हे ईश ! असित अर्थात् काले पर्वत के समान यदि कज्जल (स्याही) समुद्र पात्र में हो, सुरवर (कल्पवृक्ष) की शाखा की उत्तम लेखनी हो और पृथ्वी कागज हो, उन साधनों को लेकर स्वयं शारदा सर्वदा ही लिखती रहें तथापि आपके गुणों का पार नहीं पा सकतीं, तो मैं कौन हूँ ॥३२॥

असुर, सुर और मुनियों से पूजित तथा विख्यात महिमा वाले ऐसे ईश्वर चन्द्रमौलि के इस स्तोत्र को अलघुवृत्त अर्थात् बड़े (शिखरिणी) वृत्त में सकल गुण श्रेष्ठ पुष्पदन्त नामक गन्धर्व ने बनाया है ॥३३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।

शुद्धचित्त होकर अनवद्य महादेवजी के स्तोत्र को जो पुरुष प्रतिदिन परम भक्ति से पढ़ता है। वह इस लोक में धन-धान्य, तथा आयु युक्त, पुत्रवान् और कीर्तिमान् होता है और अंत में शिवलोक में शिवस्वरूप हो जाता है ।।३४।।

महादेवजी से श्रेष्ठ कोई देव नहीं, शिवमहिम्न से श्रेष्ठ कोई स्तोत्र नहीं, अघोर मन्त्र से श्रेष्ठ कोई मन्त्र नहीं और गुरु से श्रेष्ठ कोई तत्त्व (पदार्थ) नहीं ।।३५।।

दीक्षा, दान, तप, तीर्थ तथा ज्ञान और योगादि क्रियाएं इस शिवमहिम्नस्तोत्र के पाठ की सोलहवीं कला को भी नहीं प्राप्त कर सकती हैं ।।३६।।

पुष्पदन्त नामक सभी गधर्वों के राजा, भाल में चन्द्रमा को धारण करने वाले देवों के देव महादेवजी के दास थे, वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥३९॥

सुरगुरु महादेवजी के क्रोध से अपनी महिमा से भ्रष्ट हुए; तब उन्होंने शिव की प्रसन्नतार्थ इस परम दिव्य शिवमहिम्न स्तोत्र को बनाया ॥३७॥

यह पुष्पदन्त का बनाया हुआ अमोघ स्तोत्र सुरवर मुनियों से पूज्य और स्वर्ग तथा मोक्ष का कारण है। इसे जो मनुष्य अनन्य चित्त हाथ जोड़ कर पढ़ता है; वह किन्नरों से स्तुति किया हुआ शिवजी के समीप जाता है ॥३८॥

सावधान होकर श्रीपुष्पदन्त के मुख से निकले हुए पापहारी तथा महादेवजी के प्रिय इस स्तोत्र को कण्ठ कर पाठ करने से प्राणीमात्र के स्वामी श्री महादेवजी प्रसन्न होते हैं ॥३९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥४०॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४१॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४२॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदा शिवः ॥४३॥

अनुपम और मन को हरने वाला ईश्वर वर्णनात्मक पवित्र स्तोत्र पुष्पदन्त गन्धर्व का कहा हुआ समाप्त हुआ ॥४०॥

हे महेश्वर ! मैं नहीं जानता कि आप कैसे हैं ? आप चाहे जैसे हों आपके लिये मेरा नमस्कार ॥४१॥

प्रातःकाल या दोपहर या सायंकाल में या तीनों काल में जो आपकी महिमा का गान करेगा; वह सब पापों से छूट कर आपके लोक में सुखपूर्वक निवास करेगा ॥४२॥

इस प्रकार इस वाङ्मयी पूजा को मैं श्रीशङ्करजी के चरणों में अर्पण करता हूँ जिससे महादेवजी मुझपर प्रसन्न रहें ॥४३॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

प्रातःस्मरणम्

प्रातःस्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ॥१॥

प्रातर्भजामि मनसां वचसामगम्यं
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचु-
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥२॥

ब्रह्ममुहूर्त में प्रतिदिन की भाँति उठकर मैं हृदयकमल में स्फुरित होने वाले आत्मतत्त्व को अनन्यभाव से स्मरण करता हूँ जो सच्चिदानन्द स्वरूप है, नीरक्षीरविवेकी परमहंसों द्वारा नित्य प्राप्त चरम स्थिति है एवं त्रिगुणातीत चतुर्थ अवस्था है, स्वप्न, जाग्रत् एवं सुषुप्ति में भी जो नित्य अनुभूति कराता है, मैं वही निष्कल ब्रह्म हूँ; पाञ्चभौतिक समुदाय का विकार नहीं हूँ ॥१॥

ब्रह्ममुहूर्त में मैं मन-वाणी के अविषय उस तत्त्व का चिन्तन करता हूँ, जिसकी कृपा से वेद-शास्त्रादि वचनों की प्रतिष्ठा होती है, जिसे श्रुतियाँ नेति-नेति कह कर निषेधमुख से प्रतिपादन करती हैं तथा विद्वान् जिसे देवाधिदेव, अजन्मा, स्वरूप में स्थित एवं सर्वश्रेष्ठ कहते हैं ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजंगम इव प्रतिभासितं वै ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम् ।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम् ॥४॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं प्रातःस्मरणस्तोत्रम् ।

षट्पदीस्तोत्रम्

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णा
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः ॥१॥

प्रातःकाल उठकर मैं नित्यप्रति अविद्यादि अन्धकार से अतीत, स्वयं प्रकाशमान, पूर्णं सनातन एवं पुरुषोत्तम संज्ञक तत्व की उपासना करता हूँ जिस पूर्णं स्वरूप में यह समस्त जगत् रज्जु में सर्प की भाँति कल्पित है ॥३॥

तीनों लोकों के भूषणस्वरूप एवं पुण्यप्रद इन तीनों श्लोकों को जो प्रातःकाल पाठ करता है, वह अद्वैत स्वरूप मोक्ष को प्राप्त होता है ॥४॥

—o—

हे सर्वव्यापक विष्णु ! मेरी अविनम्रता को दूर करो, मेरी मन की चञ्चलता को समाप्त करो, मृगतृष्णा के समान आपातरमणीय विषयवासनाओं को हटाओ, समस्त भूत प्राणियों के प्रति दया का विस्तार करो तथा अति दुस्तर संसार सागर को पार कराओ ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे ।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥२॥
सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरंगः क्वचन समुद्रो न तारंगः ॥३॥
उद्धृतनग नगभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे ।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ॥४॥
मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवता सदा वसुधाम् ।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥५॥

हृदयकमल से ब्रह्मादि के कारणभूत, शुद्धसत्त्व में प्रतिष्ठित सच्चिदानन्द, आवागमन रूप भय के खेद से छुड़ाने वाले लक्ष्मीपति की श्रीचरणों को मैं वन्दना करता हूँ ॥२॥

अद्वैतपरक श्रुतिवचनों के श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन से भेदबुद्धि नष्ट हो जाने पर भी हे योगक्षेम वहन करने वाले मेरे स्वामी, मैं आपका हूँ, तुम्हें मैं मामकीन (अपनेपन से युक्त) नहीं कह सकता क्योंकि समुद्र की तरङ्ग हुआ करती है, तरङ्ग की सत्ता से समुद्र की सत्ता नहीं हुआ करती ॥३॥

व्रजवासियों की रक्षा के लिए गोवर्धनपर्वत धारण करने वाले, वामन अवतार धारण करने वाले, सज्जनों को पीड़ा देने वाले राक्षसकुल के शत्रु एवं सूर्य तथा चन्द्रमा रूप नेत्रों वाले, आपका दर्शन होने पर सर्वथा अभय हो जाने से क्या आवागमन तिरस्कृत नहीं हो जाता ॥४॥

वेदों के उद्धार के लिए आपने मत्स्यादि अवतारों से सदा ही पृथ्वी की रक्षा की है। हे परमेश्वर ! जन्म-मृत्यु रूप ताप से भयग्रस्त मेरी आप रक्षा कीजिए ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥६॥
नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥७॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं षट्पदीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।

हे दामोदर ! सर्वगुणों के वासस्थान, कमल के समान कमनीय मुख वाले गोविन्द आवागमन रूपी अगाध समुद्र को मन्थन करने के मन्दराचल पर्वत के समान, आप मेरे महान् भय को दूर करो ॥६॥

हे नारायण ! हे करुणामय ! मैं आपके श्रीचरणों की शरण में हूँ। इतनी कृपा करें कि छः पदों से युक्त यह स्तोत्र रूप भ्रमर मेरे शरीरकमल की (भगवत्शरणागतिरूप) सुगन्धि का नित्य पान करता रहे ।७॥

—o—

(प्रस्तुत स्तोत्र में "नमः शिवायः" पञ्चाक्षर मन्त्र के 'न, म, शि, वा एवं यकार' स्वरूप भगवान् शङ्कर की वन्दना की गई है) ।

जो श्रेष्ठ सर्पों की माला धारण करने वाले, तीन नयनों वाले, चित्त की भस्म को अङ्गों में सुशोभित करने वाले महेश्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रथमनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥३॥

नित्य, शुद्ध एवं दिगम्बर हैं, ऐसे नकार स्वरूप भगवान् शिव को मैं सर्वतोभावेन प्रणाम करता हूँ ॥१॥

जो देवनदी मन्दाकिनी के सुगन्धित जल से सुवासित, नन्दीश्वर, प्रमथनाथ एवं देवाधिदेव महेश्वर एवं मन्दारादि दिव्य पुष्पों से देव, असुर, गन्धर्वों द्वारा भली प्रकार से पूजित हैं, ऐसे मकारस्वरूप भगवान् शिव को नमस्कार है ॥२॥

जो कल्याणस्वरूप, पार्वती के अङ्ग-अवयव रूप कमलों के खिलाने के लिए सूर्य, दक्ष यज्ञ के विनाशक, (समुद्रमन्थन से निकले विष को पान करने से) नीलकण्ठ एवं वृषभध्वज हैं, ऐसे शिकार स्वरूप भगवान् शङ्कर की मैं वन्दना करता हूँ ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं संपूर्णम्।

महर्षि वशिष्ठ, अगस्त्य, गौतम आदि ऋषियों एवं इन्द्रादि देवताओं द्वारा जो वन्दनीय हैं, चन्द्रमा, सूर्य एवं वैश्वानर जिनके तीन नेत्र हैं, ऐसे वकारस्वरूप भगवान् शङ्कर को नमस्कार है ॥४॥

जो यक्षस्वरूप, जटाधारी, पिनाक हाथ में धारण किए, सनातन अलौकिक महिमा वाले, द्योतनशील एवं दिशाएं जिनके वस्त्र हैं, उन यकारस्वरूप भगवान् शिव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥५॥

जो इस पुण्यप्रद पञ्चाक्षरस्तोत्र का भगवान् शङ्कर के समीप (शिवालय में) पाठ करता है, वह भगवान् शिव के दिव्य लोक को प्राप्त करता है तथा भगवान् शिव के साथ आनन्द विहार करता है ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥१॥

भानुकोटि भास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥२॥

(मोक्षदायिनी पुरी काशी के प्राप्त होने पर) मैं काशीपुरी के अधिपति भगवान् कालभैरव की सेवा करता हूँ जिनके पवित्र चरणकमल देवताओं के मुख्य इन्द्र द्वारा सेवनीय हैं, जो यज्ञोपवीत तुल्य सर्पों की माला गले में डाले हुए हैं, चन्द्रमा को मस्तक पर धारण किए हैं, योगियों में श्रेष्ठ नारदादि भी जिनके चरणकमलों की वन्दना करते हैं एवं दिशाएँ ही वस्त्र होने से जो दिगम्बर हैं ॥१॥

कोटि सूर्यों के समान तेजस्वी, भवसागर तारने वालों में श्रेष्ठ भगवान् शङ्कर को अभीष्ट कामना की सिद्धि देने वाले, त्रिलोचन, कालों के काल, कमलनयन, अक्षशूलधारी, नित्य-काशीपुरी के स्वामी भगवान् कालभैरव की मैं सेवा करता हूँ ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥३॥
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिंकिणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥४॥
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।

हाथों में शूल, टंक पाश एवं दण्ड धारण करने वाले, संसार के आदिकारण, नीलवर्ण, आदिदेव, सदा विराजमान, क्षयरहित, अविकारी, अत्यन्त पराक्रमी, सर्वसमर्थ, प्रलयंकारी ताण्डवनृत्य के प्रिय काशीपुरी के नाथ भगवान् कालभैरव की मैं वन्दना करता हूँ ॥३॥

भुक्ति और मुक्ति के दायक, अत्यन्त सुन्दर विग्रह वाले, भक्तवत्सल, समस्त चराचर प्राणियों में नाना रूप से स्थित, स्थित, मनोहारिणी स्वर्णिम किङ्किणी से शब्दित करती हुई शोभायमान कमर वाले, काशीपुरी के नाथ कालभैरव की मैं वन्दना करता हूँ ॥४॥

संसार एवं परमार्थ में धर्म के पुल की रक्षा करने वाले, अधर्म मार्ग के नष्ट करने वाले, कर्म बन्धनों से छुड़ाने वाले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंतति
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥७॥

परम सुख के दाता, शेष, पाश एवं देदीप्यमान सुवर्ण की कान्ति से शोभित अङ्ग वाले, काशिकापुरी के स्वामी भगवान् कालभैरव को मैं वन्दना करता हूँ ॥५॥

रत्नजटित पादुका की प्रभा से सुन्दर चरणकमलों वाले, नित्य, अद्वितीय, मनोरथपूरक, निरञ्जन, मृत्यु के अभिमान का नाश करने वाले, यमराज की कराल दंष्ट्रों से छुड़ाने वाले काशीपुरी के मालिक भगवान् कालभैरव को मैं वन्दना करता हूँ ॥६॥

दृष्टि प्रक्षेप ही पाप समूह को नष्ट करने वाले, अनुशासन-प्रिय, अट्टहास से ब्रह्माण्डकोश सन्तति को विदीर्ण करने करने वाले, अष्ट सिद्धि के दाता, गले में मुण्ड माला धारण करने वाले काशीपुरी के नाथ भगवान् कालभैरव की मैं शरण हूँ ॥७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥८॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥९॥

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।

भूत-प्रेत मण्डली के नायक, विशाल कीर्ति के दाता, काशी-वासी प्राणियों के पुण्य पाप शोधन कर मुक्ति दिलाने वाले व्यापक, सत्पथ प्रिय, पुरातन, जगत् के पति काशी नगरी के नाथ भगवान् कालभैरव को मैं नमन करता हूँ ॥८॥

इस मनोहर, ज्ञान मुक्ति के साधक, अद्‌भुत पुण्यवर्द्धक, शोक-मोह दैन्य, लोभ, क्रोध और त्रिविध ताप के नाशक कालभैरवाष्टक का जो पाठ करते हैं उन्हें निश्चय ही भगवान् कालभैरव के चरणकमलों की सन्निधि प्राप्त होती है ॥९॥

—०—

माता अन्नपूर्णेश्वरी नित्य आनन्द देने वाली, अभयवर दाता, अद्वितीय सौन्दर्ययुक्त, समस्त पापों को धोकर पवित्र करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥
नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरो ।
काश्मीरागुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरो ॥३॥

वाली, साक्षात् पार्वती, हिमाचल के वंश को पावन करने वाली काशीपुरी की स्वामिनी कृपा एवं आश्रय प्रदाता हैं, मुझे (वैश्वानर की शान्ति हेतु भोजन की) भिक्षा दीजिए ॥१॥

माता अन्नपूर्णेश्वरी नाना रत्नों से विचित्र शोभा वाली, स्वर्णिम वस्त्रों से सुसज्जित, कुम्भ सदृश स्तनों के मध्य मोतियों की माला से शोभायमान, केसर एवं धूप से सुगन्धित, भक्तों की रुचि का ध्यान रखने वाली, काशीपुरी की स्वामिनी कृपा एवं आश्रय प्रदाता हैं, मुझे (वैश्वानर की शान्ति हेतु भोजन की) भिक्षा दीजिए ॥२॥

माता अन्नपूर्णेश्वरी समाधि सुख की प्रदाता, शत्रुओं की नाशक, धर्म-अर्थ एवं निष्ठा की दाता, चन्द्र, सूर्य एवं अग्नि जिसकी लहरों के समान प्रकाशित हैं, तीनों लोकों की रक्षक, भक्तों के समस्त ऐश्वर्य एवं अभीष्ट मनोकामनाओं को पूर्ण कराने वाली, काशीपुरी की स्वामिनी, कृपा एवं आश्रय प्रदाता हैं। मुझे (वैश्वानर शान्ति हेतु भोजन की) भिक्षा दीजिए ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।४।।
दृश्यादृश्यप्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।५।।
उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।

माता अन्नपूर्णेश्वरी कैलास पर्वत की गुफाओं में वास करने वाली, गौरी, उमा, शांकरी कौमारी, वेदार्थ का साक्षात्कार कराने वाली, ओंकार बीजाक्षर वाली, मोक्ष द्वार को खोलने वाली, काशीपुरी की स्वामिनी कृपा एवं आश्रय प्रदाता हैं। मुझे (वैश्वानर की शान्ति के लिए भोजन की) भिक्षा दीजिए ।।४।।

सभी दृश्य एवं अदृश्य पदार्थों की नियन्ता, ब्रह्माण्डनायिका, संसार के इन्द्रजाल से मुक्त कराने वाली, विज्ञान ज्योति को प्रज्वलित करने वाली, भगवान् शङ्कर के मन को प्रसन्न करने वाली माता अन्नपूर्णेश्वरी काशीपुरी की स्वामिनी कृपा एवं आश्रय प्रदाता हैं, आप हमें भिक्षा दीजिए ।।५।।

माता अन्नपूर्णेश्वरी, सबकी मालकिन पृथिवीरूपा, भगवती, काले केशों को सुन्दर वेणी से चित्त को हरण करने वाली,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥६॥
आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥
देवि सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामं स्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी दयाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥

नित्य अन्नदान में समर्थ, सबको आनन्दित करने वाली, भाग्य-विधाता, काशीपुरी की स्वामिनी कृपा एवं आलम्बन दाता है। माता अन्नपूर्णेश्वरी हमें भिक्षा दीजिए ॥६॥

आदि धैर्यमती समस्त जगत् की निरूपिका, भूतनाथ महादेव के तीनों भावों की सम्पादिका, कश्मीर में विचरण करने वाली, तीन समुद्रों एवं त्रिविध लहरों वाली, नित्य अङ्कुरित, रात्रि, कामपूरित इच्छाओं को पूर्ण करने वाली, निजजनों के अभ्युदय में सहायभूता, काशीपुरी की स्वामिनी कृपा व आश्रय प्रदाता माता अन्नपूर्णेश्वरी हैं। मुझे भिक्षा दीजिए ॥७॥

माता अन्नपूर्णेश्वरी, समस्त विचित्र रत्नों से सुशोभित हैं, दक्ष प्रजापति की पुत्री, लक्ष्मी, मनोहारी स्तनों से सबका पोषण करने वाली, सौभाग्य की अधिष्ठातृ देवी, भक्तों की इष्टसिद्धि-कारिका, दया एवं कल्याण करने वाली, काशी की स्वामिनी कृपा व आश्रय प्रदाता हैं। हे देवि ! मुझे भिक्षा दीजिए ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥

कोटि-कोटि चन्द्र, सूर्य और अग्नि की ज्योति वाली, चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल अवयवों वाली, चन्द्रमा, सूर्य एवं अग्नि के समान देदीप्यमान केशों वाली, चन्द्रमा एवं सूर्य रूप की नियन्त्री माला, पुस्तक, पाश एवं अङ्कुश धारण करने वाली, काशी नगरी की मालकिन, कृपा एवं आश्रय देने वाली माता अन्नपूर्णेश्वरी हैं । आप मुझे भिक्षा दीजिए ॥९॥

शक्ति की रक्षा करने वाली, महान् अभय दान देने वाली, पालन पोषण करने वाली, कृपा की समुद्र, प्रत्यक्ष मोक्ष देने वाली, सदा कल्याण करने वाली, भगवान् शङ्कर की शोभा बढ़ाने वाली, दक्ष को रुलाने वाली, नीरोग करने वाली, काशीपुरी की स्वामिनी कृपा व आश्रय देने वाली माता अन्नपूर्णेश्वरी हैं । वह मुझे भिक्षान्न प्रदान करें ॥१०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥

मंगलम्

श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥

भगवान् शङ्कर की प्राणप्यारी, सदा पूर्ण, पर्वतराज हिमालय की पुत्री हे भगवती अन्नपूर्णे ! ज्ञान वैराग्य की पूर्णता के लिए मुझे भिक्षान्न दीजिए ॥११॥

(शिवभक्तों को ऐसी भावना करनी चाहिए)—हमारी माता देवी पार्वती हैं, पिता महादेव शम्भु हैं, रिश्तेदार शिवभक्त हैं एवं तीनों लोक ही अपना देश है ॥१२॥

—०—

उन बाल हाथी के मुख वाले गणेश जी की जय हो, जिनके चरणकमलों का स्मरण विघ्नों के समूह को उसी तरह नष्ट कर देता है, जैसे सूर्यकान्त मणि घोर अन्धकार को तत्क्षण नष्ट कर देती है ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥२॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥३॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥४॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥५॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥६॥

भगवान् गणेश के इन बारह नामों; सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाश, गणाधिप, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र एवं गजानन; का जो विद्यारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, बाहर जाते समय, युद्ध अथवा संकट में पाठ अथवा श्रवण करता है, उसके विघ्न नष्ट हो जाते हैं ॥२-३-४॥

सब विघ्नों की शान्ति के लिए शुक्ल वस्त्र धारी, चन्द्रमा की कान्ति वाले, चतुर्भुज, प्रसन्नमुद्रा वाले भगवान् विनायक का ध्यान करना चाहिये ॥५॥

महर्षि वशिष्ठ के नाती, शक्ति के पोते, पराशर के पुत्र एवं शुकदेव जी के पिता, निष्पाप तपोनिधि व्यास की मैं वन्दना करता हूँ ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥७॥
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः ।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः ॥८॥ इति॥

श्रीविष्णोः षोडशनामस्तोत्रम्

औषधे चिन्तयेद्विष्णुं भोजने च जनार्दनम् ।
शयने पद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम् ॥१॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च त्रिविक्रमम् ।
नारायणं तनुत्यागे श्रीधरं प्रियसंगमे ॥२॥

जो व्यास हैं, वही विष्णु हैं; जो विष्णु हैं, वही व्यास हैं, समस्त ज्ञान की निधि भगवान् व्यास को बार-बार नमस्कार है ॥७॥

भगवान् व्यास के चार मुख न होने पर भी ब्रह्मा हैं, द्विहस्ता दूसरे भगवान् विष्णु हैं, ज्ञाननेत्र न होने पर भी भगवान् शङ्कर हैं ॥८॥

—०—

औषधि ग्रहण करते समय भगवान् 'विष्णु' का ध्यान करे, भोजन करते समय 'जनार्दन', सोते समय 'पद्मनाभ', विवाह के समय 'प्रजापति' का स्मरण करे ॥१॥

लड़ाई में भगवान् 'चक्रधर', परदेश में 'त्रिविक्रम', देह त्यागते समय 'नारायण' एवं प्रिय मिलन में 'श्रीधर' का स्मरण करे ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःस्वप्ने स्मर गोविन्दं संकटे मधुसूदनम् ।
कानने नारसिंहं च पावके जलशायिनम् ॥३॥
जलमध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दनम् ।
गमने वामनं चैव सर्वकार्येषु माधवम् ॥४॥
षोडशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ॥५॥

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥१॥

दुःस्वप्न आने पर 'गोविन्द', सङ्कट आ पड़ने पर 'मधुसूदन', वन में 'नृसिंह' एवं अग्नि में 'जलशायी' भगवान् का स्मरण करे ॥३॥

जल के बीच में 'वराह', पर्वत में 'रघुनन्दन', जाते समय 'वामन' एवं सब कार्यों में भगवान् माधव का स्मरण करे ॥४॥

भगवान् विष्णु के इन सोलह नामों को जो प्रातःकाल पाठ करता है, वह सब पापों से छूट कर विष्णुलोक में प्रतिष्ठा लाभ करता है ॥५॥

—०—

हे आदिदेव सूर्य ! आपको नमस्कार है। भगवान् भास्कर! मुझ पर अनुकूल रहें। हे दिवाकर ! आपको नमस्कार है। हे प्रभाकर ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥२॥
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
बृंहितं तेजः पुञ्जं च वायुमाकाशमेव च ।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
बन्धूकपुष्पसंकाशं हारकुण्डलभूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥६॥

सात अश्वों के रथ पर सवार, उग्र, कश्यप-पुत्र, श्वेतकमल धारण करने वाले, भगवान् सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ ॥२॥

लोहित वर्ण वाले रथ में आरूढ़, समस्त लोक के पितामह, महान् पातकों को नाश करने वाले भगवान् सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

रज, सत्त्व और तमोगुण के प्रतिनिधित्व ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर स्वरूप, महान् बलशाली, बड़े-बड़े पातकों को नष्ट करने वाले सूर्य देव को मेरा प्रणाम है ॥४॥

विस्तृत तेज पुंज स्वरूप, वायु और आकाश रूप, समस्त लोकों के मालिक सूर्यदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥५॥

गुलदुपहरिया पुष्प की तरह शोभायमान्, हार और कुण्डल से विभूषित एक चक्रधारी भगवान् सूर्य को नमस्कार है ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥७॥
तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥८॥
सूर्याष्टकं पठेन्नित्यं ग्रहपीडाप्रणाशनम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत् ॥९॥
आमिषं मधुपानं च यः करोति खेर्दिने ।
सप्तजन्म भवेद्रोगी जन्मजन्म दरिद्रता ॥१०॥
स्त्रीतैलमधुमांसानि यस्त्यजेत्तु खेर्दिने ।
न व्याधिः शोकदारिद्र्यं सूर्यलोकं स गच्छति ॥११॥

जगत् के कर्ता, महान् तेज के प्रदीपन कर्ता, बड़े-बड़े पापों को नष्ट करने वाले भगवान् सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ ॥७॥

जगत् के सञ्चालक सूर्य ज्ञान, विज्ञान और मोक्ष के प्रदाता, महान् पातकों के नाशक भगवान् सूर्य को नमस्कार है ॥८॥

ग्रह पीड़ा के नाशक सूर्याष्टक का पाठ करने से सन्तानविहीन पुत्र प्राप्त करता है, दरिद्री धनवान् हो जाता है ॥९॥

जो रविवार को मांस भोजन एवं सुरापान करता है, वह सात जन्मों तक रोगी एवं जन्म-जन्मान्तरों पर्यन्त दरिद्री होता है ॥१०॥

जो रविवार को स्त्रीप्रसङ्ग, तेल, मधु, मांस का त्याग करता है, वह व्याधि, शोक एवं दरिद्रता से मुक्त होकर सूर्यलोक की प्राप्ति करता है ॥११॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥

जपाकुसुम के समान लाल कान्ति वाले, महर्षि कश्यप के पुत्र, महान् ज्योति स्वरूप, अन्धकार के शत्रु, समस्त पापों को मिटाने वाले भगवान् सूर्य को मैं नमस्कार करता हूँ ॥१॥

दही, शंख एवं ओस की कणिकाओं की आभा वाले, दुग्ध समुद्र से निकलने वाले, शम्भु के मस्तक पर मुकुटभूषण के रूप में अलङ्कृत होने वाले भगवान् चन्द्रमा को मैं नमस्कार करता हूँ ॥२॥

पृथ्वी के पुत्र, बिजली की कान्ति के समान शोभा वाले, नित्य कुमार एवं शक्तिधारी मंगल देव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

प्रियंगु लता के समान नीलवर्ण, अद्वितीय रूप वाले, बुद्धिमान् सौम्यस्वरूप, सौम्य गुणों से युक्त भगवान् बुध को मैं प्रणाम करता हूँ ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
बुद्धिभूपं त्रिलोकस्य तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसंभूतं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥८॥

देवताओं एवं ऋषियों के गुरु, स्वर्णिम दीप्ति वाले, तीनों लोकों की बुद्धि वाले बृहस्पति जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥५॥

हिम, कुन्द पुष्प एवं मृणाल की शोभा वाले, राक्षसों के परम गुरु, समस्त शास्त्रों के प्रवक्ता शुक्राचार्य जी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥६॥

काजल के समान कृष्ण कान्ति वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के बड़े भाई, छाया सूर्य से उत्पन्न शनिदेव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥७॥

अर्ध शरीर धारण करने वाले, महा बलशाली चन्द्रमा और सूर्य को ग्रसने वाले, सिंहिका के पुत्र राहुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।१०।

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥११॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥१२॥

पलाश पुष्प की शोभा को धारण करने वाले, तारका नक्षत्र द्वारा गृहीत मस्तक वाले, भयानक, रुद्ररूप वाले, घोर चर्या वाले केतुदेव को मेरा प्रणाम है ।।९॥

वेदव्यास के इस स्तोत्र को जो दत्तचित्त होकर दिन या रात में पढ़ता है, उसके विघ्नों की शान्ति हो जाती है ॥१०॥

स्त्री, पुरुष अथवा राजाओं के लिए यह स्तोत्र दुःस्वप्न का नाश करने वाला, असीम समृद्धि देने वाला, नीरोग करने वाला एवं स्वास्थ्यवृद्धि करने वाला है ॥११॥

व्यास जी कहते हैं—इसके पाठ करने से ग्रह-नक्षत्रों से होने वाली पीड़ा, चोर एवं अग्नि से होने वाली हानि कभी भी नहीं होती; इसमें कोई संशय नहीं है ॥१२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगाष्टकम्

नमस्तेऽस्तु गङ्गे त्वदङ्गप्रसङ्गा-
द्भुजङ्गास्तुरङ्गाः कुरङ्गाः प्लवङ्गाः ।
अनङ्गारिरङ्गाः ससङ्गाः शिवाङ्गा
भुजङ्गाधिपाङ्गीकृताङ्गा भवन्ति ॥१॥

नमो जह्नुकन्ये न मन्ये त्वदन्यै-
र्निसर्गेन्दुचिह्नादिभिर्लोकभर्तुः ।
अतोऽहं नतोऽहं सतो गौरतोये
वसिष्ठादिभिर्गीयमानाभिधेये ॥२॥

त्वदामज्जनात्सज्जनो दुर्जनो वा
विमानैः समानः समानैर्हि मानैः ।

हे गङ्गे ! तुम्हारे दिव्य जल (रूपी अङ्ग) के संपर्क से सर्प, घोड़े, हिरण, वानर, स्त्री, पुरुष एवं भगवान् शङ्कर की जटाएँ कृतकृत्य होती हैं, आपको नमस्कार है ।।१।।

हे ऋषि जह्नु की पुत्री ! आपको नमस्कार है । तुम्हारे अतिरिक्त मैं स्वाभाविक चन्द्रमा आदि चिह्न धारण करने वाले को संसार का स्वामी नहीं मानता । तुम्हारे स्तोत्रों को वशिष्ठादि महर्षियों द्वारा गाया जाता है; स्वच्छ दिव्य जल वाली मैं तुम्हें बार-बार नमस्कार करता हूँ । २।।

तुम्हारे पवित्र जल से स्नान करने से सज्जन, दुर्जन, देव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समायाति तस्मिन्पुरारातिलोके
पुरद्वारसंरुद्धदिक्पाललोके ॥३॥

स्वरावासदम्भोलिदम्भोऽपि रम्भा-
परीरम्भसंभावनाधीरचेताः ।
समाकाङ्क्षते त्वत्तटे वृक्षवाटी-
कुटीरे वसन्नेतुमायुर्दिनानि ॥४॥

त्रिलोकस्य भर्तुर्जटाजूटबन्धा-
त्स्वसीमान्तभागे मनाक्प्रस्खलन्तः ।
भवान्या रुषा प्रौढसापत्नभावा-
त्करेणाहतास्त्वत्तरङ्गा जयन्ति ॥५॥

किन्नर, गन्धर्व नाना प्रकार दिव्य समृद्धियों का उपभोग कर शिवलोक में प्रवेश करते हैं ॥३॥

रम्भा अप्सरा के आलिङ्गन के ध्यान में अधीर चित्त हुआ स्वर्गलोक में रहने वाला इन्द्र भी तुम्हारे तटों पर लगे वृक्ष, बाग एवं कुटीर में आयु के अवशिष्ट दिनों को बिताने की इच्छा करता है ॥४॥

त्रिलोकी के नाथ भगवान् शङ्कर की जटा समूह के बन्धन से एक ओर थोड़ी गिरती हुई गङ्गा की तरङ्गों की जय होवे जिन्हें पार्वती प्रौढ नायिका के सौतिया डाह के कारण क्रोधित होकर बार-बार हाथों से हटाती हैं ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जलोन्मज्जदैरावतोद्दानकुम्भ-
स्फुरत्प्रस्खलत्सान्द्रसिन्दूररागे ।
क्वचित्पद्मिनीरेणुभङ्गे प्रसङ्गे
मनः खेलतां जह्नुकन्यातरङ्गे ॥६॥

भवत्तीरवानीरवातोत्थधूली-
लवस्पर्शतस्तत्क्षणं क्षीणपापः ।
जनोऽयं जगत्पावने त्वत्प्रसादा-
त्पदे पौरुहूतेऽपि धत्तेऽवहेलाम् ॥७॥

त्रिसन्ध्यानमल्लेखकोटीरनाना-
विधानेकरत्नांशुबिम्बप्रभाभिः ।

भगवती गङ्गा की तरङ्गों में खेलते रहने को जी करता है, जहाँ ऐरावत हाथी जलक्रीड़ा करते समय कमल समूह के पुष्प पराग के गिरने के समय, गहरे सिन्दूर रंग को अपने मस्तक से ऊपर-नीचे फेंकता है ॥६॥

आपके किनारे लगे हुए पाकर के पेड़ों की हवा से उड़ती हुए धूलि के कणों के स्पर्श से तत्क्षण पापों की विमुक्ति हो जाती है। हे जगत् को पावन करने वाली ! तुम्हारी कृपा से यह सेवक स्वर्गलोक को भी अनादर दे रहा है ॥७॥

त्रिकाल सन्ध्या में देवताओं के मुकटों के अनेक विध रत्नों की किरणों की आभा से नमस्कार करते हुये तुम्हारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्फुरत्पादपीठे हठेनाष्टमूर्ते-
जटाजूटवासे नताः स्मः पदं ते ॥८॥

इदं यः पठेदष्टकं जह्नुपुत्र्या-
स्त्रिकालं कृतं कालिदासेन रम्यम् ।
समायास्यतीन्द्रादिभिर्गीयमानं
पदं कैशवं शैशवं नो लभेत्सः ॥९॥

यमुनाष्टकम्

कृपापारावारां तपनतनयां तापशमनीं
मुरारिप्रेयस्यां भवभयदवां भक्तिवरदाम् ।
वियज्ज्वालान्मुक्तां श्रियमपि सुखाप्तेः प्रतिदिनं
सदा धीरो नूनं भजति यमुनां नित्यफलदाम् ॥१॥

श्रीचरणों की चौकी सुशोभित होती है, भगवान् आशुतोष ने अपने जटा समूह में आपको जबरदस्ती रख लिया है; हे गङ्गे ! तुम्हारे चरणकमलों की हम वन्दना करते है ॥८॥

कालिदासरचित भगवती गङ्गा के इस रम्य स्तोत्र का जो प्रतिदिन तीन समय पाठ करता है; वह इन्द्रादि देवताओं द्वारा संस्तुत भगवान् के नित्य धाम को प्राप्त हो जाता है ॥९॥

—०—

कृपा महोदधि, सूर्य पुत्री, तापत्रय की विनाशिका, कृष्ण-प्रिया, सांसारिक भवबन्ध की प्रज्वालिका, भक्तिदात्री, आकाश-जाल से मुक्त, लक्ष्मीस्वरूपा, नित्य फलदात्री यमुना जी का धीर पुरुष सुख प्राप्ति के लिये निरन्तर भजन करे ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुवनचारिणि भास्करवाहिनि
जाह्नविसंगिनि सिन्धुसुते
मधुरिपुभूषिणि माधवतोषिणि
गोकुलभीतिविनाशकृते ।
जगदघमोचिनि मानसदायिनि
केशवकेलिनिदानगते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥२॥
अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि
शैलविहारिणी वेगभरे
परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि,
वाञ्छितकामविलासधरे ।

हे मधुवन में विचरण करने वाली ! हे सूर्यवाहिनी ! हे गङ्गा जी की संगिनी ! हे समुद्रकन्ये ! हे कृष्ण की शोभा ! हे माधव को सन्तुष्ट करने वाली ! हे गोकुल का भय का नाश करने वाली ! हे संसार के पापों का नाश करने वाली ! हे अभीष्ट फल देने वाली ! हे कृष्णकेलि की आश्रयभूता सकल भयनाशिनी संकटनाशिनी यमुने ! तुम्हारी जय हो ! जय हो ! तुम मुझे पवित्र करो ॥२॥

हे मधुरे ! हे मधु गन्ध में विलास करने वाली ! हे पर्वतों में विहार करने वाली, वेग वाली, निज जनों का पालन करने वाली, दुष्टों की संहारिका, इच्छित कामनाओं की विलासभूमि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्रजपुरवासिजनार्जितपातक-
हारिणि विश्वजनोद्धरिके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥३॥

अतिविपदम्बुधिमग्नजनं भवतापशताकुलमानसकं
गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ।
ऋणभयभीतिमनिष्कृतिपातक-
कोटिशतायुतपुञ्जतरं
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥४॥

व्रजमण्डल वासियों के अर्जित पापों को नष्ट करने वाली, समस्त जीवों का उद्धार करने वाली, भयहारिणी, संकट-नाशिनी, यमुने ! तुम्हारी जय हो ! जय हो ! तुम मुझे पवित्र करो ॥३॥

महान विपत्ति में पड़े, सैंकड़ों सांसारिक तापों से व्याकुल मन वाले, आश्रय एवं बुद्धि शून्य, भय से व्याकुल, तुम्हारे चरणकमलों की छत्रछाया की प्राप्ति के इच्छुक, ऋण और भय से दबे हजारों करोड़ प्रतिकारशून्य पापों से युक्त मुझको, हे भयहारिणी संकटनाशिनी यमुने ! पवित्र करो, तुम्हारी जय हो, जय हो ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवजलदद्युतिकोटिलसत्तनु
हेममयाभररञ्जितके
तडिदवहेलिपदाञ्चलचञ्चल
शोभितपीतसुचैलधरे ।
मणिमयभूषणचित्रपटासन-
रञ्जितगञ्जितभानुकरे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥५॥

शुभपुलिने मधुमत्तयदूद्भव-
रासमहोत्सवकेलिभरे
उच्चकुलाचलराजितमौक्तिक-
हारभयाभररोदसिके ।

तुम्हारा शरीर करोड़ों नूतन मेघ की कान्ति एवं स्वर्ण आभूषणों से युक्त है, बिजली की निराकृति करने वाले पीत दुकूल के चञ्चल आञ्चल को धारण करके शोभित होने वाली, मणिमय अलंकारों, विविध वस्त्रों एवं आसन से रञ्जित होकर सूर्य की किरणों को कुण्ठित करने वाली, भयहारिणी संकटनाशिनी हे यमुने ! आपको जय हो, जय हो, मुझे पवित्र कीजिएगा ॥५॥

हे सुन्दर किनारों वाली, मधुमत्त यदुकुल के शिरोमणि कृष्ण बलराम की रासलीला की क्रीड़ास्थली, ऊँचे कुल पर्वतों की श्रेणियों पर शोभित मौक्तिक आभूषणों से पृथिवी और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवमणिकोटिकभास्करकञ्चुकि-
शोभिततारकहारयुते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥६॥

करिवरमौक्तिकनासिकभूषण-
वातचमत्कृतचञ्चलके
मुखकमलामलसौरभचञ्चल-
मत्तमधुव्रतलोचनिके ।
मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुर-
दाकुलगण्डयुगामलके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥७॥

आकाश को शोभायमान करने वाली, करोड़ों सूर्यों के सदृश नूतन मणियों की कञ्चुकी से सुशोभित तारावली हार से युक्त, भयनिवारिका, संकटनाशिनी यमुने ! आपकी जय हो ! जय हो ! आप मुझे पवित्र कीजिए ॥६॥

आपकी नासिका की भूषणस्वरूप गजमुक्ता वायु से चञ्चल होकर झिलमिला रही है, नेत्र रूप मत्त भौंरे मानो मुखकमल की सुवास से चञ्चल हो रहे हैं तथा दोनों सुन्दर कपोल हिलते हुए मणियों के कुण्डलों से झिलमिला रहे हैं, हे भय को दूर करने वाली, संकटनाशिनी यमुने ! आपकी जय हो ! जय हो ! आप मुझे पवित्र कीजिए ॥७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलरवनुपूरहेममयाचित-
पादसरोरुहसारुणिके
धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदित-
मानसमञ्जुलपादगते ।
तव पदपङ्कजमाश्रितमानव-
चित्तसदाखिलतापहरे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि
संकटनाशिनि पावय माम् ॥८॥

भवोत्तापाम्भोधौ निपतितजनो दुर्गतियुतो
यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रयतया ।
हयाह्रेषैः कामं करकुसुमपुंजैरविरतां
सदा भोक्ता भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥९॥

सुवर्णमय नूपुरों के कलरव से युक्त लाल चरणकमल वाली, मन को प्रसन्न करने वाली 'धिमि धिमि' तालयुक्त मनोरम गति से चलने वाली, चरणकमलों के आश्रित भक्तों के सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली, हे सकल भयनाशिका संकटहारिणी यमुने! आपकी जय हो ! जय हो ! आप मुझे पवित्र कीजिए ॥८॥

संसार ताप के समुद्र में डूबकर अत्यन्त परेशान हुआ जो मनुष्य प्रतिदिन एकाग्र मन से इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह घोड़ों की हिनहिनाहट तथा हाथों में पुष्पपुञ्ज से सुशोभित होकर सदा भोगों का आनन्द लेता है एवं देहत्याग कर भगवद्धाम को प्राप्त होता है ॥९॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नर्मदाष्टकम्

सबिन्दुसिन्धुसुस्खलत्तरङ्गभङ्गरञ्जितं
द्विषत्सु पापजातजातकारि वारिसंयुतम् ।
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारि वर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥१॥

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसम्प्रदायकं
कलौ मलौघभारहारि सर्वतीर्थनायकम् ।
सुमत्स्यकच्छनक्रचक्रचक्रवाकशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥२॥

भगवती नर्मदा हाथियों के सूँड से निकले हुए जलबिन्दु सहित सुरमणीय तरङ्ग भङ्गिमाओं से बहती हुई शोभित है। अभक्तों के पाप समूह से होने वाले कर्मों को दिव्यजल स्पर्श से, यमराज के दूत काल की भीति को हरण करने में कवच के समान हे देवी नर्मदे ! तुम्हारे चरणकमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

तुम कलिमलों की बाढ़ के भार को हरने वाले, सर्व तीर्थों की नायिका हो । तुम्हारे आश्रित दीन हीन जन, मछली देवता एवं गुरुपरम्परागत सदुपदिष्ट व्यक्तियों के समूह, बड़ी मछलियों, कछुवे, नक्र, चक्र एवं चक्रवाक भी सुख प्राप्त करते हैं । हे देवी नर्मदे ! तुम्हारे चरणकमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महागभीरनीरपूरपापधूतभूतलं
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम् ।
जगल्लये महाभये मृकण्डुसूनुहर्म्यदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥३॥

गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा
मृकण्डुसूनुशौनकासुरारिसेवि सर्वदा ।
पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥४॥

अलक्षलक्षकिन्नरामरासुरादिपूजितं
सुलक्षनीरतीरधीरपक्षिलक्षकूजितम् ।

महागम्भीर तुम्हारे जल की बाढ़ संसार के पापों को भगा देती है, अपनी ध्वनि से समस्त पातकों एवं मुसीबतों के पहाड़ों को भी आप खत्म कर देती हैं। प्रलयकाल में मृकण्डु के पुत्र ऋषि मार्कण्डेय को महाभय होने पर आश्रय देने वाली हे देवी नर्मदे! तुम्हारे चरणकमलों को नमस्कार है ॥३॥

मार्कण्डेय, शौनक एवं देवताओं से सेवित तुम्हारा जल जबसे मुझे प्राप्त हुआ, तभी से मेरा भय दूर हो गया। जन्म, पुनर्जन्म रूप संसार समुद्र के दुःख निवारण में कवच रूप हे देवी नर्मदे! तुम्हारे चरणकमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥४॥

असंख्य किन्नर, देवता और असुरों द्वारा पूजित, स्वच्छ जलयुक्त तुम्हारा तट लाखों पक्षियों से कूजित है, महर्षि वशिष्ठ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वसिष्ठशिष्टापिप्पलादि कर्दमादिशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥५॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै-
धृतं स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदैः ।
रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥६॥

अलक्षलक्षलक्षपापलक्षसारसायुधं
ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् ।
विरिञ्चिविष्णुशङ्करस्वकीयधामवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥७॥

पिप्पलाद, कर्दमादि को सुख देने वाली हे देवी नर्मदे ! तुम्हारे चरणकमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥५॥

आपके दिव्य पराग को सनत्कुमार, नाचिकेत, कश्यप, अत्रि एवं नारदादि भ्रमरसमूहों ने अपने हृदय में धारण किया है। सूर्य, चन्द्रमा, रन्तिदेव एवं देवराज इन्द्र के कर्मों में सुख देने वाली हे देवी नर्मदे ! आपके चरणकमलों को मैं नमस्कार करता हूँ ॥६॥

जीव-जन्तुओं के असंख्य लाखों-लाखों पापों के विस्तार को अपनी लक्ष-लक्ष कृपामयी तरङ्गों से नष्ट कर उनको भुक्ति और मुक्ति का आप दान देती हो। ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव को अपने-अपने धाम में कवच दान (रक्षा) करने वाली हे देवी नर्मदे ! आपके चरणकमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहो मृतं स्वनं श्रुतं महेशकेशजातटे
किरातसूतवाडवेषु पण्डिते शठे नटे ।
दुरन्तपापतापहारिसर्वजन्तुशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥८॥

इदं तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा
पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा ।
सुलभ्य देहदुर्लभं महेशधामगौरवं
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम् ॥९॥

प्रयागाष्टकम्

सुरमुनिदितिजेन्द्रैः सेव्यते योऽस्ततन्द्रै-
र्गुरुतरदुरितानां का कथा मानवानाम् ।

हे देवी नर्मदे ! तुम गम्भीर पाप ताप की ज्वाला को हरण कर सब प्राणियों को सुख देती हो। किरात, सूत, वाडव, पण्डित, शट, नट एवं गङ्गातट का सुनाई देने वाला शब्द लोप हो गया है (केवल तुम्हारी महिमा शेष रह गई है) तुम्हारे चरणकमलों को मैं नमस्कार करता हूँ ॥८।

त्रिकाल सन्ध्या में जो इस नर्मदाष्टक स्तोत्र का निरन्तर पाठ करते हैं, उन्हें कभी भी कष्ट नहीं मिलता, उनके लिए पुनर्जन्म एवं रौरव नरक कहाँ ? वे तो दिव्य शरीर से महादेव के अचिन्त्य धाम की प्राप्ति करते हैं ॥९॥

—०—

भारी पापों के बोझ से दबी हुई वृत्तियों वाले मनुष्यों की क्या कहें, जिसकी देवता, ऋषि और राक्षसों द्वारा भी आलस्य-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स भुवि सुकृतकर्तुर्वाञ्छितावाप्तिहेतु-
र्जयति विजितयागस्तीर्थराजः प्रयागः ॥१॥

श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं
पुराणमप्यत्र परं प्रमाणम् ।
यत्रास्ति गङ्गा यमुना प्रमाणं
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥२॥

न यत्र योगाचरणप्रतीक्षा
न यत्र यज्ञेष्टिविशिष्टदीक्षा ।
न तारकज्ञानगुरोरपेक्षा
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥३॥

रहित होकर सेवा करते हैं, पृथ्वी में पुण्य कर्म करने वालों के अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं याग में सिद्धिदायक तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥१॥

इसमें श्रुति, स्मृति, पुराण, गङ्गा, यमुना प्रमाण होने से प्रमाणान्तर की आवश्यकता नहीं है, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥२॥

जहाँ योगानुष्ठान का कोई महत्त्व नहीं रह जाता, जहाँ जाकर इष्टापूर्तादि यज्ञों में दीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं, तारकज्ञान सम्पादन के लिए आचार्य को अन्वेषण करने की भी अपेक्षा समाप्त हो जाती है, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिरं निवासं न समीक्षते यो
ह्युदारचित्तः प्रददाति च क्रमात् ।
यः कल्पितार्थांश्च ददाति पुंसः
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥४॥

यत्राप्लुतानां न यमो नियन्ता
यत्रास्थितानां सुगतिप्रदाता ।
यत्राश्रितानाममृतप्रदाता
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥५॥

पुर्यः सप्त प्रसिद्धाः
प्रतिवचनकरीस्तीर्थराजस्य नार्यो
नैकटचान्मुक्तिदाने प्रभवति
सुगुणा काशते ब्रह्म यस्याम् ।

तीर्थराज प्रयाग लम्बे काल तक निवास की गणना नहीं करता; बल्कि उदारचेता होकर क्रम से सब कुछ दे देता है। मनुष्य की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले ऐसे तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥४॥

तीर्थराज प्रयाग में स्नान करने वालों को कभी भी यम यातना नहीं भोगनी पड़ती, इस तीर्थ में जिनकी निष्ठा हो जाती है, उनकी उत्तम गति निश्चित है, इसका सेवन करने वाले को अमृतत्व की प्राप्ति होती है; ऐसे तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥५॥

तीर्थराज के अनुशासन में रहने वाली उसकी स्त्री रूप में सात पुरियाँ प्रसिद्ध हैं, अतिशय निकट रहने, गुणवती होने से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेयं राज्ञी प्रधाना
प्रियवचनकरी मुक्तिदानेन युक्ता
येन ब्रह्माण्डमध्ये स जयति
सुतरां तीर्थराजः प्रयागः ॥६॥

तीर्थावली यस्य तु कण्ठभागे
दानावली वल्गति पादमूले ।
व्रतावली दक्षिणपादमूले
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥७॥

आज्ञाऽपि यज्ञाः प्रभवोऽपि यज्ञाः
सप्तर्षिसिद्धाः सुकृतानभिज्ञाः ।
विज्ञापयन्तः सततं हि काले
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥८॥

प्रधान पटरानी, प्रियभाषिणी यह पुरी परमपद प्राप्त कराने में समर्थ है। सगुण एवं निर्गुण ब्रह्म यहाँ प्रकाशित होता है। इस संसार में मुक्तिदान गुणों से युक्त तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥६॥

(सभी तीर्थ, दान और व्रत यहाँ अलंकार रूप में विद्यमान हैं) जिसके कण्ठ में तीर्थावली, चरणकमलों में दानावली, दाहिने चरण के तलुवे में व्रतावली सुशोभित हैं, ऐसे तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥७॥

जिसकी आज्ञा में भी यज्ञ हैं, उत्पत्ति भी यज्ञ से है, पुण्यों से अनभिज्ञ सप्तर्षि और सिद्ध हर समय जिसकी चर्चा करते रहते हैं, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सितासिते यत्र तरङ्गचामरे
नद्यौ विभाते मुनिभानुकन्यके ।
लीलातपत्रं वट एक साक्षा-
त्स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥६॥

तीर्थराजप्रयागस्य माहात्म्यं कथयिष्यति ।
शृण्वतः सततं भक्त्या वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ॥१०॥

काशीपञ्चकम्

मनोनिवृत्तिः परमोपशान्तिः
सा तीर्थवर्या मणिकर्णिका च ।
ज्ञानप्रवाहा विमलादिगङ्गा
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा ॥१॥

महर्षि जह्नु को पुत्री गंगा एवं सूर्य की पुत्री यमुना नदी को शुक्ल और कृष्ण धाराएँ जहाँ चँवररूप से सुशोभित हैं, जहाँ बालमुकुन्द की क्रीड़ा का स्मारक वटवृक्ष विराजमान है, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो ॥६॥

तीर्थराज प्रयाग के माहात्म्य को जो श्रद्धापूर्वक निरन्तर कहता है अथवा सुनता है, वह मनोवाञ्छित फल को पाता है ॥१०॥

—०—

मनकी निवृत्ति, परम शान्ति, तारक पुरियों में सर्वश्रेष्ठ, मणिकर्णिका, ज्ञान का प्रवाह अत्यन्त पवित्र आदिगंगा सदैव कल-कल निदान करती रहती है, वह निजबोधरूपा काशिका मेरा ही स्वरूप है ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्यामिदं कल्पितमिन्द्रजालं
चराचरं भाति मनोविलासम् ।
सच्चित्सुखैका परमात्मरूपा
सा काशिकाऽहं निजबोरूपा ॥२॥

कोशेषु पञ्चस्वधिराजमाना
बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् ।
साक्षी शिवः सर्वगणोऽन्तरात्मा
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा ॥३॥

काश्यां हि काश्यते काशी काशी सर्वप्रकाशिका ।
सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका ॥४॥

जिसमें यह जड़ चेतन जगत् मनका विलास एवं इन्द्रजाल की तरह कल्पित भासता है; जो सत्, चित्, आनन्द एक एवं परमात्मस्वरूप है, वह निजबोधरूपा काशिका मैं ही हूँ ॥२॥

प्रत्येक शरीररूपी गृह के पञ्चकोशों में बुद्धिरूपी भवानी के रूप में विराजमान है, जो प्रत्यक्षगोचर, कल्याणस्वरूप सब प्राणियों की अन्तरात्मा है, वह स्वात्मबोधस्वरूपा काशिका मैं ही हूँ ॥३॥

सर्वत्र प्रकाशित होने वाले परमात्मा के काशी में विशेषरूप से प्रकाशित होने के कारण काशी सर्व प्रकाशिका है। काशी के इस आध्यात्मिक स्वरूप को जान लेता है, उसे सचमुच आत्मसाक्षात्कार हो जाता है ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी क्षेत्रं शरीरं त्रिभुवन-
जननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा
भक्तिः श्रद्धा गयेयं
निजगुरुचरणध्यानयोगः प्रयागः ।
विश्वेशोऽयं तुरीयः
सकलजनमनःसाक्षिभूतोऽन्तरात्मा
देहे सर्वं मदीये यदि वसति
पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥५॥

गुर्वष्टकम्

शरीरं सुरूपं तथा च कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।

यह क्षेत्र शरीर ही काशी है, इसमें तीनों लोकों की जननी ज्ञान गङ्गा व्याप्त है, भक्ति और श्रद्धा ही यह गया है, अपने श्री गुरुदेव के चरणकमलों का ध्यान रूपी योग ही संगमतीर्थ प्रयाग है, समस्त प्राणियों के मन का साक्षीभूत अन्तरात्मा यह तुरीय (चतुर्थ) विश्वेश (विश्वनाथ भगवान्) है। मेरे लिए फिर अन्य तीर्थ का महत्त्व नहीं रह जाता, यदि देह ही में सब तीर्थों का वास हो जाता है ॥५॥

—०—

यदि स्थितप्रज्ञ की भूमिका की ओर अग्रसर करने वाले श्री गुरुदेव के चरणकमलों में मन नहीं लगता तो सुन्दर शरीर, अर्धाङ्गिनी, अतुलनीय यश, मेरुतुल्य धन भी मिल जाय तो क्या है ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥१॥

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं
गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥२॥

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥३॥

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥४॥

सन्मार्ग के उपदेशक गुरु जी के चरणकमलों में यदि मन नहीं है तो स्त्री धन, पुत्र-पौत्रादि सब कुछ, घर बन्धु-बान्धवादि के होने पर भी क्या लाभ है ॥२॥

छः अङ्गों सहित वेद मुखाग्र हो, शास्त्र का मर्म जानता हो, गद्य, पद्य में कवित्व की ख्याति प्राप्त हो, किन्तु यदि श्री गुरुदेव के चरणकमलों को न जाना तो सब बेकार है ॥३॥

यदि परमार्थ की गरिमा के प्रतिपादक श्री गुरुदेव जी के चरणकमलों का महत्त्व न समझा तो विदेशों में मान, स्वदेश कीर्ति, सदाचारपरायणता की धाक सब बेकार है ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥५॥

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापा-
ज्जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥६॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥७॥

इस पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों के नायक (राजा-महाराजे) भी जिसका लोहा मानते हों, तो मानते रहें, परन्तु कर्तव्यपथ के प्रेरक गुरुदेव के चरणों में आसक्ति न हुई तो क्या लाभ ॥५॥

दान और प्रताप का यश सब दिशाओं में फैला हो, संसार के समस्त भोग भले ही प्राप्य हो, किन्तु गुरु जी के चरणकमलों में सहज अनुराग नहीं, तो सब बेकार है ॥६॥

संसार के समस्त भोग, योग, घोड़ा-आदि पशु, अधिष्ठाता, कान्ता की कमनीय देह एवं धनादि से वैराग्य हो भी जाय तो कोई बड़ी उपलब्धि नहीं यदि गुरुचरणों को भुला दिया ।७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥८॥

अनर्घ्याणि रत्नानि मुक्तानि सम्यक्
समालिङ्गिता कामिनी यामिनीषु ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥९॥

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेद्वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसञ्ज्ञं
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥१०॥

घर या वन में मन नहीं लगता, काम-काज में अथवा धर्म के साधनभूत शरीर से भी उपरामता हो गई फिर भी श्री गुरुदेव के चरणकमलों की महिमा की उपेक्षा की, तो सब बेकार है ॥८॥

बेशुमार रुपया पैसा, हीरे जवाहरात पड़े हों, रात्रियों में कामिनी का सुखदस्पर्श प्राप्त हो किन्तु आत्यन्तिक सत्य से सर्वदा अवगत कराने वाले गुरुदेव के चरणकमलों की भक्ति के बिना कुछ भी तो नहीं है ॥९॥

गुरु जी की महिमा के प्रतिपादक इस स्तोत्र का जो पुण्यात्मा, संन्यासी, राजा, ब्रह्मचारी अथवा गृहस्थी पाठ करता है, गुरु के वचनों में जिसका विश्वास है, वह ब्रह्मस्वरूप अभीष्ट पद को प्राप्त कर लेता है ॥१०॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं
निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥१॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं
कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥२॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं
बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।

जो लिङ्ग ब्रह्मा, विष्णु एवं देवताओं से पूजित है; जो लिङ्ग निर्मल प्रकाशित हुआ सुशोभित है, जो लिङ्ग जन्म से होने वाले दुःख का विनाशक है, उस सदा कल्याणस्वरूप लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

जो लिङ्ग इन्द्र एवं ऋषियों द्वारा अर्चित है, जो लिङ्ग काम को भस्म करने वाला एवं करुणाशील हैं, जो लिङ्ग रावण के अहंकार का नाश करने वाला है, उस सदा कल्याण-स्वरूप शिव लिङ्ग को नमस्कार है ॥२॥

जिस लिङ्ग को विविध सुगन्धित द्रव्यों से भली प्रकार लेपित किया गया, जो लिङ्ग बुद्धि बढ़ाता है, जिस लिङ्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥३॥
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं
फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥४॥

कुंकुमचंदनलेपितलिङ्गं
पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
संचितपापविनाशनलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥५॥

की उपासना सिद्ध, देव, दानव करते हैं; उस सदाशिव लिङ्ग को मेरा प्रणाम है ॥३॥

जो लिङ्ग सुवर्ण एवं महामणिग्रों से अलङ्कृत है; सर्पराज से लिपटा हुआ जो लिङ्ग अच्छा लगता है, जो लिङ्ग दक्ष के सुन्दर यज्ञ का विनाशक है, उस सदैव शिवस्वरूप शिवलिङ्ग की मैं वन्दना करता हूँ ॥४॥

जिस लिङ्ग में कुङ्कुम और चन्दन लगो रहती है, कमलों के हार से जो लिङ्ग सुन्दर शोभायमान है, जो लिङ्ग सभी सञ्चित पापों का विनाशक है, उस सदाशिव लिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं
भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥६॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं
सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥७॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं
सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।

दिव्यलोकवासी देवता द्वारा जो लिङ्ग सेवित है, भाव-भक्ति द्वारा जिस लिङ्ग की शरण ली जाती है, करोड़ों सूर्यों की प्रभा का पुञ्ज रूप जो लिङ्ग है, उस सदाशिव लिङ्ग को मेरा प्रणाम है ॥६॥

जो लिङ्ग अष्टदल पुष्पों से लदा हुआ है, जो लिङ्ग संसार की उत्पत्ति का कारण है, जो लिङ्ग अष्ट दरिद्रों का विनाशक है, उस सदैव कल्याणस्वरूप शिवलिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ ।७॥

देवगुरु बृहस्पति एवं देवराज इन्द्र भी जिस लिङ्ग की पूजा करते हैं, देवताओं के नन्दनवन के पुष्पों से जिस लिङ्ग की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परात्परं परमात्मकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥८॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचंपकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥

सदैव पूजा होती रहती है, जो लिङ्ग परात्पर परमात्मा का स्वरूप हैं, उस सदाशिव लिङ्ग को मेरा प्रणाम है ॥८॥

इस पुण्यकारक लिङ्गाष्टक स्तोत्र को भगवान् शङ्कर के मन्दिर में बैठकर पाठ करता है, उसे दुर्लभ शिवलोक की प्राप्ति होती है, वहाँ वह भगवान् महादेव के साथ रह कर नित्य तृप्ति लाभ करता है ॥९॥

—०—

हे जीवों के स्वामी दयानिधान महादेव ! मानस पूजा के लिए उद्यत हुआ मैं आपको रत्नजड़ित सिंहासन बैठने के लिए अर्पित करता हूँ, स्नान के लिए शीतलजल, पहनने के लिए दिव्य वस्त्र, अलंकार हेतु नाना रत्न एवं कस्तूरी की मनोहारिणी सुगन्धि से युक्त चन्दन, जुही चम्पक, आदि पुष्प, बिल्वपत्र एवं धूप-दीप को नाथ स्वीकृत कीजिए ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ।२।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥

स्वर्णिम एवं नवरत्न के बने पात्रों में परोसा हुआ घी और खीर दूध और दही से युक्त पञ्चविध भक्ष्य, रम्भाफल, पेय, भाँति-भाँति के साग, कर्पूर मिश्रित उज्ज्वल एवं स्वादयुक्त जल एवं पान. ये सब कुछ हे नाथ ! मैंने मन से आपके लिए बनाया है, इसे स्वीकार कीजिए ।।२।।

छत्र और दो चँवर, पंखा, स्वच्छ दर्पण और साथ में (मनोरंजन के लिए) वीणा, भेरी, मृदङ्ग, गीत एवं नृत्य, साष्टाङ्ग प्रणाम और बहुत प्रकार से स्तुति; ये सब कुछ हे मेरे स्वामी ! मैंने संकल्प मात्र से आपको समर्पित किया है, मेरी इस पूजा को स्वीकार कीजिए ।। ३।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।४।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।५।।

हे महादेव ! तुम आत्मा हो, पार्वती भगवती बुद्धि है, गण प्राण हैं शरीर ही घर है, विषयों के सेवन के लिए किया गया प्रयास तुम्हारी पूजा है, शयन कर लेना समाधि में स्थित हो जाना है, गमनागमन रूप पैरों से संचार तुम्हारी प्रदक्षिणा कर लेना है, जो कुछ वाणी से उच्चारण करता हूँ, सब तुम्हारी स्तुति के लिए होता है; हे कल्याण करने वाले शम्भो ! मेरे द्वारा जो जो भी कर्म किए जाते हैं, सब एकमात्र तुम्हारी पूजा ही है ।।४।।

मेरे द्वारा हाथों से, चरणों से किया गया, वाणी और शरीर से होने वाला अथवा कर्मों से हुआ, कानों और आँखों से हुआ, मानस अपराध; शास्त्रविहित अथवा शास्त्रनिषिद्ध हो सब कुछ क्षमा कर दीजिए; हे करुणा के सागर ! श्री महादेव शम्भो ! आपकी जय हो, जय-जयकार हो ।।५।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

हे माँ जगदम्बिके ! तुम्हारी प्रीति के साधक मन्त्र अथवा यन्त्र का मुझे कोई ज्ञान नहीं है और कितना दुःख है कि मैं कोई स्तुति करने की सामर्थ्य भी नहीं रखता, तुम्हारे लिए निमन्त्रण, ध्यान कैसे किया जाए, पता नहीं, माहात्म्य वर्णन करना भी जानता नहीं, विभिन्न मुद्राओं को भी कहाँ जानता हूँ न ही तुम्हें पुकारने की विधि आती है. हाँ केवल इतना ही जानता हूँ कि क्लेश को हरने वाला तुम्हारा अनुगमन कैसे किया जाए ॥१॥

अत: अनुष्ठान करने की अल्पज्ञता, धनाभाव अथवा आलस से अनुष्ठेय की असमर्थता से तुम्हारे चरणकमलों को सन्निधि से दूर जा पड़ा हूँ। हे सब का उद्धार करने वाली कल्याण-स्वरूपा मां ! मेरी इस भूल को क्षमा करो क्योंकि पुत्र के खराब होने के अवसर आ जाते हैं किन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तवं शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

हे माँ! संसार में तुम्हारे बहुत से सीधे-सच्चे पुत्र हैं किन्तु उनमें मैं टेढ़ा और ढीठ पुत्र हूँ किन्तु सब का कल्याण करने वाली! मेरा इस प्रकार त्याग करना आपके लिए शोभनीय नहीं है। कुपुत्र उत्पन्न हो भी जाए किन्तु माता अपने बच्चे का हितसम्पादन कर कभी कुमाता नहीं होती ॥३॥

हे जगदम्बे भवानी! क्या करूँ, तुम्हारे चरणों की जरा भी सेवा न हो सकी, बहुत सा धन दान कर भी तुम्हें प्रसन्न न कर सका फिर भी तुम मुझ पर असीम अनुराग करती हो। पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, किन्तु माता कुमाता नहीं होती ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परित्यक्ता देवान्विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

हे देवी ! मैंने भाँति-भाँति की सेवा से परेशान होकर देवताओं को छोड़ दिया. एक तेरे ही सहारे पर पचासी वर्ष की आयु मैंने व्यतीत कर दी । अब भी विनायक माता ! यदि तुम्हारी कृपा दृष्टि नहीं होती, तो निराश्रित होकर मैं किसकी शरण जाऊँगा ॥५॥

तुम्हारी कृपा से मूर्ख मधुमिश्रित सुन्दर वाणी पाकर वाचाल हो जाता है, निराश्रित निर्धन भी लाखों करोड़ों में खेलने लगता है । हे मनुवंश परम्परा की अपर्णा देवी ! तुम्हारे जपनीय शुभविधि का यह फल है, ऐसा सुना जाता है, हे माँ ! तुम्हारी महिमा अपरम्पार है ॥६॥

चित्ता भस्म को धारण करने वाले, विषभक्षी नंगे रहने वाले, जटाधारी, कण्ठ में सर्पों की माला वाले, पशुपति, कपाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववाञ्छाऽपि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

और भूतेश शंकर भी संसार के मालिक होने का पद पा जाते हैं। हे भवानी दुर्गे ! तुम्हारे करकमलों की कोमल छाया के आश्रित होने का ही ये सब फल है ॥७॥

सोचता हूँ, मेरा जीवन 'मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी' जपते हुए बीते, हे माँ ! बस इतनी ही तुझ से फरियाद है। क्या करूँगा मोक्ष का, क्या करूँगा जन्म धारण का क्या करूँगा ज्ञान का, तुम्हें छोड़कर हे चन्द्रमुखी ! अब अन्यत्र कहीं भी सुख नहीं दीखता ॥८॥

मैंने विधिपूर्वक नाना उपचारों से तुम्हारी पूजा अथवा स्तुति नहीं की फिर भी हे श्यामे ! मुझ अनाथ पर तुम्हारा कृपा करना उचित ही है क्योंकि मैं तुम्हारा ही हूँ ॥९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं
नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥

जब विपत्तियाँ मुझे घेर लेती हैं तो हे करुणा की सागर देवी ! तुम्हारा स्मरण मैं करने लगता हूँ। इसे मेरी धृष्टता न समझें क्योंकि भूख-प्यास लगने पर ही तो माँ की याद आती है ॥१०॥

हे जगदम्बिके भवानी ! इसमें क्या हैरानी की बात है कि तुम्हारी मुझपर अपार दया है। पुत्र चाहे लाख अपराध करे, किन्तु माता का हृदय कभी गवाही नहीं देता कि उस अपने पुत्र को छोड़ दे ॥११॥

मेरे समान कोई पापी तुम्हें शायद ही मिले, तुम्हारे समान पापों की क्षमा करने वाली भी मिलनी असम्भव है। हे महादेवी ! ऐसा जानकर जैसा तुम्हें मेरे लिए उचित जान पड़े, वैसा कर लेना, मैं कुछ नहीं कहूँगा ॥१२॥

—o—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधाकवचम्

पार्वती उवाच—

कैलासवासिन् भगवन् भक्तानुग्रहकारक ।
राधिकाकवचं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो ॥१॥

यद्यस्ति करुणा नाथ त्राहि मां दुःखतो भयात् ।
त्वमेव शरणं नाथ शूलपाणे पिनाकधृक् ॥२॥

शिव उवाच—

शृणुष्व गिरिजे तुभ्यं कवचं पूर्वसूचितम् ।
सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्वहत्याहरं परम् ॥३॥

पार्वती बोली—

हे कैलासवासी प्रभो ! आप अपने भक्तों पर अनुग्रह करने वाले हो। आप पुण्यप्रद राधिका कवच का मुझे उपदेश करें ।१॥

हे नाथ ! यदि आपकी मुझ पर कृपा है, तो दुःख एवं भय से मेरी रक्षा करो। हे शूलपाणि पिनाकधारी मेरे स्वामी ! तुम्हीं एकमात्र मेरा सहारा हो ॥२॥

शिव जी बोले—

हे पर्वतराज की कन्या ! पूर्व प्रतिपादित राधाकवच को तुम श्रवण करो, यह सब की रक्षा करने वाला पुण्यशाली, सब प्रकार हत्या के पाप नष्ट करने वाला और श्रेष्ठ है ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरिभक्तिप्रदं साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रसाधनम् ।
त्रैलोक्याकर्षणं देवि हरिसान्निध्यकारकम् ॥४॥

सर्वत्र जयदं देवि सर्वशत्रुभयावहम् ।
सर्वेषां चैव भूतानां मनोवृत्तिहरं परम् ॥५॥

चतुर्धा मुक्तिजनकं सदानन्दकरं परम् ।
राजसूयाश्वमेधानां यज्ञानां फलदायकम् ॥६॥

इदं कवचमज्ञात्वा राधामन्त्रं च यो जपेत् ।
स नाप्नोति फलं तस्य विघ्नास्तस्य पदे पदे ॥७॥

ऋषिरस्य महादेवोऽनुष्टुप् छन्दश्च कीर्तितम् ।
राधास्य देवता प्रोक्ता रां बीजं कीलकं स्मृतम् ॥८॥

यह कृष्णभक्ति देने वाला, भोग और मोक्ष को प्रत्यक्ष देने वाला है। हे देवी! यह तीनों लोकों में मान्य है एवं भगवान् के दर्शन कराने वाला है ॥४॥

हे देवी! यह राधाकवच सब जगह विजय दिलाता है, शत्रुओं के भय को मिटाता है, सब प्राणियों की चित्त की दूषित प्रवृत्तियों को मिटाने में सर्वश्रेष्ठ है ॥५॥

यह राधाकवच चतुर्विध मुक्ति का देने वाला, सदा आनन्द देने वाला, सर्वोत्तम एवं राजसूय व अश्वमेध यज्ञों के समान फल देने वाला है ॥६॥

इस राधाकवच का माहात्म्य जाने बिना जो राधा मन्त्र का जाप करता है, उसे मन्त्र जाप का फल नहीं मिलता, पद-पद पर उसे विघ्न घेरे रहते हैं ॥७॥

इस राधाकवच के ऋषि महादेव हैं, अनुष्टुप् छन्द है, राधा देवता है, 'रां' बीज कीलक कहा गया है ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
श्रीराधा मे शिरः पातु ललाटं राधिका तथा ॥९॥
श्रीमती नेत्रयुगलं कर्णौ गोपेन्द्रनन्दिनी ।
हरिप्रिया नासिकां च भ्रू युग्मं शशिशोभना ॥१०॥
ओष्ठं पातु कृपादेवी अधरं गोपिका तथा ।
वृषभानुसुता दन्तांश्चिबुकं गोपनन्दिनी ॥११॥
चन्द्रावली पातु गण्डं जिह्वां कृष्णप्रिया तथा ।
कण्ठं पातु हरिप्राणा हृदयं विजया तथा ॥१२॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सम्पादन में इसका विनियोग किया जाना बताया गया है। श्री राधा मेरे शिर की रक्षा करें, ललाट भाग की राधिका रक्षा करें ॥९॥

दोनों आंखों की श्रीमती रक्षा करें, दोनों कानों की गोपेन्द्रनन्दिनी (कृष्ण की प्रिया) रक्षा करें, हरिप्रिया नाक की रक्षा करें एवं दोनों भौंओं की (चन्द्रमा की तरह सुन्दर) शशि शोभना रक्षा करें ॥१०॥

कृपादेवी होठ की रक्षा करें, अधर की गोपिका रक्षा करें। वृषभानु की लाडली दाँतों की रक्षा करें एवं गोपनन्दिनी ठोढ़ी की रक्षा करें ॥११॥

गालों की चन्द्रावली रक्षा करें, कृष्णप्रिया जीभ की रक्षा करें, हरिप्राणा गले की रक्षा करें एवं विजया देवी हृदय की रक्षा करें ॥१२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाहू द्वौ चन्द्रवदना उदरं सुबलस्वसा ।
कोटियोगान्विता पातु पादौ सौभद्रिका तथा ॥१३॥

नखांश्चन्द्रमुखी पातु गुल्फौ गोपालवल्लभा ।
नखान्विधुमुखी देवी गोपी पादतलं तथा ॥१४॥

शुभप्रदा पातु पृष्ठं कुक्षौ श्रीकान्तवल्लभा ।
जानुदेशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः ॥१५॥

वाक्यं वाणी सदा पातु धनागारं धनेश्वरी ।
पूर्वां दिशं कृष्णरता कृष्णप्राणा च पश्चिमाम् ॥१६॥

चन्द्रमा के समान शीतल शरीरवाली मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें, सुबल की बहिन पेट की रक्षा करें, करोड़ों योगों से युक्त सौभद्रिका मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें ॥१३॥

चन्द्रमुखी नाखून की रक्षा करें, टखनों की गोपालवल्लभा रक्षा करें, (पैर के) नखों की विधुमुखी देवी रक्षा करें एवं गोपी पैर के तलुवों को रक्षा करें ॥१४॥

शुभप्रदा पीठ की रक्षा करें, कोख की श्रीकान्तवल्लभा रक्षा करें, उदर से नीचे के प्रदेश की जया रक्षा करें और हरिणी सब ओर की रक्षा करें ॥१५॥

वाक्य की वाणी रक्षा करें, धनेश्वरी ख़ज़ाने की रक्षा करें, कृष्णरता पूर्व दिशा में रक्षा करें एवं पश्चिम दिशा में कृष्णप्राणा रक्षा करें ॥१६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तरां हरिता पातु दक्षिणां वृषभानुजा ।
चन्द्रावली नैशमेव दिवा क्ष्वेडितमेखला ॥१७॥
सौभाग्यदा मध्यदिने सायाह्ने कामरूपिणी ।
रौद्री प्रातः पातु मां हि गोपिनी रजनीक्षये ॥१८॥
हेतुदा संगवे पातु केतुमाला दिवार्धके ।
शेषाऽपराह्नसमये शमिता सर्वसंधिषु ॥१९॥
योगिनी भोगसमये रतौ रतिप्रदा सदा ।
कामेशी कौतुके नित्यं योगे रत्नावली मम ॥२०॥

उत्तर दिशा में हरिता देवी रक्षा करें, दक्षिण दिशा में वृषभानुजा रक्षा करें, रात्रि में चन्द्रावली रक्षा करें और क्ष्वेडितमेखला (हिलती हुई मेखला वाली) दिन में रक्षा करें ॥१७॥

दोपहर में सौभाग्यदा रक्षा करें, सायं में कामरूपिणी रक्षा करें, प्रातःकाल में रौद्री देवी रक्षा करें एवं ब्राह्ममुहूर्त में गोपिनी रक्षा करें ॥१८॥

गोधूलिवेला में हेतुदा रक्षा करें, ठीक दोपहरी में केतुमाला रक्षा करें, अपराह्न समय में शेषा रक्षा करें एवं सब समयों की संधिवेला में शमिता देवी जी रक्षा करें ॥१९॥

भोग के समय योगिनी देवी जी रक्षा करें, रतिक्रिया करते समय रतिप्रदा मेरी सदा रक्षा करें, कौतुक में कामेशी हमेशा रक्षा करें, योग में रत्नावली मेरी रक्षा करें ॥२०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वदा सर्वकार्येषु राधिका कृष्णमानसा ।
इत्येतत्कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ॥२१॥

सर्वरक्षाकरं नाम महारक्षाकरं परम् ।
प्रातर्मध्याह्नसमये सायाह्ने प्रपठेद्यदि ॥२२॥

सर्वार्थसिद्धिस्तस्य स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते ।
राजद्वारे सभायां च संग्रामे शत्रुसंकटे ।२३॥

प्राणार्थनाशसमये यः पठेत्प्रयतो नरः ।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि न भयं विद्यते क्वचित् ॥२४॥

कृष्ण में निरन्तर मन वाली राधिका देवी सब कार्यों में हमेशा मेरी रक्षा करें। हे पार्वती देवी ! इस प्रकार परम अद्भुत राधाकवच को मैंने तुझे कहा ॥२१॥

यह सब की रक्षा करता है, रक्षा करने वाले कवचों में सब से महान् एवं श्रेष्ठ है। जो इसका प्रातः, मध्याह्न एवं सायं पाठ करता है, उसके मन में जो-जो इच्छा होती है, सब पूरी हो जाती है। जो भी मनुष्य राजद्वार, सभा, संग्राम में जाते समय अथवा शत्रु के संकट समय में, प्राण एवं धन नाश प्रसंग आ जाने पर एकाग्रचित्त से इस राधाकवच का पाठ करता है, उसे अपने कार्य में सफलता मिलती है तथा उसे कहीं भी डर नहीं होता ॥२२-२३-२४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आराधिता राधिका च तेन सत्यं न संशयः ।
गंगास्नानाद्धरेर्नामग्रहणाद्यत्फलं लभेत् ॥२५॥

तत्फलं तस्य भवति यः पठेत्प्रयतः शुचिः ।
हरिद्रारोचनाचन्द्रमण्डितं हरिचन्दनम् ॥२६॥

कृत्वा लिखित्वा भूर्जे च धारयेन्मस्तके भुजे ।
कण्ठे वा देवदेवेशि स हरिर्नात्र संशयः ॥२७॥

कवचस्य प्रसादेन ब्रह्मा सृष्टिं स्थितिं हरिः ।
संहारं चाहं नियतं करोमि कुरुते तथा ॥२८॥

उसने राधिका की पूजा कर ली, इसमें कोई संशय नहीं । गंगास्नान अथवा भगवन्नाम संकीर्तन का जो फल मिलता है, राधाकवच का शुद्ध एवं एकाग्र मन से पाठ करने वाले को वही फल मिलता है। हल्दी, कुंकुम, मलयचन्दन एवं हरिचन्दन को अच्छी प्रकार घिस कर भोजपत्र पर इस राधाकवच को लिखकर जो मस्तक, भुजा अथवा कण्ठ में धारण करता है, हे पार्वती ! वह साक्षात् भगवत्स्वरूप हो जाता है, इसमें जरा भी संशय नहीं है ॥२५-२६-२७॥

इसी राधाकवच की कृपा से ब्रह्मा सृष्टि का कार्य, विष्णु पालनकर्म एवं मैं संहार क्रिया नियम से करता हूँ एवं यही नियम से होता रहता है ॥२८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैष्णवाय विशुद्धाय विरागगुणशालिने ।
दद्यात्कवचमव्यग्रमन्यथा नाशमाप्नुयात् ॥२६॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे राधाकवचं समाप्तम् ॥

चतुःश्लोकीभागवतम्

श्रीभगवानुवाच—

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् ।
सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया ॥१॥
यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः ।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥२॥

इस राधाकवच का उपदेश उसे ही देना चाहिए जो वैष्णव हो, पवित्र हो, वैराग्य गुणयुक्त एवं प्रसन्न चित्त रहता हो अन्यथा इसका प्रभाव नष्ट हो जाता है ॥२६॥

श्री भगवान् बोले—

हे ब्रह्मा जी ! रहस्य, अङ्ग एवं विज्ञान से युक्त मेरा परम गोपनीय जो ज्ञान है, उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ, इसे समझने का प्रयत्न करो ॥१॥

मैं जितना हूँ, जिस भाव से युक्त हूँ, जिस रूप, गुण एवं कर्मों वाला हूँ, हे ब्रह्मा जी ! वही तत्त्वज्ञान मेरी कृपा से तुम्हें प्राप्त हो ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत्सदसत्परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥३॥

ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथा तमः ॥४॥

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥५॥

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः ।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥६॥

सृष्टि के आदि में केवल मैं ही था, इससे भिन्न सत्, असत् अथवा उभयात्मक कुछ नहीं था। प्रलय होने पर भी केवल मैं ही अवशिष्ट रह जाता हूँ ॥३॥

जिन वस्तुओं को प्रतीति अथवा अप्रतीति होती है, मेरे बिना कुछ भी न होने से वह माया समझनी चाहिए। सूर्य में अन्धकार जिस प्रकार नहीं रहता, उसी प्रकार आत्मा में यह सब द्वैत संभव नहीं ॥४॥

जैसे छोटे बड़े प्राणियों में पञ्च महाभूत संयुक्त और वियुक्त होते रहते हैं, वैसे नाशवान् पञ्चभूतों के बनने-बिगड़ने से मुझ अविकारी चेतन आत्मा में कुछ नहीं होता ॥५॥

इस प्रकार अन्वय-व्यतिरेक से तत्त्वजिज्ञासु को सर्वत्र मेरी ही स्थिति का साक्षात्कार करना चाहिए ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना ।
भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ॥७॥

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१॥

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥२॥

हे ब्रह्मा जी ! तुम परम समाधि में लीन होकर मेरे इस तत्त्वज्ञान का अनुष्ठान करो, इसके अनुष्ठान से आपको कल्प-विकल्पों तक माया कभी मोहित नहीं करेगी ॥७॥

—०—

ब्रह्म के 'ओ३म्' इस एकाक्षर नाम का उच्चारण कर मुझे स्मरण करते हुए जो देह त्याग करता है, वह परम पद को प्राप्त करता है ॥१॥

हे भगवन् ! यह उचित ही है कि जो आपकी महिमा के कीर्तन से संसार अति प्रसन्न एवं अनुरक्ति को प्राप्त होता है, राक्षस लोग डर के मारे दिशाओं में भागते हैं, सभी सिद्ध समुदाय आपको नमस्कार करता है ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।४
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥५॥
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥६॥

वह ब्रह्म सब ओर हाथ पैर वाला, सब ओर नेत्र, शिर और मुख वाला, तथा सब ओर श्रोत्र वाला है क्योंकि वह सब को व्याप्त करके स्थित है ॥३॥

जो पुरुष, सर्वद्रष्टा, अनादि, सबके प्रशासक, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, सबको धारण करने वाले, अनिर्वचनीय स्वरूप, आदित्य के समान ज्योतिस्वरूप, अविद्यातीत परमात्मा का स्मरण करता है, (वह उसे ही प्राप्त होता है) ॥४॥

इस संसार रूपी अश्वत्थ का मूल परमात्मा एवं ब्रह्मा मुख्य शाखावाला है, इसे अविनाशी कहा जाता है, वेद इसके पत्ते हैं, जो इस मूल तत्त्व को जानता है, वही वेद के तात्पर्य को जानने वाला है ॥५॥

मैं सब के हृदय में अन्तर्यामी रूप से प्रविष्ट रहता हूं मेरे द्वारा ही स्मृति, ज्ञान और संशय का नाश होता है, चारों वेदों द्वारा मैं ही जानने योग्य हूँ, उपनिषदों का कर्ता एवं वेदों का जानने वाला भी मैं ही हूँ ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥७॥

श्रीकृष्णस्तोत्रम्

वन्दे नवघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ।
सानन्दं सुन्दरं शुद्धं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम् ॥१॥
राधेशं राधिकाप्राणवल्लभं वल्लवीसुतम् ।
राधासेवितपादाब्जं राधावक्षःस्थलस्थितम् ॥२॥
राधानुगं राधिकेष्टं राधापहृतमानसम् ।
राधाधारं भवाधारं सर्वाधारं नमामि तम् ॥३॥

मेरे में मन लगा, मेरी उपासना कर, मेरी प्रसन्नता के लिए याग कर, मुझे ही नमस्कार कर; इस प्रकार मेरी शरण हुआ तू आत्मा को मेरे में युक्त होकर मुझे ही प्राप्त होगा ॥७॥

—०—

नूतन घन के समान श्याम वर्ण वाले, पीले रेशमी वस्त्र धारण करने वाले, आनन्द से पूर्ण, सुन्दर, शुद्ध प्रकृति से अतीत भगवान् श्री कृष्ण को नमस्कार है ॥१॥

जो राधा के प्रियतम, राधा जी के प्राणों के प्यारे, गोप बालक, राधा जी से उपासित चरणकमलों वाले, राधा के हृदय में रहने वाले, राधा जी के अनुयायी, राधिका के एकमात्र प्रिय, राधा द्वारा चुराये गए हृदय वाले, राधा के जीवनाधार, संसार के मूल कारण सर्वाधार हैं, उन्हें नमस्कार है ॥२-३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधाहृत्पद्ममध्ये च वसन्तं संततं शुभम् ।
राधासहचरं शश्वद्राधाज्ञापरिपालकम् ॥४॥
ध्यायन्ते योगिनो योगात् सिद्धाः सिद्धेश्वराश्च यम् ।
तं ध्यायेत्संततं शुद्धं भगवन्तं सनातनम् ॥५॥
सेवन्ते सततं सन्तो ब्रह्मेशशेषसञ्ज्ञकाः ।
सेवन्ते निर्गुणं ब्रह्म भगवन्तं सनातनम् ॥६।
निर्लिप्तं च निरीहं च परमात्मानमीश्वरम् ।
नित्यं सत्यं च परमं भगवन्तं सनातनम् ॥७॥
यं सृष्टेरादिभूतं च सर्वबीजं परात्परम् ।
योगिनस्तं प्रपद्यन्ते भगवन्तं सनातनम् ।।८॥

राधा जी के हृदय कमल में हमेशा निवास करने वाले, कल्याणस्वरूप, राधा के नित्यानुचर, राधा की आज्ञा में रहने वाले भगवान् कृष्ण हैं, योगी, सिद्ध, सिद्धेश्वर जिसका योगमार्ग द्वारा ध्यान करते हैं, उन शुद्ध, सनातन ब्रह्म का निरन्तर ध्यान करे ॥४-५॥

ब्रह्मा, शंकर एवं शेष भी उस निर्गुण ब्रह्म सनातन भगवान् कृष्ण की निरन्तर सेवा करते हैं ॥६॥

उस निर्लिप्त, आप्तकाम, परमात्मा, सर्वनियन्ता, नित्य, सत्य, परम सनातन भगवान्, सृष्टि के आदि कारण, सबके हेतु, परात्पर भगवान् श्रीकृष्ण की योगी उपासना करते हैं ॥७-८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीजं नानावताराणां सर्वकारणकारणम् ।
वेदावेद्यं वेदबीजं वेदकारणकारणम् ।
योगिनस्तं प्रपद्यन्ते भगवन्तं सनातनम् ॥९॥
इत्येवमुक्त्वा गन्धर्वः पपात धरणीतले ।
ननाम दण्डवद्भूमौ देवदेवं परात्परम् ॥१०॥
इति तेन कृतं स्तोत्रं यः पठेत्प्रयतः शुचिः ।
इहैव जीवन्मुक्तश्च परं याति परां गतिम् ॥११॥
हरिभक्तिं हरेर्दास्यं गोलोकश्च निरामयः ।
पार्षदप्रवरत्वं च लभते नात्र संशयः ॥१२॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे श्रीकृष्णस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जो नाना अवतारों के प्रेरणा स्रोत हैं, सब कारणों के कारण हैं, जिसकी महिमा वेद भी नहीं जान सकते, अपौरुषेय वेदों के कारण, ब्रह्मा के भी कारण हैं, उन सनातन भगवान् श्रीकृष्ण को योगी भी उपासना करते हैं ।।९।।

इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति कर वह गन्धर्व पृथिवी पर गिर पड़ा और देवाधिदेव परात्पर ब्रह्म को, भूमि में दण्ड के समान पड़कर प्रणाम करने लगा ।।१०।।

गन्धर्वकृत इस स्तोत्र को जो पवित्र होकर एकाग्रचित्त से पाठ करता है, वह इस संसार में ही जीवन्मुक्त होकर यहाँ से जाने पर परम गति को प्राप्त करता है ।।११।।

वह हरि भक्ति, हरि-दास्य, परम शान्त गोलोकधाम, भगवत्पार्षदों में श्रेष्ठता की प्राप्ति करता है; इसमें कोई सन्देह नहीं है ।।१२।।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

अस्य श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य श्रीशेषः ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्णो देवता। श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामजपे विनियोगः।

शेष उवाच—

श्रीकृष्णः कमलानाथो वासुदेवः सनातनः।
वसुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः ॥१॥
श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः।
चतुर्भुजात्तचक्रासिगदाशङ्खाम्बुजायुधः ।२॥

इस भगवान् श्रीकृष्ण के एक सौ आठ नामों के स्तोत्र के ऋषि श्री शेष जी हैं, अनुष्टुप् छन्द, श्रीकृष्ण देवता हैं, श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के लिए भगवान् के एक सौ आठ नाम जप में इसका विनियोग है।

शेष जी बोले—

श्रीकृष्ण, कमलापति, वासुदेव, सनातन, वसुदेव के पुत्र, पुण्यशील, लीला से मनुष्य का विग्रह धारण करने वाले ॥१॥

श्रीवत्स और कौस्तुभ मणि को धारण करने वाले, यशोदा माता के लाडले, हरि, चारों भुजाओं में चक्र तलवार, गदा शङ्ख-कमल आयुधों को धारण करने वाले ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवकीनन्दनः श्रीशो नन्दगोपप्रियात्मजः ।
यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुजः ॥३॥
पूतनाजीवितहरः शकटासुरभञ्जनः ।
नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्दविग्रहः ॥४॥
नवनीतनवाहारी मुचुकुन्दप्रसादकः ।
षोडशस्त्रीसहस्रेशस्त्रिभङ्गमधुराकृतिः ॥५॥
शुकवागमृताब्धीन्दुर्गोविन्दो गोविदां पतिः ।
वत्सपालनसंचारी धेनुकासुरभञ्जनः ॥६॥
तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभञ्जनः ।
उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः ॥७॥

देवकी के नन्दन, लक्ष्मीपति, नन्दगोप के प्रिय पुत्र, यमुना के वेग का संहार करने वाले, बलभद्र के प्रिय भ्राता ॥३॥

पूतना राक्षसी के प्राण हरने वाले, शकटासुर का नाश करने वाले, नन्द और व्रज के लोगों को आनन्द देने वाले, सच्चिदानन्द विग्रह वाले ॥४॥

ताजे माखन का भोग लगाने वाले, मुचुकुन्द पर कृपा करने वाले, सोलह हजार स्त्रियों का मन मुग्ध करने वाले, त्रिभङ्गी रूप मधुर आकृति वाले ॥५॥

श्रीमद्भागवतामृत सागर के चन्द्रमा, गोविन्द, सब प्राणियों के नियन्ता, गो-बछड़ों के पालन में संचरण करने वाले, धेनुकासुर को वध करने वाले ॥६॥

तृणावर्त को मोक्ष देने वाले, यमलार्जुन को उनका अपना रूप देने वाले, उत्ताल ताड़वन को विनष्ट करने वाले, तमाल के समान साँवली आकृति वाले ॥७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोपगोपीश्वरो योगी सूर्यकोटिसमप्रभः ।
इलापतिः परंज्योतिर्यादवेन्द्रो यदूद्वहः ॥८॥
वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः ।
गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपालः सर्वपालकः ॥९॥
अजो निरञ्जनः कामजनकः कञ्जलोचनः ।
मधुहा मथुरानाथो द्वारकानायको बली ॥१०॥
वृन्दावनान्तःसंचारी तुलसीदामभूषणः ।
स्यमन्तकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मकः ॥११॥

गोप-गोपियों के सर्वस्व, योगो, कोटि सूर्य के समान प्रभाव वाले, ्लापति, परं ज्योति, यादवपति, यदुवंश का भार वहन करने वाले ॥८॥

वनमाली, पीताम्बरधारी, स्वर्गलोक से पारिजात को लाने वाले, गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले, गौओं के रक्षक, सबका पालन करने वाले ॥९॥

अजन्मा, विशुद्ध, कामदेव के पिता, सुन्दर नयनों वाले, मधुराक्षस को मारने वाले, मथुरापति, द्वारका के नायक, बलशाली ॥१०॥

वृन्दावन की भूमि में विहार करने वाले, तुलसी और यशोदा की रस्सी से बंध जाने वाले, स्यमन्तकमणि का हरण करने वाले, नर नारायण स्वरूप ॥११॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुब्जाकृष्णाम्बरधरो मायो परमपूरुषः ।
मुष्टिकासुरचाणूरमहायुद्धविशारदः ॥१२॥
संसारवैरी कंसारिर्मुरारिर्नरकान्तकः ।
अनादिर्ब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः ॥१३॥
शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलान्तकृत् ।
विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपप्रदर्शकः ॥१४॥
सत्यवाक् सत्यसंकल्पः सत्यभामारतो जयी ।
सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः ॥१५॥
जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुवाद्यविशारदः ।
वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरबलान्तकृत् ॥१६॥

कुब्जा और द्रौपदी के लिए वस्त्र रूप बन जाने वाले, लीलाधारी, परम पुरुष, मुष्टिकासुर एवं चाणूर के साथ महायुद्ध करने में निपुण ॥१२॥

संसार से मुक्ति दिलाने वाले, कंस शत्रु, मुर दैत्य को मारने वाले, नरकासुर घाती, अनादि, ब्रह्म (अपने स्वरूप) में स्थित, पापों को मिटाने वाले ॥१३॥

शिशुपाल का शिर काटने वाले, दुर्योधन के कुल का अन्त करने वाले, विदुर और अक्रूर पर कृपा करने वाले, विश्वरूप के दर्शन कराने वाले ॥१४॥

सत्यवादी, सत्य संकल्प वाले, सत्यभामा के प्रिय महाभारत में पाण्डवों को विजय दिलाने वाले, सुभद्रा के बड़े भ्राता, सर्वव्यापक, भीष्म को मुक्ति दिलाने वाले ॥१५॥

जगद्गुरु, जगन्नाथ, बाँसुरी बजाने में कुशल, वृषभासुर को मारने वाले, बाणासुर के बल का अन्त करने वाले ॥१६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः ।
पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः ॥१७॥

कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः ।
दामोदरो यज्ञभोक्ता दानवेन्द्रविनाशनः ॥१८॥

नारायणः परब्रह्म पन्नगाशनवाहनः ।
जलक्रीडासमासक्तगोपीवस्त्रापहारकः ॥१९॥

पुण्यश्लोकस्तीर्थंकरो वेदवेद्यो दयानिधिः ।
सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपी परात्परः ॥२०॥

राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले, मयूर पंख का मुकुट धारण करने वाले, अर्जुन के सारथि, अव्यक्त, श्रीमद्भगवद्गीता रूपी अमृत के समुद्र ॥१७॥

कालिय नाग की फणि की मणियों से शोभित चरणकमलों वाले, दामोदर, यज्ञभोक्ता, राक्षसराज रावण को मारने वाले ॥१८॥

नारायण, परब्रह्म, शेषशायी, जलक्रीड़ा में लगी हुई गोपियों के वस्त्रों को चुराने वाले ॥१९॥

नाम संकीर्तन से पुण्य बढ़ाने वाले, तीर्थंकर्ता, वेदों से जानने योग्य, दयानिधान, सर्वतीर्थ स्वरूप, सबको ग्रसने वाले और परम श्रेष्ठ ॥२०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्येवं कृष्णदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
कृष्णेन कृष्णभक्तेन श्रुत्वा गीतामृतं पुरा ॥२१॥
स्तोत्रं कृष्णप्रियकरं कृतं तस्मान्मया पुरा ।
कृष्णनामामृतं नाम परमानन्ददायकम् ॥२२॥
अनुपद्रवदुःखघ्नं परमायुष्यवर्धनम् ।
दानं श्रुतं तपस्तीर्थं यत्कृतं त्विह जन्मनि ॥२३॥
पठतां शृण्वतां चैव कोटिकोटिगुणं भवेत् ।
पुत्रप्रदमपुत्राणामगतीनां गतिप्रदम् ॥२४॥
धनावहं दरिद्राणां जयेच्छूनां जयावहम् ।
शिशूनां गोकुलानां च पुष्टिदं पुष्टिवर्धनम् ॥२५॥

इस प्रकार भगवान् श्री कृष्ण के एक सौ आठ नामों वाला यह स्तोत्र भगवान् कृष्ण एवं कृष्ण भक्त से मैंने गीतामृत को सुना तत्पश्चात् मैंने भगवान् श्री कृष्ण की प्रसन्नता के लिए इस स्तोत्र का ग्रथन किया। इस कृष्णनामामृत स्तोत्र का पाठ परमानन्द का देने वाला है ॥२१-२२॥

यह स्तोत्र विघ्नों को दूर करने वाला, दुःख को मिटाने वाला, दीर्घायु करने वाला है। इस जन्म में किए हुए दान, वेदाध्ययन, तप एवं तीर्थाटन का स्तोत्र पाठ या श्रवण करने वाले को करोड़-करोड़ गुणा फल मिलता है। अपुत्रवान् को पुत्रप्रदान करने वाला है, जिनकी गति नहीं होती, उन्हें गति दिलाने वाला है। २३-२४.।

दरिद्रों को धन देने वाला, विजयेच्छुओं को जय देने वाला, बालकों एवं गोवंश को शक्ति देने वाला एवं पुष्टि बढ़ाने वाला है ॥२५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वातग्रहज्वरादीनां शमनं शान्तिमुक्तिदम् ।
समस्तकामदं सद्यः कोटिजन्माघनाशनम् ॥२६॥
अन्ते कृष्णस्मरणदं भवतापभयापहम् ।
कृष्णाय यादवेन्द्राय ज्ञानमुद्राय योगिने ।
नाथाय रुक्मिणीशाय नमो वेदान्तवेदिने ॥२७॥
इमं मन्त्रं महादेव जपन्नेव दिवानिशम् ।
सर्वग्रहानुग्रहभाक् सर्वप्रियतमो भवेत् ॥२८॥
पुत्रपौत्रैः परिवृतः सर्वसिद्धिसमृद्धिमान् ।
निर्विश्य भोगानन्तेऽपि कृष्णसायुज्यमाप्नुयात् ॥२९॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे उमामहेश्वरसंवादे धरणीशेषसंवादे श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

वात, ग्रह एवं ज्वरादि को दूर करने वाला, शान्ति और मुक्ति को देने वाला है, समस्त कामनाओं की शीघ्र पूर्ति करने वाला एवं कोटि जन्मों के पापों को नाश करने वाला है ॥२६॥

मृत्यु के समय में भगवान् श्री कृष्ण की स्मृति दिलाने वाला, आवागमन रूप ताप के भय को दूर करने वाला है, यादव कुल के शिरोमणि, ज्ञानमुद्रा में स्थित, महायोगी, संसार के स्वामी रुक्मिणी के पति एवं वेदान्त-वेद्य भगवान् श्री कृष्ण को नमस्कार है ॥२७॥

इस मन्त्र को दिन-रात जपते हुए ही महादेव सर्व प्राणियों पर कृपा करने योग्य एवं सब के प्रियतम बने हैं ॥२८॥

इस के पाठ से पुत्र-पौत्रों से युक्त हुआ, सब सिद्धि और समृद्धियों से युक्त होता है, सब भोग-सामग्री का उपभोग कर अन्त समय भगवद्धाम की प्राप्ति करता है ॥२९॥

—o—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीहरिशरणाष्टकम् ।

ध्येयं वदन्ति शिवमेव हि केचिदन्ये
शक्तिं गणेशमपरे तु दिवाकरं वै ।
रूपैस्तु तैरपि विभासि यतस्त्वमेक-
स्तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥१॥

नो सोदरो न जनको जननी न जाया
नैवात्मजो न च कुलं विपुलं बलं वा ।
संदृश्यते न किल कोऽपि सहायको मे
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥२॥

नोपासिता मदमपास्य मया महान्त-
स्तीर्थानि चास्तिकधिया नहि सेवितानि ।
देवार्चनं च विधिवन्न कृतं कदापि
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥३॥

कुछ लोग शिव को परम तत्त्व बताते हैं, अन्य भगवती माँ, गणेश अथवा सूर्य को बताते हैं। हे भगवान् विष्णु ! उन सभी रूपों में आप ही विद्यमान हो, मैं आपकी ही शरण में हूँ ॥१॥

मुझे अपना न कोई भाई, न कोई पिता, न माँ, न पत्नी, न पुत्र, न कुल, न बड़ी शक्ति और न ही कोई सहायक दीखता है, हे हरि ! मैं आपकी ही शरण में हूँ ॥२॥

अहं मद को दूर कर न ही मैंने महापुरुषों की संगति की, न ही आस्तिक बुद्धि से तीर्थों का सेवन किया, कभी विधिपूर्वक भगवत्पूजा भी न की, इसलिए हे हरि ! मैं एकमात्र आपकी आपकी शरण में हूँ ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्वासना मम सदा परिकर्षयन्ति
चित्तं शरीरमपि रोगगणा दहन्ति ।
संजीवनं च परहस्तगतं सदैव
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥४॥
पूर्वं कृतानि दुरितानि मया तु यानि
स्मृत्वाऽखिलानि हृदयं परिकम्पते मे ।
ख्याता च ते पतितपावनता तु यस्मात्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥५॥
दुःखं जराजननजं विविधाश्च रोगाः
काकश्वसूकरजनीर्निरये च पातः ।
ते विस्मृतेः फलमिदं विततं हि लोके
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥६॥

कुवासनाएँ मुझे हमेशा अपनी ओर आकर्षित करती हैं, रोगों के समूह से शरीर हमेशा जलता रहता है, मुझमें प्राणों का संचार किसी अन्य से हो सदा हुआ करता है, इसलिए हे भगवान् हरि ! मैं आपकी शरण में हूँ ॥४॥

मैंने जो भी पाप पहले किए हैं, उनकी स्मृति से ही मेरा हृदय काँप उठता है, आप तो पतितों को पावन करने में प्रसिद्ध हैं, इसलिए हे हरि ! मैं आपकी शरण में हूँ ॥५॥

जरा और जन्म से होने वाला दुःख, नाना प्रकार के रोग, कौवे, कुत्ते और सूअर की योनियों में जन्म और नरकगमन; संसार में यह सब तुम्हारी विस्मृति के कारण ही है, अतः हे भगवन् ! मैं आपकी शरण में हूँ ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीचोऽपि पापवलितोऽपि विनिन्दितोऽपि
ब्रूयात्तवाहमिति यस्तु किलैकवारम् ।
तं यच्छसीश निजलोकमिति व्रतं ते
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥७॥
वेदेषु धर्मवचनेषु तथागमेषु
रामायणेऽपि च पुराणकदम्बके वा ।
सर्वत्र सर्वविधिना गदितस्त्वमेव
तस्मात्त्वमेव शरणं मम शङ्खपाणे ॥८॥

जगन्नाथाष्टकम्

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसंगीततरलो
मुदाभीरीनारीवदनकमलास्वादमधुपः ।

कितना भी नीच, पापी, निन्दित क्यों न हो, जो "मैं आपका हूँ" ऐसे एक बार भी कहता है. उसे आप अपना धाम दे देते हो, ऐसा आपका व्रत है, इसलिए हे भगवन् ! मैं आपकी शरण में हूँ ॥७॥

वेद, धर्मशास्त्र, आगमग्रन्थ, रामायण एवं पुराणों ने सर्वत्र, सब प्रकार से आपकी महिमा का गान किया है, इसलिए हे प्रभो ! मैं आपकी ही शरण में हूँ ॥८॥

—०—

हे भगवान् जगन्नाथ ! आप मुझे दर्शन दीजिए ! आप कभी यमुना के तट के वन की संगीत लहरी एवं कभी प्रसन्न गोप-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रमाशम्भुब्रह्मामरपतिगणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरकटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावनवसतिलीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥२॥
महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसत्प्रासादान्तः सहजबलभद्रेण बलिना।
सुभद्रामध्यस्थः सकलसुरसेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥३॥

रमणियों के मुख कमल के आस्वाद का आनन्द लेते हो, लक्ष्मी, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, गणेश आपके चरणकमलों की वन्दना करते रहते हैं ॥१॥

आपकी बाईं भुजा में बाँसुरी, शिर पर मोर पंख का मुकुट, कमर में फेंटा कसे, नयनों से अपने साथी ग्वाल-बालों पर चितवन करने वाले सदा वृन्दावन धाम को अपनी लीलास्थली बनाने वाले हे भगवान् कृष्ण! आप हमें दर्शन दीजिए ॥२॥

पुरी में समुद्र के किनारे स्वर्णिम शोभा वाले नीलांचल पर्वत के विशाल मन्दिर में अपने भाई बलशाली बलराम एवं मध्य में बहिन सुभद्रा के सहित विराजमान हैं। सभी देवताओं को सेवा का अवसर देने वाले भगवान् जगन्नाथ! आप हमें दर्शन दीजिए ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथापारावार: सजलजलदश्रेणिरुचिरो
रमावाणीरामस्फुरदमलपद्मेक्षणमुखैः ।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखागीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥४॥

रथारूढो गच्छन्पथि मिलितभूदेवपटलैः
स्तुतिप्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥५॥

परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो
निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि ।

अनन्त महिमा वाले, सजल मेघ पंक्ति के समान कमनीय कान्ति वाले, लक्ष्मी, सरस्वती, विष्णु एवं खिले हुए श्वेत कमलों की दृष्टि वाले मुखों से देवताओं द्वारा पूजित, वेदों के प्रतिपाद्य विषय जगन्नाथ भगवान् हमें दर्शन देने की कृपा करें ॥४॥

रथ यात्रा के उत्सव प्रसंग में आरूढ़ हो मार्ग में जाते हुए समवेत ब्राह्मणसमूह के स्तुति गान को कृपापूर्वक पद-पद पर सुनते हुए करुणा-वरुणालय पृथ्वी के माध्यम से सब प्राणियों के बन्धु हैं, ऐसे भगवान् जगन्नाथ हमें दर्शन देकर अनुगृहीत करें ॥५॥

परब्रह्म का सारभूत स्वरूप, खिले हुए कमल दल के समान नयनों वाले, नीलांचल वासी, शेषनाग की शय्या पर विश्राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।६।।

न वै प्रार्थ्यं राज्यं न च कनकतां भोगविभवं
न याचेऽहं रम्यां निखिलजनकाम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।७।।

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते ।
अहो दीनानाथं निहितमचलं निश्चितपदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।८।।

करने वाले, रस में आनन्द अनुभव करने वाले, श्री राधा जी के आह्लादक शरीर के आलिङ्गन में सुखानुभूति करने वाले जगन्नाथ कृष्ण मुझे दर्शन देने की कृपा करें ।।६।।

मुझे राज्य नहीं चाहिए, सोना और भोगों का वैभव नहीं चाहिए। त्रिभुवन सुन्दरी शुभ गुणों से युक्त रमणीय पत्नी भी आप से क्या माँगूं। सदा हर समय गन्धर्वराज से स्तुत कीर्ति वाले जगन्नाथ भगवान् मुझे दर्शन देते रहें, यही मेरी कामना है ।।७।।

हे देवताओं के स्वामी ! इस असार संसार से मुझे शीघ्र ही छुटकारा दिलवाइये, हे यादव वंश में श्रेष्ठ ! पापों की अत्यन्त व्याप्तता को समाप्त कर दीजिए ! अब तो मेरी दीनबन्धु भगवान् में सुदृढ़ निश्चयात्मिका बुद्धि हो गई है। हे मेरे जगन्नाथजी महाराज ! आप दर्शन देकर कृतार्थ करें ।।८।।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डुरङ्गाष्टकम्

महायोगपीठे भीमरथ्यां
वरं पुण्डरीकाय दातुं मुनीन्द्रैः ।
समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्दं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥१॥

तडिद्वाससं नीलमेघावभासं
रमामन्दिरं सुन्दरं चित्प्रकाशम् ।
वरं त्विष्टिकायां समन्यस्तपादं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥२॥

प्रमाणं भवाब्धेरिदं मामकानां
नितम्बः कराभ्यां धृतो येन तस्मात् ।

भीमानदी के तट पर, ऋषि-महर्षियों सहित पुण्डरीक को वर देने के लिए आकर महायोगपीठ में विराजमान होने वाले आनन्दघन, परब्रह्मस्वरूप श्री पाण्डुरङ्ग भगवान् को मैं उपासना करता हूँ ॥१॥

विद्युत् के समान कान्ति वाले, नीलमेघ के समान आभा वाले, लक्ष्मी के आश्रय, कमनीय, स्वयंप्रकाश, भक्त द्वारा प्रदत्त ईंट के आसन पर ही विराजमान साक्षात् भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं अनन्य शरण में हूँ ॥२॥

मेरे भवसागर का यह प्रमाण है ऐसा सोच कर नितम्बको हाथों पर धारण किया है; ब्रह्मा के आश्रय के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोश:
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥३॥
स्फुरत्कौस्तुभालङ्कृतं कण्ठदेशे
श्रिया जुष्टकेयूरकं श्रीनिवासम् ।
शिवं शान्तमीड्यं वरं लोकपालं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥४॥
शरच्चन्द्रबिम्बाननं चारुहासं
लसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डस्थलाङ्गम् ।
जपारागबिम्बाधरं कञ्जनेत्रं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥५॥

नाभिकमल धारण किया है, उन भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं शरण में हूँ ॥३॥

गले में हिलती हुई कौस्तुभमणि, केयूर की शोभा युक्त लक्ष्मी का निवास स्थान, शिव, शान्त, आनन्ददाता, श्रेष्ठ, लोकपाल परब्रह्म स्वरूप भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं उपासना करता हूँ ॥४॥

शरत्कालीन पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाले, मन्द मुस्कान वाले, कपोलों पर पड़ने वाले हिलते हुए कुण्डलों की शोभा वाले, जपाकुसुम के सदृश अधर, कजरारे नैन वाले, परब्रह्म स्वरूप भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं शरण में हूँ ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटोज्ज्वलत्सर्वदिक्प्रान्तभागं
सुरैरर्चितं दिव्यरत्नैरनर्घ्यैः।
त्रिभङ्गाकृतिं बर्हमाल्यावतंसं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥६॥
विभुं वेणुनादं चरन्तं दुरन्तं
स्वयं लीलया गोपवेषं दधानम्।
गवां वृन्दकानन्दनं चारुहासं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥७॥
अजं रुक्मिणीप्राणसंजीवनं तं
परं धाम कैवल्यमेकं तुरीयम्।
प्रसन्नं प्रसन्नार्तिहं देवदेवं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥८॥

जिनके किरीट से सब दिशाएँ आलोकित हो गई हैं, बहुमूल्य दिव्य रत्नों से देवता जिनकी पूजा करते हैं, त्रिभङ्गी वेश युक्त, वनमाला से विभूषित परब्रह्म स्वरूप भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं अनन्य शरण में हूँ ॥६॥

सर्व व्यापक, मुरलीनाद करने वाले, अनिर्वचनीय, लीला से स्वयं गोप वेष धारण करने वाले, गो-स्वामी, तुलसी के प्रिय, मधुर हास वाले परब्रह्म स्वरूप भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं शरण में हूं ॥७॥

अजन्मा, रुक्मिणी के प्राणों की संजीवनी शक्ति, तुरीय, कैवल्य, परम आश्रय, प्रसन्न, अनुकूल हो कष्ट दूर करने वाले देवाधिदेव भगवान् पाण्डुरङ्ग की मैं उपासना करता हूँ ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तवं पाण्डुरङ्गस्य वै पुण्यदं ये
पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या च नित्यम् ।
भवाम्भोनिधिं तेऽपि तीर्त्वाऽन्तकाले
हरेरालयं शाश्वतं प्राप्नुवन्ति ॥६।

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं पाण्डुरङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीवेङ्कटेश्वरमङ्गलस्तोत्रम्

श्रियः कान्ताय देवाय कल्याणनिधयेऽर्थिनाम् ।
श्रीवेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥१॥

लक्ष्मीसविभ्रमालोकसद्मविभ्रमचक्षुषे ।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥२॥

जो भी कोई एकाग्रचित्त हो श्रद्धापूर्वक इस पुण्यशाली पाण्डुरङ्ग स्तोत्र का नित्य पाठ करते हैं, वे भवसागर को पार कर अन्त समय भगवान् के परम पद को प्राप्त करते हैं ॥६॥

—o—

लक्ष्मीपति भगवान्, याचकों का कल्याण करने वाले, श्रीवेङ्कट पर्वत पर निवास करने वाले श्री वेङ्कटेश्वर भगवान् के लिए यह मङ्गल है ॥१॥

लक्ष्मी के मान युक्त दृष्टि प्रक्षेप से विभ्रमित दृष्टि वाले, सर्वलोक के सूर्य भगवान् वेङ्कटेश्वर के प्रीति हेतु यह मङ्गल है ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीवेङ्कटाद्रिशृङ्गाय मङ्गलाभरणाङ्घ्रये ।
मङ्गलानां निवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ।।३।।
सर्वावयवसौन्दर्यसंपदा सर्वचेतसाम् ।
सदा संमोहनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ।।४।।
नित्याय निरवद्याय सत्यानन्तचिदात्मने ।
सर्वान्तरात्मने श्रीमद्वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ।।५।।
स्वतः सर्वविदे सर्वशक्तये सर्वशेषिणे ।
सुलभाय सुशीलाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ।।६।।
परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने ।
प्रपन्नपरतत्त्वाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ।।७।।

श्री वेङ्कटाचल पर्वत रूप शिखर वाले, माङ्गलिक आभूषणों से युक्त चरणकमलों वाले, मङ्गलों के आश्रय भगवान् श्रीनिवास के लिए यह मङ्गल है ।।३।।

उनके सभी अवयवों के सौन्दर्य की सम्पदा सभी प्राणियों को सदा सम्मोहित करती रहे; इसी प्रार्थना के साथ भगवान् वेङ्कटेश्वर के लिए यह मङ्गल है ।।४।।

नित्य, निष्कल, सत्य, अनन्त, चैतन्य आत्मा, सर्वान्तरात्मा श्री भगवान् वेङ्कटेश्वर के प्रीति के लिए यह मङ्गल है ।।५।।

स्वयं सब कुछ जानने वाले, सर्वशक्तिमान्, प्रलय के बाद एकमात्र अवशिष्ट रहने वाले, भक्तों के लिए सुलभ, शीलवान् भगवान् वेङ्कटेश्वर के लिए यह मङ्गल है ।।६।।

परब्रह्म, पूर्णकाम, परमात्मा, परतत्त्ववेत्ता भगवान् वेङ्कटेश्वर के लिए यह मङ्गल है ।।७।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अकालतत्त्वविश्रान्तावात्मानमनुपश्यताम् ।
अतृप्तामृतरूपाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥८॥

प्रायः स्वचरणौ पुंसां शरणत्वेन पाणिना ।
कृपया दृश्यते श्रीमद्वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥९॥

दयामृततरङ्गिण्यस्तरङ्गैरपि शीतलैः ।
अपाङ्गैः सिञ्चते विश्वं वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥१०॥

स्रग्भूषाम्बरहेतीनां सुषमावहमूर्तये ।
सर्वार्तिशमनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥११॥

कालातीत तत्त्व की विश्रान्ति में आत्मा के चिन्तन में व्यासक्त, तृप्ति न होने वाले अमृतस्वरूप श्री वेङ्कटेश्वर भगवान् के लिए यह मङ्गल है ॥८॥

अपनी शरणागति में आये हुओं पर प्रायः वरद हस्त प्रदान कर भगवान् की कृपा देखी जाती है, ऐसे श्री वेङ्कटेश्वर प्रभु के लिए यह मङ्गल है ॥९॥

दया और अमृत की नदियों से भी शीतल कृपाकटाक्ष रूप तरङ्गों से संसार अभिसिञ्चित करते रहते हैं, ऐसे भगवान् वेङ्कटेश्वर की प्रीति के लिए यह मङ्गल है ॥१०॥

वस्त्र, आभूषण एवं माला आदि से विभूषित परम शोभायमान सबके दुःख की निवृत्ति के लिए श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान् के लिए यह मङ्गल है ॥११॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीवैंकुण्ठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे ।
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥१२॥

श्रीमत्सुन्दरजामातृमुनिमानसवासिने ।
सर्वलोकनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥१३॥

नमः श्रीवेङ्कटेशाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ।
वासुदेवाय शान्ताय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥१४॥

मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥१५॥

श्री वैकुण्ठधाम से उपरत होकर स्वामि-पुष्करिणी के तट में लक्ष्मी के साथ विलास करने वाले श्री वेङ्कटेश्वर भगवान् के लिए यह मङ्गल है ॥१२॥

श्रीमान् सुन्दर के जामाता, ऋषियों के हृदय में वास करने वाले, सभी जीवों के आश्रय भगवान् श्रीनिवास के लिए यह मङ्गल है ॥१३॥

विशुद्ध ज्ञान स्वरूप श्री वेङ्कटेश्वर भगवान् को नमस्कार है, वासुदेव, शान्तस्वरूप, भगवान् श्रीनिवास के लिए यह मङ्गल है ॥१ ॥

मङ्गल.गान के परायण आचार्यों को अग्रसर कर सभी पूर्वाचार्यों के सत्कार के लिए यह मङ्गल हो ॥१५॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामहृदयम्

श्रीमहादेव उवाच

ततो रामः स्वयं प्राह हनूमन्तमुपस्थितम् ।
शृणु तत्त्वं प्रवक्ष्यामि ह्यात्मानात्मपरात्मनाम् ।१।
आकाशस्य यथा भेदस्त्रिविधो दृश्यते महान् ।
जलाशये महाकाशस्तदवच्छिन्न एव हि ।
प्रतिबिम्बाख्यमपरं दृश्यते त्रिविधं नभः ॥२॥
बुद्ध्यवच्छिन्नचैतन्यमेकं पूर्णमथापरम् ।
आभासस्त्वपरं बिम्बभूतमेवं त्रिधा चितिः ॥३॥

श्री महादेव जी बोले—

उसके बाद सामने बैठे हुए हनुमान जी के प्रति स्वयं श्री राम जी ने कहा—हे अञ्जनीनन्दन ! आत्मा, अनात्मा और परमात्मा का तत्त्व कहता हूँ, सुनो ॥१॥

जिस प्रकार आकाश के तीन भेद देखने को मिलते हैं; जलाशय में महाकाश, जलावच्छिन्न आकाश एवं प्रतिबिम्ब आकाश रूप से त्रिविध आकाश है ॥२॥

उसी प्रकार आत्मा (चैतन्य) के तीन भेद हो जाते हैं; प्रथम बुद्ध्यवच्छिन्न चैतन्य, दूसरा पूर्ण चैतन्य, तीसरा आभास रूप बिम्बात्मक चैतन्य ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साभासबुद्धेः कर्तृत्वमविच्छिन्नेऽविकारिणि ।
साक्षिण्यारोप्यते भ्रान्त्या जीवत्वं च तथाऽबुधैः ॥४॥
आभासस्तु मृषाबुद्धिरविद्याकार्यमुच्यते ।
अविच्छिन्नं तु तद्ब्रह्म विच्छेदस्तु विकल्पितः ॥५॥
अविच्छिन्नस्य पूर्णेन एकत्वं प्रतिपाद्यते ।
तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्च साभासस्याहमस्तथा ॥६॥
ऐक्यज्ञानं यदोत्पन्नं महावाक्येन चात्मनोः ।
तदाऽविद्या स्वकार्यैश्च नश्यत्येव न संशयः ॥७॥
एतद्विज्ञाय मद्भक्तो मद्भावायोपपद्यते ॥८॥

अविच्छिन्न अविकारी आत्मा में साभास बुद्धि से कर्तृत्व मूर्ख लोगों द्वारा भ्रान्ति से जीवत्व आरोपित किया जाता है ॥४॥

आभास मिथ्याबुद्धि है जो अविद्या का कार्य कहा जाता है ब्रह्म तो अविच्छिन्न है (अद्वैत है), द्वैत तो उसमें कल्पित है ॥५॥

उपनिषत्प्रोक्त तत्त्वमस्यादि महावाक्यों से अविच्छिन्न साभास की पूर्ण ब्रह्म से एकता प्रतिपादित की गई है ॥६॥

महावाक्य से जीवात्मा-परमात्मा का जब ऐक्य ज्ञान हो जाता है, तब अपने कार्यों के सहित अविद्या नष्ट हो जाती है ॥७॥

इसे जान कर मेरा भक्त मेरी भावना से युक्त हो जाता है ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मद्भक्तिविमुखानां हि शास्त्रगर्तेषु मुह्यताम् ।
न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात्तेषां जन्मशतैरपि ॥९॥

इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो
मयैव साक्षात्कथितं तवानघ ।
मद्भक्तिहीनाय शठाय न त्वया
दातव्यमैन्द्रादपिराज्यतोऽधिकम् ॥१०॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे बालकाण्ड श्रीरामहृदयं सम्पूर्णम् ॥

रामरक्षास्तोत्रम्

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिकः ऋषिः । श्रीसीतारामचन्द्रो देवता । अनुष्टुप्

शास्त्र रूपी गर्तों में मोहित हुए मेरी भक्ति से विमुख लोगों को सैंकड़ों जन्मों में भी ज्ञान और मोक्ष नहीं मिलता ॥९॥

हे निष्पाप हनुमान् जी ! यह राम हृदय अत्यन्त गोपनीय साक्षात् मेरी आत्मा है । मेरी भक्ति से हीन, दुष्ट को इसका उपदेश नहीं करना चाहिए । इन्द्रलोक के राज्य से भी इसका अधिक फल है ॥१०॥

—०—

इस श्रीरामरक्षा स्तोत्र मन्त्र के बुधकौशिक ऋषि हैं। श्री सीता-रामचन्द्र देवता हैं । अनुष्टुप् छन्द है । सीताशक्ति हैं । श्रीमान् हनुमान जी कीलक हैं। श्री रामचन्द्र की प्रीति के लिए रामरक्षा स्तोत्र जप में इसका विनियोग है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्दः । सीता शक्तिः । श्रीमद्धनुमान् कीलकम् । श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानाऽलङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥

इति ध्यानम् ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥१॥

उन भगवान् रामचन्द्र का ध्यान करे जिनके आजानु बाहु हैं, धनुष-बाण धारण किए हुए हैं, बद्ध पद्मासन में स्थित हैं, पीताम्बरधारी हैं, नवीन कमलों के दल से स्पर्धा करने वाले नेत्र हैं, प्रसन्न मुद्रा में हैं, बाईं गोद में बैठी हुई सीता के मुख कमल की ओर आँखें झुकाए हुए हैं, सजल मेघ के समान नील कान्ति है, नाना अलङ्कारों से दीप्तिमान्, लम्बी-लम्बी जटाएँ धारण किए हुए हैं ॥

भगवान् राघवेन्द्र सरकार का चरित्र एक अरब अक्षरों के विस्तार वाला (बाल्मीकि रामायण में) है, इसके एक-एक अक्षर का पाठ (ब्रह्महत्यादि) महापातकों को नाश करने वाला है ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥३॥

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥

नील कमल के समान श्याम, सर्वव्यापी, कमल नयन, सीता और लक्ष्मण से युक्त, जटा-मुकुट धारण किए, तलवार, धनुष-बाण, तरकस सहित हाथ वाले, राक्षसों का नाश करने वाले, अजन्मा एवं विभु होते हुए भी लीला से जगत् की रक्षा के लिए अवतार ग्रहण करने वाले भगवान् राम का ध्यान कर बुद्धिमान साधक इस पापनाशक मनोकामना को पूर्ण करने वाले रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करे। राघव मेरे सिर की रक्षा करें. दशरथ के पुत्र भाल की रक्षा करें ।।२-३-४।।

कौसल्या के दुलारे नेत्रों की रक्षा करें, विश्वामित्र के प्यारे कानों की रक्षा करें यज्ञ रक्षक नासिका की रक्षा करें, लक्ष्मणवत्सल मुख की रक्षा करें ।।५।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरूः रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥८॥
जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥

विद्यानिधि जिह्वा की रक्षा करें, भरत से पूजनीय कण्ठ की रक्षा करें। दिव्य आयुधधारी कन्धों की रक्षा करें, शिवधनुष तोड़ने वाले भुजाओं की रक्षा करें ॥६॥

सीतापति हाथों की रक्षा करें, परशुराम को जीतने वाले हृदय की रक्षा करें। खर राक्षस के मारने वाले उदर की रक्षा करें, जाम्बवान् का आश्रय लेने वाले नाभि की रक्षा करें ॥७॥

सुग्रीव के स्वामी कमर की, हनुमान के सर्वस्व जत्रुस्थान की रक्षा करें। रघुकुल में श्रेष्ठ ऊरुओं की रक्षा करें जिन्होंने राक्षस कुल का संहार किया ॥८॥

रामेश्वर पुल बनाने वाले घुटनों की रावण का नाश करने वाले जाँघों की रक्षा करें। विभीषण को लंका का राज्य देने वाले पैरों की एवं समस्त शरीर की भगवान् रामरक्षा करें ॥९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥

भगवान् राम की शक्ति से युक्त इस रामरक्षा स्तोत्र का जो पुण्यशील पाठ करता है, वह चिरायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी और विनयी होता है ॥१०॥

जिस की राम रक्षा स्तोत्र रक्षा करता है, उसे पाताल, पृथिवी, आकाश के लोग एवं मायावी देखने की भी हिम्मत नहीं करते ॥११॥

हे राम ! हे रामभद्र ! हे रामचन्द्र ! इस प्रकार स्मरण करता हुआ मनुष्य पापों से लिपायमान नहीं होता, संसार के भोगों को पाकर अन्त में मुक्ति पाता है ॥१२॥

रामरक्षा स्तोत्र से अभिरक्षित इसी मन्त्र से वह संसार को वशीभूत कर लेता है। जो इसे अपने कण्ठ में धारण करता है, सभी सिद्धियाँ उसके समक्ष उपस्थित रहती हैं ॥१३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥१६॥
तरुणौ रूपसंपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥

वज्रपञ्जर नाम वाले इस रामकवच स्तोत्र का जो स्मरण करता है, वह सर्वशास्त्र विशारद होता है, उसकी सब जगह जय और मङ्गल होता है ॥१४॥

भगवान् शंकर ने जिस प्रकार से रामरक्षा स्तोत्र का बुधकौशिक ऋषि को स्वप्न में उपदेश दिया था, वैसा ही प्रातः उठकर उन्होंने लेखनोबद्ध कर लिया ॥१५॥

जो कल्पवृक्षों के आश्रय हैं, समस्त आपत्तियों को समाप्त करने वाले हैं, तीनों लोकों में कमनीय हैं; वही श्रीमान् रामचन्द्र हमारे प्रभु हैं ॥१६॥

राम और लक्ष्मण दोनों भाई तरुण, रूपयुक्त, सुकुमार, महाबलवान्, कमल के समान विशाल नेत्र वाले, मुनिवस्त्र (वल्कल) एवं कृष्ण मृगचर्म धारण करने वाले, कन्द, मूल, फल सेवन करने वाले, जितेन्द्रिय, तपस्वी, ब्रह्मचारी, दशरथ के पुत्र हैं ॥१७-१८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा-
वक्षयाशुगनिषंगसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा-
वग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥

सब प्राणियों को शरण देने वाले, सभी धनुर्धारियों में श्रेष्ठ, राक्षस कुल का नाश करने वाले रघुश्रेष्ठ राम और लक्ष्मण हमारी रक्षा करें ॥१९॥

हमेशा कान तक धनुष के तरकस को खींचे हुए सुसज्जित, शीघ्र वेधन करने वाले असंख्य बाणों को साथ लिए मेरी रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण मार्ग में सदैव मेरे आगे-आगे चलते रहें ॥२०॥

हमेशा तैयार, कवच, खड्ग, धनुषबाणधारी, यौवनसम्पन्न, मनोकामना पूर्ण करने वाले लक्ष्मण के सहित भगवान् राम हमारी रक्षा करें ॥२१॥

दाशरथी राम बलवान्, लक्ष्मण के पीछे चलने वाले, राम शूरवीर हैं, ककुद्वंशी राम पूर्ण पुरुष हैं, कौसल्या के राम रघुकुल में श्रेष्ठ हैं ॥२२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ।२६।

वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराण पुरुषोत्तम, जानकीवल्लभ, श्रीमान्, अप्रमेयपराक्रम; इन नामों का जाप जो भी कोई मेरा भक्त नित्यप्रति श्रद्धा-भक्तिपूर्वक करता है, वह अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक पुण्य को प्राप्त करता है, इसमें जरा भी संशय नहीं है ।।२३-२४।।

दूर्वादल की तरह श्यामल कान्ति वाले, कमल नयन, पीताम्बरधारी भगवान् राम को जो इन दिव्य नामों से स्तुति करता है वह दिव्य पुरुष ही है ।।२५।।

लक्ष्मण के अग्रज भ्राता, रघुकुल में श्रेष्ठ, सीतापति, शोभासम्पन्न, ककुद्वशी, करुणा के सागर, गुणनिधान, ब्राह्मणों के प्रिय, धर्म की मूर्ति, राजाओं में श्रेष्ठ, सत्यपरायण, दशरथ के पुत्र श्यामल शान्तिमूर्ति, लोकप्रिय, रघुकुलतिलक, रावण के शत्रु भगवान् राघवेन्द्र सरकार को मैं प्रणाम करता हूँ ।।२६।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥

राम, रामभद्र, भगवान् रामचन्द्र, रघुनाथ, जगत्प्रभु, सीता के पति को नमस्कार है ॥२७॥

हे श्री राम ! राम ! रघुनन्दन ! राम ! राम ! श्रीराम ! राम भरत के अग्रज राम, राम, श्रीराम राम ! रण में कठोर राम राम, श्रीराम राम हे राम ! राम ! मुझे अपनी शरण में ले लीजिए ॥२८॥

भगवान् श्री रामचन्द्र के श्रीचरणों को मैं मन से स्मरण करता हूँ। भगवान् श्री रामचन्द्र के श्री चरणों की महिमा का वाणी से गान करता हूँ। भगवान् श्री रामचन्द्र के श्रीचरणों को शीश झुकाकर प्रणाम करता हूँ। भगवान् श्री रामचन्द्र के चरणों की मैं शरणापन्न हूँ ॥२९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥३१॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥

भगवान् राघवेन्द्र सरकार ही मेरी माता हैं, भगवान् रामचन्द्र ही मेरे पिता हैं, भगवान् राम ही मेरे मालिक हैं, श्री रामचन्द्र ही मेरे मित्र हैं, दयालु भगवान् रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं, उन्हें छोड़कर मैं कुछ भी नहीं जानता, कुछ भी नहीं जानता, कुछ भी नहीं जानता ॥३०॥

जिनके दाहिने भाग में लक्ष्मण हैं, बाएँ भाग में सीता जी हैं, जिनके सामने हनुमान जी हैं; उन राघवेन्द्र सरकार को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३१॥

लोक कमनीय, युद्ध में धीरता से काम लेने वाले, कमल-नयन, रघुवंश के स्वामी, करुणा की मूर्ति, करुणा की खानि श्री राघवेन्द्र सरकार को मैं शरण में हूँ ॥३२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ॥३६॥

मन के समान गतिशील, हवा के समान वेग वाले, जितेन्द्रिय, बुद्धिमानों से सर्वश्रेष्ठ, वायु पुत्र, वानर मण्डली में मुख्य, भगवान् श्री रामचन्द्र जी के दूत हनुमान जी की मैं शरण में हूँ ॥३३॥

'श्री राम श्री राम' इन मधुर-मधुर अक्षरों से कूजते हुए जो कविता शाखा पर चढ़े, उन वाल्मीकि कोयल की मैं वन्दना करता हूँ ॥३४॥

आपत्तियों को सर्वथा मिटाने वाले, सभी सम्पत्तियों को देने वाले, लोक रमणीय श्री राघवेन्द्र सरकार को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ ॥३५॥

'श्री राम श्री राम' यह गर्जन करते रहने से भव बीज भुन जाते हैं, सुख सम्पत्ति को प्राप्ति होती है एवं यमदूत डर के मारे भाग जाते हैं ॥३६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥३७॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥३८॥

इति श्रीबुधकौशिकविरचितं रामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

रामाष्टकम्

कृतार्तदेववन्दनं दिनेशवंशनन्दनम् ।
सुशोभिभालचन्दनं नमामि राममीश्वरम् ॥१॥

श्रेष्ठ मणि राम नाम की सदा विजय हो, रमापति राम का मैं भजन करता हूँ, श्री राम जी के द्वारा निशाचरी सेना का हनन किया गया उन श्री राम जी को नमस्कार है, श्रीराम को छोड़ कर अन्य शरण्य कोई नहीं है, मैं श्री राम जी का दास हूँ, मेरा चित्त श्री राम जी में सदा लीन रहे हे राम! मेरा उद्धार कर दीजिए ।।३७॥

हे सुमुखि ! रमापति राम, लक्ष्मीपति राम, सीतापति राम; इस प्रकार राम नाम का उच्चारण सहस्रनाम स्तोत्र का फल देने वाला है ॥३८॥

—०—

असुरों द्वारा पीड़ित देवताओं से वन्दित, सूर्यवंश को आनन्दित करने वाले, चन्दन से शोभित भाल वाले, भगवान् राम को प्रणाम करता हूँ ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनीन्द्रयज्ञकारकं शिलाविपत्तिहारकम् ।
महाधनुर्विदारकं नमामि राममीश्वरम् ॥२॥

स्वतातवाक्यकारिणं तपोवने विहारिणम् ।
करेषु चापधारिणं नमामि राममीश्वरम् ॥३॥

कुरङ्गमुक्तसायकं जटायुमोक्षदायकम् ।
प्रविद्धकीशनायकं नमामि राममीश्वरम् ॥४॥

प्लवङ्गसङ्गसंमतिं निबद्धनिम्नगापतिम् ।
दशास्यवंशसंक्षतिं नमामि राममीश्वरम् ॥५॥

मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्र का यज्ञ कराने वाले, अहल्या को शिला से मुक्ति दिलाने वाले, शिव धनुष को विदीर्ण करने वाले भगवान् राम को मैं प्रणाम करता हूँ ॥२॥

अपने पिता की आज्ञा का पालन करने वाले, तपोवन में विहार करने वाले, हाथों में धनुष बाण धारण करने वाले भगवान् राम को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

कपट मृग (मारीच) पर बाण चलाने वाले, जटायु को मोक्ष दिलाने वाले, दुःखी सुग्रीव की सहायता करने वाले भगवान् राम को मेरा नमस्कार है ॥४॥

वानरों का सहयोग सम्मति प्राप्त करने वाले, समुद्र में पुल बाँधने वाले, रावण के वंश का नाश करने वाले भगवान् राम को मेरा प्रणाम है ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विदीनदेवहर्षणं कपीप्सितार्थवर्षणम् ।
स्वबन्धुशोककर्षणं नमामि राममीश्वरम् ॥६॥

गतारिराज्यरक्षणं प्रजाजनार्तिभक्षणम् ।
कृतास्तमोहलक्षणं नमामि राममीश्वरम् ॥७॥

हृताखिलाचलाभरं स्वधामनीतनागरम् ।
जगत्तमोदिवाकरं नमामि राममीश्वरम् ॥८॥

इदं समाहितात्मना नरो रघूत्तमाष्टकम् ।
पठेन्निरन्तरं भयं भवोद्भवं न विन्दते ॥९॥

अत्यन्त दीन देवताओं को प्रसन्न करने वाले, बानरों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले, अपने बन्धुओं का शोक दूर करने वाले भगवान् राम को मेरा नमस्कार है ॥६॥

अजातशत्रु होकर राज्य की रक्षा करने वाले, प्रजावर्ग के दुःखों को दूर करने वाले, मोह को विदीर्ण करने वाले भगवान् राम को मेरा प्रणाम है ॥७॥

सम्पूर्ण पृथिवी का भार हरण करने वाले, सभी अयोध्या-वासियों को अपने नित्य धाम में ले जाने वाले, जगत् के अज्ञान अन्धकार के लिए सूर्य के समान भगवान् राम को मैं प्रणाम करता हूँ ॥८॥

जो भी कोई इस रामाष्टक को दत्तचित्त होकर नित्य पाठ करता है, भवसागर से होने वाला भय उसे प्राप्त नहीं होता ॥९॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मारुतिस्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते विचित्रवीरहनुमते प्रलयकालानलप्रभाप्रज्वलनाय। प्रतापवज्रदेहाय। अञ्जनीगर्भसंभूताय। प्रकटविक्रमवीरदैत्यदानवयक्षरक्षोगणग्रहबन्धनाय। भूतग्रहबन्धनाय। प्रेतग्रहबन्धनाय। पिशाचग्रहबन्धनाय। शाकिनीडाकिनीग्रहबन्धनाय। ब्रह्मराक्षसग्रहबन्धनाय। चोरग्रहबन्धनाय। मारीग्रहबन्धनाय। एहि एहि। आगच्छ आगच्छ। आवेशय आवेशय। मम हृदय प्रवेशय प्रवेशय। स्फुर स्फुर। प्रस्फुर प्रस्फुर। सत्यं कथय। व्याघ्रमुखबन्धन सर्पमुखबन्धन राजमुखबन्धन नारीमुखबन्धन सभामुख-

अद्भुत बलशाली, प्रलयकाल की अग्नि की प्रभा से जलाने वाले, कीर्तियुक्त वज्र के समान देह वाले, अञ्जनी के पुत्र, वीर दैत्य-दानव यक्ष रक्ष समूह को अपना पराक्रम दिखा कर बाँधने वाले, भूतग्रह के बन्धनरूप, प्रेतग्रह के बन्धनरूप, पिशाचग्रह के बन्धनरूप, शाकिनी-डाकिनीग्रह के बन्धनरूप, ब्रह्मराक्षस ग्रह के बन्धनरूप, चोरग्रह के बन्धनरूप, मारीग्रह के बन्धनरूप हनुमान भगवान् को नमस्कार है। आइये, आइये। इधर आइये, इधर आइये। अन्दर आइये, अन्दर आइये। मेरे हृदय में प्रवेश कीजिये। स्फुरित होइये, स्फुरित होइये। प्रकट होइयें, प्रकट होइये। सत्य कहिए। हे व्याघ्र मुख के बन्धन, सर्प मुख बन्धन, राजमुख बन्धन, नारी मुख बन्धन, सभा मुख बन्धन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्धन शत्रुमुखबन्धन सर्वमुखबन्धन लंकाप्रासाद-भञ्जन। अमुकं ( ) मे वशमानय। क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं राजानं वशमानय। श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रिय आकर्षय आकर्षय शत्रून्मर्दय मर्दय मारय मारय मारय मारय चूर्णय चूर्णय खे खे श्रीरामचन्द्राज्ञया मम कार्यसिद्धिं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हः फट् स्वाहा विचित्रवीर हनूमन् मम सर्वशत्रून् भस्म कुरु कुरु। हन् हन् हुं फट् स्वाहा॥ एकादशशतवारं जपित्वा सर्वशत्रून् वशमानयति नान्यथा इति॥

इति श्रीमारुतिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शत्रुमुख बन्धन, सर्व मुख बन्धन, स्वर्णमयी लंका महल को जलाने वाले अमुक को मेरे वश में करो। क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं राजा को वश में करो। श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रियों को आकर्षित करो, आकर्षित करो, शत्रुओं को मसल दो, मसल दो, मार दो मार दो, पीस दो पीस दो, खे खे श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा से मेरे कार्य में सिद्धि करो सिद्धि करो। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रैं ह्रौं हः फट् स्वाहा हे अद्भुत वीर्यवान हनुमान जी मेरे शत्रुओं को भस्म करो, भस्म करो। हन् हन् हुं फट् स्वाहा। मारुति स्तोत्र का ग्यारह बार जप करके सब शत्रुओं को वश में ले आ सकता है, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकुन्दमाला

वन्दे मुकुन्दमरविन्ददलायताक्षं
कुन्देन्दुशङ्खदशनं शिशुगोपवेषम् ।
इन्द्रादिदेवगणवन्दितपादपीठं
वृन्दावनालयमहं वसुदेवसूनुम् ॥१॥

श्रीवल्लभेति वरदेति दयापरेति
भक्तप्रियेति भवलुण्ठनकोविदेति ।
नाथेति नागशयनेति जगन्निवासे-
त्यालापिनं प्रतिदिनं कुरु मां मुकुन्द ॥२॥

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।

वृन्दावन धाम के वासी, वसुदेव के पुत्र, कमलदल के समान विशाल नयनों वाले, कुन्द, सोम और शङ्ख के समान शुभ्र दान्त वाले लीला से गोपबालक का वेष धारण करने वाले, इन्द्रादि देवताओं से पूजित चरणकमलों वाले भगवान् कृष्ण को नमस्कार है ॥१॥

हे मुकुन्द ! ऐसी कृपा कीजिए कि मैं प्रतिदिन आपके "श्रीवल्लभ, वरद, दयापर, भक्तप्रिय, भव-भय मिटाने में निपुण, नाथ, शेषशायी, जगन्निवास" इन नामों को जपता रहूँ ॥२॥

देवकीनन्दन भगवान् की जय हो, जय हो; वृष्णि कुल के दीपक भगवान् कृष्ण की जय हो, जय हो। मेघवर्ण के समान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ॥३॥

मुकुन्दमूर्ध्ना प्रणिपत्य याचे
भवन्तमेकान्तमियन्तमर्थम् ।
अविस्मृतिस्त्वच्चरणारविन्दे
भवे भवे मेऽस्तु भवत्प्रसादात् ॥४॥

श्रीगोविन्दपदाम्भोजमधुनो महदद्भुतम् ।
यत्पायिनो न मुञ्चन्ति मुञ्चन्ति यदपायिनः ॥५॥

नाहं वन्दे तव चरणयोर्द्वन्द्वमद्वन्द्वहेतोः
कुम्भीपाकं गुरुमपि हरे नामकं नापनेतुम् ।

कोमल शरीर वाले भगवान् की जय हो, जय हो; पृथिवी के भार मिटाने वाले भगवान् मुकुन्द की जय हो, जय हो ॥३॥

हे कृष्ण ! शिर झुका कर प्रणाम कर मैं आपसे केवल इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि आपकी कृपा ऐसी हो कि मुझे जन्म-जन्मान्तरों में आपके चरणकमलों की स्मृति बनी रहे ॥४॥

श्री गोविन्द भगवान् के चरणकमलों की मकरन्द का ऐसा दिव्य प्रभाव है कि जिसे पीने वाले नहीं छोड़ सकते एवं न पीने वाले छोड़ देते हैं ॥५॥

हे प्रभो ! मैं आपके चरणयुगलों की वन्दना मोक्ष के लिये नहीं करता और न ही अत्यन्त कष्टप्रद कुम्भीपाक नाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रम्यारामामृदुतनुलतानन्दनेनापि रन्तुं
भावे भावे हृदयभवने भावयेयं भवन्तम् ॥६॥
नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगे
यद्यद्भव्यं भवतु भगवन्पूर्वकर्मानुरूपम् ।
एतत्प्रार्थ्यं मम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेऽपि
त्वत्पादाम्भोरुहयुगगता निश्चला भक्तिरस्तु ॥७॥
दिवि व भुवि वा ममास्तु वासो
नरके वा नरकान्तक प्रकामम् ।
अवधीरितशारदारविन्दौ
चरणौ ते मरणेऽपि चिन्तयामि ॥८॥

नरक से विमुक्ति के लिए तथा न ही रमणीय रमणियों की कोमल देह वल्लरी के आनन्दोपभोग के लिए ऐसा करता हूँ। मैं चाहता हूँ आप जन्म-जन्म में मेरे हृदय मन्दिर में वास करें ॥६॥

अब तो धर्म, धनसंग्रह, कामोपभोग में कोई आस्था नहीं रह गयी है। मेरे पूर्व कर्मों के अनुसार जो कुछ भी होना है, वह होता रहे। मेरी तो जन्म-जन्मान्तर में यही प्रार्थना है कि तुम्हारे चरणकमलों में जन्म-जन्मान्तर पर्यन्त सुदृढ़ भक्ति बनी रहे ॥७॥

हे नरकासुर को मारने वाले श्याम सुन्दर! प्रारब्धवश स्वर्ग, पृथिवी अथवा नरक कहीं भी मैं रहूँ परन्तु मरणवेला में मैं तेरे उन श्रीचरणों का चिन्तन करता रहूँ जिनकी शोभा शरत्कालीन कमल को भी मात करती है ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरसिजनयने सशङ्खचक्रे
मुरभिदि मा विरमस्व चित्त रन्तुम् ।
सुखतरमपरं न जातु जाने
हरिचरणस्मरणामृतेन तुल्यम् ॥९॥

मा भैर्मन्दमनो विचिन्त्य बहुधा यामीश्चिरं यातना
नैवामी प्रभवन्ति पापरिपवः स्वामी ननु श्रीधरः ।
आलस्यं व्यपनीय भक्तिसुलभं ध्यायस्व नारायणं
लोकस्य व्यसनापनोदनकरो दासस्य किं न क्षमः ॥१०॥

भवजलधिगतानां द्वन्द्ववाताहतानां
सुतदुहितृकलत्रत्राणभारार्दितानाम् ।

कमल नयन, शङ्खचक्रधारी मुरारी में मेरा चित्त निरन्तर रमण करता रहे, विश्राम न ले, भगवान् के चरणों के स्मरण के समान अमृत तुल्य सुख अन्यत्र कहीं भी नहीं है ॥९॥

'अभी तक अधिकांशतः चिर यातना ही सही' हे मन्दबुद्धि अब ऐसा सोचकर डरो मत। जहाँ सबके मालिक भगवान् श्री कृष्ण हैं, वहाँ पाप शत्रु क्या कर सकते हैं। आलस्य को छोड़कर भक्ति से प्रसन्न होने वाले नारायण का ध्यान करो। वही लोगों के व्यसन मिटाने में समर्थ हैं. दास को कोई सामर्थ्य नहीं है ॥१०॥

भवसागर से फंसे हुए, द्वन्द्व की हवा से सताए हुए, पुत्र-पुत्री एवं स्त्री की रक्षा के भार से दबे हुए विषम विषयों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषमविषयतोये मज्जतामप्लवानां
भवति शरणमेको विष्णुपोतो नराणाम् ।।११।।

रजसि निपतितानां मोहजालावृतानां
जन्मनमरणदोलादुर्गसंसर्गगाणाम् ।
शरणमशरणानामेक एवातुराणां
कुशलपथनियुक्तश्चक्रपाणिर्नराणाम् ।।१२।।

अपराध सहस्रसङ्कुलं
पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे
कृपया केवलमात्मसात्कुरु ।।१३।।

जल में डूबते-उतराते हुए मनुष्यों को एकमात्र विष्णु नौका ही अन्तिम उपाय है ।।११।।

मोह जाल से घिरे हुए, रजोगुण रूप कीचड़ में फँसे हुए, जन्म-मृत्यु रूप झूले के दुर्गम संसर्ग में पड़े हुए दुःखी एवं असहाय लोगों के शरण भगवान् श्री कृष्ण ही हैं, जो उन्हें सही मार्ग की ओर लगाते हैं ।।१२।।

हे कृष्ण ! मैंने सहस्रों अपराधों को किया है जिससे भयङ्कर भवसागर के मध्य में फँस गया हूँ। मेरा कोई नहीं है, मुझ शरणागत के केवल आप ही हो, कृपया मुझे अपना लीजिए ।।१३।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मा मे स्त्रीत्वं मा च मे स्यात्कुभावो
मा मूर्खत्वं मा कुदेशेषु जन्म ।
मिथ्यादृष्टिर्मा च मे स्यात्कदाचि-
ज्जातौ जातौ विष्णुभक्तो भवेयम् ॥१४॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥१५॥

यत्कृतं यत्करिष्यामि तत्सर्वं न मया कृतम् ।
त्वया कृतं तु फलभुक्त्वमेव मधुसूदन ॥१६॥

भवजलधिमगाधं दुस्तरं निस्तरेयं
कथमहमिति चेतो मा स्म गाः कातरत्वम् ।

मुझे स्त्री का जन्म न मिले, कुभाव मुझे न घेरे, मूर्ख न बनूँ, कुदेश में न जन्मूँ, भेदबुद्धि मुझे न व्यापे, जन्म जन्म में मैं कृष्ण भक्त ही बनूँ ॥१४॥

शरीर, वाणी, मन, इन्द्रिय बुद्धि आत्मा अथवा अपने स्वभाववश मैं जो-जो कर्म करता हूँ, वह उसी प्रेरक कृष्ण को समर्पित करता हूँ ॥१५॥

जो कुछ भी मैंने किया है तथा जो कुछ भी करूँगा वह सब कुछ करने की मेरी कोई शक्ति नहीं, आपकी प्रेरणा से (आप द्वारा) किये हुए कर्मों के फल भोक्ता भी तो हे कृष्ण ! आप ही हो ॥१६॥

अगाध भवसागर को पार करना अत्यन्त कठिन है अपने बल पर अहंकार करके कायरता को मत प्राप्त होवो । नर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरसिजदृशि देवे तावकी भक्तिरेका
नरकभिदि निषण्णा तारयिष्यत्यवश्यम् ।।१७।।
तृष्णातोये मदनपवनोद्धूतमोहोर्मिमाले
दारावर्ते तनयसहजग्राहसंघाकुले च ।
संसाराख्ये महति जलधौ मज्जतां नस्त्रिधाम-
न्पादाम्भोजे वरद भवतो भक्तिभावं प्रदेहि ।।१८।।

पृथ्वी रेणुरणुः पयांसि कणिकाः फल्गुः स्फुलिङ्गो लघु-
स्तेजो निःश्वसनं मरुत्तनुतरं रन्ध्रं सुसूक्ष्मं नभः ।
क्षुद्रा रुद्रपितामहप्रभृतयः कीटाः समस्ताः सुरा
दृष्टे यत्र स तावको विजयते श्रीपादधूलीकणः ।।१९।।

कासुर को मारने वाले, कमलोचन भगवान् श्रीकृष्ण में एक-निष्ठ भक्ति तुम्हें अवश्य पार लगाएगी ।।१७।।

हे त्रिलोकीनाथ ! इस संसार रूपी महासमुद्र के तृष्णा रूपी जल, काम की पवनों से ऊपर उठने वाली मोह की तरङ्गों में, पत्नी रूपी भंवर में, पुत्र रूपी सहज ग्राह कुल के सताने से व्याकुल डूबते हुए मुझे, हे वरदानियों में श्रेष्ठ ! अपने चरण कमलों की भक्ति दीजिए ।।१८।।

जिसकी दृष्टि में विशाल पृथिवी अणु रज के समान है, जल जरा सी बूँद है, तेज छोटी सी चिनगारी मात्र है, वायु अत्यन्त लघु निःश्वास है, आकाश अत्यन्त सूक्ष्म छिद्र है, शङ्कर, ब्रह्मा इत्यादि सभी देवता छोटे-छोटे कीड़े हैं, उन आप भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीचरणों को धूलि की सदा विजय हो ।।१९।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आम्नायाभ्यसनान्यरण्यरुदितं वेदव्रतान्यन्वहं
मेदच्छेदफलानि पूर्तविधयः सर्वं हुतं भस्मनि ।
तीर्थानामवगाहनानि च गजस्नानं विना यत्पद-
द्वन्द्वाम्भोरुहसंस्मृतिं विजयते देवः स नारायणः ॥२०॥

आनन्द गोविन्द मुकुन्द राम
नारायणानन्त निरामयेति ।
वक्तुं समर्थोऽपि न वक्ति कश्चि-
दहो जनानां व्यसनानि मोक्षे ॥२१॥

क्षीरसागरतरङ्गसीकरासारतारकितचारुमूर्तये ।
भोगिभोगशयनीयशायिने माधवाय मधुविद्विषे नमः ।२२।

इति श्रीकुलशेखरेण राज्ञा विरचिता मुकुन्दमाला सम्पूर्णा ॥

जिनके कमल स्वरूपी चरणयुगलों की स्मृति के विना वेदाभ्यास अरण्यरोदन के समान है संसार की मुक्ति कराने वाले नित्य वेदव्रत, पूर्त अनुष्ठान भस्म में होम देने के समान है, तीर्थों में स्नान गजस्नान की तरह है, ऐसे भगवान् श्री कृष्ण की जय-जयकार हो ॥२०॥

लोगों की मोक्ष व्यसनी बुद्धि के लिए खेद है कि भगवान् के "आनन्द, गोविन्द, मुकुन्द, राम, नारायण, अनन्त, निरामय" इन नामों को बोलने की शक्ति होते हुए भी नहीं बोलते ॥२१॥

क्षीर सागर की तरङ्गों की नन्हीं-नन्हीं फुहारों से शोभायमान सुन्दर विग्रह वाले, शेषनाग के फणों की शय्या पर सोने वाले मधुरिपु माधव भगवान् को नमस्कार है ॥२२॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवच्छरणस्तोत्रम्

सच्चिदानन्दरूपाय भक्तानुग्रहकारिणे ।
मायानिर्मितविश्वाय महेशाय नमो नमः ॥१॥

रोगा हरन्ति सततं प्रबलाः शरीरं
कामादयोऽप्यनुदिनं प्रदहन्ति चित्तम् ।
मृत्युश्च नृत्यति सदा कलयन्दिनानि
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥२॥

देहो विनश्यति सदा परिणामशील-
श्चित्तं च खिद्यति सदा विषयानुरागि ।
बुद्धिः सदा हि रमते विषयेषु नान्त-
स्तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥३॥

सत्-चित्-आनन्द विग्रह वाले, भक्तों पर अनुग्रह करने वाले, लीला से विश्व का सृजन करने वाले सब के प्रभु भगवान् को नमस्कार है ॥१॥

असाध्य रोग नित्य प्रति शरीर को क्षीण कर रहे हैं, काम-क्रोधादि भी प्रतिदिन चित्त को जलाते रहते हैं। दिन गिनती हुई मृत्यु सदा सिर पर नाचती रहती है, अब तो हे दीनबन्धु ! मुझे केवल आपका ही भरोसा है ॥२॥

विकारशील यह शरीर सदा नाश को प्राप्त हो रहा है, विषयों के सेवन में अनुरक्त यह चित्त सदा खेद को प्राप्त होता रहता है। बुद्धि सदा विषयों में ही रमण करती रहती है जिसका कोई अन्त ही नहीं है। अब तो हे दीनबन्धु ! केवल तुम्हारी शरण में आ गया हूँ ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आयुर्विनश्यति यथामघटस्थतोयं
विद्युत्प्रभेव चपला बत यौवनश्रीः ।
वृद्धा प्रधावति यथा मृगराजपत्नी
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥४॥

आयाद्व्ययो मम भवत्यधिको विनीते
कामादयो हि बलिनो विबलाः शमाद्याः ।
मृत्युर्यदा तुदति मां बत किं वदेयं
तस्मात्त्वमद्य शरणं दीनबन्धो ॥५॥

तप्तं तपो नहि कदापि मयेह तन्वा
वाण्या तथा नहि कदापि तपश्च तप्तम् ।

छिद्रयुक्त घड़े में रखे हुए जल की तरह आयु बीती जा रही है, चंचल बिजली की चमक की तरह यौवन की कान्ति नष्ट होती जा रही है। मृगराज की पत्नी की तरह बुढ़ापा भी जल्दी-जल्दी भागा जा रहा है, हे दीनबन्धु! ऐसे में अब आप ही मेरी एकमात्र गति हो ॥४॥

काम आदि की शक्ति अधिक होने पर शमादि निर्बल हो गए हैं, परिणाम स्वरूप खींच तान करने पर भी आय से व्यय अधिक हो जाता है। क्या कहूँ मुझे यह मृत्यु भी काफी परेशान कर रही है, हे दीनबन्धु! ऐसे में अब आप की ही शरण में आ पड़ा हूँ ॥५॥

इस शरीर में मैंने कभी यहाँ तपश्चरण नहीं किया। मधुर भाषण रूप वाणी के तप का भी कभी अनुष्ठान नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिथ्याभिभाषणपरेण न मानसं हि
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥६॥

स्तब्धं मनो मम सदा नहि याति सौम्यं
चक्षुश्च मे न तव पश्यति विश्वरूपम् ।
वाचा तथैव न वदेन्मम सौम्यवाणीं
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥७॥

सत्त्वं न मे मनसि याति रजस्तमोभ्यां
विद्धे तदा कथमहो शुभकर्मवार्ता ।
साक्षात्परम्परतया सुखसाधनं तत्
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥८॥

किया। मिथ्याभाषण परायण रहकर मानसिक तप भी कभी नहीं किया। ऐसे में हे दीनबन्धो ! अब मैं आप की ही शरण में आ पड़ा हूँ ॥६॥

मेरा मन सदा जड़ है, सोम्यशीलता को कभी नहीं धारण करता हैं, मेरे चक्षु आपके विश्वरूप के दर्शन नहीं करते, इसी प्रकार (धृष्टता के कारण) जिह्वा से माधुर्यपूर्ण वाणी का उच्चारण नहीं होता। अब तो हे दीनबन्धो ! केवल आप ही का भरोसा है ॥७॥

सत्त्वगुण की ओर मेरे मन का झुकाव ही नहीं होता। रजोगुण और तमोगुण से ग्रस्त होने से शुभ कर्म बन ही नहीं पा रहे हैं जो साक्षात् अथवा परम्परा से सुख का साधन है। इसलिए हे दीनबन्धो ! अब तो केवल आपका ही भरोसा है॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पूजा कृता नहि कदापि मया त्वदीया
मन्त्रं त्वदीयमपि मे न जपेद्रसज्ञा ।
चित्तं न मे स्मरति ते चरणौ ह्यवाप्य
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥९॥

यज्ञो न मेऽस्ति हुतिदानदयादियुक्तो
ज्ञानस्य साधनगणो न विवेकमुख्यः ।
ज्ञानं क्व साधनगणेन विना क्व मोक्ष-
स्तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१०॥

मैंने कभी आपकी (प्रीत्यनुकूल व्यापार रूप) पूजा नहीं की। जिह्वा से कभी आपका नाम नहीं लिया (केवल स्वाद के पीछे भागता रहा) तुम्हारे चरणकमलों को प्राप्त करके भी उनका चित्त से कभी चिन्तन नहीं किया। ऐसे में हे दीनबन्धो ! मैं अब तो केवल आपकी शरण में हूँ ॥९॥

उत्सर्ग, दान, दयादि से युक्त कोई भी यज्ञाचरण नहीं किया। सदसदविवेक विषयिणी बुद्धि नहीं हुई जो ज्ञान के साधनसमूह में मुख्य है। किसी ज्ञान के साधन के न होने से ज्ञान कहाँ से हो जाता और बिना ज्ञान के मोक्ष तो सर्वथा असम्भव है। अब तो हे दीनबन्धो ! केवल आपकी ही शरण में आ पड़ा हूँ ॥१०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्संगतिर्हि विदिता तव भक्तिहेतुः
साऽप्यद्य नास्ति बत पण्डितमानिनो मे ।
तामन्तरेण नहि सा क्व च बोधवार्ता
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ।११।।

दृष्टिर्न भूतविषया समताभिधाना
वैषम्यमेव तदियं विषयीकरोति ।
शान्तिः कुतो मम भवेत्समता न चेत्स्या-
त्तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ।।१२।।

भक्ति के होने में सज्जन पुरुषों की संगति आवश्यक है यह सर्वविदित है किन्तु पण्डित न होने पर भी अपने को बड़ा भारी पण्डित मानने से सत्सङ्गति बिल्कुल नहीं की। सत्सङ्ग के बिना भक्ति नहीं, ज्ञान की तो बात ही कहाँ हो सकती है। ऐसे में हे दीनबन्धो। मैं अब आपकी ही शरण में हूँ ।।११।।

सब प्राणियों में समदृष्टि की भावना मेरे मन में आ ही न सकी, विषमदृष्टि ही सदा मेरे मानस पटल को घेरे रहती है। समत्व भावना न आने से शान्ति मुझे कैसे प्राप्त हो सकती है। ऐसे में हे दीनबन्धो ! मैं अब आप ही की शरण में आ पड़ा हूँ ।।१२।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मैत्री समेषु न च मेऽस्ति कदापि नाथ
दीने तथा न करुणा मुदिता च पुण्ये ।
पापेऽनुपेक्षणवतो मम मुत्कथं स्या-
त्तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१३॥

नेत्रादिकं मम बहिर्विषयेषु सक्तं
नान्तर्मुखं भवति तामविहाय तस्य ।
क्वान्तर्मुखत्वमपहाय सुखस्य वार्ता
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१४॥

त्यक्तं गृहाद्यपि मया भवतापशान्त्यै
नासीदसौ हृतहृदो मम मायया ते ।

हे स्वामिन् ! बराबर की योग्यता वालों के साथ मैंने कभी मित्रता नहीं की, दीन (बेसहारों) के प्रति न कभी दया आई, न पुण्यात्माओं को देख कर कभी चित्त में प्रसन्नता हुई। पापों में निरन्तर रत रहने के कारण मेरा उद्धार कैसे होगा। अब तो हे दीनबन्धु ! केवल आपका ही भरोसा है ॥१३।

नेत्रादि मेरी इन्द्रियाँ बाह्य विषयों में आसक्त हैं, उनकी बहिर्मुखता को छोड़े बिना अन्तर्मुखता होनी कठिन है, अन्तर्मुखता न होने से सुख कैसे मिल सकता है, इसलिए हे दीनबन्धु ! अब तो आप की ही शरण में आ पड़ा हूँ ॥१४॥

आवागमन रूप ताप की शान्ति के लिए मैंने घर-बार तो जरूर छोड़ दिया है किन्तु यह मेरा हृदय माया की लपेट में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सा चाधुना किमु विधास्यति नेति जाने
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१५॥
प्राप्ता धनं गृहकुटुम्बगजाश्वदारा
राज्यं यदैहिकमथेन्द्रपुरश्च नाथ ।
सर्वं विनश्वरमिदं न फलाय कस्मै
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१६॥
प्राणान्निरुध्य विधिना न कृतो हि योगो
योगं विनाऽस्ति मनसः स्थिरता कुतो मे ।
तां वै विना मम न चेतसि शान्तिवार्ता
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१७॥

रहता है। तुम्हारी माया अब मुझे क्या करवाएगी, यह मुझे पता नहीं है। ऐसे में हे दीनबन्धो ! मैं अब आपकी शरण में हूँ ॥१५॥

धन, घर, कुटुम्ब, हाथी, घोड़े, पत्नी, राज्य जो भी इस लोक के भोग हैं, तथा इन्द्रलोक के भोग हैं, हे स्वामिन् ! ये सब कुछ विनाशशील हैं इनका किसी को कोई फल नहीं है, इसलिए हे दीनबन्धो ! अब तो मुझे केवल आपका भरोसा है ॥१६॥

प्राणायाम करके विधिपूर्वक योग का आचरण नहीं किया, बिना (चित्तवृत्ति निरोध रूप) योग के मन की स्थिरता कहाँ हो सकती है। स्थितप्रज्ञता के बिना चित्त में शान्ति कैसे हो सकती है। ऐसे में हे दीनबन्धु ! अब मैं आप ही की शरण में हूँ ॥१७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अहं निर्विकल्पी निराकाररूपी
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न मेय-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं निर्वाणषट्कं सम्पूर्णम् ॥

द्वादशपञ्जरिकास्तोत्रम्

मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु सद्बुद्धि मनसि वितृष्णाम् ।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥१॥
अर्थमनर्थं भावय नित्यं
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।

मुझ में कोई विकल्प नहीं है, निराकार रूप में हूं, सर्वव्यापक होने से सब इन्द्रियों से मुझे ही अनुभव किया जाता है। न सङ्ग है, न मोक्ष है, न पदार्थ है। मैं तो चिदानन्दस्वरूप केवल शिव हूँ, शिव हूँ ॥६॥

—०—

हे मन्द बुद्धि ! धन आने की तृष्णा को छोड़ो, सद्बुद्धि का संपादन करो, मन को तृष्णाविहीन बनाओ, अपने कर्मानुसार जो भी धन मिलता है, उसी में सन्तुष्ट रहो ॥१॥

धन में अनर्थ के हेतु की भावना करो, याद रखो संसार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा विहिता नीतिः ॥२॥

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः
संसारोऽयमतीव विचित्रः ।
कस्य त्वं कः कुत आयात-
स्तत्त्वं चिन्तय यदिदं भ्रातः ॥३॥

मा कुरु जनधनयौवनगर्वं
हरति निमेषात्कालः सर्वम् ।
मायामयमिदमखिलं हित्वा
ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥४॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम् ।
आत्मज्ञानविहीना मूढास्ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः ॥५॥

लेशमात्र भी सुख नहीं है । धनियों का पुत्र से भी डरना देखा जाता है, यह बात ध्रुव सत्य है ॥२॥

यह संसार अत्यन्त विचित्र है, इसमें न कोई किसी की पत्नी है, न ही कोई पुत्र है । हे भय्या ! इसी तत्त्व का चिन्तन करो-तुम किसके हो, यह क्या है, कहाँ से आये हो ॥३॥

अपने निज जन, धन और यौवन का अभिमान न करो, काल तो एक पल में सब कुछ आत्मसात् कर लेता है । यह सब कुछ मायामय है ऐसा जानकर तुम इसे त्याग कर ब्रह्म पद में प्रवेश करो ॥४॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह को छोड़कर आत्मानुभूति करो कि मैं कौन हूँ । जो आत्मविज्ञान से शून्य होते हैं, वे बारम्बार नरक में मूँग की तरह पकाये जाते हैं ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

निर्वाणषट्कम्

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायु-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥१॥

न च प्राणसञ्ज्ञो न वै पञ्चवायु-
र्न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोशः ।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥२॥

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।

मैं मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त नहीं हूँ, न कान जिह्वा हूँ, न ही नाक नेत्र हूँ, न ही आकाश और भूमि हूँ, न तेज हूँ, न वायु हूँ; मैं तो चिदानन्द स्वरूप साक्षात् शिव हूँ ॥१॥

मैं न तो प्राण हूँ न (प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान रूप) पञ्चवायु हूँ, न सप्तधातुओं में से कोई धातु हूँ, न पाँच कोशों में कोई कोश हूँ। मैं वाणी, हाथ, पैर नहीं हूँ, उपस्थेन्द्रिय एवं पायु भी नहीं हूँ, मैं तो चिदानन्द रूप शिव हूँ, शिव हूँ ॥२॥

मुझ में राग-द्वेष, लोभ-मोह, मद-मात्सर्यभाव नहीं है, न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥३॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥४॥

न मे मृत्युशङ्का न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥५॥

धर्म है न अर्थ है न काम है, न मोक्ष है; मैं तो चैतन्य आनन्द स्वरूप साक्षात् शिव हूँ, शिव हूँ ॥३॥

मुझे कोई पुण्य-पाप, सुख-दुःख नहीं होता, मेरे लिए मन्त्र, तीर्थ, वेद, यज्ञ, किसी की अपेक्षा नहीं। भोजन, भोज्य एवं भोक्ता मैं नहीं हूँ, मैं तो चिदानन्द स्वरूप साक्षात् शिव हूँ, शिव हूँ ॥४॥

मुझे मृत्यु कैसे आएगी, कोई शंका ही नहीं है, मुझ में कोई जाति भेद नहीं है, मेरा न कोई पिता है, न माता है, मेरा तो जन्म ही नहीं हुआ। मेरा न कोई बन्धु है, न मित्र है, न गुरु है, न ही कोई शिष्य है, मैं तो चिदानन्द रूप शिव हूँ, शिव हूँ ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ज्ञानं यथा मम भवेत्कृपया गुरूणां
सेवां तथा न विधिनाकरवं हि तेषाम् ।
सेवापि साधनतया विदितास्ति चित्ते
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१८॥

तीर्थादिसेवनमहाविधिना हि नाथ
नाकारि येन मनसो मम शोधनं स्यात् ।
शुद्धिं विना न मनसोऽवगमापवर्गौ
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥१९॥

वेदान्तशीलनमपि प्रमितिं करोति
ब्रह्मात्मनः प्रमितिसाधनसंयुतस्य ।

हे भगवन् ! गुरुजी की कृपा से मुझे जिस प्रकार ज्ञान हो जाता, मैंने विधिपूर्वक उनकी सेवा ही नहीं की जबकि मुझे पता है कि साधनरूप में उनकी सेवा ही सब कुछ है। ऐसे मैं हे दीनबन्धु ! मैं केवल आपकी ही शरण में आ पड़ा हूँ ॥१८॥

हे स्वामिन् ! आपकी लीला एवं पदचिह्नों से अंकित तीर्थों का भी मैंने विधिपूर्वक सेवन नहीं किया जिससे मेरा मन निर्मल हो जाता। मन की शुद्धि के बिना ज्ञान और मोक्ष कैसे हो सकता है, इसलिए हे दीनबन्धो ! अब तो मैं आपकी शरण में आ पड़ा हूँ ॥१९॥

वेदान्त का अनुशीलन ब्रह्मात्मैक्य ज्ञान प्रमिति साधन सम्पन्न प्रमाता को हो होता है। हे स्वामिन् ! मुझ में लेशमात्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैवास्ति साधनलवो मयि नाथ तस्या-
स्तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥२०॥

गोविन्द शङ्कर हरे गिरिजेश मेश
शम्भो जनार्दन गिरीश मुकुन्द साम्ब ।
नान्या गतिर्मम कथञ्चन वां विहाय
तस्मात्प्रभो मम गतिः कृपया विधेया ॥२१॥

एतत्स्तवं भगवदाश्रयणाभिधानं
ये मानवाः प्रतिदिनं प्रणताः पठन्ति ।
ते मानवा भवरतिं परिभूय शान्ति
गच्छन्ति किंच परमात्मनि भक्तिमद्धा ॥२२॥

इति श्रीब्रह्मानन्दविरचितं भगवच्छरणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

भी साधन नहीं है, ऐसे में हे दीनबन्धु ! अब मैं आप ही की शरण में आन पड़ा हूँ ।२०॥

हे गोविन्द, शङ्कर, हरे, गिरिजेश, लक्ष्मीपति, शम्भो, जनार्दन, गिरीश, मुकुन्द, साम्ब ! आपको छोड़कर दूसरा कोई भी सहारा मेरा नहीं है। इसलिए हे नाथ ! कृपा करके मुझे अपनी शरण में रख लीजिए ।।२१॥

"भगवच्छरण" सञ्ज्ञक इस स्तोत्र को जो मनुष्य विनम्र हो प्रतिदिन पढ़ते हैं, वे मानव आवागमन की आसक्ति को तिरस्कृत करके शान्ति को प्राप्त होते हैं एवं परमात्मा की भक्ति से युक्त हो जाते हैं ॥२२॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सुरमन्दिरतरुमूलनिवासः
शय्या भूतलमजिनं वासः ।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः ॥६॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥७॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु-
र्व्यर्थं कुप्यसि सर्वसहिष्णुः ।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं
सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ॥८॥

देवालय अथवा वृक्ष के मूल में निवास हो, पृथिवी शय्या एवं शरीर ढकने को मृगाम्बर कपड़ा हो, सब प्रकार भोग एवं परिग्रह का त्याग हो; इस प्रकार वैराग्यमय जीवन किसको सुखी नहीं करता ।।६।।

शत्रु-मित्र में, पुत्र-बन्धु में, अलगाव और मिलाप के प्रयत्नों में मत पड़े रहे, यदि शीघ्र विष्णुपद की प्राप्ति करना चाहते हो तो सर्वत्र समभावना से युक्त हो जाओ ।।७।।

सर्वसहिष्णु विष्णु तुझ में है, मुझ में है, अन्यत्र भी वही एक है, इसलिए व्यर्थ कुपित हुआ करते हो, सब में आत्मा का दर्शन करो, भेदबुद्धि को तो सब जगह से उखाड़ फेंको ।।८।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राणायामं प्रत्याहारं
नित्यानित्यविवेकविचारम् ।
जाप्यसमेतसमाधिविधानं
कुर्ववधानं महदवधानम् ॥९॥

नलिनीदलगतसलिलं तरलं
तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं
लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥१०॥

का तेऽष्टादशदेशे चिन्ता
वातुल तव किं नास्ति नियन्ता ।
यस्त्वां हस्ते सुदृढनिबद्धं
बोधयति प्रभवादिविरुद्धम् ॥११॥

प्राणायाम, प्रत्याहार, नित्यानित्य विवेक, जाप्य सहित समाधि का अनुष्ठान बड़ी सावधानी से करो ॥९॥

कमल के पत्ते में जैसे जल स्थिर नहीं रहता इसी प्रकार प्राणी का जीवन अत्यन्त अस्थिर है संसार को व्याधि और अभिमान से ग्रस्त हुआ समझो, सब कुछ शोकयुक्त समझो ॥१०॥

तुम्हें अठारह देश में क्या चिन्ता है, हे बातूनी ! क्या तुम्हारा नियामक कोई नहीं है जिसके हाथ में तुम्हारी बागडोर है, जो मृत्यु के लिए सजग करता रहता है ॥११॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

निर्लेपस्य कुतो गन्धो रम्यस्याभरणं कुतः ।
नित्यतृप्तस्य नैवेद्यस्ताम्बूलं च कुतो विभोः ॥३॥

प्रदक्षिणा ह्यनन्तस्य ह्यद्वयस्य कुतो नतिः ।
वेदवाक्यैरवेद्यस्य कुतः स्तोत्रं विधीयते ॥४॥

स्वयं प्रकाशमानस्य कुतो नीराजनं विभोः ।
अन्तर्बहिश्च पूर्णस्य कथमुद्वासनं भवेत् ॥५॥

एवमेव परा पूजा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
एकबुद्ध्या तु देवेशे विधेया ब्रह्मवित्तमैः ॥६॥

इति परापूजा समाप्ता ॥

निर्लेप रहने वाले को चन्दन का लेप क्या करेगा, नित्य रमणीय को आभूषणों से क्या सजाया जाए। नित्यतृप्त कैसे मिठाई खाएगा और सर्वव्यापक को ताम्बूल निवेदन करना नहीं बनता ॥३॥

जो अनन्त है, उसकी प्रदक्षिणा कैसे की जाए, अद्वैत तत्त्व को नमस्कार कर द्वैतभावना का पोषण क्यों किया जाए, अवेद्य तत्त्व की वेदवाक्यों से स्तुति कैसे बन सकती है ॥४॥

स्वयंप्रकाशमान् व्यापक की आरती कैसे करूँ, अन्दर बाहर सर्वत्र पूर्ण को विसर्जन कैसे बन सकता है ॥५॥

यही उस आत्मतत्त्व की परापूजा है। सदा सभी अवस्थाओं में ब्रह्मवेत्ताओं को भगवान् में अद्वैत बुद्धि करनी चाहिए ॥६॥

❀ ॐ क्लीं श्रीकृष्णाय नमः ❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नमः श्री जगदम्बायै

देव्या आरार्तिक्यम्

ॐ जय जगदम्ब शिवे, ॐ जय जगदम्ब शिवे ॥
जय चामुण्डे चण्डि विखण्डित चण्ड मुण्डमाले
धृत चण्ड मुण्डमाले ।
त्वयि रमतां मम चेतस्त्वयि खेलतु मम चेतो
मातः शशिभाले ॥ॐ जय० ॥१॥

देवि तवाङ्घ्रि सरोजरजोभिर्धूसर मौलितलाः
कृत धूसर मौलितलाः ।
अमरा इन्द्रपुरोगा (२) जाता अतुलबलाः ॥
ॐ जय० ॥२॥

शुम्भ निशुम्भमुखा मखनाशन शासन सर्वबलाः
किल शासन सर्वबलाः ।
मातस्तव बलवेगात् (२) अभवन्नति विफलाः ॥
ॐ जय० ॥३॥

कालि करालमुखोत्सरदद्भुत रक्तलम्बरसने
अद्भुत रक्तलम्बरसने ।
लोलकचोत्करकीर्णे (२) परिहित दिग्वसने ॥
ॐ जय० ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

क्षुद्व्याधिश्च चिकित्स्यतां प्रतिदिनं भिक्षौषधं भुज्यतां
स्वाद्वन्नं न तु याच्यतां विधिवशात्प्राप्तेन संतुष्यताम् ।
शीतोष्णादि विषह्यतां न तु वृथा वाक्यं समुच्चार्यता-
मौदासीन्यमभीप्स्यतां जनकृपानैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम् ॥४॥

एकान्ते सुखमास्यतां परतरे चेतः समाधीयतां
पूर्णात्मा सुसमीक्ष्यतां जगदिदं तद्बाधितं दृश्यताम् ।
प्राक्कर्म प्रविलाप्यतां चितिबलान्नाप्युत्तरैः श्लिष्यतां
प्रारब्धं त्विह भुज्यतामथ परब्रह्मात्मना स्थीयताम् ॥५॥

भूख रूपी बीमारी की चिकित्सा के लिए भिक्षा रूप औषधि (भोजन) का सेवन करना चाहिए। स्वादु अन्न की याचना नहीं करनी चाहिए, जो मिल जाए उसी में सन्तोष करना चाहिए। शीतोष्णादि द्वन्द्वों को सहन करना चाहिए, वृथा प्रलाप नहीं करना चाहिए, उदासीनता को हमेशा चाहता रहे, लोगों पर कृपा करना अथवा कठोर होना दोनों का त्याग कर दे ॥४॥

एकान्त में सुख से रहना चाहिए, परब्रह्म में चित्त को स्थिर करना चाहिए, आत्मा की पूर्णता अनुभव करे, इस जगत् का उससे बाध होते देखना चाहिए, पूर्वकर्म आत्म सत्ता में विलीन करना चाहिए, आगे के कर्मों में आसक्ति नहीं होनी चाहिए। (जब तक देह है, तब तक) यहाँ प्रारब्ध कर्म को भोगना चाहिए, परब्रह्म में आत्मा को संस्थित करना चाहिए ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठते मनुष्यः
संचिन्तयत्यनुदिनं स्थिरतामुपेत्य ।
तस्याशु संसृतिदवानलतीव्रघोर-
तापः प्रशान्तिमुपयाति चितिप्रसादात् ॥६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं साधनपञ्चकं सम्पूर्णम् ॥

पञ्चपूजा

पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यं च शुद्धस्याचमनं कुतः ॥१॥
निर्मलस्य कुतः स्नानं वस्त्रं विश्वोदरस्य च ।
निरालम्बस्योपवीतं पुष्पं निर्वासनस्य च ॥२॥

जो भी इस साधन पञ्चक स्तोत्र का पाठ करता है, चित्त को स्थिर कर इसके अर्थ का विचार करता है, आत्मकृपा से उसके संसारदावानल के तीव्र असह्य ताप की शीघ्र शान्ति हो जाती है ॥६।

—०—

सर्वत्र पूर्ण का आवाहन करते नहीं बनता, जो सबका आधार है, उसे आसन देते नहीं बनता। स्वच्छ को पाद्य और अर्घ्य कैसे दें, सर्वथा शुद्ध को आचमन क्यों कर दें ॥१॥

स्वभावतः निर्मल का स्नान कैसे होगा, विश्व जिसके उदर में है, उसे कैसे वस्त्र दे सकेंगे, आलम्बनशून्य को उपवीत कैसे दें, वासनाशून्य को पुष्प की खुशबू क्या करेगी ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः
संसारादचिराद्भवमुक्तः ।
सेन्द्रियमानसनियमादेवं
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम् ॥१२॥
द्वादशपञ्जरिकामय एष
शिष्याणां कथितो ह्युपदेशः ।
येषां चित्ते नैव विवेक-
स्ते पच्यन्ते नरकमनेकम् ॥१३॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं द्वादशपञ्जरिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

साधनपञ्चकम्

वेदो नित्यमधीयतां तदुदितं कर्म स्वनुष्ठीयतां
तेनेशस्य विधीयतामपचितिः काम्ये मतिस्त्यज्यताम् ।

गुरु जी के चरणकमलों में पूर्ण भक्ति संसार से शीघ्र मुक्ति दिलाती है। मन और इन्द्रियों का नियमन करने से, अपने हृदय में स्थित परमात्मा के दर्शन कर लोगे ॥१२॥

बारह पिटारों से युक्त यह उपदेश शिष्यों के लिए कहा है; जिनके चित्त में ज्ञान नहीं है, वे अनेक नरकों में पड़े सड़ते रहते हैं ॥१३॥

—०—

वेदों का नित्य अध्ययन करे, वैदिक कर्मों का सम्यक् अनुष्ठान करे, भगवत्प्रीत्यर्थ कर्मों का आचरण करे, काम्य कर्मों से मन को हटाए। पापों के समूह को नष्ट करे, संसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पापौघः परिधूयतां भवसुखे दोषोऽनुसंधीयता-
मात्मेच्छा व्यवसीयतां निजगृहात्तूर्णं विनिर्गम्यताम् ॥१॥
सङ्गः सत्सु विधीयतां भगवतो भक्तिर्दृढा धीयतां
शान्त्यादिः परिचीयतां दृढतरं कर्माशु संत्यज्यताम् ।
सद्विद्वानुपसर्प्यतां प्रतिदिनं तत्पादुके सेव्यतां
ब्रह्मैकाक्षरमर्थ्यतां श्रुतिशिरोवाक्यं समाकर्ण्यताम् ॥२॥
वाक्यार्थश्च विचार्यतां श्रुतिशिरःपक्षः समाश्रीयतां
दुस्तर्कात्सुविरम्यतां श्रुतिमतस्तर्कोऽनुसंधीयताम् ।
ब्रह्मैवास्मि विभाव्यतामहरहर्गर्वः परित्यज्यतां
देहेऽहंमतिरुज्झ्यतां बुधजनैर्वादः परित्यज्यताम् ॥३॥

सुख में दोषबुद्धि करता रहे, आत्मानुसन्धान की ओर मन लगाए, अपने घर से जल्दी वैराग्य ले ले ॥१॥

सज्जनों की संगति करता रहे, भगवान् में दृढ़ भक्ति को करे, शान्ति आदि दृढ़ मैत्री स्थापित करे, अकर्मण्यता की ओर शीघ्र चले, ब्रह्मनिष्ठों की शरण में प्रतिदिन जाना चाहिए, उनकी चरणपादुका का सेवन करना चाहिए। ॐकारात्मक एक ब्रह्म अक्षर की चाहना करे; उपनिषदों के महावाक्यों का श्रवण करना चाहिए ॥२॥

महावाक्यों के अर्थ का विचार करना चाहिए, श्रुति के सिद्धान्त पक्ष (अद्वैत) में निष्ठा रखनी चाहिए। फिजूल के तर्क में नहीं पड़ना चाहिए, श्रुत्यनुकूल तर्क का आश्रय लेना चाहिए। 'मैं ब्रह्म ही हूँ' ऐसी भावना प्रतिदिन करनी चाहिए, अहंकार का त्याग करे, शरीर में आत्मबुद्धि उखाड़ फेंकनी चाहिए, पण्डितों से व्यर्थ शास्त्रार्थ नहीं करना चाहिए ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

देवि शिवस्य निजायत लोचन शोभन कोण रसे
निज लोचन कोण रसे ।
विगतरागमपि चेतस् (२) सन्ततमधि हरसे ॥
ॐ जय० ॥५॥

शरणागतजनदुःखमहोदधि शोषण वायु जवे
परिशोषण वायु जवे ।
त्वं मम नवजलदाभा (२) दारुणदुःखदवे ॥
ॐ जय० ॥६॥

यामाहुर्जननीह जगत्तरु मूलमशेष बलाम्
भव मूलमशेष बलाम् ।
कामपि शक्तिममूं ते (२) नूनमवेमि कलाम् ॥
ॐ जय० ॥७॥

विष्णु निलिम्प महीकृत मातरमातुर शर्मपरा-
मखिलातुर शर्म पराम् ।
भक्ति भरेण नुवन्तो (२) गतिमुदियुः प्रवराम् ॥
ॐ जय० ॥८॥

श्रीशङ्करः प्रीयताम् ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मुद्रकः—
कैलास विद्या प्रेस, ब्रह्मानन्द आश्रम
मुनि-की-रेती (टिहरी-गढ़वाल)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon